पढ़ना है तो जंगल धूसड़ आएं

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज

जंगल धूसड़, गोरखपुर-२७३०१४(उ.प्र.)
(कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय)
Web:www.mpm.edu.in; E-mail:mpmpg.gkp@gmail.com
Ph:0551-2105416, 6827552, 09794299451
सम्बद्ध–दीनदयाल उपाध्याय गोरखपपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

स्व-अध्ययन रपट

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्
पोस्ट बाक्स नं.1075, नागरभावी
बैंगलुरू–560072, कर्नाटक, भारत

हमारे आदर्श

महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप, मेवाड़

स्वदेश, स्वधर्म, स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाले राष्ट्रनायक परमवीर महाराणा प्रताप का उज्ज्वल प्रदीप्त चरित्र हमारा आदर्श है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के श्रीमुख से निःसृत–

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

और पुण्य प्रताप महाराणा प्रताप का यह उद्घोष कि–

जो हठि राखे धर्म को तिहि राखै करतार'

हमारे सदा स्मरणीय बोधवाक्य हैं।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् और महाविद्यालय को राष्ट्रनायक महाराणा प्रताप के नाम पर स्थापित करने के पीछे यही स्पष्ट उद्देश्य और प्रयोजन है कि इन संस्थाओं में अध्ययन–अध्यापन करने वाला युवा आधुनिक ज्ञान–विज्ञान एवं कला की कालोचित शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ अपने देश और समाज के प्रति सहज निष्ठा और अटूट श्रद्धा का भी पाठ पढ़े।

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक
- महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के संस्थापक
- महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के प्रबन्धक

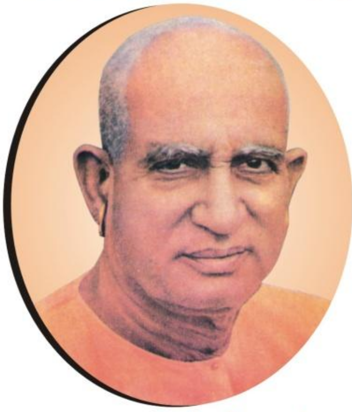

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक

शिक्षा के प्रसार को लोक जागरण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े पूर्वी प्रदेश के केन्द्र एवं अपनी कर्मस्थली गोरखपुर में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की शिक्षण संस्थाओं को संचालित करने हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की 1932 ई0 में स्थापना कर शिक्षा क्षेत्र में अपनी अविस्मरणीय भूमिका की नींव रखी। वर्तमान में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत संचालित साढ़े तीन दर्जन से भी अधिक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं में 25 हजार से अधिक छात्र/छात्राएं कला,विज्ञान, वाणिज्य, साहित्य और प्राविधिक विषयों में परम्परागत तथा आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा ले रहे हैं।

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के संस्थापक

अपने वरेण्य गुरुदेव युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के बहुआयामी सपनों को साकार करने में निरन्तर संलग्न समाजिक समरसता के उद्गाता, राष्ट्रवादी राजनीति के पुरोधा और अप्रतिम धर्मयोद्धा ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर श्री महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सन् 1932 ई0 में गुरुदेव द्वारा स्थापित 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्' को अपनी निष्ठा, सुदीर्घकालीन तपस्या और अनुभव कि पूँजी से उत्तरोत्तर समृद्ध, समुन्नत और प्रगतिशील रखते हुए 1957–58 में गोरखपुर में वर्तमान विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये उदारतापूर्वक विलीनीकृत तत्कालीन महाराणा प्रताप महाविद्यालय को नये रंग रूप में पुनरुज्जीवित करते हुये उच्च शिक्षा से वंचित ग्रामीण अंचल जंगल धूसड़ में महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना की जिसने शैक्षणिक गुणवत्ता, संस्कारयुक्त एवं अनुशासित परिसर की स्थापना कर अपनी बेहतरीन साख बनायी है।

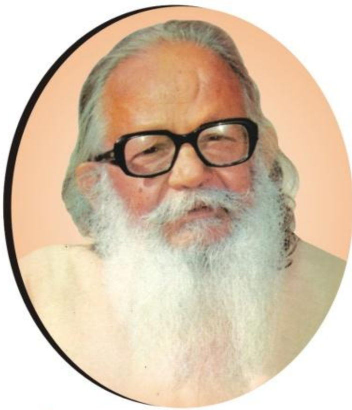

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के प्रबन्धक

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाएँ शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिमान बनें और ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के शिक्षा क्षेत्र में गोरक्षपीठ के सक्रिय योगदान के स्वप्न को साकार करें, इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु महाविद्यालय के प्रबन्धक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय को एक मानक संस्था बनाने हेतु प्रयासरत हैं। उनके निरन्तर प्रयासों का ही प्रतिपफल है महाराणा प्रताप पी0 जी0 कालेज के निरन्तर बढ़ते कदम। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन, नैतिक आचरण, धर्माधिष्ठित जीवन, भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने वाले परिसर में अत्याधुनिक संसाधनों से युक्त उच्चतम गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के भगीरथ प्रयास में पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज निरन्तर सक्रिय हैं। महाविद्यालय का वर्तमान स्वरूप उन्हीं की तपस्या एवं चिन्तन का परिणाम है।

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

• हमारे प्रयास–स्वस्थ परम्पराएँ एवं परिसर संस्कृति

हमारे प्रयास-स्वस्थ परम्पराएँ एवं परिसर संस्कृति

- प्रातः सरस्वती वन्दना, प्रार्थना, वन्देमातरम्, राष्ट्रगान एवं श्रीमदभगवतगीता के पाँच श्लोक के वाचन के साथ महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ।
- प्रत्येक महापुरुष की जयन्ती अथवा पुण्यतिथि पर प्रार्थना सभा में उन पर संक्षिप्त परिचयात्मक उद्‌बोधन के साथ उन्हें श्रद्धांजलि।
- 16 जुलाई से स्नातक / स्नातकोत्तर द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- 1 अगस्त से स्नातक / स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- प्रति वर्ष निर्मित पाठ्‌यक्रम योजना के अनुसार 10 फरवरी तक पाठ्‌यक्रम पूर्ण करने की योजना का क्रियान्वयन।
- 16 अगस्त से प्रयोगशालाएं प्रारम्भ।
- छात्रसंघ का चुनाव एवं शपथ ग्रहण सितम्बर प्रथम सप्ताह तक।
- प्रवेश समिति में छात्र / छात्राएं सदस्य एवं संयोजक।
- छात्र, छात्राओं, प्राध्यापक, कर्मचारी आदि द्वारा प्रत्येक शनिवार को दोपहर 12.10 से 01.10 बजे तक स्वैच्छिक श्रमदान।
- सप्ताह में एक दिन छात्र / छात्राओं द्वारा कक्षाध्यापन।
- छात्र / छात्राओं का मासिक मूल्यांकन।
- महाविद्यालय प्रशासन में छात्र / छात्रा सहभाग अर्थात् प्रवेश समिति, नियन्ता मण्डल, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बागवानी इत्यादि समितियों में छात्र सदस्य।
- प्रत्येक सोमवार एवं कार्यक्रमों में गणवेश निर्धारित।
- छात्र / छात्राओं द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन, शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र द्वारा।
- फरवरी माह में विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा।
- विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में प्रथम तीन छात्र / छात्राओं को पुस्तकालय की विशेष सुविधा, प्रवेश समिति की सदस्यता, उनकी उत्तर पुस्तिकाएं पुस्तकालय में अवलोकनार्थ रखा जाना।
- प्रतिवर्ष परीक्षा से पूर्व समावर्तन संस्कार (दीक्षान्त) समारोह का आयोजन।
- शिक्षकों द्वारा छात्र / छात्राओं को गोद लेने की प्रक्रिया।
- सत्र में दो बार शिक्षक–अभिभावक बैठक।
- प्रतिवर्ष अगस्त माह में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति साप्ताहिक व्याख्यान माला।
- प्रतिवर्ष विभागों द्वारा शोध–व्याख्यान प्रतियोगिता।
- नवम्बर माह में संस्थापक–सप्ताह समारोह एवं 12 जनवरी से 26 जनवरी भारत–भारती पखवारा समारोह का आयोजन।
- प्रतिवर्ष 'विमर्श' एवं 'मानविकी' नामक शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन।
- प्रत्येक सत्र में राष्ट्रीय संगोष्ठी / कार्यशाला का आयोजन।
- ग्रामीण महिलाओं के स्वावलम्बन हेतु योगिराज बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई–कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन।
- महाविद्यालय के समस्त छात्र / छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं हेतु निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण।
- भारतीय संस्कृति के शाश्वत जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु 'हमारे महापुरुष' एवं 'जीवन–मूल्य' नाम से प्रमाण–पत्र पाठ्‌यक्रम का संचालन।
- गुरु श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र का संचालन।
- नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र का संचालन।

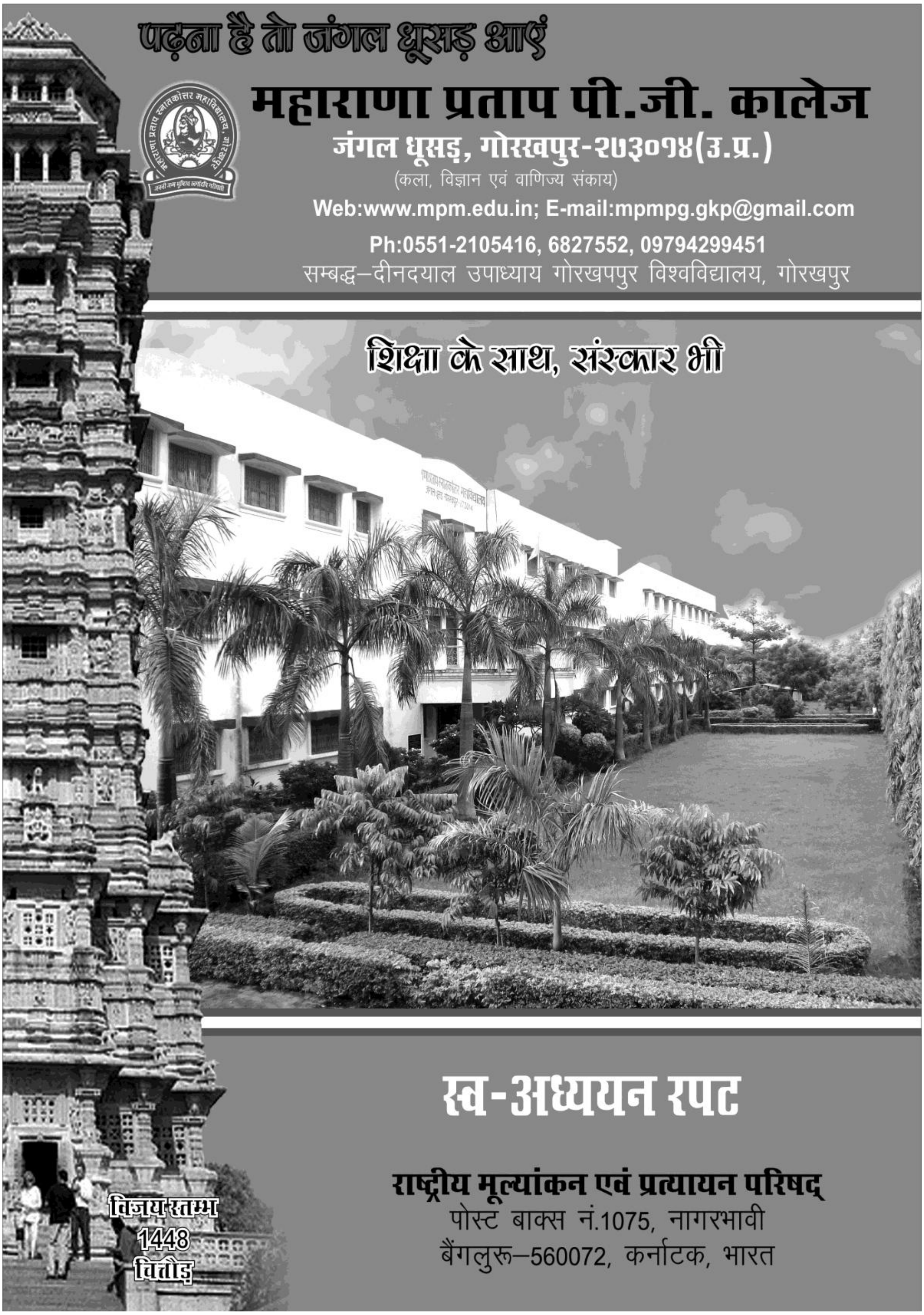
पढ़ना है तो जंगल धूसड़ आएं
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज
जंगल धूसड़, गोरखपुर-२७३०१४(उ.प्र.)
(कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय)
Web:www.mpm.edu.in; E-mail:mpmpg.gkp@gmail.com
Ph:0551-2105416, 6827552, 09794299451
सम्बद्ध–दीनदयाल उपाध्याय गोरखपपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
शिक्षा के साथ, संस्कार भी
स्व-अध्ययन रपट
राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्
पोस्ट बाक्स नं.1075, नागरभावी
बैंगलुरू–560072, कर्नाटक, भारत
विजय स्तम्भ
1448
चितौड़

प्रार्थना

वह शक्ति हमे दो दयानिधे! कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
पर सेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बन जाएँ।।

हम दीन दु:खी निबलों-विकलों के सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारे खुद तर जाएँ।।

छल-दम्भ-द्वेष-पाखण्ड-झूठ-अन्याय से निशि दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, निज जीवन सफल बना जाएँ।

निज आन-मान-मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश-भूमि में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जाएँ।

वह शक्ति हमें दो दयानिधे! कर्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
पर सेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जाएँ।।

Prayer

God be in my Head,
And in my understanding.
God be in my Eyes,
And in my looking.
God be in my Mouth,
And in my speaking.
God be in my Heart,
And in my thinking.
God be at my End,
And at my departing.

(Saurum Missal, 1921, America)

अनुक्रम

क्र.	विषय–वस्तु			पेज सं.
(i)	हमारे आदर्श, बोध वाक्य, स्पष्ट दृष्टि एवं उद्देश्य			02
(ii)	महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक, महाविद्यालय के संस्थापक, प्रबंधक			03
(iii)	हमारे प्रयास–स्वस्थ परम्पराएं एवं परिसर संस्कृति			04
(iv)	प्रार्थना			06
(v)	संचालन समिति और पुरोवाक्			08
अ.	प्रस्तावना			09
ब.	कार्यकारी सारांश			13
स.	महाविद्यालय की रूपरेखा			15
द.	मापदंडानुसार निविष्टयाँ			
	मापदंड I – पाठ्यर्चा पहलू			25
	मापदंड II – अधिगम और मूल्यांकन			32
	मापदंड III – अनुसंधान, परामर्श कार्य तथा प्रसार			49
	मापदंड IV – बुनियादी ढांचे और सीखने के संसाधन			97
	मापदंड V – छात्र समर्थन और प्रगति			110
	मापदंड VI – शासन, नेतृत्व और प्रबंधन			139
	मापदंड VII – नवाचार और सर्वोत्तम अभ्यास			159
य.	विभागों का मूल्यांकन रपट			
	1. वाणिज्य विभाग	169	11. हिन्दी विभाग	210
	2. वनस्पति विज्ञान विभाग	173	12. राजनीतिशास्त्र विभाग	214
	3. प्राणि विज्ञान विभाग	177	13. समाजशास्त्र विभाग	218
	4. रसायन विज्ञान विभाग	181	14. प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति	222
	5. गणित विभाग	186	15. मध्यकालीन इतिहास विभाग	227
	6. भौतिकी विभाग	190	16. भूगोल विभाग	231
	7. इलेक्ट्रानिक्स विभाग	194	17. मनोविज्ञान विभाग	235
	8. कम्प्यूटर साइंस विभाग	198	18. रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग	239
	9. सांख्यिकी विभाग	202	19. अर्थशास्त्र विभाग	243
	10. अंग्रेजी विभाग	206		
र.	अनुदेश प्रमाण–पत्र			247
ल.	प्राचार्य का उद्घोषणा–पत्र			248
व.	परिशिष्ट			
	(अ) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त 2(f) एवं 12(B) प्रमाण पत्र			249
	(ब) एन.सी.टी.ई. द्वारा जारी मान्यता प्रमाण पत्र			251
	(स) कुलसचिव द्वारा जारी सम्बद्धता प्रमाण पत्र			253
	(द) आई.ई.क्यू.ए.			254
	(य) राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा सर्वेक्षण अपलोडिंग प्रमाण–पत्र			257
	(र) महाविद्यालय परिवार			259
	(ल) छायाचित्र–प्रार्थना सभा एवं छात्रसंघ			260
	शोध अध्ययन केन्द्र एवं समावर्तन			261
	योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम			262

संचालन समिति

1.	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य / संरक्षक	पदेन	
2.	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग	समन्वयक	
3.	डॉ. विजय कुमार चौधरी	विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग	सदस्य	मापदंड–I
4.	डॉ. प्रविन्द्र कुमार	अस्सि.प्रोफेसर, भूगोल विभाग	सदस्य	
5.	श्री प्रकाश प्रियदर्शी	विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग	सदस्य	मापदंड–II
6.	डॉ. महेन्द्रप्रताप सिंह	विभागाध्यक्ष, मध्यकालीन इतिहास विभाग	सदस्य	
7.	श्रीमती कविता मन्ध्यान	विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग	सदस्य	मापदंड–III
8.	डॉ. आरती सिंह	विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग	सदस्य	
9.	डॉ. शालिनी सिंह	अस्सि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान	सदस्य	मापदंड–IV
10.	डॉ. राम सहाय	अस्सि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान	सदस्य	
11.	सुश्री मनीता सिंह	अस्सि. प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान	सदस्य	मापदंड–V
12.	डॉ. अमित मिश्रा	अस्सि. प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान	सदस्य	
13.	डॉ. राजेश कुमार शुक्ल	संकायाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग	सदस्य	मापदंड–VI
14	श्री सुभाष कुमार गुप्ता	अस्सि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग	सदस्य	
15.	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	सदस्य	मापदंड–VII
16.	डॉ. सुनील मिश्रा	विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग	सदस्य	
17.	श्री विरेन्द्र तिवारी	विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर साइंस विभाग	तकनीकी सहायक	
18.	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग	समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी.	

सहस्रों राष्ट्रनायकों में अग्रणी स्थान रखने वाले महाराणा प्रताप के नाम पर महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर का प्रथम शैक्षिक सत्र 2005 ई. में प्रारम्भ हुआ जो एकाधिक पहलुओं में अद्वितीय है। प्रस्तुत रपट हमारे सच्ची लगन से शैक्षणिक गुणवत्ता की ओर किये गये सहज प्रयासों को प्रतिध्वनित करती है। हमारा विश्वास दृढ़तापूर्वक सुस्थापित श्रेष्ठ परम्पराओं में है, न कि श्रेष्ठता दिखाने की प्रवृत्ति की ओर। अनजाने में हुई भूल–चुक एवं त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थना के साथ।

अविनाश प्रताप सिंह
नैक समन्वयक

A–प्रस्तावना

गुरू श्री गोरखनाथ के नाम पर विकसित गोरखपुर महानगर की नगरीय शिक्षा सुविधाओं से वंचित महानगर के उत्तरी पूर्वी छोर पर स्थित गांवों में अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुणवत्ता युक्त उच्च शिक्षा के प्रसार हेतु ग्राम जंगल धूसड़ में 29 मई 2004 ई. को महाराणा प्रताप महाविद्यालय का शिलान्यास तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में किया गया। 29 जून 2005 ई. को महाविद्यालय का लोकार्पण पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी जी के कर कमलों द्वारा हुआ। महाविद्यालय की स्थापना 1932 ई. में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा की गई। स्पष्ट है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का मुख्य उद्देश्य कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मुख से निःसृत 'जननी–जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' एवं महाराणा प्रताप के राष्ट्रीय चरित्र एवं उनके उद्घोष कि–'जो हठि राखे धर्म को तिहि राखै करतार' को प्रकाश स्तम्भ मानकर युवाओं में आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा के आधार पर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ उपर्युक्त प्रेरणा स्रोत अनुरूप उनका राष्ट्रीय चरित्र विकसित करना ही महाविद्यालय ने अपना प्रमुख उद्देश्य बनाया। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति द्वारा 10 वर्षीय स्पष्ट कार्य योजना बनाई गयी। महाविद्यालय जुलाई 2015 तक 10 वर्ष पूर्ण करने जा रहा है और हमें इस बात का संतोष एवं गर्व है कि इस निर्धारित कालखण्ड में अपनी कार्य–योजना को हम शत–प्रतिशत पूरा कर चुके हैं। प्रबन्धक महोदय का यह बार–बार का कथन कि 'कोई कार्य चाहे जितना अच्छा किया जाय उसे और अच्छा करने की गुन्जाइश सदा बनी रहती है' हमारी कार्य प्रणाली का अभिन्न हिस्सा है। परिणामतः महाविद्यालय जितना आगे बढ़ रहा है, लक्ष्य भी निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

हमारा महाविद्यालय राज्य सरकार की स्ववित्तपोषित योजनान्तर्गत संचालित है जिससे हमें अनेक संसाधनयुक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सीमित संसाधन के कारण हम चाहकर भी शिक्षकों–कर्मचारियों को अनुदानित महाविद्यालयों के समान वेतन नहीं दे पा रहे हैं। इसका परिणाम यह है कि अच्छे शिक्षक को लम्बे समय तक रोक पाना कठिन है। शोध कार्य के लिए संसाधन एक बड़ी बाधा है, जिसके कारण शोध कार्य संस्कृति विकसित करने के बावजूद विज्ञान में यथासम्भव शोध–कार्य नहीं हो पा रहे हैं। स्नातक स्तर पर पठन–पाठन की गुणवत्ता सुस्थापित कर लेने के बावजूद भी हम परास्नातक पाठ्यक्रम का तेजी से विकास नहीं कर पा रहे हैं तथापि सीमित संसाधन में विगत 9 वर्षों में मातृ संस्था महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के योजनाबद्ध ढंग से सक्रिय सहयोग एवं प्राचार्य तथा शिक्षकों की अपने उद्देश्य एवं कार्य योजना के प्रति स्पष्ट दृष्टि के कारण महाविद्यालय दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्ध महाविद्यालयों के लिए एक मानक बनकर उभरा है, जिसकी पुष्टि विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों एवं उच्च शिक्षा से जुड़े समाज के लोगों द्वारा कभी भी किया जा सकता है।

महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा गठित एवं चुनी हुई है। प्रबन्ध समिति में अध्यक्ष–उपाध्यक्ष प्रतिष्ठित शिक्षाविद् हैं। प्रबन्धक धर्माचार्य, सेवाभावी सन्त एवं जनता द्वारा लगातार पाँचवीं बार चुने गये लोकसभा के सांसद हैं। प्रबन्ध समिति में सामाजिक कार्यकर्ता, प्रतिष्ठित अधिवक्ता, सम्मानित व्यवसायी सदस्य हैं। इस कारण शिक्षा की

गुणवत्ता और विद्यार्थियों के समग्र विकास के प्रति प्रबन्ध समिति सदैव सचेष्ट रहकर कार्य करती है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 'प्रतिमान' महाविद्यालय का विकास प्रबन्ध समिति की कार्य योजना का हिस्सा है। अतः संसाधनों की आपूर्ति, उनके उपयोग पर नजर रखना, संस्था का निरन्तर पुनरीक्षण करने के माध्यम से प्रबन्ध समिति का महाविद्यालय के उद्देश्य की प्राप्ति में अमूल्य योगदान है।

संस्था की स्थापना के समय कला संकाय में सात विषय, विज्ञान संकाय में पांच विषय एवं वाणिज्य संकाय की एक साथ उत्तर प्रदेश शासन से नियमानुसार अस्थाई सम्बद्धता प्राप्त हुई। शासन के नियमानुसार वर्ष 2006 में इन सभी पाठ्यक्रमों में एक वर्ष में ही स्थायी सम्बद्धता प्राप्त हो गई तथापि महाविद्यालय ने तत्काल अन्य पाठ्यक्रम बढ़ाने के बजाय अपनी कार्य योजनानुसार नित–नूतन प्रयोगों को स्थापित करने तथा उन्हें स्वस्थ परम्परा बनाने पर जोर दिया और वर्ष 2009 तक चार वर्षों में पांच वर्ष का निर्धारित लक्ष्य पूरा किया।

क्रमशः आवश्यकतानुसार भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, फर्निचर, सूचना–प्रौद्योगिकी उपकरण की व्यवस्था मुकम्मल कर कार्य योजनानुसार विकास के दूसरे पंचवर्षीय कार्य योजना पर कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। 2010 में 7000 वर्ग फीट, 2011 में 10,000 वर्ग फीट, 2012 में 7000 वर्ग फीट क्षेत्र के भवन निर्माण के पश्चात् वर्ष 2013 ई. में आवासी परिसर करने की दृष्टि से छात्रावास एवं शिक्षक आवास के निर्माण की नींव डाल दी गई। 2014 में छात्रावास प्रारम्भ कर दिया गया तथा उसका विस्तार निर्माणाधीन है।

2009 ई. के पश्चात नए पाठ्यक्रम संचालित करने की कार्य–योजना पर भी अमल प्रारम्भ किया गया। 2010 में कला संकाय के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास एवं विज्ञान संकाय के अन्तर्गत रसायन विज्ञान में पी.जी. पाठ्यक्रम एवं स्नातक स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत मनोविज्ञान, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, इतिहास तथा विज्ञान संकाय के अन्तर्गत कम्प्यूटर साइंस, इलेक्ट्रानिक्स तथा सांख्यिकी विषयों की सम्बद्धता प्राप्त कर ली गई। दोनों पी.जी. पाठ्यक्रमों की स्थाई सम्बद्धता वर्ष 2014 में प्राप्त हो चुकी है। वर्तमान सत्र में कला संकाय के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र एवं वाणिज्य में पी.जी. पाठ्यक्रम हेतु तथा स्नातक स्तर पर गृह विज्ञान, संस्कृत एवं शिक्षाशास्त्र विषय की सत्र 2015–2016 में सम्बद्धता हेतु आवेदन किए जा चुके हैं।

संस्था का उद्देश्य स्पष्ट है, तद्नुसार कार्य पद्धति पारदर्शी है एवं पथ सरल और सीधा है। हमारी महाविद्यालयी दिनचर्या, मासिक एवं वार्षिक योजना इसके सुस्पष्ट प्रमाण हैं। ईश्वर में पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ महाविद्यालयी कार्य सम्पन्न किया जाता है। हमारी यह स्पष्ट धारणा है कि समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए संचालित महाविद्यालय का कार्य ईश्वरीय कार्य है। अतः प्रार्थना सभा से महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ होती है। प्रातः 8.30 बजे ध्वनि वर्धक पर प्रार्थना, भजन एवं राष्ट्रभक्ति के गीत धीमी आवाज में बजने लगता है। प्राचार्य की महाविद्यालय में उपस्थिति का समय आठ से सवा आठ बजे के मध्य है। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी साढ़े आठ बजे, तृतीय श्रेणी कर्मचारी 9 बजे तक तथा शिक्षक सवा नौ बजे तक उपस्थित हो जाते हैं। प्रातः 9.25 से 9.40 बजे तक प्रार्थना सभा होती है, जिसमें क्रमशः राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, सरस्वती वन्दना एवं ईशवन्दना सम्पन्न की जाती है। तत्पश्चात् यदि किसी महापुरुष की पुण्यतिथि/जयन्ती अथवा कोई उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण दिवस है तो उस सन्दर्भ में दो मिनट के प्राचार्य/शिक्षक द्वारा सम्बोधन श्रद्धांजलि/संकल्प के साथ महाविद्यालय की अकादमिक दिनचर्या प्रारम्भ हो जाती है। यदि उपर्युक्त विशेष तिथि नहीं है

तो श्रीमद्भगवतगीता के पांच श्लोक के वाचन के साथ प्रार्थना सभा पूर्ण होती है। प्रार्थना सभा की मासिक योजना महाविद्यालय के मुख्य सूचना पट्ट पर तथा वेबसाइट पर उपलब्ध रहती है। प्रार्थना सभा की मासिक योजना में प्रार्थना सभा का तिथिवार जयन्ती/पुण्यतिथि/महत्वपूर्ण दिवस का उल्लेख रहता है।

प्रत्येक माह के अन्तिम कार्य दिवस पर प्राचार्य की अध्यक्षता में मासिक शिक्षक बैठक सम्पन्न होती है। इस बैठक में अकादमिक गतिविधियाँ, व्याख्यान, आयोजन, पाठ्यक्रम योजना, विद्यार्थियों की प्रगति आख्या (उपस्थिति, साप्ताहिक कक्षाध्यापन, मासिक मूल्यांकन) स्वैच्छिक श्रमदान, गांवों की कार्य योजना सहित महाविद्यालय में चलने वाली प्रत्येक गतिविधियों का सूक्ष्मतापूर्वक विश्लेषण एवं आगामी माह की कार्य योजना सुनिश्चित कर दी जाती है। इस प्रकार जुलाई माह में प्रथम सप्ताह में बनाई गई वार्षिक योजना को निरन्तर निरीक्षण एवं विश्लेषण के साथ लागू किया जाता है। 18 से 25 नवम्बर महाविद्यालय साप्ताहिक संस्थापक समारोह, 12 जनवरी से 26 जनवरी तक भारत–भारती पखवारा महाविद्यालय युवा महोत्सव की दृष्टि से सम्पन्न करता है तथा मातृ संस्था महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के प्रतिवर्ष 4 से 10 दिसम्बर तक सम्पन्न होने वाले अद्वितीय संस्थापक सप्ताह समारोह में सम्मिलित होता है। 4 दिसम्बर के उद्घाटन समारोह एवं विशाल शोभा–यात्रा तथा 10 दिसम्बर के मुख्य महोत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह की व्यवस्था हमारे महाविद्यालय के जिम्मे होता है। सभी शिक्षक–कर्मचारी एवं प्रमुख विद्यार्थियों के सहयोग में यह आयोजन प्रतिवर्ष नए आयामों के साथ सम्पन्न किया जाता है। परिणामतः गुणात्मक शिक्षा के साथ–साथ विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्त्व विकास के विविध आयाम से युक्त परिसर का वातावरण स्वस्थ परम्परा का वाहक बना रहता है और महाविद्यालय अपने उद्देश्य प्राप्ति की दिशा में निरन्तर गतिशील रहता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना और छात्रसंघ एवं उसके माध्यम से महाविद्यालय प्रशासन में छात्र सहभाग महाविद्यालयी कार्य योजना की विशिष्टता का एक और पहलू है जिस माध्यम से विद्यार्थियों में सेवा, सामाजिक सहभाग, प्रशासनिक क्षमता और आत्म विश्वास का पक्ष मजबूत होता रहता है। साप्ताहिक स्वैच्छिक श्रमदान एवं छात्रसंघ की मासिक साधारण सभा की कार्यवाही इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। अन्ततः सत्रान्त में विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा एवं समावर्तन संस्कार समारोह के पश्चात् विद्यार्थियों को वार्षिक समीक्षा तथा आगामी सत्र की प्रवेश प्रक्रिया पर विचार विमर्श के साथ महाविद्यालय विश्वविद्यालयी परीक्षा मानक स्तरीय ढंग से सम्पन्न कराने में जुट जाता है। जिसकी साख और प्रसंशा गोरखपुर विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध सम्पूर्ण महाविद्यालयों में चर्चा का विषय बन चुकी है।

उपर वर्णित कार्य प्रणाली से महाविद्यालय में एक सुपरिभाषित एवं सुस्पष्ट परिसर संस्कृति का निर्माण हो चुका है। अब महाविद्यालय ने आगामी पांच वर्षों की योजना–निर्माण पर कार्य प्रारम्भ कर दिया है। अभी जो सामान्यता रूपरेखा सामने आयी है वह बी.एड. पाठ्यक्रम का पठन–पाठन एवं डी.एल.एड., बी.एल.एड., एम.बी.ए., एम.सी.ए., नर्सिंग तथा कला एवं विज्ञान संकाय में परास्नातक पाठ्यक्रम, सूचना एवं संचार, उद्योग, स्व उद्यमिता से सम्बन्धित डिप्लोमा पाठ्यक्रम खोले जायेंगे। इस दृष्टि से प्रथमतः भवन निर्माण की योजना विचाराधीन है। तत्पश्चात् छात्राओं के लिए छात्रावास, बहुउद्देशीय विशाल सभागार, अलग पुस्तकालय भवन तथा इनडोर स्टेडियम का निर्माण योजना का हिस्सा है।

वस्तुतः महाविद्यालय अपने सीमित संसाधन एवं योजनाबद्ध क्रियान्वयन से अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु सतत प्रयत्नशील है। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा संस्था

का मूल्यांकन अपनी विकास यात्रा का ही एक पड़ाव है। इस दिशा में महाविद्यालय क्रियाशील है। इसकी सूचना महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी, पुरातन छात्र परिषद् के सभी विद्यार्थी अभिभावकों को सम्यक रूप से प्राप्त हो चुकी है। महाविद्यालय के शिक्षक व कर्मचारी स्वआकलन रिपोर्ट तैयार करने में सत्यनिष्ठा के साथ लग चुके हैं।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा मूल्यांकन हेतु महाविद्यालय के प्रबन्धक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा प्रेरित किया गया। अकादमिक स्तर पर एवं संसाधन के स्तर पर हर सम्भव प्राप्त उनका सहयोग हमारे लिए इस कार्य को सहज और सरल बनाने में पाथेय बना। आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ हेतु गठित संचालन समिति तथा संस्था के सभी शिक्षकों/कर्मचारियों ने स्वअध्ययन रपट की तैयारी में अपनी पूरी क्षमता का उपयोग सावधानी के साथ किया। स्वअध्ययन रपट तैयार करने में सातो मापदण्ड को दो–दो शिक्षकों एवं कम्प्यूटर टंकण आदि श्रम–साध्य कार्य श्री ब्रजेश विश्वकर्मा एवं श्री संजय कुमार शर्मा ने निर्धारित समय–सीमा में किया। इन सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि संस्था के उद्देश्य की पूर्ति हेतु ऐसे ही हमें और हमारी टीम को सक्षम बनाए रखें जिससे कि पारिवारिक भाव से महाविद्यालय अपने उद्देश्य की तरफ स्पष्ट दृष्टि से स्वाभाविक–सरल एवं प्रशस्त मार्ग का निर्माण करते हुए बढ़ता रहे।

प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य

B–कार्यकारी–सारांश

उच्च शिक्षा से पिछड़े ग्रामीण अंचल जंगल धूसड़ में उच्च शिक्षा के प्रसार तथा आधुनिक संसाधनों से युक्त गुणवत्तायुक्त उच्चशिक्षा के साथ (कदाचार रहित, श्रम, संतोष और धैर्य के अग्रदूत) राष्ट्रभक्त नागरिक तैयार करने के उद्देश्य से गोरक्षपीठ द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर ने अल्प समय में ही अपनी कार्य संस्कृति से एक अलग पहचान बनायी है। विगत नौ वर्षों की तपस्या का परिणाम है कि महाविद्यालय की अपनी एक परिसर संस्कृति विकसित हुई है, जिसका परिणाम है कि हमेशा परिसर पूर्णतः स्वच्छ, हराभरा, शान्त, मद्य एवं धूम्रपान मुक्त, अनुशासित, छात्र–छात्राओं में स्वस्थ संवाद युक्त, पठन–पाठन में रत शिक्षक–विद्यार्थी से सुशोभित रहता है। प्रतिवर्ष आने वाले विद्यार्थी थोड़े से प्रयत्न के द्वारा ही इस परिसर संस्कृति के अंग बन जाते हैं।

महाविद्यालय के कर्मचारियों की कार्य संस्कृति ऐसी विकसित हो चुकी है कि एक बार किसी को कोई कार्य दे देने के पश्चात् उसके पूर्ण होने, बाधा आने पर उसकी जानकारी देने तथा निराकरण हो जाने की सुनिश्चितता रहती है। अधिकार के साथ दायित्वबोध के स्वाभाविक विकास के कारण हर कार्य समय से, सुव्यवस्थित तथा सुन्दर ढंग से सम्पन्न हो जाता है। कार्यालय इस लक्ष्य का अक्षरशः पालन करता है कि किसी भी विद्यार्थी को एक कार्य के लिए दूबारा कार्यालय न आना पड़े अर्थात् कार्यालय एक ही बार में उसकी समस्या का समधान सुनिश्चित करता है। छात्रोपयोगी समस्त सूचनाएँ प्रतिदिन अद्यतन की जाती है। वेबसाइट प्रतिदिन अद्यतन करने के पश्चात् ही कम्प्यूटर बन्द होते हैं। प्रतिदिन आय–व्यय बैंक प्रणाली की तरह सुनिश्चित कर प्राचार्य को सूचना प्रति उपलब्ध करा कर ही कार्यालय बन्द होता है। परिणामतः महाविद्यालय हर क्षण एक दिन पूर्व का सम्पूर्ण विवरण उपलब्ध करा पाने में समर्थ रहता है।

अपने उद्देश्य के प्रति सचेष्ट रहते हुए उसकी पूर्ति हेतु महाविद्यालय परिसर की प्राकृतिक साज–सज्जा के साथ–साथ उसका भौतिक स्वरूप योजनबद्ध ढंग से विकसित किया गया है। उदाहरण के लिए महाविद्यालय के सभी कक्ष, सभागार, प्रयोगशाला, पुस्तकालय किसी न किसी महापुरुष के नाम से जाने जाते है। कक्ष/सभागार/प्रयोगशाला/पुस्तकालय के द्वार पर सम्बन्धित महापुरुष का चित्र–नाम सहित पट्टिका लगाई गई है तथा अन्दर उनका संक्षिप्त जीवन–परिचय दिया गया है, ताकि शिक्षक–कर्मचारी, विद्यार्थी नित–नूतन उनसे प्रेरणा ग्रहण करते रहें। स्वच्छता महाविद्यालय परिसर संस्कृति का अनिवार्य घटक है। ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती एवं भारत माता की उपासना का महाविद्यालय मन्दिर है, इस भाव से परिसर का स्वरूप सृजित है।

महाविद्यालय की परिसर संस्कृति की स्पष्ट छाप हमारे विद्यार्थियों में परिलक्षित होता है। वर्तमान युग में जहाँ लिंगभेद एवं रैगिंग जैसी समस्याएँ इतनी जटिल होती जा रही है कि सर्वोच्च न्यायालय को दिशा निर्देश जारी करना पड़ रहा हो, वहाँ हमारे महाविद्यालय परिसर में समस्या तो दूर इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। प्रतिवर्ष एक अगस्त को नवागन्तुक विद्यार्थियों का स्वागत समारोह छात्र संघ के नेतृत्त्व में विद्यार्थी करता है। वरिष्ठता–कनिष्ठता (सीनियर–जूनियर) जैसा भेद बड़ों द्वारा छोटों का सहयोग एवं स्नेह तथा छोटों द्वारा बड़ों का सम्मान जैसे संस्कारात्मक दायित्त्व स्तर पर होता है। महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थी–शिक्षक–कर्मचारी सामाजिक–राष्ट्रीय विषयों पर संवेदनशील बनने लगते हैं, जो उनके व्यवहार में कहीं भी देखा जा सकता है। पुराने विद्यार्थी जिस भाव से स्वयं की

पहल पर महाविद्यालय के साथ जुड़े हैं, वह महाविद्यालय की कार्य संस्कृति का ही परिणाम है। अनेक सेवा एवं सामाजिक कार्य महाविद्यालय अपने इन्हीं विद्यार्थियों के सहयोग से पूरा करने का दम रखता है। उदाहरण के लिए गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के रक्तकोष (ब्लड बैंक) के साथ महाविद्यालय वचनवद्ध है कि–''जितने रक्त की आवश्यकता होगी महाविद्यालय पूर्ण करता रहेगा।'' पढ़ाई, परीक्षा और परिणाम के सन्दर्भ में महाविद्यालय की यह उक्ति चर्चित है कि–'पढ़ना हो तो जंगल धूसड़ आएं'। उपर्युक्त कार्य, कार्य–संस्कृति एवं परिणाम ही हमारी संस्था की ताकत है।

महाविद्यालय अपनी उपलब्धियों के साथ–साथ चुनौतियों का भी निरन्तर आकलन करता है, उसे दूर करने के तरीके खोजता है और तत्सम्बन्धी बाधा को यथासम्भव अपने सामर्थ्यानुसार दूर कर अपना मार्ग सरल करता है। महाविद्यालय के समक्ष सबसे प्रमुख चुनौती 'शिक्षक' की उपलब्धता का है। वर्तमान युग में कक्षा पढ़ाने वाले कागजी योग्यताधारी शिक्षक तो उपलब्ध हैं किन्तु रूचि एवं प्रवृत्ति से शिक्षक का नितान्त अभाव है। स्ववित्तपोषित संस्था होने तथा सीमित संसाधन के कारण दिया जाने वाला वेतन यद्यपि कि महाविद्यालय की सकल आय का सर्वाधिक (60 प्रतिशत) है तथापि आवश्यकतानुसार एवं शासकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अत्यन्त कम होने के कारण ढूढ़कर अच्छे शिक्षक को ला पाना एवं उसे दीर्घकाल तक महाविद्यालय में रोके रखना कठिन है तथापि उपलब्ध युवा शिक्षकों का ही प्रशिक्षण, प्रोत्साहन एवं उनकी जीवन–दृष्टि में परिवर्तन के विविध प्रयत्नों के द्वारा प्रबन्ध तन्त्र एवं प्राचार्य मिशनरी तन्त्र विकसित किए हुए हैं।

महाविद्यालय के समक्ष दूसरी प्रमुख चुनौती है विश्वविद्यालय के द्वारा शैक्षणिक कैलेण्डर का कड़ाई से पालन न किया जाना, जिसके कारण समय से परीक्षा का सम्पन्न न होना तथा निर्धारित समय से परीक्षा परिणाम प्राप्त न होना। तथापि महाविद्यालय अपना शैक्षणिक कैलेण्डर कड़ाई से लागू करता है। स्थापना काल से ही 15 जुलाई को प्रथम वर्ष की प्रवेश अर्हता सूची, 30 जुलाई तक प्रथम वर्ष का प्रवेश, 16 जुलाई से द्वितीय–तृतीय वर्ष की कक्षाएँ तथा एक अगस्त से प्रथम वर्ष की कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ हो जाता है। प्रारम्भिक वर्षों में परीक्षा परिणाम घोषित न होने के कारण द्वितीय–तृतीय वर्ष की कक्षाएँ प्रभावित होती थी किन्तु अब सुस्थापित परम्परा बन जाने के कारण विद्यार्थी 16 जुलाई से पढ़ने आने लगा है। इस क्षेत्र के अधिकांश स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में नकल करके अच्छा अंक पाने की सुविधा प्राप्त होने तथा हमारे यहाँ नकल विहीन कठोर परीक्षा के कारण एक बड़ा वर्ग प्रारम्भिक वर्षों में हमारे महाविद्यालय में प्रवेश लेने से कतराता था, किन्तु आज विज्ञान वर्ग में यह चुनौती समाप्त हुई है किन्तु कला संकाय एवं वाणिज्य में यह स्थिति अभी भी बनी हुई है।

महाविद्यालय के लिए यह सौभाग्य का विषय है कि प्रबन्ध–तन्त्र संस्था के पवित्र (कार्य ईश्वरीय है) उद्देश्य के प्रति कटिबद्ध है। अतः हम इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए आर्थिक लाभ–हानि की चिन्ता किये बिना, अत्याधुनिक सुविधाओं के क्रमिक विकास एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के साथ सामर्थ्यानुसार विविध शैक्षणिक शोध, सामाजिक, गतिविधियाँ संचालित करने और महाविद्यालय के लक्ष्य की तरफ निरन्तर बढ़ने के भगीरथ प्रयत्न में सफल हैं। महाविद्यालय आगामी पाँच वर्षों की सुनिश्चित योजना अगले सत्र से लागू करने में पूर्व अनुभवों का उपयोग करेगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि सुस्थापित अपनी कार्यप्रणाली द्वारा हम अपनी आगामी विकास यात्रा सफलतापूर्वक पूरी करते हुए बहुसंकायी, अन्तरविषयी, स्वायत्तशासी शिक्षण संस्था बनने में सफल होंगे।

C–महाविद्यालय की रूपरेखा

1. महाविद्यालय का नाम और पता :

नाम :	महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज		
पता :	महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर		
जनपद :	गोरखपुर	पिनः 273014	राज्यः उत्तर प्रदेश
वेबसाइट :	www.mpm.edu.in		
ई–मेलः	mpmpg.gkp@gmail.com		

2. संपर्क के लिए :

पदनाम	नाम	टेलीफोन एस.टी.डी. कोड के साथ	मोबाइल	फैक्स	ई–मेल
प्राचार्य	डॉ. प्रदीप कुमार राव	0551-2105416	09794299451	0551-2255455	mpmpg.gkp@gmail.com
समन्वयक, नैक हेतु संचालन समिति	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	-	09450489652		
समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी.	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	-	09454234545		

3. संस्थान की स्थिति :

- सम्बद्ध कॉलेज ☑
- संघटक कॉलेज ☐
- कोई अन्य (निर्दिष्ट) ☐

4. संस्थान के प्रकार :

ए. लिंग द्वारा

- i. पुरुषों के लिए ☐
- ii. महिलाओं के लिए ☐
- iii. सह–शिक्षा ☑

बी. पारी द्वारा

- i. नियमित ☑
- ii. दिन ☐
- iii. शाम ☐

5. यह एक मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक संस्थान है?

- हाँ ☐
- नहीं ✓

यदि हाँ अल्पसंख्यक स्थिति का उल्लेख करें (धार्मिक/भाषाई/कोई अन्य) और दस्तावेजी साक्ष्य प्रदान करें।

6. वित्त पोषण के स्रोत :

सरकार	✓
अनुदान	
सहायता स्व–वित्तपोषण	✓
कोई अन्य महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर (संरक्षक शैक्षिक न्यास)	Grants from M.P.S.P.

7. ए. कॉलेज की स्थापना की तिथि : शिलान्यास 29.05.2004, शैक्षणिक सत्रारम्भ 29.06.2005

बी. विश्वविद्यालय जिससे कॉलेज सम्बद्ध है/या जो कॉलेज को नियंत्रित करता है (यदि यह एक संघटक कॉलेज है तो) दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सी. यू.जी.सी. मान्यता का विवरणः

धारा के अन्तर्गत	तिथि, माह एवं वर्ष (दिन–महीना–वर्ष)	टिप्पणी (यदि कोई है तो)
i. 2 (एफ)	22-06-2007	
ii. 12 (बी)	20-08-2010	

(देखें संलग्नक–क, ख)

डी. एन.सी.टी.ई. द्वारा मान्यता/अनुमोदन का विवरण

धारा के तहत/खंड	मान्यता/अनुमोदन विवरण संस्थान/विभाग कार्यक्रम	तिथि, माह एवं वर्ष (दिन–महीना–वर्ष)	वैधता	टिप्पणियाँ
7(11)Regu.2009	बी.एड.	12.12.2013	स्थायी	–

(मान्यता/अनुमोदन पत्र संलग्न)

8. सम्बद्ध विश्वविद्यालय अधिनियम इसके संबद्ध कॉलेजों पर, स्वायत्तता (जैसे यू.जी.सी. द्वारा मान्यता प्राप्त) का पोषण प्रदान कर सकता है?

हाँ ☑ नहीं ☐

यदि हाँ, क्या महाविद्यालय ने स्वायत्त दर्जा प्राप्त करने के लिए आवेदन किया है?

हाँ ☐ नहीं ☑

9. क्या कॉलेज मान्यता प्राप्त है?

ए. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उत्कृष्टता के लिए संभावित (सीपीई) के साथ कॉलेज के रूप में?

हाँ ☐ नहीं ☑

यदि हाँ, मान्यता की तारीख..(दिन/महीना/वर्ष)

बी. किसी भी अन्य सरकारी अभिकरण द्वारा अपने प्रदर्शन के लिए?

हाँ ☐ नहीं ☑

यदि हाँ, अभिकरण का नाम..और

मान्यता तिथि...(दिन/महीना/वर्ष)

10. परिसर का स्थान और क्षेत्र वर्ग मीटर में:

स्थान*	ग्रामीण
परिसर क्षेत्र वर्ग मीटर में	68900 वर्ग मीटर
निर्मित क्षेत्र वर्ग मीटर में	5288.49 वर्ग मीटर

(*शहरी, अर्ध शहरी, ग्रामीण, आदिवासी, पहाड़ी क्षेत्र, कोई भी अन्य उल्लेखित करें)

11. परिसर में उपलब्ध सुविधाएं (उपलब्ध सुविधा टिक करें और उपयुक्त स्थानों पर संख्या या अन्य जानकारी प्रदान करें) या अगर संस्थान ने अन्य एजेंसियों के साथ कोई भी सूचीबद्ध सुविधाओं का उपयोग करने का समझौता किया हो इस मामले में समझौते के तहत कवर की गई जानकारी उपलब्ध कराएँ।

- सभागार/संगोष्ठी ढांचागत सुविधाओं के साथ ☑
- खेल सुविधाएँ
  - * खेल का मैदान ☑
  - * स्विमिंग पूल ☒
  - * व्यायामशाला ☑
- छात्रावास
  - * बालक छात्रावास ☑

क्र.सं.	छात्रावास	महाविद्यालय में उपलब्ध	महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
1	छात्रावासों की संख्या	01	01
2	निवास करने वालों की संख्या	80	40
3	सुविधाएं	भोजनालय, लगातार जलापूर्ति, लगातार विद्युत आपूर्ति (इर्न्वटर, जनरेटर), खेल का मैदान, सभागार–टी.वी., दृश्य–श्रव्य स्रोत, वाचनालय, योगासन, ध्यान।	भोजनालय, लगातार जलापूर्ति, लगातार विद्युत आपूर्ति (जनरेटर), खेल का मैदान, सभागार–टी.वी., योगासन, ध्यान।

  - * बालिका छात्रावास

क्र.सं.	छात्रावास	महाविद्यालय में उपलब्ध	महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
1	छात्रावासों की संख्या	–	01
2	निवास करने वालों की संख्या	–	40
3	सुविधाएं	–	भोजनालय, लगातार जलापूर्ति, लगातार विद्युत आपूर्ति (जनरेटर), खेल का मैदान, सभागार–टी.वी., योगासन, ध्यान।

- शिक्षण और गैर शिक्षण कर्मचारियों के लिए आवासीय सुविधाएँ (उपलब्ध संख्या दें–संवर्ग वार) प्राचार्य–01, शिक्षक–02, कर्मचारी–02
- कैफेटेरिया – ☑

- स्वास्थ्य केन्द्र - ☑
  प्राथमिक चिकित्सा ☑, इन पेशेंट, आउट पेशेंट, आपातकालीन देखभाल की सुविधा, एम्बुलेंस ☑
  स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मचारी –

योग्य चिकित्सक	पूर्ण समय	☐	अंशकालिक	✓
योग्य नर्स पूर्ण	पूर्ण समय	☐	अंशकालिक	✓

- सुविधाएँ जैसे बैंकिग, डाकघार, किताब की दुकान तरह – नहीं
- छात्रों और कर्मचारियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परिवहन की सुविधा– ☑
  (बस रजिस्ट्रेशन नं. UP53K1053 और बोलेरो रजिस्ट्रेशन नं. UP53BC1851 उपलब्ध हैं)
- पशु घर ☑
- जैविक अपशिष्ट निपटान ☑
- बिजली और वोल्टेज की प्रबंधन/नियमन के लिए जनरेटर या अन्य सुविधा ☑
- ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सुविधा ☑
- अपशिष्ट जल प्रबंधन ☑
- जल संचयन ☑

12. महाविद्यालय द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों का विवरण (चालू, शैक्षणिक वर्ष के लिए डेटा प्रदान करें) : 2014–2015

अ. सं.	कार्यक्रम स्तर	कार्यक्रम का नाम	अवधि	प्रवेश योग्यता	शिक्षा का माध्यम	अनुमोदित/ स्वीकृत छात्रों की संख्या	भर्ती छात्रों की संख्या
1.	स्नातक	बी.ए.	3 वर्ष	10+2	हिन्दी/अंग्रेजी	800	330
		बी.एस–सी.	3 वर्ष	10+2	हिन्दी/अंग्रेजी	720	265
		बी.काम.	3 वर्ष	10+2	हिन्दी/अंग्रेजी	240	183
2.	स्नातकोत्तर	एम.ए. (प्राचीन इतिहास)	2 वर्ष	बी.ए.	हिन्दी/अंग्रेजी	120	02
		एम.एस–सी. (रसायनशास्त्र)	2 वर्ष	बी.एस–सी.	हिन्दी/अंग्रेजी	30	11
3.	सर्टीफिकेट	कम्प्यूटर प्रशिक्षण	6 मास	10+2		120	120
		सिलाई–कढाई	6 मास	महिला		60	60
		हमारे पुरूष	6 मास	10+2		60	60
		जीवन मूल्य	6 मास	10+2		60	60

13. क्या महाविद्यालय स्व–वित्त पोषित कार्यक्रम प्रस्तुत करता है?

हाँ ☑ नहीं ☐

यदि हां, तो कितने? (5) (बी.ए., बी.एस–सी., बी.काम., एम.ए., एम.एस–सी.)

14. पिछले पांच वर्षों के दौरान अगर कोई नए कार्यक्रमों का प्रारम्भ महाविद्यालय में किया गया है?

हाँ	✓	नहीं		संख्या	बी.ए.–03, विषय–मनोविज्ञान, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, मध्यकालीन इतिहास बी.एस–सी.–03, विषय–इलेक्ट्रानिक्स, सांख्यिकी, कम्प्यूटर साइंस एम.ए.–01, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति एम.एस–सी.–01, रसायन विज्ञान

15. विभागों की सूची बनाएँ (अगर लागू हो तो प्रतिक्रिया दे और पुस्तकालय, शारीरिक शिक्षा विभागों जैसी सुविधाओं की सूची न बनाएँ जबकि वे शैक्षणिक उपाधि प्रदान कार्यक्रमों को न करती हो। इसी तरह सभी कार्यक्रमों के लिए सामान्य अनिवार्य विषयों जैसे अंग्रेजी, क्षेत्रीय भाषाओं आदि प्रस्तावित करने वाली विभागों की सूची न बनाएँ।

संकाय	स्नातक	स्नातकोत्तर	अनुसंधान
विज्ञान	1. प्राणि विज्ञान 2. वनस्पति विज्ञान 3. रसायन 4. भौतिकी 5. गणित 6. कम्प्यूटर साइंस 7. सांख्यिकी 8. इलेक्ट्रानिक्स	1. रसायन विज्ञान	.
कला	1. हिन्दी 2. अंग्रेजी 3. अर्थशास्त्र 4. प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति 5. मध्यकालीन इतिहास 6. राजनीतिशास्त्र 7. समाजशास्त्र 8. भूगोल 9. मनोविज्ञान 10. रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	1. प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग	हिन्दी अंग्रेजी – प्राचीन पुरातत्व एवं संस्कृति – राजनीतिशास्त्र समाजशास्त्र भूगोल मनोविज्ञान रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन
वाणिज्य	बी.काम.	-	वाणिज्य
शोध एवं अध्ययन केन्द्र	1. गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र 2. नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र		

16. प्रस्तावित के अन्तर्गत कार्यक्रमों की संख्या (कार्यक्रम अर्थात् उपाधि पाठ्यक्र जैसे बी.ए., बी.एस–सी., एम.ए., एम.काम.)

ए. वार्षिक प्रणाली	04
बी. सेमेस्टर प्रणाली	01
सी. तिमाही प्रणाली	

17. कार्यक्रम की संख्या के साथ

ए. विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली	नहीं
बी. अंतर / बहु अनुशासनात्मक दृष्टिकोण	नहीं
सी. छमाही प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम	04

18. क्या महाविद्यालय अध्यापक शिक्षा में यू.जी./पी.जी. कार्यक्रमों को प्रस्तुत करता है?

हाँ ✓ नहीं ☐

यदि हाँ,

ए. कार्यक्रम प्रारम्भ करने का सत्र 2015–16

बी. एन.सी.टी.ई. मान्यता विवरण (यदि लागू हो)

अधिसूचना सं. :NRC/NCTE/UP-2751/220th Meeting/65715-721

तिथि : 12 दिसम्बर, 2013

वैधताः स्थायी

सी. क्या संस्था अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन और प्रत्यायन के लिए चयन करती है?

हाँ ☐ नहीं ✓

19. क्या कॉलेज शारीरिक शिक्षा में यू.जी. या पी.जी. कार्यक्रम का प्रस्ताव करता है?

हाँ ☐ नहीं ✓

यदि हाँ,

ए. कार्यक्रम प्रस्तावित वर्ष ....(दिन / महीना / वर्ष)

और कार्यक्रम पूरी की गई बैचों की संख्या ☐

बी. एन.सी.टी.ई. मान्यता विवरण (यदि लागू हो)

अधिसूचना सं. ....

तिथि ....(दिन / महीना / वर्ष)

वैधताः ....

सी. क्या संस्था शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम मूल्यांकन और प्रत्यायन के लिए प्रत्येक चयन करती है?

हाँ ☐ नहीं ☐

20. संस्थान के शिक्षण और गैर शिक्षण पदों की संख्या

स्थिति	शिक्षण संकाय						गैर शिक्षण कर्मचारी		तकनीकी कर्मचारी	
	प्रोफेसर		सह प्राध्यापक		सहायक प्राध्यापक					
	*पु	*स्त्री	*पु	*स्त्री	*पु	*स्त्री	*पु	*स्त्री	*पु	*स्त्री
विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत भर्ती	-	-	-	-	32 32	05 05	27 27	04 04	14 14	-
भर्ती करनी है	-	-	-	-	0	0	0	0	0	0
प्रबंधन/सोसाइटी द्वारा स्वीकृत भर्ती	-	-	-	-	03 03	03 03	-	-	-	-
भर्ती करनी है	-	-	-	-	0	0	0	0	0	0

***पु.–पुरूष * स्त्री–महिला**

21. शिक्षण कर्मचारियों की योग्यता :

उच्चतम योग्यता	प्रोफेसर		सह प्राध्यापक		सहायक प्राध्यापक		कुल
	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री	
स्थाई अध्यापक							
डी.एस.सी/डी.लिट	-	-	-	-	-	-	-
पी.एच.डी.	-	-	-	-	16	03	19
एम.फिल	-	-	-	-	03	01	04
पी.जी.	-	-	-	-	13	01	14
अस्थाई अध्यापक							
पी.एच.डी.	-	-	-	-	-	-	-
एम.फिल.	-	-	-	-	-	-	-
पी.जी.	-	-	-	-	03	03	06
अंशकालिक शिक्षक							
पी.एच.डी.							
एम.फिल.							
पी.जी.							

22. कॉलेज में नियुक्त विसिटिंग संकाय/गेस्ट संकाय की संख्या **19**

23. पिछले चार अकादमिक वर्षो के दौरान कॉलेज में भर्ती हुए छात्रों की संख्या–

श्रेणियाँ	2010–11		2011–12		2012–13		2013–14	
	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री
अनुसूचित जाति	93	24	55	26	95	49	108	53
अनुसूचित ज.जाति	06	-	10	04	10	04	14	06
अन्य पिछड़ा वर्ग	255	84	257	140	441	190	564	244
सामान्य	353	109	321	171	546	243	686	303
कुल योग	707	217	643	341	1092	486	1372	606

24. चालू शैक्षणिक वर्ष के दौरान महाविद्यालय में छात्रों के नामांकन का विवरण(2014–15)

छात्र	यू.जी.	पी.जी.	एम.फिल.	पी.एच.डी.	कुल
उसी राज्य के छात्र जहाँ महाविद्यालय स्थित है	1775	34	-	-	1809
भारत के अन्य राज्य के छात्र	08	-	-	-	08
एन.आर.आई. छात्र	-	-	-	-	-
विदेशी छात्र	-	-	-	-	-
कुल	**1783**	**34**	-	-	**1817**

25. स्नातक और स्नातकोत्तर में ड्रॉप आऊट दर स्नातक/स्नातकोत्तर

स्नातक 1.47 %

स्नातकोत्तर

एम.ए.	42/2	4.76%	2.52%
एम.एस–सी.	77/01	1.29%	

26. शिक्षा की इकाई लागत

(इकाई लागत=कुल वार्षिक आवर्ती खर्च (वास्तविक) कुल नामांकित छात्रों की संख्या द्वारा विभाजित

(ए) वेतन घटक सहित - रू. **6407.00**

(बी) वेतन घटक रहित - रू.. **2613.00**

27. क्या महाविद्यालय दूरस्थ शिक्षा मोड़ (डीईपी) कार्यक्रम/कार्यक्रमों को प्रदान करता है?

हाँ ☐ नहीं ✓

यदि हाँ,

ए. क्या यह अन्य विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली पंजीकृत केन्द्र है?

हाँ ☐ नहीं ☐

बी. इस तरह का पंजीकरण प्राप्त विश्वविद्यालय।

सी. प्रस्तुत कार्यक्रमों की संख्या

डी. दूरस्थ शिक्षा परिषद् की मान्यता प्रोषण करने वाले कार्यक्रम।

हाँ ☐ नहीं ☐

28. प्रस्तुत प्रत्येक कार्यक्रम/पाठ्यक्रम के लिए अध्यापक–छात्र दर प्रदान करें।

(सत्र 2014–15 में प्रवेश के आधार पर)

विषय	छात्र–अध्यापक अनुपात	
	स्नातक	परास्नातक
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति	1:47	1 : 2
मध्य इतिहास	1:178	-
हिन्दी	1:104	-
अंग्रेजी	1:68	-
अर्थशास्त्र	1:51	-
समाजशास्त्र	1:99	-
राजनीतिशास्त्र	1:100	-
भूगोल	1:47	-
मनोविज्ञान	1:24	-
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	1:13	-
वनस्पति विज्ञान	1:33	-
प्राणि विज्ञान	1:33	-
रसायन विज्ञान	1:60	1 : 4
गणित	1:95	-
सांख्यिकी	1:06	
भौतिकी	1:94	-
इलेक्ट्रानिक्स	1:03	
कम्प्यूटर साइंस	1:31	-
वाणिज्य	1:61	-

29. क्या महाविद्यालय आवेदन कर रहा है

प्रत्यायन : चक्र 1 ☑ चक्र 2 ☐ चक्र 3 ☐ चक्र 4 ☐

पुनः मूल्यांकन : ☐

* **(**चक्र 1 प्रथम प्रत्यायन और चक्र 2, चक्र 3 और चक्र 4 पुनः प्रत्यायन को संदर्भित करता है**)**

30. प्रत्यायन की तिथि (चक्र 2, चक्र 3, चक्र 4 और पुनः मूल्यांकन के लिए मात्र लागू होता है)

चक्र 1 ....(दिन/माह/वर्ष) प्रत्यायन परिणाम/नतीजा....लागू नहीं

चक्र 2 ....(दिन/माह/वर्ष) प्रत्यायन परिणाम/नतीजा....................

चक्र 3 ....(दिन/माह/वर्ष) प्रत्यायन परिणाम/नतीजा....................

**कृपया अनुबंध के रुप में प्रत्यायन प्रमाण–पत्र और उच्च स्तरीय समिति रिपोर्टों की प्रति संलग्न करें।*

31 पिछले अकादमिक वर्ष के दौरान कार्य दिवसों की संख्या

सत्र 2013–14 –230 दिन

32. पिछले अकादमिक वर्ष के दौरान पढ़ाए गए दिवसों की संख्या

(पढ़ाए गए दिनों से तात्पर्य है जिसमें परीक्षा दिनों के अतिरिक्त व्याख्यान ली गई हो)

सत्र 2013–14 – 192 दिन

33. आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी.) की स्थापना की तिथि 02.07.2011

34. वार्षिक गुणवत्ता आश्वासन रिपोर्ट (ए.क्यू.ए.आर) एनएएसी को प्रस्तुत करने के बारे में विवरण– लागू नहीं

वा.गु.आ.रि. (i)..(दिन/माह/वर्ष)
वा.गु.आ.रि. (ii)..(दिन/माह/वर्ष)
वा.गु.आ.रि. (iii)..(दिन/माह/वर्ष)
वा.गु.आ.रि. (iv)..(दिन/माह/वर्ष)

35. (a) महाविद्यालय में आयोजित प्रासंगिक कार्यों की संक्षिप्त सारणी

सत्र	अतिथि व्याख्यान (संख्या)	राष्ट्रीय संगोष्ठी (संख्या)	कार्यशाला (संख्या)	आए हुए प्रतिष्ठित शिक्षाविद् (संख्या)	प्रार्थना सभा में स्मरण किए गए	
					महत्त्वपूर्ण तिथियाँ (संख्या)	महापुरूष (संख्या)
2010–11	23	01	04	34	08	46
2011–12	41	–	06	41	10	52
2012–13	45	01	06	59	10	53
2013–14	43	–	09	43	11	58

(b) स्नातक स्तर पर उपलब्ध विषय संयुक्तियाँ –

कला संकाय में निम्न विषय समूह उपलब्ध हैं। प्रत्येक वर्ग से केवल एक विषय लिया जा सकता है–

ग्रुप 'ए'	ग्रुप 'बी'	ग्रुप 'सी'
समाजशास्त्र	प्राचीन इतिहास	राजनीतिशास्त्र
भूगोल	इतिहास	अर्थशास्त्र
मनोविज्ञान	अंग्रेजी	हिन्दी
रक्षा अध्ययन	गणित	

विज्ञान संकाय

गणित वर्ग

ग्रुप 'ए' –	ग्रुप 'बी'	ग्रुप 'सी'
गणित	भौतिकी सांख्यिकी	रसायनशास्त्र/ रक्षा अध्ययन/ इलेक्ट्रानिक्स /सांख्यिकी/भूगोल/ मनोविज्ञान/कम्प्यूटर साइंस

जीव विज्ञान वर्ग

वनस्पति विज्ञान	प्राणि विज्ञान	रसायनशास्त्र/रक्षा अध्ययन/ भूगोल/मनोविज्ञान

वाणिज्य संकाय में निम्नलिखित सभी प्रश्नपत्र प्रथम वर्ष में अनिवार्य है।
ग्रुप 'ए' वित्तीय लेखांकन, व्यावसायिक सांख्यिकी
ग्रुप 'बी' प्रबन्धक के सिद्धान्त, व्यावसायिक संचार
ग्रुप 'सी' व्यावसायिक अर्थशास्त्र, मुद्रा एवं वित्तीय प्रणाली

स्नातक प्रथम, द्वितीय वर्ष में तीन विषय तथा तृतीय वर्ष में लिए गए तीन विषयों में कोई दो विषय पढ़ना होता है।

मापदण्ड–I
पाठ्यचर्या पहलू

1.1 पाठ्यक्रम योजना एवं कार्यान्वयन

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' (माँ एवं मातृभूमि स्वर्ग से मूल्यवान अथवा महान है) एवं ''जो हठि राखे धर्म को तिहि राखै करतार'' (जो धर्म की रक्षा करता है, उसकी रक्षा ईश्वर करता है) हमारा बोध वाक्य है। इसी दृष्टि से भारत माता (राष्ट्र) को समर्पित, पढ़ा–लिखा, योग्य एवं कुशल युवा तैयार करना संस्था का मुख्य उद्देश्य है। वस्तुतः महाविद्यालय द्वारा योजनापूर्वक गुणवत्तायुक्त शिक्षा के साथ ईश्वर में आस्था एवं लोक–कल्याण की प्रवृत्ति के विकास हेतु परिसर संस्कृति का निर्माण किया गया है। महाविद्यालय के उद्देश्य, लक्ष्य, दृष्टिकोण एवं कार्यशैली का प्रसार महाविद्यालय की वार्षिक विवरणिका, महाविद्यालय परिसर में लगे बोर्ड, परिसर भवन की दीवाल, महाविद्यालय की वेबसाइट एवं सृजित परिसर संस्कृति के माध्यम से होता है। वर्ष में दो बार (2 अक्टूबर–26 जनवरी) शिक्षक–अभिभावक बैठक के माध्यम से अभिभावकों तक महाविद्यालय का उद्देश्य, लक्ष्य, दृष्टिकोण पहुँचता है। कार्यशैली परिसर में स्वतः दृष्टिगत होती है। महाविद्यालय के अभिनव प्रयोगों का समाचार पत्र–पत्रिकाओं में उल्लेख के साथ–साथ भी महाविद्यालय का उद्देश्य, लक्ष्य, दृष्टिकोण एवं कार्यशैली विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं समाज के अन्य वर्गों तक पहुँचता रहता है।

हमारा पाठ्यक्रम दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर की पाठ्यक्रम समितियों द्वारा निर्धारित है। महाविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम को विद्यार्थी तक पहुँचाने के लिए शिक्षकों की वार्षिक योजना बैठक में योजना बनाई जाती है। योजना बैठक में अवकाश एवं कार्य दिवस को ध्यान में रखकर सभी विषयों का वार्षिक पाठ्यक्रम योजना बनाने का निर्णय होता है। वर्तमान शैक्षिक सत्र का 16 जुलाई से 14 फरवरी तक का पाठ्यक्रम योजना तैयार कर 15 जुलाई तक महाविद्यालय की वेबसाइट पर डाल दिया जाता है। पूर्व घोषित पाठ्यक्रमानुसार स्नातक द्वितीय एवं तृतीय वर्ष तथा स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष की कक्षाएँ 16 जुलाई से शिक्षक पढ़ाता है। प्रथम वर्ष की कक्षाएँ एक अगस्त से प्रवेश पूर्ण कर प्रारम्भ कर दी जाती हैं। प्रत्येक कक्षा में शिक्षक द्वारा सारांश की छायाप्रति प्रत्येक विद्यार्थी को दिया जाता है। पिछले दिन के सारांश पर प्रश्नोत्तर के साथ कक्षा प्रारम्भ की जाती है। प्रत्येक शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार पावर प्वाइंट का प्रयोग किया जाता है। विद्यार्थियों के बीच समूह चर्चा के आधार पर भी अध्ययन कराया जाता है।

महाविद्यालय के शिक्षक विश्वविद्यालय के वरिष्ठ आचार्यों को विभाग में आमंत्रित करते हैं, आचार्यों को आने–जाने की व्यवस्था महाविद्यालय करता है। विश्वविद्यालय के वर्तमान एवं अवकाश प्राप्त अपने–अपने विषय के विशेषज्ञ आचार्य सहर्ष समय निकालकर आते हैं। इस कार्य में प्राचार्य एवं प्रबंधक

विशेष रुचि रखते हैं। प्राचार्य एवं विभागीय शिक्षक उनके साथ बैठक में पाठ्यक्रम के एक–एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु को समझते हैं। इन आचार्यों से शिक्षक सदैव सम्पर्क में रहता है। आवश्यकतानुसार शिक्षक उनसे परामर्श करता है। कुछ मौलिक विषयों पर विषय–विशेषज्ञों द्वारा छात्र–छात्राओं की कक्षा भी पढ़ाई जाती है और शिक्षक भी उस कक्षा में उपस्थित रहता है। इस दशा में आमंत्रित विषय–विशेषज्ञ को मानदेय भी दिया जाता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम एवं उसके उद्देश्य विद्यार्थी तक भलीभाँति पहुँचाया जाता है।

विभाग का शिक्षक विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं महानगर में स्थित अन्य महाविद्यालय के सम्बन्धित विषय के शिक्षकों के सम्पर्क में बने रहते हैं और उन लोगों के द्वारा बीच–बीच में कक्षाध्यापन कराने का सार्थक प्रयत्न किया जाता है। ताकि विद्यार्थियों में उस विषय की जानकारी समझदारी के रूप में विकसित हो जाय।

प्रतिवर्ष पाठ्यक्रम समिति की बैठक से पूर्व अपने विषय से सम्बन्धित पाठ्यक्रम में उपयोगी संशोधन करने और विकसित करने का सुझाव दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम समिति के पदेन अध्यक्ष विभागाध्यक्ष को भेजा जाता है। पाठ्यक्रम समिति के सदस्यों से मिलकर उसे लागू करने पर बल दिया जाता है और इसके सार्थक परिणाम प्राप्त होते हैं। इस प्रकार के पत्र भेजने से पहले विद्यार्थियों से भी सुझाव मांगे जाते हैं तथा उनकी उचित बात सम्मिलित की जाती है।

महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों एवं आस–पास के गाँवों की छात्राओं एवं महिलाओं के लिए चार प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। इनके पाठ्यक्रम महाविद्यालय प्राचार्य द्वारा गठित समिति द्वारा आपस में विचार–विमर्श कर, शिक्षकों की मासिक बैठक में सभी से सुझाव लेकर तैयार किए गये। बाह्य विशेषज्ञों के सुझाव एवं समीक्षा के पश्चात पाठ्यक्रम को संशोधित किया गया। तत्पश्चात प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम संचालन का प्रस्ताव प्रबन्ध समिति के पास भेज दिया गया। प्रबन्ध समिति द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत होने एवं आवश्यकतानुसार वार्षिक बजट में इस मद का बजट स्वीकृत हो जाने के पश्चात पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

प्राचार्य द्वारा निरन्तर इस बात की निगरानी रखी जाती है कि पाठ्यक्रमानुसार कक्षाएं पढ़ाई जा रही है। प्राचार्य द्वारा अभिभावकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से निरन्तर फीड बैक लिया जाता है। विषय–विशेषज्ञों की टीम द्वारा कक्षाओं की एकेडमिक आडिट कराई जाती है और उसकी रपट से शिक्षक को प्रोत्साहित किया जाता है एवं आवश्यक सुधार का सुझाव दिया जाता है।

1.2 शैक्षणिक लचीलापन

महाविद्यालय द्वारा अपने विद्यार्थियों के कौशल एवं चरित्र विकास तथा आस–पास की महिलाओं तथा गरीब छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से निःशुल्क चार प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनका विवरण निम्नवत है–

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	प्रारम्भ होने की तिथि	अवधि
1	कम्प्यूटर प्रशिक्षण	16 जुलाई 2009	6 माह
2	सिलाई–कढ़ाई प्रशिक्षण	13 अक्टूबर 2010	6 माह
3	हमारे महापुरुष	01 अगस्त 2013	6 माह
4	जीवन–मूल्य	01 अगस्त 2013	6 माह

महाविद्यालय को सम्बद्धता प्रदान करने वाले दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर में दोहरी डिग्री की सुविधा नहीं है।

स्नातक स्तर पर महाविद्यालय का शैक्षिक लचीलापन नीचे दिए गए तुलनात्मक सारणी से स्पष्ट है। महाविद्यालय स्नातकोत्तर स्तर पर अधिकतम विषयों के चयन की उपलब्धता हेतु निरन्तर प्रयासरत है। चार नए विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की प्रक्रिया प्रारम्भ है और सम्बद्धता प्राप्ति के विभिन्न स्तरों पर पत्रावलियाँ निस्तारित हो रही हैं। स्नातक डिग्री प्राप्त करने के लिए राष्ट्र गौरव, पर्यावरण एवं मानवाधिकार पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में महाविद्यालय अपने स्तर पर आवश्यक समझते हुए अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को जोड़कर इसका अध्यापन कराता है। आवश्यकतानुसार बाह्य विशेषज्ञों का व्याख्यान कराता है।

यूजी / पीजी		विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत विषय विकल्पों की संख्या	महाविद्यालय द्वारा निर्वाचित विषयों की संख्या
यूजी	बी.ए.	16	10
	बी.एस–सी.	10	08
	बी.कॉम.	03	03
पीजी	एम.ए.	16	01
	एम.एस–सी.	08	01
	एम.काम.	01	प्रस्तावित

महाविद्यालय पूर्णतः स्ववित्तपोषित योजनान्तर्गत संचालित है। अतः सारे पाठ्यक्रम स्ववित्तपोषित हैं।

महाविद्यालय के दो निःशुल्क प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में एवं ग्रामीण महिलाओं में अतिरिक्त कौशल उत्पन्न करने की दृष्टि से चलाए जाते हैं। ये पाठ्यक्रम स्थानीय स्तर पर रोजगार प्रदान करने वाले हैं।

1– महाविद्यालय द्वारा संचालित योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सिलाई–कढ़ाई केन्द्र गरीब ग्रामीण महिलाओं एवं छात्राओं को सिलाई–कढ़ाई का प्रशिक्षण देकर उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकें।

2– कम्प्यूटर प्रशिक्षण के अन्तर्गत महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं निकटस्थ गाँवों के इच्छुक छात्राओं को निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिया जाता है। वर्तमान समय में प्रत्येक कार्यालय, प्रकाशन, कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षित युवाओं की आवश्यकता को देखते हुए यह प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे कि विद्यार्थी विशेषकर छात्राएँ कम्प्यूटर की दक्षता प्राप्त कर योग्यतानुसार स्थानीय बाजार में रोजगार प्राप्त कर सकें।

उपर्युक्त प्रमाण–पत्र कार्यक्रम के अन्तर्गत विगत चार शैक्षिक सत्रों में लाभार्थियों का विवरण निम्नवत प्रस्तुत है–

सत्र	उत्तीर्ण प्रशिक्षुओं की संख्या			
	सिलाई–कढ़ाई		कम्प्यूटर प्रशिक्षण	
	महाविद्यालय के छात्र	आसपास के लोग	महाविद्यालय के छात्र	आसपास के लोग
2010–11	30	30	95	25
2011–12	30	30	100	20
2012–13	35	25	80	40
2013–14	30	30	84	36

महाविद्यालय में जीवन–मूल्य संवर्धन के दो निःशुल्क पाठ्यक्रम भी संचालित हैं, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों में मानव जीवन–मूल्यों के प्रति भारत की महान सांस्कृतिक परम्परा, महापुरुषों की श्रृंखला से प्रेरणा ग्रहण कर स्वयं के जीवन–मूल्य विकसित करने का अवसर देना है, जिससे कि उनमें किसी भी कार्य को करने की दक्षता बढ़ सके और वे रोजगार बाजार में भी अपनी ईमानदारी, सच्चरित्रता एवं कर्मठता के बल पर स्थान बना सकें। ये पाठ्यक्रम निम्न हैं–

1–हमारे महापुरुष–पाठ्यक्रम में सम्मिलित महापुरुषों के जीवन के प्रेरणाप्रद प्रसंगों को विद्यार्थियों के समक्ष रख कर, उनके बारे में अध्ययन एवं वर्तमान की समस्याओं पर उनकी भूमिका पर चिंतन के अवसर प्रदान किए जाते हैं। यह पाठ्यक्रम योग्य नागरिक गुणों का विकास करने में भी सक्षम हुआ है।

2–जीवन–मूल्य–पाठ्यक्रम में मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों पर चर्चा–परिचर्चा, चिंतन, लेखन आदि के आधार पर समाज और राष्ट्र के लिए जीवन–मूल्य सृजन करने का प्रयत्न किया जाता है।

विश्वविद्यालय में दूरस्थ शिक्षा का प्रावधान नहीं। राजर्षि टण्डन मुक्त वि.वि. या इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय का केन्द्र खोलने के प्रयास चल रहा

1.3 पाठ्यक्रम संवर्धन

महाविद्यालय द्वारा इस बात पर बल दिया जाता है कि शिक्षक अपनी–अपनी कक्षाओं में पाठ्यक्रम पढ़ाते समय उसकी उपयोगिता सामाजिक–राष्ट्रीय जीवन के साथ उसका सम्बन्ध परिभाषित करते हुए विद्यार्थियों में योग्य नागरिक एवं सामाजिक सेवा के गुण उत्पन्न करने का प्रयत्न करें। विज्ञान विषयों की कक्षाओं में यह बताने का प्रयत्न रहता है कि विद्यार्थी विज्ञान के माध्यम से प्राकृतिक नियम समझें। इस माध्यम से मानव के जीवनमूल्य, व्यवहार और प्राकृतिक न्याय के बीच अन्तर–सम्बन्धों को प्रस्तुत कर महाविद्यालय अपने उद्देश्य एवं लक्ष्य प्राप्ति के प्रति सचेष्ट रहता है। महाविद्यालय के शिक्षकों–विद्यार्थियों के बीच संवाद द्वारा अनुभव किए गए पाठ्यक्रम में आवश्यकतानुसार व्याख्यान जोड़कर उसे अध्ययन–अध्यापन का हिस्सा बनाया जाता है। पूरक पाठ्यक्रम बनाने में सम्बन्धित विषय के बाह्य विशेषज्ञों की भी

सहायता ली जाती है। इस प्रकार संस्था के लक्ष्य और उद्देश्य को पाठ्यक्रम के माध्यम से पूर्ण करने का प्रयास किया जाता है।

प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्रों के ज्ञान, उनके अनुभव एवं उनकी आवश्यकता और रोजगार पाने की क्षमता तथा समाज में उस ज्ञान की हर क्षण उपयोगिता उत्पन्न करने के लिए संस्थान के शिक्षक–प्राचार्य सदैव प्रयत्नशील हैं। इसके लिए सतत चिन्तन–मनन करने और उसे लागू करने के लिए एक समिति बनाई गई है, जो प्रत्येक दो माह पर इसकी निगरानी करती है।

संस्था जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय शिक्षा, मानवाधिकार, आई.सी.टी., लिंगभेद, जनसंख्या वृद्धि, वैश्वीकरण का प्रभाव जैसे बिन्दुओं पर अपने छात्रों को जागरूक बनाने और इसकी समझदारी देने की दिशा में छोटे–छोटे पाठ्यक्रम आधारित व्याख्यान बनाकर उनको प्रशिक्षित और सक्षम बनाती है। ऐसा करने में व्याख्यान के दिन कक्षाएं 40 मिनट की होती हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ठोस कार्य योजनानुसार प्रयत्न किया जा रहा है। पर्यावरण एवं मानवाधिकार के पाठ्यक्रम राष्ट्रगौरव की व्यवस्थित कक्षाओं के माध्यम से भी विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाता है तथा उन्हें इनका समुचित ज्ञान कराया जाता है।

विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु मूल्य संवर्धन के कार्यक्रम परिसर संस्कृति का हिस्सा है, तथापि इस दिशा में किए जाने वाले प्रयास निम्नवत है–

- सदाचार एवं नैतिक मूल्य के लिए प्रार्थना सभा, प्रतिष्ठित शिक्षाविदों के व्याख्यान, प्राचार्य एवं शिक्षकों द्वारा निरन्तर विद्यार्थियों से संवाद, छात्रसंघ की साधारण सभा इत्यादि विविध कार्यक्रम एवं आयोजन प्रतिवर्ष नियमित एवं परम्परागत रुप से किए जाते हैं। 'हमारे महापुरुष' एवं 'जीवन–मूल्य' प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम से भी यह उद्देश्य पूर्ण हो रहा है।
- नियोजनीय और जीवन कौशल के लिए प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उदाहरणार्थ कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं सिलाई–कढ़ाई प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम का संचालन उपयोगी है।
- समुदाय उन्मुखीकरण हेतु महाविद्यालय द्वारा आस–पास के गांवों में निरन्तर विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत किये जा रहे प्रयत्न प्रभावकारी हैं।

अभिभावकों एवं पुरातन छात्र परिषद् की बैठकों से प्राप्त फीडबैक एवं विद्यार्थियों से संवाद आधारित सुझाव एवं अनुभव के आधार पर सात विभागों द्वारा पूरक पाठ्यक्रम बनाकर अध्यापन किया जाता है। ये सात विभाग हैं–

1. रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन
2. अर्थशास्त्र
3. प्राचीन इतिहास
4. रसायनशास्त्र
5. वनस्पति विज्ञान
6. अंग्रेजी
7. हिन्दी

महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा गठित पाठ्यक्रम संवर्धन समिति सम्पूर्ण संवर्धन कार्यक्रमों की निगरानी करती है। विद्यार्थियों के मूल्यांकन के आधार पर गुणवत्ता का निर्धारण होता है। प्राचार्य द्वारा बाह्य विशेषज्ञों से भी संवर्धन पाठ्यक्रमों एवं कार्यक्रमों के परिणामों का समय–समय पर मूल्यांकन कराया जाता है।

1.4 प्रतिक्रिया प्रणाली

पाठ्यक्रम की संरचनात्मक विकास के प्रति महाविद्यालय के शिक्षक सचेष्ट एवं क्रियाशील रहते हैं। शिक्षकों की मासिक बैठक, बाह्य विशेषज्ञों के साथ वार्षिक बैठक एवं कार्यशाला में पाठ्यक्रम पर विद्यार्थियों से प्राप्त सुझाव एवं शिक्षकों के स्वयं के सुझाव पर सावधानीपूर्वक विचार–विमर्श कर आवश्यक जानकारी के लिए शिक्षक द्वारा पूरक पाठ्यक्रम बनाकर पढ़ाया जाता है तथा पाठ्यक्रम में परिवर्तन एवं संवर्धन सम्बन्धी प्रस्ताव दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के सम्बन्धित विषय की पाठ्यक्रम समिति के अध्यक्ष (विभागाध्यक्ष) के पास भेजा जाता है। महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा भेजे गए इन प्रस्तावों पर प्राचार्य भी स्वयं विभागाध्यक्षों से मिलकर चर्चा करते हैं। पाठ्यक्रमों में कई संशोधन महाविद्यालय की पहल पर किए गए हैं। महाविद्यालय के शिक्षकों के सुझाव पर पाठ्यक्रम में संशोधन के दो उदाहरण प्रस्तुत है।

स्नातक स्तर पर हिन्दी के पाठ्यक्रम में बदलाव–

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की पाठ्यक्रम समिति को 2009 ई. में पाठ्यक्रम में संशोधन का प्रस्ताव महाविद्यालय द्वारा भेजा गया और पाठ्यक्रम समिति द्वारा प्रस्ताव स्वीकार कर पाठ्यक्रम में संशोधन किया गया। महाविद्यालय ने शिक्षक–छात्रों के सुझाव पर यह प्रस्ताव भेजा था कि स्नातक कला प्रथम वर्ष के हिन्दी द्वितीय प्रश्नपत्र में मध्ययुगीन काव्य तथा स्नातक तृतीय वर्ष के प्रथम प्रश्नपत्र में आधुनिक काव्य पढ़ाया जा रहा है। चूंकि मध्ययुगीन काव्य विस्तारित होने तथा भाषा की विविधता के कारण आधुनिक काव्य की अपेक्षा कठिन है और नवागत विद्यार्थियों को समझने में कठिनाई होती है। जबकि आधुनिक काव्य अपेक्षाकृत समझने में आसान है। अतः आधुनिक काव्य स्नातक कला प्रथम वर्ष में तथा मध्ययुगीन काव्य अन्तिम वर्ष में पढ़ाया जाय। महाविद्यालय का यह प्रस्ताव स्वीकार कर पाठ्यक्रम समिति ने पाठ्यक्रम परिवर्तित कर दिया।

स्नातक स्तर के अंग्रेजी विषय के पाठ्यक्रम में परिवर्तन–

स्नातक कला तृतीय वर्ष में कविता, गद्य एवं नाटक के प्रकार पढ़ाया जाता था, जबकि प्रथम वर्ष में इसे पढ़ाने से विद्यार्थी को तीनों सत्रों में इन्हें समझने और पढ़ने में आसानी होती। 2009 ई. में महाविद्यालय के शिक्षकों–छात्रों के सुझाव पर पाठ्यक्रम में परिवर्तन का सुझाव अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष के माध्यम से पाठ्यक्रम समिति को भेजा गया। पाठ्यक्रम समिति ने सत्र 2010–11 में यह प्रस्ताव स्वीकार कर स्नातक प्रथम वर्ष के प्रथम प्रश्नपत्र में

'कविता' के प्रकार, द्वितीय प्रश्नपत्र में गद्य के प्रकार तथा द्वितीय वर्ष के द्वितीय प्रश्नपत्र में ड्रामा के प्रकार पाठ्यक्रम स्वीकृत कर दिया।

पिछले चार शैक्षिक सत्रों में महाविद्यालय द्वारा शुरू किए गए नवीन पाठ्यक्रमों का विवरण—

स्नातक / परास्नातक	संकाय	विषय	सम्बद्धता वर्ष	औचित्य / आवश्यकता
स्नातक	कला संकाय	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, मनोविज्ञान, मध्यकालीन इतिहास	2010–2011	शैक्षणिक लचीलापन बढ़ाना
	विज्ञान संकाय	कम्प्यूटर साइंस, इलेक्ट्रानिक्स, सांख्यिकी	2010–2011	शैक्षणिक लचीलापन बढ़ाना
परास्नातक	विज्ञान	रसायनशास्त्र	2010–2011	अभिभावकों / छात्रों के मांग पर
	कला	प्राचीन इतिहास	2010–2011	भारतीय संस्कृत एवं प्राचीन गौरव से अवगत कराना

– स्नातक विज्ञान में जीव विज्ञान समूह के विद्यार्थियों को कम्प्यूटर साइंस पढ़ने का विधान दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा नहीं है क्योंकि यह विषय 'गणित' समूह में स्वीकृत है। जबकि कम्प्यूटर साइंस विज्ञान के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उपयोगी है। महाविद्यालय द्वारा इस सन्दर्भ में दो बार पत्र विज्ञान संकायाध्यक्ष, प्राणि विज्ञान के अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष एवं कुलपति महोदय को भेजा गया है।

– सभी विषयों में उनकी उपयोगितानुसार स्थानीय सामाजिक–आर्थिक समस्याओं के अध्यक्ष एवं उनके निदान के उपाय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। यह सुझाव अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, भूगोल, वनस्पतिशास्त्र, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्षों एवं आचार्यों को प्राचार्य द्वारा मिलकर दिया जाता रहा है।

मापदण्ड–II
शिक्षण–अधिगम और मूल्यांकन

2.1 छात्र नामांकन और प्रोफाइल

जून माह में ही महाविद्यालय का पूर्ण विवरण, पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम, विषय संयुक्तता, छात्रवृत्ति की सुविधा, पुस्तकालय–प्रयोगशाला की विशेषताएँ, महाविद्यालय की परिसर संस्कृति सहित विस्तृत जानकारी के साथ महाविद्यालय की विवरणिका प्रकाशित की जाती है एवं विवरणिका वेबसाइट पर उपलब्ध करा दी जाती है। समाचार–पत्रों में भी प्रवेश सम्बन्धी सूचनाएँ निरन्तर प्रकाशित करायी जाती है। इस प्रकार महाविद्यालय में प्रवेश सम्बन्धी विस्तृत सूचनाओं का प्रचार–प्रसार पूर्ण व्यवस्थित एवं नियोजित ढंग से किया जाता है। प्रवेश आवेदन–पत्र महाविद्यालय के कार्यालय से तथा महाविद्यालय की वेबसाइट पर आन लाइन उपलब्ध रहने की तिथि (01 जून से 05 जुलाई) स्थापना काल से ही सुनिश्चित है, जिसका कठोरतापूर्वक पालन किया जाता है। इण्टरमीडिएट परीक्षा में प्राप्तांक एवं भारांक के आधार पर प्रवेश अर्हता सूची एक साथ 15 जुलाई को महाविद्यालय के सूचना पट्ट पर एवं वेबसाइट पर प्रकाशित कर दिया जाता है। इसी अर्हता सूची के आधार पर वरीयता क्रम में निर्धारित तिथियों में प्रवेश हेतु साक्षात्कार लिया जाता है। साक्षात्कार हेतु दो बोर्ड बैठता है–पहला विद्यार्थियों का और दूसरा शिक्षकों का। विद्यार्थियों के साक्षात्कार बोर्ड हेतु गत सत्र विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में सभी संकायों की सभी कक्षाओं के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रवेश समिति का सदस्य मनोनीत कर दिया जाता है। साक्षात्कार के समय प्रवेशार्थी को सर्वप्रथम अपने सभी मूल अंक पत्र एवं प्रमाण पत्र के साथ विद्यार्थियों के बोर्ड के समक्ष साक्षात्कार हेतु प्रस्तुत होना पड़ता है जहाँ मूल अंक पत्र एवं प्रमाण पत्र की जाँच एवं विषय सम्बन्धी जानकारी का साक्षात्कार द्वारा मूल्यांकन कर यह बोर्ड प्रवेश आवेदन पत्र के निर्धारित स्थान पर ग्रेड प्रदान कर प्रवेशार्थी को शिक्षकों के बोर्ड के पास भेज देता है। शिक्षकों के बोर्ड द्वारा विषय ज्ञान का साक्षात्कार द्वारा परीक्षण कर प्रवेश आवेदन पत्र पर ग्रेड दे दिया जाता है। तत्पश्चात् प्रवेशार्थी प्राचार्य/प्रवेश समिति संयोजक के समक्ष उपस्थित होता है जहाँ उसे प्राप्त ग्रेड के आधार पर प्रवेश की संस्तुति कर दी जाती है। इस संस्तुति के बाद प्रवेशार्थी कार्यालय में अपना प्रवेश शुल्क जमा कर रसीद, छात्रवृत्ति आवेदन पत्र, समय सारणी, पुस्तकालय कार्ड एवं परिचय पत्र एक साथ प्राप्त कर लेता है। समय–सारणी में 01 अगस्त से कक्षाएं चलने की स्पष्ट सूचना रहती है। प्रवेश प्रक्रिया में शासन एवं विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित नियम तथा आरक्षण नियमों का सावधानीपूर्वक पालन किया जाता है।

महाविद्यालय में सत्र 2014–15 हेतु विविध पाठ्यक्रमों में अधिकतम एवं न्यूनतम प्राप्तांक प्रतिशत तथा महानगर गोरखपुर के प्रतिष्ठित महाविद्यालय के साथ तुलनात्मक विवरण नीचे तालिका में दिया जा रहा है–

पाठ्यक्रम	महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज जंगल धूसड़, गोरखपुर		दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज गोरखपुर	
	अधिकतम मेरिट	न्यूनतम मेरिट	अधिकतम मेरिट	न्यूनतम मेरिट
बी.ए.– I	82.40	54.00	92.60	35.80
बी.एस–सी.– I	87.60	54.00	92.60	51.00
बी.काम.– I	88.80	52.30	90.40	64.20
एम.ए.– I	92.90	50.40	57.89	41.33
एम.एस–सी.– I	61.00	55.00	महाविद्यालय में पाठ्यक्रम नहीं	

प्रति सत्र मार्च माह की समीक्षा बैठक में प्रवेश प्रक्रिया की समीक्षा की जाती है और आवश्यकतानुसार संशोधन अगले सत्र के लिए तय हो जाता है। इसी बैठक में अगली प्रवेश समिति एवं प्रवेश प्रक्रिया घोषित कर दी जाती है। इस समीक्षा प्रक्रिया से प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर शान्ति पूर्ण पारदर्शी प्रवेश प्रक्रिया सुस्थापित हो चुकी है।

महाविद्यालय में प्रवेश के लिए इच्छुक प्रवेशार्थियों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ी जाति, आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग, शारीरिक रूप में विकलांग वर्ग के छात्र–छात्राओं और विशेष रुप से ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं को महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने की पारदर्शी सुविधा मिल सके, इसके लिए प्रवेश समिति द्वारा आरक्षण और भारांक की व्यवस्था की गई है। इसका स्पष्ट उल्लेख महाविद्यालय की विवरणिका एवं वेबसाइट पर रहता है। इस प्रकार संस्था ग्रामीण अंचल के विविधता पूर्ण क्षेत्रों से विद्यार्थियों को समुचित प्रवेश देने एवं उन्हें आगे पढ़ने की सुविधा प्रदान करने की राष्ट्रीय नीति का अनुपालन करने के लिए कार्यवद्ध है।

पिछले चार शैक्षिक–सत्रों में महाविद्यालय में चलाए जाने वाले सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश का विवरण निर्धारित तालिकानुसार नीचे दिया जा रहा है।

कार्यक्रम	2010–11			2011–12			2012–13			2013–14		
	आवेदन पत्रों की संख्या	भर्ती छात्रों की संख्या	मांग अनुपात	आवेदन पत्रों की संख्या	भर्ती छात्रों की संख्या	मांग अनुपात	आवेदन पत्रों की संख्या	भर्ती छात्रों की संख्या	मांग अनुपात	आवेदन पत्रों की संख्या	भर्ती छात्रों की संख्या	मांग अनुपात
स्नातक												
बी.ए.– I	250	131	1.90:1	403	203	1.98:1	850	388	2.19:1	1026	352	2.91:1
बी.एस–सी.– I	200	125	1.58:1	240	119	2.01:1	600	191	3.14:1	900	201	4.47:1
बी.काम.– I	205	096	2.3:1	730	275	2.65:1	905	274	3.30:1	1068	280	3.81:1
परास्नातक												
एम.ए.– I	25	25	1:1	05	04	1.66:1	35	16	2.18:1	26	08	3.25:1
एम.एस–सी.– I	60	40	2:1	62	26	2.38:1	80	29	2.75:1	45	15	3.00:1
प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम												
सिलाई–कढ़ाई	120	60	2:1	128	60	1.45:1	130	60	2.16:1	152	60	2.53:1
कम्प्यूटर प्रशि.	200	120	1.66:1	205	120	2.11:1	250	120	2.08:1	298	120	2.48:1
हमारे महापुरुष	–	–	–	–	–	–	–	–	–	180	60	3.00:1
जीवन मूल्य	–	–	–	–	–	–	–	–	–	182	60	3.03:1

2.2 छात्र विविधता के लिए आवश्यकताएं पूरी करना

विकलांग छात्रों के सहयोग के लिए प्राचार्य की अध्यक्षता में एक समिति गठित है जो इस दिशा में निरन्तर सचेत रहती है, उन विद्यार्थियों के लिए समुचित सुविधा प्रदान करने की व्यवस्था सुनिश्चित करती है। समिति समय–समय पर उनकी आर्थिक आवश्यकताओं का भी आकलन कर संस्तुत करती है, जिसे प्राचार्य द्वारा प्रबन्धक महोदय की स्वीकृति से लागू किया जाता है।

प्रवेश प्रक्रिया के समय से ही साक्षात्कार में ज्ञान–बुद्धिकौशल का मूल्यांकन कर विद्यार्थी को पाठ्यक्रम को समझने लायक बनाने की दिशा में पृथक प्रयत्न किया जाता है, यदि वह उस लायक नहीं बन पाता तो दूसरे संकाय में पढ़ने हेतु उन्हें प्रेरित कर संकाय परिवर्तन की सुविधा प्रदान की जाती है तथा उनके अध्ययन को आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है।

ऐसे विद्यार्थियों के लिए अलग से उपचारात्मक कक्षाएं चलाने की व्यवस्था की गई है, जिससे कि वह अपनी कमजोरी को दूर कर पढ़ने लायक बन सके।

महाविद्यालय विविध सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति अपने शिक्षकों, विद्यार्थियों को जागरुक करने के लिए सन्दर्भित विषयों पर आमंत्रित विद्वानों के विशेष व्याख्यान आयोजित करता है। महाविद्यालय के शिक्षकों के भी इन विषयों पर व्याख्यान कराये जाते हैं। विविध कार्यक्रमों एवं आयोजनों के माध्यम से भी महाविद्यालय परिवार को निरन्तर सामाजिक राष्ट्रीय मुद्दों पर संवेदनशील बनाने का प्रयत्न किया जाता है। कोई सत्र ऐसा नही है जबकि सामाजिक समरसता, अश्पृश्यता, रक्तदान, पर्यावरण, लिंगभेद, आर्थिक विषमता, अल्पसंख्यक एवं वनवासियों के प्रति संवेदनशीलता, ग्रामीण विकास, स्वच्छता, इंसेफेलाइटिस जैसी महामारी से बचाव के उपाय जैसे विषयों पर व्याख्यान / परिचर्चा / सम्मेलन सम्पन्न न हुए हों।

महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा शैक्षिक सत्र 2014–15 में दिया गया अभिरुचिकारी व्याख्यान–

सत्र 2010–2011			
शिक्षक का नाम	विभाग	अभिरुचिपरक व्याख्यान	तिथि
डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	रक्षा अध्ययन	नक्सलवाद का विस्तार तथा निवारण के उपाय	01.08.2010 लोकमान्य तिलक महाप्रयाण
श्री प्रकाश प्रियदर्शी	समाजशास्त्र	सामाजिक जीवन में मूल्यों का स्थान–एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण	16.08.2010 रामकृष्ण परमहंस महाप्रयाण
डॉ. राजेश शुक्ला	वाणिज्य	कम्पनी एक परिचय	07.09.2010 विपिन चन्द्र पाल जयन्ती
डॉ. विजय कुमार चौधरी	भूगोल	भारतीय मानसून	06.12.2010 भीमराव अम्बेडकर महाप्रयाण
डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	वनस्पति विज्ञान	ई–वेस्ट : थ्रेट टू इन्वॉयरनमेंट	08.01.2011 लाला

			लाजपत राय जयन्ती
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	राजनीतिशास्त्र	भारतीय राष्ट्रपति की संवैधानिक एवं व्यावहारिक स्थिति	माघ पूर्णिमा संत रविदास जयन्ती

सत्र 2011–2012

डॉ. शालिनी सिंह	रसायनशास्त्र	सरफेस केमिस्ट्रि	01.08.2011 लोकमान्य तिलक महाप्रयाण
श्रीमती कविता मन्ध्यान	अंग्रेजी	फिल्म एण्ड साहित्य	16.08.2011 रामकृष्ण परमहंस महाप्रयाण
श्री लोकेश कुमार प्रजापति	प्राचीन इतिहास	स्कन्द कीर्तिकेय (मौद्रिक साक्ष्यों के आलोक में)	07.09.2011 विपिन चन्द्र पाल जयन्ती
सुश्री आम्रपाली वर्मा	वनस्पति विज्ञान	इन्डेन्जर्ड इंडियट फ्लोरा	06.12.2011 भीमराव अम्बेडकर महाप्रयाण
श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	गणित	लुब्रिकेशन ऑफ ह्यूमन ज्वाइंटस	08.01.2012 लाला लाजपत राय जयन्ती
डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	इतिहास	1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम एवं मंगल पाण्डेय	माघ पूर्णिमा संत रविदास जयन्ती

सत्र 2012–2013

श्री प्रदीप वर्मा	रसायनशास्त्र	एसिड बेस कान्सेप्ट	01.08.2012 लोकमान्य तिलक महाप्रयाण
सुश्री प्रियंका मिश्रा	रसायनशास्त्र	विटामिन्स	16.08.2012 रामकृष्ण परमहंस महाप्रयाण
श्रीमती शालिनी चौधरी	प्राचीन इतिहास	दिशा के स्तोत्र (मूल) एवं उनके देवता	07.09.2010 विपिन चन्द्र पाल जयन्ती
डॉ. संजय कुमार तिवारी	कम्प्यूटर साइंस	नेटवर्क एण्ड नेटवर्क सिक्योरिटी	06.12.2012 भीमराव अम्बेडकर महाप्रयाण
डॉ. राम सहाय	रसायनशास्त्र	फिजिकल टेक्निक्स इन केमिस्ट्री	08.01.2012 लाला लाजपत राय जयन्ती
श्री विरेन्द्र तिवारी	कम्प्यूटर साइंस	बेसिक स्किल्स इन प्रोग्रामिंग यूजिंग	माघ पूर्णिमा संत रविदास जयन्ती

सत्र 2013–14

डॉ. आरती सिंह	हिन्दी	वर्तमान में कबीर की प्रासंगिकता	01.08.2013 लोकमान्य तिलक महाप्रयाण
श्री विनय कुमार सिंह	जन्तु विज्ञान	इन्डोक्राइन सिस्टम	16.08.2013 रामकृष्ण परमहंस महाप्रयाण
श्री सुभाष कुमार गुप्ता	वाणिज्य	भारत में पूंजी बाजार	07.09.2013 विपिन चन्द्र पाल जयन्ती
श्री सुबोध कुमार मिश्र	प्राचीन इतिहास	वैदिक युगीन 'विदथ'	06.12.2013 भीमराव अम्बेडकर महाप्रयाण
डॉ. सुनील कुमार मिश्र	मनोविज्ञान	व्यक्तित्व की विमायें (आयाम)	08.01.2014 लाला लाजपत राय जयन्ती
सुश्री मनीता सिंह	भौतिक विज्ञान	इन्टरफरेन्स	माघ पूर्णिमा संत रविदास जयन्ती

महाविद्यालय द्वारा समय–समय पर कुशाग्रबुद्धि के विद्यार्थियों को चिन्हित कर लिया जाता है। इस कार्य हेतु महाविद्यालय द्वारा सुव्यवस्थित तन्त्र विकसित किया जा चुका है। साप्ताहिक कक्षाध्यापन, मासिक मूल्यांकन तथा विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा के माध्यम से पढ़ने में तेज विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें शिक्षकों के समान पुस्तकीय सुविधा, छात्रवृत्ति, इन्टरनेट, शिक्षकों द्वारा व्यक्तिगत ध्यान देकर सहयोग कर उन्हें और निखारने का प्रयत्न किया जाता है।

प्रबन्ध तन्त्र एवं प्राचार्य इस बात को लेकर सदैव सचेष्ट रहते हैं कि अलग–अलग समस्या समूह के विद्यार्थियों को चिन्हित कर उनका भरपूर सहयोग किया जाय जिससे कि किसी भी विद्यार्थी कि पढ़ाई बाधित न हो सके। कक्षा में प्रश्नोत्तर, संवाद, विद्यार्थी द्वारा साप्ताहिक कक्षाध्यापन, मासिक मूल्यांकन इत्यादि के आधार पर पढ़ाई के दौरान विद्यार्थियों की भिन्न–भिन्न श्रेणियाँ पहचान में आ जाती हैं। पढ़ने में कमजोर विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा अलग से अतिरिक्त समय देकर पढ़ाया जाता है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर विद्यार्थियों का नाम शिक्षक प्राचार्य को दे देता है। प्राचार्य द्वारा तथ्य की पुष्टि कर आर्थिक सहयोग सुनिश्चित किया जाता है। समाज में उपेक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के साथ परिसर में भेदभाव न हो, इसे लेकर प्रबन्धक तथा प्राचार्य अत्यन्त सजग रहते हैं। शिक्षकों को बराबर यह बात याद दिलाई जाती है कि वे सभी के साथ एक समान व्यवहार करें। प्रार्थना सभा, विविध महापुरुषों की जयन्ती–पुण्यतिथि पर प्रकारान्तर से सामाजिक सद्भाव, भेदभाव रहित आचरण–व्यवहार का सन्देश विद्यार्थियों में दिया जाता है। परिसर में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की सुविधा का पूरा ध्यान दिया जाता है।

2.3 शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया

महाविद्यालय की मार्च माह में सम्पन्न शिक्षकों की समीक्षा बैठक गत सत्र में शैक्षिक पंचांग तथा पाठ्यक्रम योजनानुसार शिक्षण व्यवस्था सम्पन्न हुई या कोई कमी रह गयी इस पर सूक्ष्म विचार किया जाता है। इसी के साथ–साथ मासिक मूल्यांकन, विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा के मूल्यांकन का विश्लेषण किया जाता है और इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि गुणवत्तापरक शिक्षण और छात्रों द्वारा गुणवत्तापरक अधिगम हुआ या कोई कमी रह गई। तद्नुसार यथोचित योजना निरन्तर गुणवत्ता अभिवृद्धि के लिए बनाई जाती है।

आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ नीति–निर्धारण की भूमिका में कार्य करती है। शिक्षकों की वार्षिक योजना बैठक से पूर्व आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ में शैक्षिक पंचांग, अवकाश, पाठ्यक्रम योजना की नीति, शिक्षण–प्रशिक्षण में नये प्रयोग, शिक्षण–प्रशिक्षण के पिछले सत्रों के अनुभव आदि पर विचार–विमर्श कर योजना–बैठक का विषय तैयार किया जाता है।

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति एवं प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय की स्थापना काल से ही पूरी व्यवस्था विद्यार्थी केन्द्रित विकसित की गई। विद्यार्थी केन्द्रित अधिगम हेतु निम्नलिखित योजनाएँ सुस्थापित परम्परा का रूप ले चुकी है–

1. विद्यार्थियों द्वारा साप्ताहिक कक्षाध्यापन।
2. विद्यार्थियों द्वारा मासिक दीवाल पत्रिका का प्रकाशन।
3. विद्यार्थियों में समूह चर्चा।
4. विद्यार्थियों द्वारा कार्यक्रमों का संचालन एवं कार्यक्रमों में उद्बोधन।
5. विद्यार्थियों के द्वारा विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन।
6. महाविद्यालय प्रशासन में छात्र सहभाग।
7. विद्यार्थियों के आचरण एवं व्यवहार का मूल्यांकन।

महाविद्यालय में उपर्युक्त प्रयत्न एवं नित–नूतन प्रयोग पठन–पाठन को विद्यार्थी केन्द्रित बनाने के प्रयास की ही कड़ी है। छात्रसंघ की कार्य प्रणाली का क्रमिक विकास एवं वर्ष भर उसकी सक्रियता विद्यार्थी केन्द्रित पठन–पाठन व्यवस्था का ही परिणाम है।

महाविद्यालय में विद्यार्थी के व्यक्तित्त्व विकास के निम्नलिखित प्रयत्न किये जाते हैं–

1. सर्तक चिन्तन को बढ़ावा देने की दिशा में विविध कार्य विद्यार्थियों को करने के लिए अकेले में एवं समूह में दिए जाते हैं।
2. कार्य दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से महाविद्यालय–प्रशासन में विद्यार्थियों का प्रत्यक्ष सहयोग लिया जाता है। शिक्षकों के निर्देशन में वह प्रशासनिक समितियों में कार्य करता है एवं विविध प्रतियोगिताओं, समारोहों, कार्यक्रमों का आयोजन करता है।
3. वैज्ञानिक रूचि उत्पन्न करने की दृष्टि से प्रतिवर्ष शोध व्याख्यान प्रतियोगिताएं, हस्तलिखित पत्रिका, 'चेतक' पत्रिका का प्रशासन, सम्बन्धित विषयों पर आमंत्रित विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं।

4. महाविद्यालय विद्यार्थियों में नियमित अध्ययन करने, निरन्तर सीखते रहने की प्रवृत्ति के विकास का योजनापूर्वक प्रयत्न करता है, जिससे कि उनमें जीवन पर्यन्त सीखने के स्थायी भाव का निर्माण हो सके।
5. महाविद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास का प्रयत्न इस दृष्टि से भी करता है कि वे इतने समझदार हो जाय कि हर कार्य में स्वयं प्रयत्न कर अपनी रचनात्मकता दिखा सकें, अन्धानुकरण न करे।

प्रभावी शिक्षण हेतु अत्याधुनिक तकनीकों की उपलब्धता एवं उनके प्रयोग हेतु महाविद्यालय अत्यन्त सजग है। प्रयत्न पूर्वक अपनी सामर्थ्यानुसार इन्टरनेट, कम्प्यूटर, दृश्य–श्रव्य उपकरण, तृविमीय चित्र, स्लाइड प्रोजक्टर, ओवरहेड प्रोजेक्टर, एल.सी.डी. प्रोजेक्टर आवश्यकतानुसार संख्या में उपलब्ध हैं। शिक्षण में इनका प्रचुरता से प्रयोग किया जाता है। महाविद्यालय राष्ट्रीय ज्ञान–संजाल (NKN) से जुड़ने हेतु प्रयत्नशील है।

शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के ज्ञान एवं कौशल के विकास के लिए संस्था निरन्तर प्रयत्नशील रहती है। विषय विशेषज्ञों द्वारा विविध व्याख्यान, कार्यशाला, संगोष्ठी, संवाद, परिचर्चा इत्यादि के माध्यम से महाविद्यालय अद्यतन बना रहता है। इन कार्यक्रमों की कार्यवाही/शोधपत्र/अभिमत प्रकाशित किया जाता है।

विद्यार्थियों को पठन–पाठन, अभिरुचि के क्षेत्र में विकास करने, आगे के पाठ्यक्रमों, व्यावसायिक कार्य की दिशा में कार्य करने, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक सहभाग के लिए सुझाव एवं परामर्श देने हेतु महाविद्यालय के स्थापना काल से ही 'सुझाव एवं परामर्श' समिति कार्य करती है। यह समिति योजनापूर्ण ढंग से स्वयं नियमित कार्य करती है। आवश्यकतानुसार समय–समय पर बाह्य विशेषज्ञों एवं मनोवैज्ञानिकों को आमंत्रित कर विद्यार्थियों को लाभान्वित करने का प्रयत्न करती है। इस कार्य से बड़ी संख्या में विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं।

अपने स्थापना काल से अब तक के नौ वर्षों में शिक्षकों द्वारा अपनायी गई अभिनव शैक्षिक प्राविधियाँ नीचे दी जा रही हैं–

1. पूर्व घोषित एवं पूर्व तैयार पाठ्यक्रम–योजना विद्यार्थियों को प्रत्येक सत्र में 15 जुलाई तक वेबसाइट के माध्यम से उपलब्ध करा दिया जाता है।
2. प्रतिदिन प्रत्येक कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को व्याख्यान–सारांश की छायाप्रति उपलब्ध करा दी जाती है।
3. प्रत्येक सत्र में प्रत्येक विषय के प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम 10 व्याख्यान पावर–प्वाइंट के माध्यम से अनिवार्य है।
4. सप्ताह में एक दिन विद्यार्थियों द्वारा चक्रानुक्रम से कक्षाध्यापन कराया जाता है।
5. प्रत्येक प्रश्नपत्र में शिक्षक द्वारा मासिक मूल्यांकन के द्वारा विद्यार्थी का मूल्यांकन कर उसकी कमियाँ बतायी जाती हैं एवं उनकी विशेषताओं को रेखांकित कर उसे प्रोत्साहित किया जाता है।

6. प्रतिमाह के अन्तिम कार्य दिवस को शिक्षक–प्राचार्य बैठक में महीने भर के शिक्षण–अधिगम के विस्तृत समीक्षोपरान्त उसमें अगले माह में अनुभव आधारित सुधार का प्रयत्न किया जाता है। कमजोर, मध्यम एवं तेज विद्यार्थियों को क्षमतानुसार उनके विकास की योजना एवं उसके क्रियान्वयन का स्वरूप तैयार किया जाता है।

7. विद्यार्थियों के आचरण–व्यवहार की निरन्तर समीक्षा एवं उनके विकास हेतु निरन्तर प्रयत्न किये जाते रहते हैं।

शिक्षकों को नई और अभिनव पद्धतियाँ अपनाने हेतु प्राचार्य एवं प्रबन्धक द्वारा उन्हें निरन्तर प्रोत्साहित किया जाता है। लागू योजनाओं की निरन्तर समीक्षा की जाती है एवं परिणाम शिक्षकों को प्राचार्य अवगत कराते रहते हैं। निरीक्षण एवं सम्बद्धता हेतु निम्न सुस्थापित तन्त्र कार्य करता है–

1. प्राचार्य द्वारा गठित छः उपाचार्यों की टीम के साथ प्राचार्य की साप्ताहिक बैठक में शिक्षण–अधिगम के सन्दर्भ में लिए निर्णयों के क्रियान्वयन की समीक्षा की जाती है।

2. शिक्षकों द्वारा पूर्व निर्धारित 'शिक्षक कार्यवृत्त' प्रारूप पर प्रति माह पाठ्यक्रम योजनानुसार कक्षाध्यापन, विद्यार्थियों द्वारा साप्ताहिक कक्षाध्यापन, मासिक मूल्यांकन के दिये गए आख्या की प्राचार्य द्वारा समीक्षा कर आवश्यकतानुसार शिक्षकों से त्वरित संवाद स्थापित कर शिक्षण–अधिगम की गुणवत्ता बनाए रखने के प्रति उन्हें सावधान किया जाता है। 'शिक्षक कार्यवृत्त' का प्रारूप यहाँ प्रस्तुत है–

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़- गोरखपुर सत्र : 2014–2015

विषय / प्रश्नपत्र........................माह–.................. **शिक्षक कार्यवृत्त** प्राध्यापक..

विषय / माह / कक्षाएं		बी.ए. / बी.एस–सी. / बी.काम. I प्रा.	I सै.	II प्रा.	II सै.	III प्रा.	III सै.	पी.जी. I प्रा.	I सै.	II प्रा.	II सै.	प्राध्यापक की अपनी बात
पाठ्यक्रम योजना के अनुसार पढ़ाया (✔ करें) 'नहीं' के लिए x करें	पूर्णतः											
	अधिकांश											
	आंशिक / नहीं											
विद्यार्थी कक्षाध्यापन (स.)												
मासिक मूल्यांकन (हाँ / नहीं)												
प्रगति आख्या देने की तिथि												
कुल पढ़ाये गये व्याख्यानों की संख्या												
कितने कार्य दिवस में विलम्ब से आए												
कितने कार्य दिवस में समय से पूर्व गये												
दायित्व का नाम (क्या किया गया)												
प्रोजेक्टर से पढ़ाये गये व्याख्यान												
स्वैच्छिक श्रमदान (हाँ / नहीं) कितने सप्ताह–कितना समय												
अन्य किसी कार्यक्रम में योगदान किस रूप में												
कोई आयोजन जिसमें प्राप्त उत्तरदायित्व पूर्ण नहीं किया गया।												
वे कार्य जो स्वप्रेरित किये गये हों।												
परीक्षा परिणाम–2014 (प्रतिशत में) (परीक्षा परिणाम घोषित होने पर)		प्रथम वर्ष.......... द्वितीय वर्ष.......... तृतीय वर्ष..........										
कोई कार्य जो किसी दूसरे के जिम्मे था किन्तु आवश्यकता महसूस करते हुए आगे बढ़कर स्वयं किया गया हो												

नोट : आवश्यकतानुसार अलग से पृष्ठ का उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक कार्यवृत्त को प्रगति आख्या के साथ ही जमा करें।

3. महाविद्यालय द्वारा निर्धारित प्रारूप–'शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र' के माध्यम से वर्ष में दो बार (सितम्बर–जनवरी) विद्यार्थियों से पठन–पाठन के सन्दर्भ में प्राचार्य द्वारा सीधे फीड–बैक लिया जाता है। इसकी समीक्षा कर प्रत्येक शिक्षक से अलग–अलग वार्ता कर शिक्षण की गुणवत्ता एवं शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध का विकास सुनिश्चित किया जाता है।

पुस्तकालय में आवश्यकतानुसार पुस्तक, इंटरनेट की सुविधा, बैठकर पढ़ने का स्थान उपलब्ध है। पुस्तकालय में खाली समय में छात्र–शिक्षक पुस्तक एवं इंटरनेट की सुविधा के साथ पढ़ते दिखाई देते हैं। इस बात में प्राचार्य स्वयं सचेत रहते हैं तथा पुस्तकालय में अकादमिक शांति सुनिश्चित करते हैं।

पूर्व नियोजित एवं घोषित पाठ्यक्रम योजना के कारण पाठ्यक्रम नियत समय से पूरा होता रहता है। आकस्मिक अवकाश अथवा किन्हीं भी अन्य कारणों से यदि पाठ्यक्रम योजना के एक–दो व्याख्यान छूटता है तो उसे माह के अन्त तक अतिरिक्त कक्षा लेकर पूर्ण कर लिया जाता है। अगले माह के प्रथम दिन पाठ्यक्रम योजना पूर्णतः लागू रहती है। विद्यार्थी पाठ्यक्रम योजना से अवगत रहता है, अतः वह भी शिक्षक को पाठ्यक्रम योजनानुसार व्याख्यान हेतु जाँचता रहता है।

प्राचार्य द्वारा शिक्षण–अधिगम गुणवत्ता एवं तत्सम्बन्धी योजनाओं के क्रियान्वयन की निगरानी का व्यवस्थित एवं विकसित तन्त्र स्थापित किया जा चुका है। मासिक शिक्षक बैठक, मासिक शिक्षक कार्यवृत्त, सुझाव–समस्या पेटिका, विद्यार्थियों से निरन्तर संवाद, छात्रसंघ की साधारण सभा, कक्षाओं का आकस्मिक निरीक्षण, एकेडमिक आडिट इत्यादि विधियाँ इसके उदाहरण हैं।

2.4 शिक्षक गुणवत्ता

महाविद्यालय में विश्वविद्यालय एवं यू.जी.सी. द्वारा निर्धारित योग्यता वाले शिक्षकों की नियुक्ति के संदर्भ में प्रबन्ध तन्त्र अति सतर्क रहता है। क्योंकि शिक्षण की सारी गुणवत्ता का आधार सामर्थ्यवान शिक्षक है जो पाठ्यक्रम को ठीक तौर से छात्रों को समझा सके, बता सके और बदलते हुए समय के साथ–साथ आवश्यक परिवर्तन अपनी कार्य प्रणाली में कर सके। इसके साथ हम कोई समझौता नहीं करना चाहते हैं।

शिक्षक योग्यता तालिका

उच्चतम योग्यता	प्राध्यापक		सह प्राध्यापक		सहायक प्राध्यापक		कुल योग
	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	
स्थायी शिक्षक							
डी.एस–सी. / डी.लिट्.	–	–	–	–	–	–	–
पी–एच.डी.	–	–	–	–	16	03	19
एम. फिल.	–	–	–	–	03	01	04
पीजी	–	–	–	–	13	01	14
अस्थायी शिक्षक							
पी–एच.डी.	–	–	–	–	–	–	–
एम. फिल.	–	–	–	–	–	–	–
पीजी	–	–	–	–	03	03	06

शिक्षकों एवं कर्मचारियों के कौशल विकास एवं आचरण–व्यवहार सम्बन्धी विकास के प्रति महाविद्यालय अत्यन्त सजग है। इस दिशा में अनवरत प्रयत्न होते रहते हैं। पिछले चार शैक्षिक सत्रों में संगोष्ठी, अभिविन्यास/पुनश्चर्या इत्यादि कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए शिक्षकों की संख्यात्मक तालिका नीचे दी जा रही है–

(ए) सेमिनार/सम्मेलन–

अकादमिक कर्मचारी विकास कार्यक्रम पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	नामित शिक्षकों की संख्या			
	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14
पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	–	02	01	01
मानव संसाधन विकास कार्यक्रम अ– विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कर्मचारी प्रशिक्षण ब– अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित कर्मचारी प्रशिक्षण	02 02	05 –	01 –	00 01
ग्री मकालीन/शीतकालीन कार्यशालाएँ	–	02	01	–

भारत के विभिन्न कालेज/विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शिक्षण सुधार कार्यक्रम में भाग लेने वाले शिक्षकों की सूची–

तिथि/सत्र	उपस्थित शिक्षक	वि य	आयोजक/स्थान
2010–11			
23 अक्टूबर 2010	1.डॉ. शिव कुमार बर्नवाल 2.डॉ. शालिनी सिंह	रसायन विज्ञान में नयी प्रवृत्ति	सेंट जोसेफ कॉलेज, गोरखपुर (उ.प्र.)
17–18 फरवरी 2011	1.डॉ. लोकेश प्रजापति 2.डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	रासेयो का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला कार्यक्रम	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
2011–12			
22 फरवरी –11 मार्च 2012	डॉ. लोकेश कुमार प्रजापति	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	यू.जी.सी. एवं प्राचीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा प्रायोजित
29 फरवरी से 01 मार्च 2012	डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही	कार्यशाला	यू.जी.सी. एवं एल.एस. गवर्नमेंट पी.जी. कालेज, मिर्जापुर द्वारा प्रायोजित
14 मार्च से 03 अप्रैल 2012	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	एकेडमिक स्टाफ कालेज, यू.जी.सी., दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित
14 मार्च – 10 अप्रैल 2012	1.डॉ. राम सहाय 2.डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह 3.डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह 4.डॉ. राजेश कुमार शुक्ल 5.श्री सुभाष गुप्ता	अभिविन्यास पाठ्यक्रम	एकेडमिक स्टाफ कालेज, यू.जी.सी., दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित
2012–13			
1–7 सितम्बर 2012	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	अल्पकालिक कार्यशाला	वनस्पति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
17 सितम्बर – 06 अक्टूबर 2012	डॉ. विजय कुमार चौधरी	ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम	भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. द्वारा आयोजित
20 अक्टूबर 2012	डॉ. शशिकान्त सिंह	रा ट्रीय कार्यशाला	एच.आर.पी.जी. कालेज संतकबीरनगर (उ.प्र.) द्वारा आयोजित

19 जनवरी से 8 फरवरी 2013	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	वनस्पति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. द्वारा आयोजित
2013–14			
12–13 जुलाई 2013	डॉ. शिव कुमार बर्नवाल	रसायन विज्ञान में वर्तमान प्रवृत्ति	सेंट एण्ड्रयूज कालेज गोरखपुर (उ.प्र.) द्वारा आयोजित
25 जनवरी – 14 फरवरी 2014	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	वनस्पति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित

(बी) संस्था द्वारा किये गये कार्य–

बेहतर शिक्षण–अधिगम के लिए शिक्षकों की गुणवत्ता में निरन्तर विकास का प्रयत्न महाविद्यालय की दिनचर्या का हिस्सा है। शिक्षकों की गुणवत्ता का विकास तथा अत्याधुनिक सूचना एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग की दक्षता की दृष्टि से प्रत्येक शैक्षिक सत्र में महाविद्यालय द्वारा विशेषज्ञों के व्याख्यान, विभागवार शिक्षक–विशेषज्ञ संवाद–परिचर्चा, शिक्षकों की कार्यशाला, कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पिछले चार शैक्षिक सत्रों के कार्यक्रमों का विवरण नीचे तालिका में प्रस्तुत हैं–

सत्र/तिथि	कार्यक्रम	विषय	विशेषज्ञ
सत्र 2010–11 3 जुलाई 2010	कम्प्यूटर प्रशिक्षण	फंडामेंटल्स ऑफ कम्प्यूटर एण्ड सी प्रोग्रामिंग	1.डॉ.एस.पी. उपाध्याय, दीदउ गो.वि.वि.गो. 2.श्री संजय कुमार, दीदउ गो.वि.वि.गो.
14 सितम्बर 2010	विशेष व्याख्यान	शिक्षण विधि एवं आधुनिक तकनीक	प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर, विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ
1 मार्च 2011	कार्यशाला	'शिक्षक आदर्श एवं व्यवहार'	1.प्रो.राम अचल सिंह, पूर्व कुलपति, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद 2. डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही 3. डॉ. वाई.पी. कोहली, अध्यक्ष, रसायनशास्त्र विभाग, बुद्ध पी. जी. कालेज, कुशीनगर
सत्र 2011–12 2–8 जुलाई 2011	कम्प्यूटर प्रशिक्षण	लैंग्वेजेज, साफ्टवेयर एण्ड हार्डवेयर	1.डॉ.रत्नेश त्रिपाठी, अ.भा.इ.स. योजना, नई दिल्ली 2.श्री अरुण कुमार, निराला नगर, लखनऊ
15 अक्टूबर, 2011	विशेष व्याख्यान	उच्च शिक्षा : शिक्षण पद्धति और शिक्षक की भूमिका	प्रो. अशोक श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, दीदउ गो.वि.वि. गोरखपुर

4–5 मार्च 2012	कार्यशाला	'सामाजिक मानविकी विषयों की वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता एवं शोध प्राविधि'	1.प्रो.शिवाजी सिंह (गोरखपुर) 2. डॉ. शंकर शरण (नई दिल्ली) 3.प्रो. कुसुमलता केडिया (वाराणसी) 4. डॉ. अमित कुमार द्विवेदी (अहमदाबाद) 5. डॉ. हर्ष कुमार (गोरखपुर) 6. प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी (गोरखपुर)
<u>सत्र 2012–13</u> 1–7जुलाई 2012	कम्प्यूटर प्रशिक्षण		1.श्री विरेन्द्र तिवारी 2.डॉ. संजय कुमार तिवारी शिक्षक– कम्प्यूटर साइंस विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर
14 अगस्त 2012	विशेष व्याख्यान	शिक्षण विधि और सीखने की कला	प्रो. महेश कुमार शरण, पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, मगध
11 अक्टूबर 2012	विशेष व्याख्यान	शिक्षण प्रविधि में भाषा का महत्व	प्रो. अमर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, गोरखपुर
15 जुलाई से 14 अगस्त 2012	शिक्षकों एवं कर्मचारियों की अंग्रेजी भाषा की कक्षा	अंग्रेजी सीखने की कक्षाओं का संचालन	श्री रोहिताश्व श्रीवास्तव, एम.जी. इण्टर कालेज के सेवा निवृत्त शिक्षक
02–03 मार्च 2013	शिक्षकों एवं कर्मचारियों को हिन्दी भाषा की कक्षा		1. प्रो.सदानन्द प्रसाद गुप्त, हिन्दी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 2. प्रो. अनिल राय, हिन्दी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 3. डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर
4–5 मार्च 2013	कार्यशाला	भाषा एवं शोध प्रविधि	1. डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. कालेज, कानपुर 2. प्रो. राजवन्त राव, प्राचीन इतिहास विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि.गोरखपुर 3. प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, मध्यकालीन इतिहास, दी.द.उ.गो.वि.वि.गोरखपुर 4. प्रो. डी.के. सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि.गोरखपुर

सत्र 2013–14 2–8जुलाई 2013	कम्प्यूटर प्रशिक्षण	कम्प्यूटर लिटरेसी एण्ड आईसीटी बेसिक ट्रेनिंग	सन्देश टेक्नॉलॉजी, गोरखपुर
14 सितम्बर 2013	विशेष व्याख्यान	शिक्षण विधि में वैज्ञानिक सोच	प्रो. यू.पी. सिंह, पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
05 जनवरी 2014	विशेष व्याख्यान	प्रभावी शिक्षण विधि की अद्यतन प्रवृत्तियाँ	प्रो. राम अचल सिंह, पूर्व कुलपति, राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
2 से 8 मार्च 2014	कार्यशाला	वर्तमान शिक्षण प्रविधि एवं अनुभव आधारित सुधार''	1. डॉ.. सूर्य पाल सिंह, पूर्व प्राचार्य, भटवली महाविद्यालय, उनवल 2. डॉ. वाई.पी. कोहली, अध्यक्ष, रसायनशास्त्र विभाग, बुद्ध पी. जी. कालेज, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर 3. प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त, हिन्दी विभाग, दी.द.उ.गो.वि. वि. गोरखपुर 4. डॉ. डी.पी.एन. सिंह, वनस्पति विज्ञान विभाग, डी.वी.एन.पी. जी. कालेज, गोरखपुर 5. श्री आर.पी. सिंह, भौतिक विज्ञान विभाग, सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर 6. डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर

(सी) विषय–विशेषज्ञ के रूप में शिक्षक–संगोष्ठियों/कार्यशालाओं इत्यादि में महाविद्यालय के शिक्षकों की भागीदारी विषय विशेषज्ञ के रूप में, शोध–पत्र प्रस्तुतिकरण हेतु, आमंत्रित सदस्य के रूप में भी होती है। विगत चार शैक्षिक–सत्रों में उपर्युक्त रूप में सम्मिलित हुए शिक्षकों का प्रतिशत नीचे तालिका में द्रष्टव्य है–

विवरण/कार्यक्रम	**शिक्षकों का प्रतिशत**			
	2010–11	**2011–12**	**2012–13**	**2013–14**
सम्पन्मूल व्यक्ति के रूप में आमंत्रित	14.47%	21.62%	8.10%	24.30%
बाहरी सेमिनारों में भाग लेने वाले	8.82%	5.40%	16.21%	24.32%
संगोष्ठी/कार्यशाला में प्रस्तुत शोधपत्र	23.52%	21.52%	16.21%	24.32%

महाविद्यालय प्रयत्नपूर्वक शिक्षकों को संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/अभिविन्यास/पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में सम्मिलित होने हेतु प्रोत्साहित करता है, भेजता है। इस कार्य हेतु उन्हें अवकाश, यात्रा–व्यय, आवास–भोजन इत्यादि का व्यय दिया जाता है। हमारे महाविद्यालय के सभी शिक्षक अभिविन्यास/पुनश्चर्या पाठ्यक्रम एकाधिक बार कर चुके हैं। महाविद्यालय के 9 विभागों द्वारा किए जा रहे विभागीय स्तर पर शोध हेतु सम्पूर्ण व्यय महाविद्यालय देता है।

महाविद्यालय की विकसित परिसर संस्कृति विद्यार्थी केन्द्रित है। अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य के आलोक में विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु प्राचार्य और प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा शिक्षक निरन्तर प्रेरित किए जाते, प्रोत्साहित किए जाते हैं। शिक्षकों के बहुआयामी व्यक्तित्त्व विकास पर भी महाविद्यालय का ध्यान विद्यार्थियों जैसा ही होता है। परिणामतः महाविद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात् शिक्षकों के आचरण–व्यवहार, कार्य पद्धति, पठन–पाठन, पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में सहभागिता, शोध–अध्ययन में निरन्तर प्रगति इत्यादि प्रमाणित तथ्य हैं। इन्हीं आलोक में महाविद्यालय के दो शिक्षक अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों, शोध कार्य एवं महाविद्यालय के गुणात्मक विकास में सहयोग के लिए पुरस्कृत हो चुके हैं।

शिक्षण–अधिगम के निरन्तर विकास के उद्देश्य से महाविद्यालय के स्थापना काल से ही विद्यार्थियों द्वारा वर्ष में दो बार (सितम्बर एवं जनवरी) निर्धारित प्रारूप 'शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र' पर शिक्षकों का मूल्यांकन प्राचार्य द्वारा कराया जाता है। विद्यार्थी द्वारा मूल्यांकित 'शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र' प्राचार्य सम्बन्धित शिक्षकों को देखने एवं स्वमूल्यांकन हेतु देते हैं। तत्पश्चात् शिक्षकों के साथ अलग–अलग प्राचार्य संवाद करते हैं, मासिक शिक्षक–प्राचार्य बैठक में सामूहिक रुप से उचित विषयों पर बात–चीत की जाती है और निरन्तर विकास मार्ग पर अग्रसर हुआ जाता है। यह कार्य महाविद्यालय के स्वस्थ्य अभ्यास का हिस्सा बन चुका है। यहाँ पर 'शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र' का प्रारूप दिया जा रहा है–

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र

क्रमांक................. दिनांक.......................

आग्रह : 1. प्रस्तुत शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र भराने का उद्देश्य निम्न है–

(क) शिक्षकों में आत्मावलोकन एवं आत्म चिंतन की प्रक्रिया को बढ़ावा देना।
(ख) शिक्षकों के व्यक्तित्व में सुधार की प्रक्रिया में सहयोग करना।
(ग) महाविद्यालय में पठन–पाठन में निरन्तर सुधार एवं परिसर संस्कृति का विकास करना।

2. इस प्रपत्र को आप पूरी गम्भीरता से सही–सही भरें आपकी कोई भी गलत सूचना से महाविद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

शिक्षक का नाम..संकेतांक ☐

कक्षा..विषय..

- सम्बन्धित शिक्षक द्वारा पढ़ाया हुआ विषय समझ में आता है।
  हाँ ☐ **नहीं** ☐ **थोड़ा बहुत** ☐
- पढ़ाने की शैली कैसी लगती है?
  बहुत अच्छा ☐ **अच्छा** ☐ **अच्छा नहीं** ☐
- आपके प्रति सम्बन्धित शिक्षक का व्यवहार कैसा है? **सामान्य** ☐ **आत्मीय** ☐

या अन्य किसी प्रकार का..

- कक्षा के अतिरिक्त महाविद्यालय परिसर में उनका व्यवहार कैसा लगता है?
अभिभावक जैसा ☐ **प्रशासक जैसा** ☐ **या किसी से कोई मतलब नहीं** ☐
- सम्बन्धित शिक्षक के व्यवहार का यदि कोई पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है **तो क्या.......**
..
- सम्बन्धित शिक्षक के व्यवहार को यदि कोई पक्ष आपको बुरा लगता है **तो क्या.....................**
..
- सम्बन्धित शिक्षक का अपना विषय ज्ञान कैसा है?**बहुत अच्छा** ☐ **सामान्य** ☐ **कम** ☐
- कक्षाध्ययन में सुधार हेतु आपका सुझाव..
....
- महाविद्यालय परिसर को और अच्छा बनाने एवं शिक्षण पद्धति में गुणवत्ता हेतु **आपका सुझाव...**
- आपको यदि कुछ और कहना है...
....
....

महाविद्यालय विषयवार एवं सामूहिक रूप से एकेडमिक आडिट कराता है। जिसके अन्तर्गत सम्बन्धित विश्वविद्यालय के वरिष्ठ आचार्यों को आमंत्रित किया जाता है। वे कक्षाओं में बैठकर शिक्षकों के अध्यापन का मूल्यांकन करते हैं तथा अपनी लिखित रिपोर्ट प्राचार्य को दे देते हैं। प्राचार्य–शिक्षक बैठक में शिक्षक–अध्यापन कमियों को इंगित किया जाता है और उनकी विशेषताओं पर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षक गुणवत्ता हेतु कमियों को सुधारा जाता है। यह प्रक्रिया महाविद्यालय की स्वस्थ परम्परा बन चुकी है। यह कार्य शिक्षकों में निरन्तर गुणात्मक विकास की प्रक्रिया में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

2.5 मूल्यांकन प्रक्रिया और सुधार

महाविद्यालय की मूल्यांकन प्रक्रिया पूर्ण नियोजित–पूर्व घोषित है तथा सुस्थापित परम्परा बन चुकी हैं। महाविद्यालय की प्रवेश विवरणिका में तथा वेबसाइट पर इसका स्पष्ट विवरण होता है। स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर प्राचार्य द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले वार्षिक योजना में इस प्रक्रिया का स्पष्टतः उल्लेख होता है। प्राचार्य द्वारा सतत् निरीक्षण–परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों से संवाद एवं शिक्षकों को योजना बैठक तथा मासिक बैठक में मूल्यांकन प्रक्रिया से अवगत कराया जाता रहता है।

विद्यार्थियों के विश्वविद्यालय वार्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया का महाविद्यालय पूर्णतः पालन करता है। विश्वविद्यालय परीक्षा की तैयारी कराने की दृष्टि से महाविद्यालय द्वारा फरवरी माह में पाठ्यक्रम पूर्ण कर विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा कराया जाता है।

मासिक प्राचार्य–शिक्षक बैठक में मासिक प्रगति की समीक्षा में विद्यार्थियों के मासिक मूल्यांकन की भी समीक्षा की जाती है तथा विद्यार्थियों की क्रमशः

प्रगति सुनिश्चित की जाती है। धीमी प्रगति वाले एवं कम उपस्थिति वाले विद्यार्थियों के सन्दर्भ में भी किए गए निर्णय क्रियान्वित किये जाते हैं।

महाविद्यालय की वेबसाइट पर एवं महाविद्यालय के पुस्तकालय में विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा एवं मासिक मूल्यांकन का परिणाम उपलब्ध रहता है। विद्यार्थी एवं अभिभावक को देखने के लिए यह सहज उपलब्ध है। मासिक मूल्यांकन के योग में 30 अंक विद्यार्थी के आचरण–व्यवहार तथा महाविद्यालय की गतिविधियों एवं प्रशासन में सहभाग पर दिये जाते हैं। विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा पद्धति एवं मूल्यांकन आन्तरिक मूल्यांकन में कठोरता एवं पारदर्शिता का प्रत्यक्ष उदाहरण है। विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा का परिणाम घोषित हो जाने के बाद प्रत्येक कक्षा की श्रेष्ठतम् तीन उत्तर पुस्तिकाएं पुस्तकालय में विद्यार्थियों के अवलोकनार्थ रख दिया जाता है तथा सभी विद्यार्थियों को उनकी उत्तर पुस्तिकाएं शिक्षकों द्वारा कक्षा में दिखाकर उनकी विशेषताएं एवं कमियाँ बतायी जाती हैं जिससे कि वे आगे अपनी कमियां ठीक कर लें। यही प्रक्रिया प्रायोगिक पाठ्यक्रमों के सन्दर्भ में भी लागू की जाती है। प्रत्येक कक्षा में प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाता है, उन्हें अगले सत्र की प्रवेश समिति का सदस्य मनोनीत कर, इसका प्रमाण–पत्र समावर्तन संस्कार समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किया जाता है जिससे कि अन्य विद्यार्थियों को भी प्रोत्साहित किया जा सके। कम अंक पाने वाले विद्यार्थियों को सम्बन्धित विषय/प्रश्नपत्र के शिक्षक द्वारा अलग से परामर्श दिया जाता है, उन्हें पठन–पाठन के तरीके समझाए जाते हैं।

विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि उनके मूल्यांकन में आशा से कम अंक मिले हैं तो वह जरूर शिक्षक से सम्पर्क करें और अपना समाधान प्राप्त करें। यदि वे फिर भी सन्तुष्ट नहीं होते हैं तो परीक्षा प्रभारी और प्राचार्य से सम्पर्क करें। महाविद्यालय स्तर पर महाविद्यालय के मूल्यांकन के सन्दर्भ में शिकायतें सन्दर्भित शिक्षक को सुनने एवं उसके समाधान का निर्देश है। विद्यार्थी की सन्तुष्टि आवश्यक है। शिक्षक स्तर पर असन्तुष्ट विद्यार्थी अपनी शिकायत प्राचार्य से मिलकर अथवा सुझाव–समस्या पेटिका के माध्यम से करता है, जिस पर प्राचार्य द्वारा त्वरित कार्रवाई की जाती है तथा विद्यार्थी को सन्तुष्ट किया जाता है।

विश्वविद्यालय परीक्षा के सन्दर्भ में शिकायत निवारण प्राचार्य द्वारा गठित परीक्षा समीति के माध्यम से किया जाता है। विद्यार्थी अपना आवेदन कार्यालय को देते हैं जिन पर समिति निर्णय लेकर कृत कार्रवाई हेतु प्राचार्य के माध्यम से सम्बन्धित विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग के पास भेजकर प्रयत्नपूर्वक समस्या का समाधान कराती है। छात्रों को अपनी उत्तर पुस्तिका के मूल्यांकन सम्बन्धी समस्या पर उन्हें जनसूचना अधिकार के अन्तर्गत उत्तर पुस्तिका देखने एवं संतुष्ट होने की विधि समझाने एवं उसके प्रयोग में सहयोग किया जाता है।

2.6 छात्र प्रदर्शन और अध्ययन के परिणाम

परीक्षा परिणाम प्राप्त होने के पश्चात महाविद्यालय के प्रत्येक विषय का शिक्षक अपने प्रश्नपत्र के छात्रों के प्राप्तांक की जांच करता है और यह देखने का

प्रयास करता है कि उसकी प्रत्याशा के अनुरूप उसे अंक मिले हैं या नहीं। यदि नहीं मिले हैं तो छात्र से संवाद करके कारण जानने की चेष्टा करता है और उसके समाधान के सन्दर्भ में कार्य करता है।

इस प्रकार महाविद्यालय प्रयत्नपूर्वक अपने छात्रों को शिक्षण परिणामों के आधार पर वर्ष भर अपने द्वारा किये गये प्रयत्नों के सार्थकता के परिप्रेक्ष्य में गभीरता से विश्लेषित करता है। प्राचार्य, प्रबन्ध तन्त्र इसको संज्ञान में लेते हैं ताकि पढ़ाई–लिखाई की व्यवस्था सुदृढ़ रूप से संचालित होती रहे।

महाविद्यालय से निकलने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे महाविद्यालय के विभाग एवं प्राचार्य के सम्पर्क में बने रहें जिससे कि उनके भावी जीवन की कार्य योजना मे भी महाविद्यालय उनको सुझाव के रूप में या अन्य प्रकार का सहयोग देने के रूप में कार्य कर सके और विद्यार्थियों के सहयोग में अपनी सक्रिया भागदारी दे सके।

उपर्युक्त लिखित प्रयत्नों का परिणाम है कि महाविद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षकों से महाविद्यालय से उत्तीर्ण होकर निकलने वाले अनेक छात्र सम्पर्क में बने हुए हैं। उनके सम्पर्क में बने रहने की सुदृढ़ व्यवस्था की गई है। उनकी कठिनाइयॉ दूर करने के बारे में भी महाविद्यालय सतर्क रहता है। वे महाविद्यालय को अपना घर मानते हैं। महाविद्यालय उनको अपनी उपलब्धि मानता है। ऐसे छात्रों की सूची महाविद्यालय में उपलब्ध है।

उपर बताए गए कार्य के प्रति महाविद्यालय प्रशासन और शिक्षक सुनिश्चित कार्य योजना के तहत कार्य करते हैं क्योंकि हमारी मान्यता है कि संस्था से निकले हुए विद्यार्थी समाज में एक छाप छोड़े कि हम अमुक संस्था के स्नातक हैं और इस दिशा में हमारे कार्यों के परिणाम कभी भी देखें जा सकते हैं।

हमारे महाविद्यालय परिसर की कार्य संस्कृति लेकर निकले हुए विद्यार्थी भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा, पारिवारिक जीवन मूल्य के पालक, समाज–राष्ट्र के प्रति समर्पित, निजी जीवन के प्रति जवाबदेह, सार्थक नागरिक जीवन के गुणों से युक्त हैं। महाविद्यालय के सम्पर्क में बने हुए समाज के विविध क्षेत्रों में कार्य करते हुए ऐसे विद्यार्थियों की अच्छी खासी संख्या है, जिन पर महाविद्यालय को गर्व है। स्थानीय स्तर पर ही लगभग 150 विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें कभी भी 24 घंटे की सूचना पर महाविद्यालय उनका सहयोग प्राप्त कर लेता है।

मापदंड-III
अनुसंधान, परामर्श कार्य तथा प्रसार

3.1 अनुसंधान का प्रोत्साहन

मुख्य रूप से स्नातक स्तर की कक्षाओं का संचालन महाविद्यालय में होता है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राविधानों के अनुसार हमारे महाविद्यालय के शिक्षकों को पी.एच–डी. उपाधि हेतु शोध छात्रों के निदेशक के रुप में कार्य करने की अनुमति नहीं है। तथापि शोध संस्कृति के विकास एवं शोध प्रवृत्ति को बढ़ावा देने हेतु व्यक्तिगत स्तर पर शिक्षक तथा महाविद्यालय में गठित शोध समिति निरन्तर कार्य करती है। कार्यरत शोध समिति निम्नवत है–

गठित शोध समिति

अध्यक्ष	डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य
सचिव	श्री अमित कुमार, कम्प्यूटर साइंस
सदस्य	1. डॉ. विजय कुमार चौधरी, अस्सिटेन्ट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल 2. डॉ. शिवकुमार वर्नवाल, अस्सि. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, रसायनशास्त्र
छात्र सदस्य	सुश्री गरिमा मिश्रा, प्रतिनिधि, छात्रसंघ

यह समिति महाविद्यालय में शिक्षकों को गुणवत्तापरक शोध के लिए प्रोत्साहित करती है। अपने सीमित संसाधनों से होने वाले व्यय भार को वहन करने की संस्तुति करती है जो प्रबन्धक के पास स्वीकृत के लिए जाता है और एतदर्थ सहर्ष स्वीकृत बजट से व्यय–भार वहन किया जाता है।

शिक्षकों को लघु एवं विस्तृत शोध परियोजना बनाने, तैयार करने और भेजने में महाविद्यालय हर प्रकार की सहायता प्रदान करता है। समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, प्राचीन इतिहास, हिन्दी, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, भूगोल, मनोविज्ञान, अंग्रेजी एवं वाणिज्य में शोध कार्य गतिशील है। मुख्य शोधकर्ता को अपने कार्य के लिए स्वायत्तता प्राप्त है। महाविद्यालय अपने सीमित संसाधनों से ठीक समय पर संसाधन उपलब्ध कराने में सदैव तत्पर रहता है। शोध कार्य के लिए आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक को शिक्षण कार्य के बोझ से अवमुक्त करने, विशेष अवकाश देने में महाविद्यालय के प्राचार्य सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में किसी संस्था द्वारा कोई अनुदान आवंटित नहीं है। लेकिन कार्य योजना भेजी जा चुकी है। 12वीं पंचवषीर्य योजना में विश्वास है कि आर्थिक सहयोग प्राप्त होगा।

शोध कार्य को गतिशील बनाने के लिए इन्टरनेट सुविधा महाविद्यालय में उपलब्ध है। शोध कार्य की दृष्टि से स्थानीय निरीक्षण हेतु वाहन एवं शोधार्थी के भोजन–जलपान आदि का व्यय महाविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।

विद्यार्थियों में शोधपरक अभिरूचि, चिन्तन, संस्कार और तर्कशक्ति विकसित करना महाविद्यालय का मुख्य उद्देश्य है। वस्तुतः शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को

शोध विषय दिया जाता है और उन्हें इस पर सोचने, पढ़ने एवं लिखने हेतु प्रेरित किया जाता है, आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण दिया जाता है। उनके द्वारा लिखित शोध पत्र शोध–व्याख्यान प्रतियोगिता में प्रस्तुत कराया जाता है। इस प्रतियोगिता में शिक्षक तथा शोध में अभिरुचि रखने वाले सभी विद्यार्थी उपस्थित रहते हैं। विगत चार शैक्षिक सत्रों में सम्पन्न शोध व्याख्यान प्रतियोगिता का विवरण नीचे प्रस्तुत है–

क्र. सं.	सत्र	तिथि	शोध–पत्र प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की संख्या	संयोजक
1.	2010–2011	27–29 जनवरी 2011	21	श्री संतोष कुमार, विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग
2.	2011–2012	16–17 नवम्बर 2012	49	डॉ. विजय कुमार चौधरी, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग
3.	2012–2013	17–18 जनवरी 2013	54	डॉ. शालिनी सिंह, एसो.प्रोफेसर,रसायनशास्त्र विभाग
4.	2013–2014	20–21 दिसम्बर 2013	53	सुश्री मनीता सिंह, एसो. प्रोफेसर, भौतिकी विभाग

इस कार्य को और गति तथा सार्थकता प्रदान करने के लिए महाविद्यालय 'विमर्श' और 'मानविकी' नाम से क्रमशः वार्षिक एवं अर्धवार्षिक शोध पत्रिका तथा छात्रसंघ वार्षिक पत्रिका 'चेतक' का नियमित प्रकाशन करता है।

परास्नातक विद्यार्थी और शिक्षक में शोध के प्रति कार्य संस्कृति विकसित हो एवं मूल शोध करने की क्षमता बढ़े इसके लिए महाविद्यालय अपने–अपने क्षेत्र में स्थापित शोधकर्ताओं के आमंत्रित कर उनका व्याख्यान एवं संवाद कराता है। नियमित शिक्षकों की कार्यशाला आयोजित करता है।

परिणामतः महाविद्यालय के नौ विभागों के शिक्षक एवं विद्यार्थी व्यक्तिगत एवं संस्थागत स्तर पर शोध कार्य में सक्रिय हैं। शोध कार्य का विवरण नीचे दिया जा रहा है–

क्रमांक	विभाग	प्रारम्भ तिथि	शोध परियोजना	मुख्य शोधकर्ता
1	समाजशास्त्र	15.07. 2011	महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज की स्थापना एवं विकास का जंगल धूसड़ के सामाजिक जीवन पर प्रभाव	श्री प्रकाश प्रियदर्शी
2	राजनीतिशास्त्र	15.07. 2011	जंगल तिनकोनिया के वनटांगिया मजदूरों में राजनीतिक चेतना का विकास : 2001–2010 ई.	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
3	प्राचीन इतिहास	15.07. 2011	गुरु श्रीगोरक्षनाथ के दर्शन का भक्ति आन्दोलन पर प्रभाव	डॉ. शालिनी चौधरी
4	हिन्दी	15.07. 2012	गुरु श्रीगोरक्षनाथ द्वारा स्थापित नाथपंथ का सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव	डॉ. आरती सिंह

5	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	15.07. 2012	नेपाल की वर्तमान स्थिति का भारत की सुरक्षा पर प्रभाव	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह
6	भूगोल	15.07. 2012	गोरखपुर महानगर की पर्यावरणीय समस्या एवं समाधान	डॉ. विजय कुमार चौधरी
7	मनोविज्ञान	15.07. 2013	लिंग भेद का मनोविज्ञान : समस्या एवं समाधान	डॉ. सुनील कुमार मिश्र
8	अंग्रेजी	15.07. 2013	अंग्रेजी साहित्य में महिला चरित्र की भूमिका एवं विकास	श्रीमती कविता मन्ध्यान
9	वाणिज्य	15.07. 2013	ग्राम पंचायत जंगल धूसड़ में महिलाओं की स्थिति : समस्या एवं समाधान	श्री सुभाष गुप्ता

प्रतिष्ठित शोधकर्ताओं को महाविद्यालय में आमंत्रित किया जाता है और उनके साथ छात्रों और शिक्षकों का पारस्परिक विचार विनिमय कराया जाता है। महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रबन्ध तन्त्र इस कार्य के लिए उन्हें आमंत्रित करने, आय–व्यय देने, उनके ठहरने की समुचित व्यवस्था, उनकी सुख–सुविधा का ध्यान रखने में अग्रणी रहते हैं। पिछले चार शैक्षिक सत्रों में महाविद्यालय में आए प्रतिष्ठित शिक्षाविदों का विवरण–

क्रमांक	महाविद्यालए में आए विद्वतजन	विषय	पद
1	प्रो. पी. नाग	भूगोल	महानिदेशक, भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण, नई दिल्ली
2	डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय	मध्यकालीन इतिहास	राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली
3	प्रो. अशोक श्रीवास्तव	मध्यकालीन इतिहास	पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर
4	डॉ. शिवमोहन सिंह	हिन्दी	पूर्व कुलपति, राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
5	डॉ. कन्हैया सिंह	हिन्दी	पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, लखनऊ
6	डॉ. योगेन्द्र पाल कोहली	रसायन विज्ञान	अध्यक्ष, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
7	प्रो. डी.के. सिंह	प्राणि विज्ञान	प्राणि विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
8	डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज, गोरखपुर

9	डॉ. श्रीभगवान सिंह	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज, गोरखपुर
10	प्रो. गोविन्द पाण्डेय	सिविल इंजीनियरिंग	मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
11	मेजर आर.एन. गुप्ता	वाणिज्य	प्रधानाचार्य, मारवाड़ इण्टर कालेज, गोरखपुर
12	प्रो. यू.पी. सिंह	गणित	पूर्व कुलपति, पूर्वांचल वि. वि. जौनपुर
13	प्रो. राम अचल सिंह	भौतिकी	पूर्व कुलपति, राम.म.लो. अवध वि.वि. फैजाबाद
14	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	हिन्दी	पूर्व प्राचार्य, किसान पी. जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर
15	प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर	प्राचीन इतिहास	पूर्व विभागाध्यक्ष, लखनऊ वि.वि. लखनऊ
16	प्रो. आर. पी. शुक्ला	वनस्पति विज्ञान	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
17	प्रो. शिवाजी सिंह	प्राचीन इतिहास	प्रतिष्ठित इतिहासकार एवं पुरातत्त्ववेत्ता, नई दिल्ली
18	प्रो. शिव बहाल सिंह	समाजशास्त्र	पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
19	प्रो. वागीश शुक्ल	गणित	आई.आई.टी. नई दिल्ली
20	प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी	संस्कृत	विभागाध्यक्ष, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
21	डॉ. कुवंर बहादुर कौशिक	प्राचीन इतिहास	पूर्व प्राचार्य, भटवली महाविद्यालय, उनवल, गोरखपुर
22	डॉ. अनन्त नारायण भट्ट	वैज्ञानिक	वैज्ञानिक, डी.आर.डी.ओ. एवं इन्स्टीट्यूट आफ न्यूक्लीयर मेडिसिन एण्ड एलाइड साइंस, नई दिल्ली
23	श्री बृजेश नारायण भट्ट	वैज्ञानिक	इण्डिया इंस्टीट्यूट आफ साइंस, बंगलौर
24	आचार्य रामदेव शुक्ल	हिन्दी	पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो. वि.वि., गोरखपुर
25.	डॉ. अवधेश अग्रवाल	ब्लड कम्पोनेटर	ब्लक बैंक प्रभारी, गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय
26.	श्री संजय तिवारी	पत्रकार	अमर उजाला, गोरखपुर

27.	डॉ. मयाशंकर सिंह	शिक्षाशास्त्र	प्राचार्य, दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज, गोरखपुर
28.	डॉ. उदय प्रताप सिंह	हिन्दी	अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
29.	प्रो. प्रताप सिंह	अंग्रेजी	पूर्व अध्यक्ष, उच्च्तर शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
30.	डॉ. हर्ष सिन्हा	रक्षा अध्ययन एवं स्त्रातजिक अध्ययन	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
31.	प्रो. श्रीप्रकाण मणि त्रिपाठी	राजनीतिशास्त्र	पूर्व विभागाध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
32.	डॉ. सत्यपाल सिंह	भौतिकी	मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
33.	प्रो. टी.पी. वर्मा	प्राचीन इतिहास	पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास एवं कला विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
34.	प्रो. माता प्रसाद त्रिपाठी	प्राचीन इतिहास	पूर्व विभागाध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
35.	डॉ. आनन्द शंकर सिंह	प्राचीन इतिहास	प्राचार्य, ईश्वर शरण डिग्री कालेज, इलाहाबाद
36.	प्रो. आर.सी. श्रीवास्तव	गणित	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
37.	प्रो. प्रभा शंकर पाण्डेय	समाजशास्त्र	पूर्व विभागाध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
38.	प्रो. ईश्वर दास	रसायन विज्ञान	पूर्व विभागाध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
39.	प्रो. मुरली मनोहर पाठक	संस्कृत	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
40.	डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी	हिन्दी	पूर्व विभागाध्यक्ष, सतीश चन्द पी.जी. कालेज, बलिया
41.	श्री शंकर शरण	राजनीतिशास्त्र	एन.सी.टी.ई. नई दिल्ली
42.	प्रो. कुसुमलता केडिया	राजनीतिशास्त्र	महात्मा गाँधी शोध संस्थान राजघाट, वाराणसी
43.	डॉ. अमित कुमार द्विवेदी	बिजनेस मैनेजमेन्ट	इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्टरप्रेन्योरशिप, अहमदाबाद

44.	प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी	मध्यकालीन इतिहास	विभागाध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
45.	प्रो. महेश कुमार शरण श्रीवास्तव	दक्षिण–पूर्व एशिया	मगध विश्वविद्यालय, मगध
46.	प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा	दर्शनशास्त्र	विभागाध्यक्ष, हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश
47.	डॉ. संतोष शुक्ला	संस्कृत	जे.एन.यू., नई दिल्ली
48.	प्रो. एस.सी. बोस	अंग्रेजी	पूर्व विभागाध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि.,गो.
49.	प्रो. ध्रुवचन्द्र श्रीवास्तव	भौतिकी	विभागाध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
50.	प्रो. हरिशरण	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
51.	डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह	हिन्दी	एसोसिएट प्रोफेसर, डी.ए. वी. कालेज, कानपुर
52.	डॉ. नरेन्द्र कोहली	हिन्दी	175 वैशाली, पीतमपुरा, नई दिल्ली
53.	प्रो. अमर सिंह	अंग्रेजी	पूर्व विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं पूर्व सदस्य, उच्च शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, इलाहाबाद, उ.प्र.
54.	डॉ. कन्हैया ओझा	हिन्दी	सेण्टएण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर
55.	डॉ. ए.के. सिंह	पत्रकारिता	छत्रपति साहूजी महाराज, विश्वविद्यालय, कानपुर
56.	प्रो. अनिल राय	हिन्दी	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
57.	प्रो. अशोक कुमार श्रीवास्तव	मध्यकालीन इतिहास	विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालयच, गोरखपुर
58.	प्रो. के.एन. दीक्षित	पुरातत्ववेत्ता	निदेशक, भारतीय पुरातत्त्व संस्थान, नई दिल्ली
59.	श्री राजनाथ सिंह सूर्य	पत्रकार	स्तम्भकार, लखनऊ
60.	डॉ. यू.एन. त्रिपाठी	कम्प्यूटर साइंस	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
61.	प्रो. ए.एन. त्रिपाठी	मनोविज्ञान	पूर्व अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

महाविद्यालय परिसर में शोध संस्कृति के विकास हेतु प्रतिष्ठित शोध अध्येताओं, शिक्षाविदों को महाविद्यालय द्वारा आमंत्रित कर उनका अद्यतन शोध–प्रविधि पर व्याख्यान कराया जाता है, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के बीच संवाद आयोजित होता है।

महाविद्यालय द्वारा वार्षिक एवं अर्धवार्षिक शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। इनके माध्यम से शोध के प्रयास एवं परिणाम समाज तक पहुँचाने का प्रयत्न किया जाता है। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के नवोदित विचार, चिंतन, परिणाम एवं प्रेरणा विविध सामुदायिक प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से भी समुदाय तक पहुँचाया जाता है।

3.2 अनुसंधान के लिए साधन जुटाना

महाविद्यालय के विकास में व्यय होने वाली आय का 10 प्रतिशत धनराशि शोध–व्यय हेतु वार्षिक व्यय योजना में निर्धारित किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर प्रबन्धक की अनुमति से अतिरिक्त धनराशि की भी व्यवस्था की जाती है। यह धन स्टेशनरी, कम्प्यूटर, इन्टरनेट एवं अन्य सुविधाओं पर व्यय किया जाता है। इसके अतिरिक्त यात्रा देयक आदि महाविद्यालय के अन्य मद से भुगतान किये जाते हैं।

महाविद्यालय के शोधकर्ता शिक्षक को शोधकार्य के लिए अग्रिम के रुप में धन अवमुक्त करने का कोई प्राविधान नहीं है। उनके द्वारा मांगी गई सुविधा तत्काल उपलब्ध कराने की सुदृढ़ व्यवस्था है।

महाविद्यालय में शोध छात्र पंजीकृत नहीं है। अन्तर विषयक शोध जैसी अवधारणा भी अभी स्थापित नहीं है।

शोध के विकास के लिए महाविद्यालय को अब तक कोई भी विशेष अनुदान प्राप्त नहीं है।

3.3 अनुसंधान सुविधाएँ

महाविद्यालय में जिन विषयों में शोध कार्य हो रहा है, इसके लिए कम्प्यूटर, प्रिंटर, इन्टरनेट, स्टेशनरी, टेक्निकल सहायता, कार्यालय, कुर्सी, टेबल, आलमारी इत्यादि सुविधाएं महाविद्यालय ने उपलब्ध करा रखी है।

महाविद्यालय में शोध कार्य परिसर संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। किन्तु वर्तमान समय में अभी यह प्रारम्भिक अवस्था में है। भविष्य की कार्ययोजना में 'शोध' वरीयता क्रम में है।

महाविद्यालय की भावी योजना में वरीयता क्रम पर अद्यतन सुविधाओं से युक्त भव्य पुस्तकालय भवन, महिला छात्रावास एवं विशाल सभागार तथा पुस्तकालय को आवश्यकतानुसार पर्याप्त शोध पत्र–पत्रिकाओं, सन्दर्भ ग्रन्थों की उपलब्धता सुनिश्चित कराना है। शोध के विविध क्षेत्र एवं नए आयाम का विकास भविष्य की कार्ययोजनाधीन है।

पुस्तकालय में इन्टरनेट, जर्नल, इ.जर्नल रिप्रोग्रैफी इत्यादि सुविधा ज्ञान के स्रोत के रुप में समुचित तरह से स्थापित है। एक शोध अध्ययन केन्द्र में कला संकाय के 8 विषयों एवं वाणिज्य में शोध हेतु सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करायी गई है। इस कार्य में स्नातक तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों का सहयोग भी लिया जाता है ताकि उनके अन्दर शोध के प्रति जागरूकता उत्पन्न किया जा सके। इस कार्य का उद्देश्य है महाविद्यालय में शोध के प्रति अभिरुचि एवं शोध संस्कृति विकसित करना।

3.4 अनुसंधान प्रकाशन और पुरस्कार

कला और वाणिज्य संकाय में स्थानीय दृष्टिकोण से समुदाय एवं समाज के विकास में आवश्यक समस्याओं पर शोध कार्य सीमित संसाधनों से चलाए जा रहे हैं। महाविद्यालय वार्षिक शोध पत्रिका 'विमर्श' (ISSN-0976-0849) एवं अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'मानविकी' (ISSN-0976-0830) नाम से शोध पत्रिका प्रकाशित करता है। अर्द्धवार्षिक शोध–पत्रिका 'शोध संचयन' (ISSN-0975-1254), इतिहास दर्पण (ISSN-0974-3065), मासिक योगवाणी (RNI-NP/GR/125/14) के प्रकाशन में महाविद्यालय सहभागी है। जिसका उद्देश्य महाविद्यालय में शोध संस्कृति को बढ़ावा देना है और धीरे–धीरे ठोस कदम बढ़ाते हुए निकट भविष्य में महाविद्यालय को मानक शोध केन्द्र बनाने की दिशा में एक सोपान तैयार करना है।

पत्रिकाओं के नाम	सम्पादक मण्डल	प्रकाशक	प्रकाशन नीति
विमर्श ISSN 0976-0849	1. प्रदीप कुमार राव, सम्पादक 2. प्रो. उदय प्रताप सिंह, पूर्व कुलपति 3. प्रो. प्रताप सिंह, पूर्व चेयरमैन, उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा चयन बोर्ड 4. प्रो. राम अचल सिंह, पूर्व कुलपति 5. प्रो. शिवाजी सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर 6. प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय, गो.वि.वि. गो.	महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	मानक शोध कार्य की प्रवृत्ति उत्पन्न करना एवं उच्च स्तरीय शोध पत्रों का प्रकाशन
मानविकी ISSN 0976-0830	1. प्रदीप कुमार राव, सम्पादक 2. ओमजी उपाध्याय, सम्पादक	महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	अन्तः अनुशासनिक, रेफरल, शोध पत्रिका
शोध संचयन ISSN	1. योगेन्द्र प्रताप सिंह, मुख्य सम्पादक 2. डॉ. सुनीता सिंह, सम्पादक	डॉ. सुनीता सिंह 409, शान्तिवन, 2/A244A	अन्तः अनुशासनिक, रेफरल, शोध

0975-1254	3. डॉ. प्रदीप कुमार राव, सहायक सम्पादक 4. डॉ. अमित कुमार द्विवेदी, सहायक सम्पादक	आजाद नगर, कानपुर –20088002	पत्रिका
योगवाणी RNI-NP/GR /125/14	1. महन्त योगी आदित्यनाथ, मुख्य सम्पादक 2. प्रदीप कुमार राव, प्रबन्ध सम्पादक 3. नित्यानन्द श्रीवास्तव, सम्पादक	गोरक्षनाथ मंदिर, गोरखपुर	धर्म, संस्कृति एवं अध्यात्म का प्रसार
इतिहास दर्पण ISSN 0974-3065	1. टी.पी. वर्मा, सम्पादक 2. गुंजन अग्रवाल, उपसम्पादक	अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली–110055	भारतीय इतिहास के प्रति अभिरुचि पैदा करना एवं शोधपरक कार्यों को लोगों तक पहुँचाना

महाविद्यालय के शिक्षकों के प्रकाशन का विवरण

प्राध्यापक का नाम	विभाग	शोध पत्र	सारांश	मोनोग्राफ स	अध्याय किताब में	पुस्तक सम्पादन	पुस्तक लेखक
डॉ. विजय कुमार चौधरी	भूगोल	19	36	–	0	03	–
डॉ. आर.एन. सिंह	प्राणि विज्ञान	03	–	–	–	–	–
डॉ. शिवकुमार वर्नवाल	रसायन विज्ञान	05	–	–	03	–	–
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	राजनीतिशास्त्र	05	–	–	–	01	–
डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	वनस्पति विज्ञान	03	–	–	01	–	–
डॉ. आरती सिंह	हिन्दी	04	–	–	–	–	–
डॉ. लोकेश कुमार प्रजापति	प्राचीन इतिहास	13	–	–	–	–	–
डॉ. राम सहाय	रसायन विज्ञान	04	15	–	–	–	–
श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	गणित	04	–	–	–	–	–
डॉ. प्रविन्द्र कुमार	भूगोल	09	–	–	–	–	–
श्री सुबोध कुमार मिश्र	प्राचीन इतिहास	03	–	–	–	–	–
डॉ. शालिनी चौधरी	प्राचीन इतिहास	01	–	–	–	–	–
डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	22	–	–	–	–	–
डॉ. शशिकान्त सिंह	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	14	–	–	–	–	–
श्री सुभाष कुमार गुप्ता	वाणिज्य	05	–	–	03	–	–
डॉ. अमित कुमार मिश्रा	भौतिकी	12	–	–	–	–	–
डॉ. राजेन्द्र तिवारी	सांख्यिकी	04	–	–	–	–	–
डॉ. संजय कुमार तिवारी	कम्प्यूटर साइंस	12	–	–	–	–	–
डॉ. अजय बहादुर सिंह	मनोविज्ञान	05	–	–	–	–	–
श्रीमती कविता मन्ध्यान	अंग्रेजी	01	–	–	–	01	–
डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	07	–	–	–	04	08

महाविद्यालय के भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ. विजय कुमार चौधरी को उत्तर प्रदेश सरकार से सर्वोत्तम शिक्षक पुरस्कार रू. 50000 नकद एवं प्रशस्ति पत्र एवं राजनीतिशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. अविनाश प्रताप सिंह को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा श्रेष्ठतम् शिक्षक का पुरस्कार योगिराज गम्भीरनाथ स्वर्ण पदक प्राप्त हो चुका है।

3.5 परामर्श कार्य

महाविद्यालय में तकनीकी शिक्षा नहीं दी जा रही है। अतएव तकनीकी परामर्श सेवा से सम्बन्धित कोई कार्य नहीं होता। फिर भी वाणिज्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षक छात्रों एवं अन्य लाभार्थियों तथा सामुदायिक सेवा हेतु चयनित ग्रामवासियों को निःशुल्क परामर्श देते हैं। इससे महाविद्यालय किसी प्रकार का आय अर्जित नहीं करता। परामर्श सेवा निम्नलिखित क्षेत्रों में निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है।

विभाग	परामर्शदाता के नाम	परामर्श सेवा उपलब्ध
वाणिज्य	डॉ. राजेश शुक्ल	स्थानीय ग्रामवासियों को व्यवसायपरक निःशुल्क परामर्श।
वनस्पति विज्ञान	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	पौधों को रोगों से मुक्त कराने के लिए निःशुल्क परामर्श।
प्राणि विज्ञान	डॉ. रघुबीर नारायण सिंह	मछलियों और कीड़ो–मकोडों के आर्थिक महत्व के संदर्भ में विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को निःशुल्क परामर्श दिया जाता है।
रसायन विज्ञान	डॉ. शिवकुमार वर्नवाल	ग्रामवासियों को रासायनिक कीटनाशकों के अंधाधुन्ध प्रयोग से सतर्क करने का परामर्श।
इलेक्ट्रानिक्स	श्री प्रखर वैभव सिंह	विद्यार्थियों और हित धारकों को दूर–संचार तकनीक के लाभों से परिचित कराना।
कम्प्यूटर साइंस	श्री विरेन्द्र तिवारी	महाविद्यालय में विद्यार्थियों को निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण।
अंग्रेजी	श्रीमती कविता मन्ध्यान	सामान्यतया विद्यार्थियों को रोजगार, एवं प्रतियोगी परीक्षा में अंग्रेजी हेतु निःशुल्क परामर्श।
हिन्दी	डॉ. आरती सिंह	रोजगार एवं अन्य परीक्षा हेतु निःशुल्क परामर्श।
राजनीतिशास्त्र	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	भारतीय राजनीति के विषय में निःशुल्क जानकारियां दी जाती हैं।
समाजशास्त्र	श्री प्रकाश प्रियदर्शी	सामाजिक अपराधों की रोकथाम के सन्दर्भ में परामर्श।
प्राचीन इतिहास	श्रीमती शालिनी चौधरी	शोध छात्रों को मुद्रा पहचानने में मदद देना।
मनोविज्ञान	डॉ. सुनील कुमार मिश्र	वातावरणीय एवं सामाजिक मनोविज्ञान के विषय में निःशुल्क जानकारियां दी जाती हैं।
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	ग्रामीण सुरक्षा जागरूकता के सन्दर्भ में परामर्श।

3.6 विस्तार गतिविधियाँ और संस्थागत सामाजिक दायित्व (ISR)

महाविद्यालय के 10 किमी. परिक्षेत्र के गांवों के सामुदायिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्राणायाम, योग, स्वच्छता, श्रम की महत्ता के प्रति जन–जागरण की दृष्टि से महाविद्यालय कार्य करता है। महाविद्यालय ने चयनित गांवों को विभागसह जिम्मेवारी बांटी है। प्रत्येक शैक्षिक सत्र में 4 बार विभागों के शिक्षक एवं छात्र अपने लिए निर्धारित गांव में एक दिवसीय शिविर लगाकर वहाँ के

ग्रामवासियों के बीच रहकर महाविद्यालय की योजना के उद्देश्य–सामुदायिक एवं सामाजिक सहयोग, सामाजिक समरसता एवं योग्य नागरिक गुणों के विकास को पूर्ण करने के लिए कार्य करते हैं।

अभिग्रहीत गांवों के चुने हुए प्रतिनिधि एवं ग्रामवासी महाविद्यालय के स्वतन्त्रता दिवस समारोह (15 अगस्त) एवं गणतन्त्र दिवस समारोह (26 जनवरी) में सम्मिलित होते हैं। समारोह के पश्चात् शिक्षक–प्राचार्य एवं चुने हुए विद्यार्थियों के साथ बैठक में विविध सामाजिक समस्याओं पर विचार–विमर्श कर आपसी सहयोग के आधार पर इन समस्याओं के समाधान हेतु कार्यक्रम बनाए जाते हैं एवं सम्पन्न किए जाते हैं। उदाहरण के लिए गोरखपुर में 'एम्स' की स्थापना, इन्सेफेलाइटिस से बचाव हेतु जनजागरण, मतदान जागरूकता विषय पर निर्णय लिये गये जनाभियान अत्यन्त प्रभावकारी एवं परिणामकारी रहा।

महाविद्यालय के विभाग एवं उनके द्वारा अभिग्रहीत ग्राम एवं प्रभारी शिक्षक की सूची नीचे दी जा रही है–

ग्रामीण क्षेत्रों का विवरणः

क्र.सं.	विभाग	प्रभारी शिक्षक	गोद लिये गांव का नाम
1	हिन्दी	डॉ. आरती सिंह	1. छोटी रेतवहिया 2. बड़ी रेतवहिया
2	प्राचीन इतिहास	श्री लोकेश कुमार प्रजापति	1. हैदरगंज 2. हनुमन्त नगर
3	भूगोल	डॉ. विजय कुमार चौधरी	1. जंगल औराही 2. दहला हरसेवकपुर
4	अंग्रेजी	श्रीमती कविता मन्ध्यान	1. शाहपुर
5	अर्थशास्त्र	श्री अखिलेश दूबे	1. महुआचाफी
6	समाजशास्त्र	श्री प्रकाश प्रियदर्शी	1.जंगल तिनकोनिया नं.1
7	मनोविज्ञान	डॉ. सुनील कुमार मिश्र	1. छोटी जमुनहिया
8	राजनीतिशास्त्र	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	1. बसंतपुर 2. खुटवा
9	इतिहास	डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	1. ककरहिया
10	रक्षा एवं स्त्रा. अध्ययन	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	1. मीरगंज 2. लालगंज
11	कम्प्यूटर साइंस	श्री विरेन्द्र तिवारी	1. बड़ी जमुनहिया
12	गणित	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	1. धोधड़ा
13	प्राणि विज्ञान	डॉ. आर.एन. सिंह	1. लक्ष्मीपुर
14	रसायनशास्त्र	डॉ. शिवकुमार वर्नवाल	1. रामपुर
15	भौतिकी	सुश्री मनीता सिंह	1. भगवानपुर 2. हरिपुर
16	वनस्पति विज्ञान	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	1. सेखवनिया
17	सांख्यिकी	डॉ. राजेन्द्र तिवारी	1. केवटहिया
18	इलेक्ट्रानिक्स	श्री वैभव प्रखर	1. धूसिया
19	वाणिज्य	डॉ. राजेश शुक्ल	1. तिनकोनिया
20	राष्ट्रीय सेवा योजना	डॉ. शशिकान्त सिंह	1. मंझरिया 2. हसनगंज

एक दिवसीय शिविर योजना – प्रति शैक्षणिक सत्र

1. अगस्त का प्रथम रविवार।
2. विजयादशमी एवं दीपावली अवकाश के मध्य का रविवार।
3. फरवरी माह का प्रथम रविवार।
4. विश्वविद्यालय परीक्षा समाप्त होने के बाद का प्रथम रविवार।

महाविद्यालय विभिन्न सामाजिक आन्दोलनों में विभागों द्वारा चयनित ग्रामसभाओं के लोगों को जागरूक कर स्वयं भी सम्मिलित होता है। महाविद्यालय के शिक्षक–विद्यार्थी ग्राम–सर्वेक्षण एवं एक दिवसीय शिविर के माध्यम से पड़ोसी गांवों के निरन्तर सम्पर्क में बने रहते हैं एवं ग्रामवासियों को जागरूक करने का प्रयत्न करते रहते हैं।

प्राचार्य चयनित ग्रामसभाओं में जाकर किये गए कार्यों का निरीक्षण करते हैं, ग्रामवासियों से संवाद करते हैं एवं अपने कार्य के प्रति उनकी धारणा समझने का प्रयत्न करते हैं। सम्बन्धित ग्रामवासियों के मत प्रबन्धक महोदय को भी निरन्तर इन कार्यों के बारे में प्राप्त होता रहता है, जिससे वे प्राचार्य को अवगत कराते रहते हैं।

महाविद्यालय अपनी वार्षिक योजना में एवं शिक्षकों की मासिक बैठक में अपने विस्तार एवं अतिरिक्त पहुँच के कार्यक्रमों की पूर्व योजना–पूर्ण योजना बनाकर कार्य करता है। इस कार्य हेतु एक दिवसीय शिविर एवं कार्य के विषय स्थायी रुप से निर्धारित हैं। महाविद्यालय द्वारा सामुदायिक कल्याण हेतु समीक्षोपरान्त बनाए गए कार्यक्रम एवं उनका प्रभाव विवरण–

कार्यक्रम	समुदाय पर प्रभाव	विद्यार्थियों पर प्रभाव
सर्वशिक्षा अभियान	बच्चों को विद्यालय भेजने की अभिरुचि उनमें स्वयं बढ़ने लगी है।	विद्यार्थी असेवित समुदाय के प्रति सहानुभूति रखने लगे हैं।
स्वच्छता	स्वयं अपने परिवेश को स्वच्छ रखने में सक्रिय हुए हैं।	विद्यार्थी परिसर, कक्षा और गाँव की स्वच्छता से आत्म संतोष का अनुभव करते हैं।
श्रम	समुदाय शारीरिक श्रम करने में सम्मान अनुभव करने लगा है।	विद्यार्थी भी श्रम करने में सम्मान अनुभव करने लगे हैं।
सरकार की विकासात्मक योजनाएँ	ग्रामीणों में सरकारी विकास योजनाओं की जानकारी एवं उससे लाभ उठाने की जागरूकता बढ़ी है।	सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन से परिचित होते हैं और उनमें गम्भीर चिंतन की प्रक्रिया तेज हुई है।
स्वास्थ्य और स्वास्थ्य विज्ञान	समुदाय स्वास्थ्य विज्ञान के प्रति जागरूक होकर स्वस्थ रहने के यथार्थ मार्ग पर चलने की चेष्टा करने लगा है।	विद्यार्थियो को भी स्वास्थ्य की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए कैसे खाना, रहना चाहिए इसकी प्रेरणा मिलती है।
योगासन प्राणायाम	समुदाय में योगासन–प्राणायाम करने की रुचि पैदा हुई।	विद्यार्थी भी इसका नियमित अभ्यास करने लगे हैं एवं इसका प्रशिक्षण देने में अभिरुचि रखते हैं।

चयनित क्षेत्रों में विस्तार कार्यक्रमों हेतु विगत चार शैक्षिक सत्रों की योजना एवं व्यय निम्नवत है–

	सत्र 2011–2011	सत्र 2011–2012	सत्र 2012–2013	सत्र 2013–2014
निर्धारित बजट	25000	30000	35000	35000
व्यय				
(ए) बस	18000	20000	20000	20000
(बी) जलपान	5000	7500	8000	8000

महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना की दो इकाई स्वीकृत एवं कार्यरत है। विद्यार्थियों को व्यक्तित्त्व विकास एवं श्रम तथा सेवा के प्रति उनमें श्रद्धा भाव उत्पन्न करना ही राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य उद्देश्य है। राष्ट्रीय सेवा योजना की सम्पूर्ण गतिविधियाँ छः उप प्राचार्यों में से एक श्रीमती कविता मन्ध्यान के निरीक्षण में सम्पन्न होती है। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शशिकान्त सिंह एवं डॉ. शालिनी चौधरी अपने–अपने राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की कार्य योजना पूरी जिम्मेदारी के साथ लागू करते हैं। विस्तार गतिविधियों एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रमों में प्राचार्य सहित सभी शिक्षकों की सक्रियता सुनिश्चित रहती है। महाविद्यालय द्वारा इन कार्यों की पूर्ण योजना, उनका सम्पादन और वार्षिक समीक्षा कर अनुभव आधारित दोषों का निवारण एवं प्रभावपूर्ण कार्यक्रमों–योजनाओं की प्रति सत्र निरन्तरता सुनिश्चित की जाती है। राष्ट्रीय सेवा येजना के नीचे दिये गए विगत चार शैक्षिक–सत्रों के प्रमुख कार्यक्रम हमारी कार्य प्रणाली के प्रत्यक्ष गवाह हैं।

सत्र 2010–11

क्र.	तिथि	कार्यक्रम	उद्देश्य	मुख्य अतिथि	विद्यार्थियों का सहभाग
1	07.07.2010	वृक्षारोपण	पर्यावरण जागरूकता एवं पर्यावरण असंतुलन को समाप्त करने का प्रयास	परम् पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज, सदर सांसद डॉ. मया शंकर सिंह, प्राचार्य, डी.वी.एन.पी.जी. कालेज, गोरखपुर आलोक पाण्डेय, रेंजर, वन विभाग–तिनकोनिया	विद्यार्थियों के सहयोग से 300 पौधों का रोपण। (सुधीर, प्रदीप, शैलेन्द्र, वागीश, संजू, निधि, बबिता, श्वेता, सूरज, पन्नेलाल की महत्वपूर्ण भूमिका)
2	13.10.2010	योगीराज बाबा गंभीरनाथ निःशुल्क सिलाई–कढ़ाई प्रशिक्षण प्रारम्भ	ग्रामीण अंचल की महिलाओं के आर्थिक स्वावलम्बन हेतु स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना।	परम् पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज, सदर सांसद श्री मनोज तिवारी, संपादक, राष्ट्रीय सहारा, डॉ. संजीत कुमार गुप्ता, समन्वयक, रासेयो, दी.द. उ.गो.वि.वि., डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो, डी.वी. एन.पी.जी.का.गो., श्री जवाहर कसौधन, समाजसेवी एवं प्रतिष्ठित व्यवसायी	अवधेश भारती, गोविन्द गुप्ता, आदित्य प्रताप सिंह ने मंच सज्जा में सहयोग किया। सुप्रिया वर्मा एवं प्रियंका जायसवाल की टोली ने ग्राम में जाकर ग्रामीणों को सिलाई – कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र की सूचना एवं महत्त्व बताया।
3	01.12.2010	विश्व एड्स दिवस रैली, परिचर्चा, व्याख्यान	नागरिकों में एड्स से संबंधित जानकारी एवं जागरूकता।	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह (वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो) श्री लोकेश कुमार प्रजापति (कार्यक्रम अधिकारी) रोसेयो	बेबी यादव, मंजुलता, सुनिधि, अमृता, गोरख सिंह, धनंजय मिश्रा, विशाल कुमार आदि ने विशेष सहयोग दिया।

4	25.12.2010	प्रथम एक दिवसीय शिविर	अभिगृहित ग्राम मंझरिया में स्वयं सेवकों द्वारा स्वच्छता के प्रति ग्रामवासियों को जागरूक करना। कन्या, भ्रूण हत्या एक सामाजिक अभिशाप है विषय पर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जन–जागरण	आचार्य रामदेव शुक्ल, पूर्व विभागाध्यक्ष, दी.द.उ. गो.वि.वि.गो. डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी. जी. कालेज सेवरही, कुशीनगर नारायण पाण्डेय, बृजेश राय, राकेश कुमार (सभी अभियान संस्थान)।	समस्त स्वयं सेवक/ सेविकाओं का सहभाग।
5	02.01.2011	द्वितीय एक दिवसीय शिविर	अभिगृहित ग्राम मंझरिया मे ग्रामवासियों एवं विद्यार्थियों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना और अनेक भ्रान्तियों का निदान करना	डॉ. अवधेश अग्रवाल, प्रभारी, गुरु श्री गोरक्षनाथ ब्लड बैंक	56 स्वयं सेवकों ने रक्तदान किया।
6	09–15 जनवरी, 2011 9 जनवरी, 2011	सात दिवसीय विशेष शिविर उद्घाटन समारोह	स्वयं सेवकों में शिविर के प्रति गम्भीरता पैदा करना	• प्रो. प्रताप सिंह, पूर्व अध्यक्ष, उच्चतर शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश • डॉ. संजीत गुप्ता, समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना, दी.द.उ. गो.वि.वि.गोरखपुर • श्री महेन्द्र पाल सिंह, ब्लाक प्रमुख, चरगांवा	दोनो इकाई के सभी स्वयं सेवक–सेविकाओं के साथ सभी शिक्षक, ग्रामवासी, स्थानीय प्रतिनिधि उपस्थित
	10 जनवरी 2011	शिविर का दूसरा दिन। नियमित दिनचर्या बौद्धिक सत्र सामाजिक समरसता	सामाजिक एकता के प्रति जागरूक करना	डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	समस्त स्वयं सेवक/सेविकाओं का सहभाग एवं शिविर स्थल की स्वच्छता हेतु साफ सफाई में सभी छात्रों ने सहभाग किया।

	11 जनवरी 2011	शिविर का तीसरा दिन नियमित दिनचर्या बौद्धिक सत्र गांवों के विकास हेतु सरकारी योजनाएं	सरकारी योजनाओं की ग्रामवासियों को जानकारी देना	• डॉ. शरद श्रीवास्तव, ग्राम विकास अधिकारी, चरगांवा • डॉ. नीरज कुमार सिंह, संकायाध्यक्ष, वाणिज्य, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर	119 स्वयं सेवक/सेविकाए सम्मिलित हुए। श्रमदान ग्राम मंझरिया में।
	12 जनवरी 2011	शिविर का चौथा दिन नियमित दिनचर्या बौद्धिक सत्र स्वामी विवेकानन्द और युवा	स्वामी जी के विचारों से प्रेरणा ग्रहण करना	• डॉ. हरेश प्रताप सिंह, प्राचार्य, राजा रतनसेन पी.जी. कालेज पी.जी. कालेज, बॉसी, सिद्धार्थनगर • डॉ. श्रीभगवान सिंह, एसो. प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर	सभी शिविरार्थी उपस्थित
	13 जनवरी 2011	शिविर का पांचवा दिन नियमित दिनचर्या बौद्धिक सत्र जीवन और स्वास्थ्य	ग्रामवासियों को स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देना	• डॉ. राजकिशोर सिंह (मधुमेह विशेषज्ञ, बी. आर.डी. मेडिकल कालेज, गोरखपुर) • डॉ. दिनेश सिंह (वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक)	ग्रामवासियों सहित सभी शिविरार्थी सम्मिलित
	14 जनवरी 2011	शिविर का छठा दिन नियमित दिनचर्या-मंझरिया, छोटी रेतवहिया और हसनगंज में स्वास्थ्य पर्यावरण एवं स्वच्छता हेतु जनजागरण रैली बौद्धिक सत्र पर्यावरण और वर्तमान जीवन पद्धति	जन–जागरण	प्रो. गोविन्द पाण्डेय, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर	ग्रामवासियों सहित सभी शिविरार्थी सम्मिलित

	15 जनवरी 2011	समापन समारोह	सप्त दिवसीय विशेष शिविर की उपलब्धियों से समाज को परिचित कराना	• डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर • डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर • डॉ. नीरज सिंह, संकायाध्यक्ष, वाणिज्य, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक–सेविकाओं सहित शिक्षक, प्राचार्य,, कर्मचारी, ग्रामीण जनता उपस्थित
	22.01.2011	सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती की पूर्व संध्या पर रक्तदान शिविर	रक्तदान के प्रति जागरण एवं भ्रांतियों का निवारण	• पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज, प्रबन्धक / सांसद • डॉ. अवधेश अग्रवाल, ब्लड बैंक प्रभारी, गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय • बिग्रेडियर डॉ. के.पी. बी. सिंह, निदेशक, गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय • डॉ. सी.एम. सिन्हा, मुख्य चिकित्साधिकारी, गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय	21 स्वयं सेवक के साथ प्राचार्य, प्राध्यापक एवं कर्मचारी द्वारा रक्तदान।
	25.02.2011	तृतीय एक दिवसीय शिविर 'ग्राम मंझरिया, छोटी रेतवहिया एवं हसनगंज में सात दिवसीय विशेष शिविर में लिए गए प्रोजेक्ट की समीक्षा बौद्धिक सत्र पर्यावरण प्रदूषण से खतरे में धरती	पर्यावरण संकट एवं समाधान विषय पर जन–जागरण	• प्रो.आर.पी. शुक्ल, वनस्पति विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गो. • डॉ. विजय कुमार चौधरी, विभागाध्यक्ष, भूगोल, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	आकांक्षा दूबे, अमृता चांदनी आदि छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में सहयोग किया।

	27.02.2011	चतुर्थ एक दिवसीय शिविर स्वयं सेवकों द्वारा चयनित ग्राम में साफ–सफाई के अभियान को गति प्रदान करने के लिए जनसम्पर्क किया गया।	स्वच्छता के प्रति जन–जागरण	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सभी स्वयं सेवक/सेविकाएं सम्मिलित

सत्र 2011–12

क्र.	तिथि	कार्यक्रम	उद्देश्य	मुख्य अतिथि	विद्यार्थियों का सहभाग
1	06.07.2011	वृक्षारोपण	पर्यावरण संरक्षण	डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक उपस्थित रहे।
2	15.08.2011	स्वतंत्रता दिवस	देश की आजादी का उल्लास		ज्योति सिंह, सुजीत सिंह, रूष्पा चौहान, शुभम् गौड़, सुमन सिंह, मनु सैनी, रोहिणी यादव आदि ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का संयोजन किया।
3	02.10.2011	महात्मा गाँधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती	युवाओं में महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कराने का प्रयत्न	डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	मनु सैनी, सुधीर कुमार, काजल सोनकर ने अपने विचार अभिव्यक्त किये।
4	15.10.2011	परिचर्चा– (राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य)		डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, रासेयो कार्यक्रम अधिकारी श्री लोकेश कुमार प्रजाति, रासेयो कार्यक्रम अधिकारी	अर्चना सिंह, ज्योति सिंह, शंकर गाडगे ने भी विचार व्यक्त किये।
5	18.10.2011	कार्यशाला राष्ट्रीय सेवा योजना क्यों?	छात्र/छात्राओं को स्वयं सेवक/सेविका बनने हेतु प्रेरित करना।	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, रासेयो कार्यक्रम अधिकारी श्री लोकेश कुमार प्रजाति, रासेयो कार्यक्रम अधिकारी	ज्योति सिंह, अमृता, अर्चना सिंह, रामकृष्ण मिश्रा ने अपने विचार व्यक्त किये।

6	20.10.2011	मतदान जागरूकता अभियान एवं श्रमदान–	मतदाता को देश के प्रति उसके कर्तव्यों का निर्वहन के विषय में जानकारी देना। छात्र–छात्राओं को मतदाता पहचान पत्र हेतु आवेदन पत्र उपलब्ध कराना	• श्री एस.एस. श्रीवास्तव, उपजिला निर्वाचन अधिकारी • श्री जी. एस. सिंह, जिला पंचायत अपर आयुक्त • श्री हर्षवर्धन शाही, सह सम्पादक हिन्दुस्तान समाचार पत्र, गोरखपुर	देवाशीष शुक्ला, राहुल सिंह, मनु सैनी एवं हरिद्वार प्रजापति ने मंच व्यवस्था एवं आयोजन में सहयोग किया।
7	10.11.2011	प्रथम एक दिवसीय शिविर रक्तदान	रक्तदान सबसे बड़ा पुण्य है। इसके लिए लिए समग्र समाज को आगे आने हेतु जन–जागरण।	• डॉ. अवधेश अग्रवाल, ब्लड बैंक प्रभारी, गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय • डॉ. संजीत कुमार गुप्ता, समन्वयक, रासेयो, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो.	100 स्वयं सेवकों ने रजिस्ट्रेशन कराया तथा 32 ने रक्तदान किया।
8	12.11.2011	द्वितीय एक दिवसीय शिविर बौद्धिक सत्र इंसेफेलाइटिस के कारण एवं निदान	अभिगृहित क्षेत्र में जनजागरण एवं स्वच्छता का महत्व ग्रामवासियों को बताना	डॉ. राजकिशोर सिंह, एसो.प्रो., बी.आर.डी.का. गोरखपुर	रूक्मिमणी यादव, मनु सैनी, जयहिन्द यादव ने मंच सज्जा में विशेष सहयोग।
9	15.11.2011	सप्त दिवसीय विशेष शिविर का उद्घाटन		प्रो. प्रभाशंकर पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग एवं समन्वयक, रासेयो, दी.द.उ.गो.वि.वि. गो.	147 स्वयं सेवक/सेविकाएं उपस्थित
10	21.11.2011	समापन समारोह	स्वअनुशासन का महत्व एवं शारीरिक श्रम के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य और राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्व बताना	• डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर • डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी. जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर • डॉ. बी.बी. मिश्रा, एसो. प्रोफेसर, रसायनशास्त्र, मठलार, देवरिया	अर्चना भारती एवं सुभाष सिंह को सर्वश्रेष्ठ स्वयं सेवक/सेविका का पुरस्कार तथा विभिन्न प्रतियोगताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

11	01.12.2011	विश्व एड्स दिवस	एड्स के प्रति सजगता एवं जागरूकता	• डॉ.अविनाश प्रताप सिंह, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो • श्री लोकेश प्रजापति, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो • श्रीमती कविता मन्ध्यान, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गो.	सभी स्वयं सेवक सम्मिलित
12	20.12.2011	'आओ राजनीति करें' मंच का गठन	मतदान के प्रति जनजागरण	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	विश्वजीत शर्मा, राकेश सिंह, राकेश मौर्या, जयहिन्द यादव, राहुल शर्मा, विचार व्यक्त किए।
13	11.01.2012	स्वामी विवेकानन्द जयंती की पूर्व संध्या	स्वामी विवेकानन्द के जीवन से छात्रों को प्रेरणा ग्रहण कराना	• प्रो. मुरली मनोहर पाठक, संस्कृति विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि.गो. • डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी, पूर्व संकायाध्यक्ष, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	विश्वजीत शर्मा ने संचालन किया।
14	12.01.2012	स्वामी विवेकानंद जयन्ती	उठो जागो और लक्ष्य प्राप्त करो की प्रेरणा	• डॉ. विजय कुमार चौधरी, विभागाध्यक्ष, भूगोल, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • श्रीमती कविता मन्ध्यान, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	राकेश कुमार द्वारा कार्यक्रम का संचालन।
15	19.01.2012	महाराणा प्रताप पुण्यतिथि	महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेने हेतु प्रेरित करने का प्रयास	• पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज, सदर • सांसद धर्म नारायण अवस्थी, पूर्व शिक्षा निदेशक, जयपुर, राजस्थान	मनु सैनी, राहुल शर्मा, एवं हरिद्वार प्रजापति ने मंच सज्जा में सहयोग किया।
16	23.01.2012	सुभाष चन्द्र बोस जयंती	नेताजी के जीवन के आदर्शों से प्रेरणा लेने के लिए युवा को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह, विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	विश्वजीत, राकेश शर्मा और राकेश सिंह ने विचार व्यक्त किये।

17	24.02.2012	तृतीय एक दिवसीय शिविर ग्राम हसनगंज में आर्थिक सामाजिक सर्वेक्षण	अभिगृहित ग्राम सभा में प्रयत्नों को गति प्रदान करना	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सभी स्वयं सेवक/ सेविकाएं
18	25.02.2012	चतुर्थ एक दिवसीय शिविर	अभिगृहित ग्राम में लिए गए किए प्रयत्नों की प्रगति बनाए रखना	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सभी स्वयं सेवक/ सेविकाएं
19	06.03.2012	निबंध प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम रंगोली, पाक–कला प्रतियोगिता मेंहदी प्रतियोगिता	विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से छात्र–छात्राओं में विभिन्न क्षेत्रों में रूचि जागृत करना	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	अर्चना भारती, रीमा चौधरी, रूष्पा चौहान (रंगोली), रजनी सैनी, रेनू चौहान, काजल सोनकर (पाक कला) रूष्पा, अर्चना भारती (मेहंदी प्रतियोगिता) ने आयोजन में सक्रिय सहयोग किया।

सत्र 2012–13

क्र. सं.	तिथि	कार्यक्रम	उद्देश्य	मुख्य अतिथि	विद्यार्थियों का सहभाग
1	07.07.2012	वृक्षारोपण	पर्यावरण सुरक्षा	▪ श्री गजेन्द्र प्रताप सिंह, ब्लाक प्रमुख चरगांवा ▪ श्री सुशील सिंह, सदस्य, जिला पंचायत ▪ श्री वकाउतल्लाह खाँ, सदस्य जिला पंचायत ▪ श्री राजाराम यादव, ग्राम प्रधान	सभी स्वयं सेवक उपस्थित
2	05.09.2012	शिक्षक दिवस	डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करना। छात्रों में कक्षाध्यापन प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।		बच्चों ने शिक्षक सम्मान में कक्षाएं संचालित की।

3	24.09.2012	स्थापना दिवस	राष्ट्रीय सेवा योजना के इतिहास एवं उद्देश्यों के प्रति जागरूकता।	▪ डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, डी.वी.एन.पी. जी. का. गोरखपुर ▪ श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	सभी स्वयं सेवक उपस्थित
4	25—26 सितम्बर 2012	कार्यशाला	रासेयो के प्रति स्वयं सेवकों में आकर्षण उत्पन्न करना	▪ श्री लोकेश कुमार प्रजापति, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो ▪ श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	स्वयं सेवक / स्वयं सेविकाओं का अनुभव शेयर करना
5	02.10.2012	महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती	महापुरूषों के जीवन से छात्रों को प्रेरित करना।	▪ डॉ. आरती सिंह, विभागाध्यक्ष, हिन्दी, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर ▪ डॉ. शुभ्रांशु सिंह, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, हिन्दी, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक/सेविकाएँ उपस्थित
6	22.10.2012	व्याख्यान राष्ट्रीय सेवा योजना किसके लिए	राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्त्व विद्यार्थियों तक पहुँचाना।	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक उपस्थित
7	19.11.2012	राष्ट्रीय एकता दिवस	वसुधैव कुटुम्बकम की भावना जाग्रत करना	▪ डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ ▪ श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	सभी स्वयं सेवक / सेविकाएं उपस्थित

8	29.11.2012	प्रश्नमंच एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता	छात्रों के सामान्य ज्ञान में संवर्धन एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करना	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	<u>प्रश्नमंच विजेता</u> 1. अभिषेक कुमार दूबे–प्रथम 2. प्रदीप पाण्डेय–द्वितीय 3. पवन कुमार गुप्ता–तृतीय <u>सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता</u> 1. मनोज कुमार–प्रथम 2. प्रदीप पाण्डेय–द्वितीय 3. शंकर निषाद–तृतीय
9	30.11.2012	भाषण प्रतियोगिता	भाषा का संवर्धन एवं वाचिक अभिव्यक्ति का विकास	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	<u>विजेता प्रतिभागी</u> 1. प्रदीप पाण्डेय–प्रथम 2. आंचल श्रीवास्तव–द्वितीय 3. कृष्ण कुमार गुप्ता–तृतीय
10	01.12.2012	विश्व एड्स दिवस ▪ रैली ▪ नाट्य मंचन	एड्स से बचाव एवं निराकरण हेतु रैली एवं नाट्य मंचन के द्वारा जन–जागरण	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	धनशीला चौधरी, रोहित कुमार, संदीप गुप्ता, दुर्गेश जायसवाल, पिन्टू कुमार आदि ने नाट्य मंचन में सहभागिता की।
11	02.12.2012	वालीबाल प्रतियोगिता	शारीरिक महत्व को बताने के उद्देश्य एवं छात्रों में खेल के प्रति जागृत करना	रासेयो एवं क्रीड़ा प्रभारी की देख–रेख में	4 टीमों का प्रतिभाग– टीम 'ए' विजयी

12	17 से 20 दिसम्बर 2012	▪ मतदाता जागरूकता अभियान ▪ निबंध प्रतियोगिता ▪ पोस्टर प्रतियोगिता ▪ स्लोगन ▪ एकांकी	मतदान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना	रासेयो एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी की देख–रेख में	प्रथम–ज्योति सिंह द्वितीय–प्रीति तृतीय–मीनाक्षी प्रथम–पूनम द्वितीय–अजय तृतीय–प्रमोद प्रथम–भीम द्वितीय–ऋषिकेश तृतीय–पूनम प्रथम–धनंजय द्वितीय–ममता सहानी तृतीय–अनामिका
13	04.01.2013	गुरु गोविन्द सिंह जयंती व्याख्यान	सिखों के दसवें गुरू, के जीवन से प्रेरणा देना।	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह, विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सिकन्दर पटेल, अशफाक उसमानी और मणिभूषिण राव ने विचार व्यक्त किये तथा मंच सज्जा में सहभाग।
14	12.01.2013	विवेकानन्द जयंती व्याख्यान – युवा चेतना एवं स्वामी विवेकानन्द	स्वामी विवेकानन्द के जीवन से प्रेरणा लेने हेतु प्रेरित करना।	▪ डॉ. कन्हैया ओझा, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सेण्ट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर ▪ श्री प्रकाश प्रियदर्शी, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र, महाराणा प्रताप पी.जी.कालेज, जंगल धूसड़	मनु कुमार सैनी, राहुल सिंह, विरेन्द्र यादव द्वारा मंच संचालन एवं मंच सज्जा में सहयोग
15	13.01.2013	प्रथम एक दिवसीय शिविर अभिगृहीत क्षेत्र में आर्थिक सर्वेक्षण	गाँव के आर्थिक जीवन की जानकारी प्राप्त कर विकास–योजना पर कार्य।	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सभी स्वयं सेवक/सेविकाएं सम्मिलित
16	14.01.2013	व्याख्यान– अध्यात्म एवं स्वामी विवेकानन्द	अध्यात्म का जीवन में महत्व बताना	डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	रीवा सिंह, आस नारायण एवं राहुल कुमार शर्मा ने भी विचार व्यक्त किया।
17	15.01.2013	राष्ट्रीयता एवं स्वामी विवेकानन्द	राष्ट्रीय गौरव के प्रति जागरूकता	श्रीमती कविता मन्ध्यान, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	सुजीत, राकेश, धनशीला, रेनु तथा हरिद्वार प्रजापति ने भी विचार व्यक्त किये।

18	18.01.2013	पोस्टर प्रतियोगिता	छात्रों में चिन्तन एवं चित्रकला को बढ़ावा देना	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में।	प्रतिमा–प्रथम पवन कुमार गुप्ता–द्वितीय मनु कुमार सैनी–तृतीय
19	19.01.2013	महाराणा प्रताप पुण्य तिथि	महाराणा प्रताप के जीवन से छात्रों को प्रेरणा देना।	▪ प्रो. राम अचल सिंह, पूर्व कुलपति–रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद ▪ डॉ. रघुनाथ चन्द, एसो. प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर (अ.प्रा.)	गौरव सिंह, प्रदीप कुमार मद्धेशिया, राहुल भारद्वाज, अनामिका मिश्रा ने मंच सज्जा में सहयोग किया एवं जयहिन्द यादव ने मंच संचालन किया।
20	24.01.2013	द्वितीय एक दिवसीय शिविर	अभिग्रहित क्षेत्र में सरकारी योजनाओं में लाभान्वित एवं छूटे लोगों का सर्वेक्षण। सरकारी योजनाओं की जानकारी। जल संरक्षण की विधियां तथा लाभ एवं जल संकट के प्रति जन–जागरूकता।	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	मीनाक्षी शर्मा, अंशु रश्मि, गौरव सिंह, महेन्द्र कुमार को टोली में उत्तम सर्वेक्षण का पुरस्कार प्रदान किया गया।
21	26.01.2013	गणतंत्र दिवस	सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा शहीदों को श्रद्धांजलि एवं उनसे प्रेरणा ग्रहण करना।	श्री रोहिताश्व श्रीवास्तव, अंग्रेजी साहित्यकार, गोरखपुर	विशाल त्रिपाठी, आंचल श्रीवास्तव, जयहिन्द यादव, प्रिया वर्मा, मीनाक्षी शर्मा, प्रमिला, चौहान, विवेक कुमार, गीतांजलि, रजनी सैनी आदि ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर कार्यक्रम को आकर्षक बनाया।
22	27.01.2013	तृतीय एक दिवसीय कैम्प रैली एवं नाट्य मंचन	कन्या भ्रूण हत्या के प्रति संवेदना जाग्रत करने हेतु जनजागरण	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	रोहिणी यादव, नीलम शर्मा, ज्योति शंकर घाडगे, काजल सोनकर, अर्चना सिंह, रूष्पा चौहान, रूना शर्मा ने नाट्य मंचन किया।

23	20.02.2013	सप्त दिवसीय विशेष शिविर प्रबन्धन शिविर	जनसम्पर्क, भोजन एवं कार्य व्यवस्था की शिविर स्थल पर पहुँचकर योजना	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	गौरव कुशवाहा, सिंकदर पटेल, भीम मौर्या, बलराम यादव, अमित साहनी आदि ने शिविर स्थल की एवं भोजन–आवास की व्यवस्था सुनिश्चित करने में सहयोग किया।
24	21.02.2013	सप्त दिवसीय विशेष शिविर उद्घाटन समारोह शिविर स्थल की सफाई एवं रहने की व्यवस्था	रासेयो का घोषित उद्देश्य पूर्ण करना	डॉ. विजय कुमार चौधरी, विभागाध्यक्ष, भूगोल, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक/ सेविकाएं उपस्थित
		1.बौद्धिक सत्र : पर्यावरण सुरक्षा		डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़	सभी स्वयं सेवक उपस्थित
		2.कला संवर्धन हेतु रंगोली प्रतियोगिता			रंगोली प्रतियोगिता प्रथम–पूजा सिंह द्वितीय–ज्योति सिंह तृतीय–प्रीति साहनी
25	22.02.2013	नियमित दिनचर्या द्वितीय दिवस बौद्धिक सत्र : छूआछूत समाप्त करने हेतु परिचर्चा	रासेयो का घोषित उद्देश्य पूर्ण करना	डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	अर्चना भारती, विश्वजीत कन्नौजिया, अभिमन्यु सिंह ने अपने विचार अभिव्यक्त किये।
		मेंहदी प्रतियोगिता			मेंहदी प्रतियोगिता प्रथम–माधुरी द्वितीय–पूजा सिंह तृतीय–प्रिया
26	23.02.2013	तृतीय दिवस नियमित दिनचर्या बौद्धिक सत्र : लैंगिक भेद के प्रतिरोध	रासेयो का घोषित उद्देश्य पूर्ण करना	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक/ सेविकाएं उपस्थित

27	24.02.2013	चतुर्थ दिवस नियमित दिनचर्या अभिग्रहीत क्षेत्र में आर्थिक, सामाजिक सर्वेक्षण एवं महिलाओं को स्वरोजगार हेतु जाग्रत करना तथा महाविद्यालय में चलन वाले निःशुल्क सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र के बारे में जानकारी देना।	रासेयो का घोषित उद्देश्य पूर्ण करना		सभी स्वयं सेवक/ सेविकाएं उपस्थित
		बौद्धिक सत्र नशा मानव जीवन के लिए अभिशाप		श्री प्रकाश प्रियदर्शी, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक उपस्थित
		गायन प्रतियोगिता			गायन प्रतियोगिता प्रिया वर्मा, देवाशीष शुक्ला, अमित तिवारी एवं रजनी सैनी क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पुरस्कृत।
28	25.02.2013	पंचम दिवस नियमित दिनचर्या इंसेफेलाइटिस से बचाव हेतु जनजागरण रैली।	रासेयो का घोषित उद्देश्य पूर्ण करना		सभी स्वयं सेवक/ सेविकाएं उपस्थित
		बौद्धिक सत्र इनसेफेलाइटिस कारण एवं निवारण।		डॉ. राजकिशोर सिंह, अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, बी. आर.डी. मेडिकल कालेज, गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक उपस्थित
		हास्य व्यंग प्रतियोगिता			हास्य व्यंग प्रतियोगिता– विशाल तिवारी–प्रथम विवेक भारती–द्वितीय प्रिया वर्मा–तृतीय

29	26.02.2013	<u>छठवां दिवस</u> नियमित दिनचर्या पर्यावरण जागरण हेतु रैली	रासेयो का घोषित उद्देश्य पूर्ण करना		सभी शिविरार्थी सम्मिलित
		<u>बौद्धिक सत्र</u> अशिक्षा एवं जनसंख्या वृद्धि राष्ट्रीय विकास में बाधक		डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी शिविरार्थी सम्मिलित
		छद्म वेष प्रतियोगिता		रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	<u>छद्म वेष प्रतियोगिता</u> प्रथम–विशाल तिवारी द्वितीय–ओंकार सिंह तृतीय–सुजीत सिंह
		पोस्टर प्रतियोगिता		रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	<u>पोस्टर प्रतियोगिता</u> प्रथम–अंकुर कुशवाहा द्वितीय–प्रमोद गुप्ता तृतीय–अजय निषाद एवं रूष्पा चौहान
30	27.02.2013	<u>समापन समारोह</u> समाज में व्याप्त कुरीतियाँ विषय पर व्याख्यान	रासेयो का घोषित उद्देश्य पूर्ण करना	डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	राहुल शर्मा, नवनीत मिश्रा एवं निशान्त सिंह ने मंच व्यवस्था में विशेष योगदान।
31	04.03.2013	चौथा एक दिवसीय शिविर	सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान किये गये कार्य के प्रभाव का मूल्यांकन	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	राकेश सिंह की टोली ने नाट्य मंचन कर ग्रामीणों को जागरूक करने का प्रयास किया।
32	08.03.2013	अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस जन–जागरण रैली	'जब नारी में सारी शक्ति फिर क्यों नारी हो बेचारी' भाव जाग्रत करना।	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	बलराम यादव, रामेश्वर मणि त्रिपाठी, राहुल शर्मा, प्रिया वर्मा ने विचार अभिव्यक्त किये।

सत्र 2013–14

क्र. सं.	तिथि	कार्यक्रम	उद्देश्य	मुख्य अतिथि	विद्यार्थियों का सहभाग
1	05.07.2013	वृक्षारोपण	पर्यावरण सुरक्षा	• डॉ. आर.एन. सिंह, विभागाध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • श्री लोकेश कुमार प्रजापति, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो • श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	प्रदीप मद्धेशिया, आशीष राय, राहुल सिंह, निशांत सिंह, जयहिन्द यादव, हरिद्वार प्रजापति सहित 60 स्वयं सेवक/सेविकाएँ उपस्थित रहें एवं पौधारोपड़ किया।
2	15.08.2013	स्वतंत्रता दिवस	देश के शहीदों एवं महापुरूषों को श्रद्धांजलि। देश प्रेम की भावना छात्रों में बढ़ाना।	मा. गजेन्द्र प्रताप सिंह, ब्लाक प्रमुख, चरगांवा	मनु सैनी, राहुल सिंह, रमन प्रीत कौर, अरूण कुमार, जयहिन्द यादव, मीनाक्षी शर्मा, विवेक भारती एवं अमित तिवारी ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाई।
3	01.09.2013	कार्यशाला	राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य एवं लक्ष्य के प्रति जागरूकता एवं वर्ष भर की गतिविधियों का निर्धारण	• डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • श्री लोकेश कुमार प्रजापति, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो • श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	रासेयो के सभी स्वयं सेवक/सेविकाओं की उपस्थिति एवं मीनाक्षी शर्मा, ममता साहनी, श्रीभावती, ऋषिकेश तिवारी, रामेश्वर मणि त्रिपाठी ने अपने अनुभव शेयर किए
4	02.09.2013	बाबा गम्भीरनाथ सिलाई–कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण प्रारम्भ	ग्रामीण महिलाओं को स्वालम्बन की ओर अग्रसारित करना।	श्रीमती कविता मन्ध्यान, प्रभारी, सिलाई–कढ़ाई	सभी छात्र/छात्राओं सहित ऋषभ, अमित साहनी, पूनम चौहान, मंजू आदि का ग्रामीण महिलाओं में जनजागरण हेतु विशेष सहयोग रहा।

5	08.09.2013	अंतर्राष्ट्रीय साक्षारता दिवस (रैली)	ग्रामवासियों में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सभी स्वयं सेवक/सेविकाओं सहित सुजीत कुमार सिंह, सन्नी साहनी एवं ऋचा शुक्ला ने घोष दल में विशेष सहयोग किया।
6	24.09.2013	राष्ट्रीय सेवा योजना स्थापना दिवस	"Not me but you" अर्थात् दूसरों के लिए कुछ करने की प्रेरणा देना।	डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो, दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज, गोरखपुर	सभी स्वयं सेवक/सेविकाओं की सहभागिता। अम्बिका, ऐश्वर्या, अंकिता, प्रिया वर्मा, विकास, किशन देव, अनिल कसौधन आदि ने स्वयं में आए परिवर्तन शेयर किए।
7	02.10.2013	"लाल बहादुर शास्त्री और महात्मा गांधी जयंती" एवं श्रमदान	महापुरूषों के कार्यों से प्रेरणा ग्रहण कर उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करने हेतु प्रेरित करना।	• डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • श्री लोकेश कुमार प्रजापति, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो • श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	सभी स्वयं सेवक/सेविकाओं की सहभागिता
8	06.10.2013	कार्यशाला	राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य समझाना	• डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • श्री लोकेश कुमार प्रजापति, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो • श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	अभिषेक राव, अमित तिवारी, अंकुर कुशवाहा, मनीषा व उमा सिंह ने भी अपने–अपने विचार व्यक्त किए।
9	09.10.2013	रक्तदान	परहित, परोपकार के उद्देश्य से किसी की जीवन रक्षा हेतु कार्य करने की प्रेरणा देना।	गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के रक्तकोष की चिकित्सकीय टीम	45 छात्र/ छात्राओं एवं 9 प्राध्यापकों सहित प्राचार्य ने रक्तदान किया।

10	24.10.2013	संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस	संयुक्त राष्ट्र स्थापना का महत्व	• डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह, विभागाध्यक्ष, इतिहास, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह, विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	शबनम बानो, अराधना वर्मा, शशि गुप्ता, संतोष साहनी, राहुल शर्मा, अनिल, राहुल तिवारी, पंकज तिवारी व शैलेश आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।
11	26.10.2013 से 01.11.2013	यातायात नियंत्रण सप्ताह	यातायात नियमों एवं सुरक्षा के प्रति जागरूक करना।	रासेयो कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सिद्धार्थ द्विवेदी, राहुल तिवारी, अमित साहनी, अमित, धनन्जय, विशाल के नेतृत्त्व में स्वयं सेवकों ने भट्टा चौराहे पर यातायात नियंत्रण एवं जागरूकता अभियान चलाया।
12	27.10.2013	कार्यशाला यातायात नियम एवं जन–जागरण	रासेयो के स्वयं सेवकों में यातायात नियमों की जानकारी, उसके पालन के प्रति प्रतिवद्धता एवं जन–जागरण	श्री लोकेश प्रजापति एवं श्रीमती कविता मन्ध्यान	सुजीत सिंह, रामेश्वर मणि त्रिपाठी, रवि एवं नलिनी, हर्षिता एवं पूजा सिंह ने विचार व्यक्त किया।
13	12.11.2013	महामना मदन मोहन मालवीय पुण्यतिथि	शिक्षा के विकास हेतु महामना के जीवन से प्रेरणा हेतु पुण्यतिथि पर एक व्याख्यान	श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	मनीषा सिंह, प्राची शर्मा, नमिता सिन्हा ने राष्ट्रगीत एवं हम होंगे कामयाब प्रस्तुत किया।
14	19.11.2013	महारानी लक्ष्मीबाई जयंती	राष्ट्रभक्ति बढ़ाना और नारी–पुरूष विषमता का भाव समाप्त करना	शालिनी चौधरी, अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	अजय चौहान व हिमांशु ने मंच व्यवस्था में सहयोग किया।
15	23.11.2013	जगदीश चन्द्र बोस जयंती	विज्ञान में युवा के बढ़ते कदम की ओर प्रयास का एक उदाहरण जगदीश चन्द्र बोस	डॉ. आर.एन. सिंह, विभागाध्यक्ष, प्राणि विज्ञान, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	ऋषिकेश तिवारी, अनिल, शुभम् पाण्डेय एवं सृष्टि सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

16	24.11.2013	गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस	धर्म के प्रति समर्पण भाव	श्री सुबोध कुमार मिश्र, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	रीमा चौधरी, श्रीभावती, किशन देव निषाद, सृष्टि सिंह ने विचार व्यक्त किए।
17	01.12.2013	विश्व एड्स दिवस जन–जागरण रैली	संक्रमित बीमारी के प्रति जागरूकता	श्री लोकेश कुमार प्रजापति, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	सभी स्वयं सेवक सम्मिलित
18	05.12.2013	कार्यशाला नशामुक्ति एवं रोजगार	नशा मुक्ति एवं रोजगार के प्रति विद्यार्थियों में जागरण करना	• डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • श्रीमती कविता मन्ध्यान, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	सभी स्वयं सेवक सम्मिलित
19	05.01.2014	प्रथम एक दिवसीय शिविर (गुरु श्रीगोरक्षनाथ इकाई) नियमित दिनचर्या एवं बौद्धिक सत्र	ग्रामवासियों में सफाई के प्रति जागरूकता, कन्या भ्रूण हत्या के दुष्परिणाम।	• डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, रासेयो वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, डी.वी.एन.पी. जी.का.गो. • डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गो.	सभी स्वयं सेवक सम्मिलित
20	12.01.2014	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	स्वामी विवेकानन्द के जीवन से प्रेरणा प्रदान करना	श्री राजकुमार, सम्पादक, कमल ज्योति एवं सुमंगल पत्रिका, लखनऊ	सभी स्वयं सेवक, स्वयं सेविका एवं विद्यार्थी उपस्थित
21	13.01.2014	निबंध प्रतियोगिता	लेखन कला का विकास	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	65 छात्र– छात्राओं का सहभाग, अभिषेक कुमार दूबे, सुजीत, प्रदीप पाण्डेय एवं पवन कुमार गुप्ता ने क्रमशः I,II,III स्थान प्राप्त किया।
22	14.01.2014	मण्डलीय वालीबाल प्रतियोगिता	खेलकूद के माध्यम से छात्रों को शारीरिक विकास हेतु प्रेरित करना	श्री संतोष कुमार, पूर्व विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग, एम.पी.पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़,गो.	महाविद्यालय की टीम सम्मिलित।

23	14.01.2014	प्रथम एक दिवसीय शिविर (महाराणा प्रताप इकाई)	• श्रमदान के प्रति जागरूकता। • विद्यालय न जाने वाले बालकों के अभिभावकों से सम्पर्क कर विद्यालय भेजने का निवेदन। • रक्तदान के प्रति जागरूकता।	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सभी स्वयं सेवक सम्मिलित
24	15.01.2014	मण्डलीय दौड़ प्रतियोगिता	खेल–खेल में प्रतिस्पर्धा एवं शारीरिक, मानसिक चेतना का विकास करना।	• मा. आलम भाई, जिला पंचायत सदस्य • श्री महेन्द्र निषाद, पूर्व जिला पंचायत सदस्य • श्री गब्बर शर्मा, छात्रसंघ महामंत्री, पवित्रा डिग्री कालेज, • मा. चन्दगीराम निषाद, राष्ट्रीय पहलवान	महाविद्यालय के 19 प्रतिभागी सम्मिलित प्रथम–निशान्त द्वितीय–राहुल शर्मा तृतीय–सिद्धार्थ द्विवेदी
25	16.01.2013	स्वामी विवेकानन्द बैडमिण्टन प्रतियोगिता	स्वामी विवेकानन्द के जीवनवृत्त से प्रेरणा ग्रहण करना एवं खेल के प्रति जागरूकता।	डॉ. विजय कुमार चौधरी, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	8 टीमों ने प्रतिभाग किया।
26	17.01.2014	स्वामी विवेकानन्द पर केन्द्रित नाट्य मंचन	स्वामी जी के समर्पण एवं त्याग को जन–जन तक पहुँचाना।	• डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह, विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • डॉ. आरती सिंह, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	राहुल शर्मा, चन्दा, ज्योति, हरिद्वार प्रजापति की टीम ने नाट्य मंचन प्रस्तुत।
27	18.01.2014	महाराणा प्रताप स्मृति दिवस (पूर्व संध्या)	राष्ट्र एवं समाज के लिए त्याग एवं बलिदान का महत्व।	• श्री राजनाथ सिंह सूर्य, वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तंभकार • प्रो. यू.पी. सिंह, पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल वि.वि. जौनपुर	राहुल शर्मा ने मंच का संचालन किया।

28	19.01.2014	द्वितीय एक दिवसीय शिविर (महाराणा प्रताप एवं गुरु श्रीगोरक्षनाथ इकाई) –पर्यावरण जागरूकता –मण्डलीय कबड्डी प्रतियोगिता	• ग्राम मंझरिया एवं हसनगंज में पर्यावरण संकट एवं समाधान के प्रति जागरूकता अभियान। • खेल के प्रति बच्चों में खेल के प्रति रूचि विकसित करना।	• डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, एसो. प्रो., रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर • श्री कन्हैया निषाद, राष्ट्रीय खिलाड़ी • डॉ. श्रीभगवान सिंह, क्रीड़ा प्रभारी, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर	रितेश पासवान, हरिद्वार प्रजापति, विशाल सिंह, आराधना वर्मा, सुरभि, सृष्टि सिंह
29	22.01.2014	नेताजी सुभाष चन्द बोस जयंती (पूर्व संध्या)	देश के ऐसे राष्ट्रवादी विचारकों के जीवन से शिक्षा लेने के प्रति भारतीय युवा को जागृत करना।	डॉ. विजय कुमार चौधरी, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी सेवक/सेविकाएं सम्मिलित
30	26.01.2014	गणतंत्र दिवस समारोह	देश की आजादी संविधान के प्रति युवा को जागृत करना।	• श्रीमती कविता मन्ध्यान, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो • डॉ. शशिकान्त सिंह, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	सृष्टि सिंह, रीना चौधरी, दयाराम निषाद, पुष्पेन्द्र, सुजीत सिंह ने आयोजन में सहयोग किया।
31	04.02.2014	• सरस्वती पूजन	–शिक्षा के मंदिर मे शिक्षा की अधिष्ठात्री देवी से ज्ञान का वरदान मांगना एवं पूजन		सभी शिक्षक, स्वयं सेवक, विद्यार्थी, कर्मचारी उपस्थित
		• सुभाष चन्द्र बोस क्रिकेट प्रतियोगिता	– क्रीड़ा से स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता	• डॉ. डी. आर. मौर्या, प्राचार्य, भगवन्त पी.जी. कालेज, कुशीनगर • श्री खुशियाल चौहान, उपाध्यक्ष, समाजवादी छात्रसभा ने किया।	14 टीमों ने हिस्सा लिया।

31	28.02.2014	कार्यशाला 1–7 मार्च तक होने वाले सप्त दिवसीय विशेष शिविर की कार्य योजना	रासेयो के उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु प्रशिक्षण	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	वैभव कृष्ण, किशन देव, सुनील, मीनाक्षी शर्मा, प्रिया वर्मा, रमनप्रीत कौर, आंचल श्रीवास्तव ने कार्यशाला की व्यवस्था में सक्रिय सहयोग तथा सभी स्वयं सेवक–सेविकाएं उपस्थित।
32	01.03.2014 से 07.03.2014	सप्त दिवसीय विशेष शिविर (उद्घाटन समारोह) बौद्धिक सत्र –अनुशासन एवं संयमित जीवन का महत्व। –अभिग्रहित क्षेत्र की सफाई		• डॉ. टी.एन. मिश्रा, अध्यक्ष, अभिभावक संघ, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर • डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, मुख्य नियन्ता, महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	राहुल शर्मा ने मंच का संचालन किया।
33	02.03.2014	द्वितीय दिवस नियमित दिनचर्या बौद्धिक सत्र सरकारी योजनाएं एवं उनका क्रियान्वयन।	ग्रामवासियों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देना	• डॉ. शरद श्रीवास्तव, ग्राम विकास अधिकारी, चरगांवा, गोरखपुर • डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी शिविरार्थी उपस्थित
34	03.03.2014	तृतीय दिवस नियमित दिनचर्या बौद्धिक सत्र नारी सशक्तिकरण	महिला सम्मान एवं सुरक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना	डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर श्रीमती कविता मन्ध्यान, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	सभी शिविरार्थी उपस्थित
35	04.03.2014	चतुर्थ दिवस नियमित दिनचर्या बौद्धिक सत्र ग्रामीण विकास में स्वयं सेवी समूह की भूमिका	ग्रामवासियों में स्वयं सेवी समूह के गठन के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना	डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो, दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज, गोरखपुर	सभी शिविरार्थी उपस्थित

36	05.03.2014	पांचवाँ दिन नियमित दिनचर्या <u>बौद्धिक सत्र</u> राष्ट्रीय सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन	स्वयं सेवक/ सेविकाओं में राष्ट्रीय सुरक्षा एवं आपदा प्रबन्धन में सहयोग हेतु निपुण बनाना	• डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा, रक्षा अध्ययन विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर • डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ • डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह, विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी शिविरार्थी उपस्थित
37	06.03.2014	छठा दिन नियमित दिनचार्य <u>बौद्धिक सत्र</u> राष्ट्रीय सेवा योजना एवं व्यक्तित्व विकास	रासेयो के प्रति आकर्षित करना	डॉ. सुनील मिश्र, विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	सभी शिविरार्थी उपस्थित
38	07.03.2014	समापन समारोह	सीमित संसाधनों में जीवन यापन	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी. जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर	शिविरार्थियों सहित सभी स्वयं सेवक–स्वयं सेविकाएं, शिक्षक, विद्यार्थी उपस्थित
39	08.03.2014	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस • रैली • नाट्य मंचन	महिला सम्मान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता। नाट्य मंचन के माध्यम से ग्राम–हसनगंज में जन–जागरूकता	• डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गो. • श्रीमती कविता मन्ध्यान, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो	रमन प्रीत कौर, नमिता सिन्हा, वैभव कृष्ण, अनुपम, महेश, देवेन्द्र निषाद की टीम ने नाट्य मंचन प्रस्तुत किया।
40	09.03.2014	तृतीय एक दिवसीय शिविर	सप्त दिवसीय विशेष शिविर के कार्यों एवं परिणामों की समीक्षा एवं जनसम्पर्क, रंगोली प्रतियोगिता	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सभी स्वयं सेवक–स्वयं सेविकाएं सम्मिलित
41	10.03.2014	चतुर्थ एक दिवसीय शिविर सफाई जागरूकता (जंगल धूसड़ चौराहा)	ग्रामवासियों से निवेदन एवं साफ–सफाई हेतु जागरूक करना।	रासेयो के कार्यक्रम अधिकारियों की देख–रेख में	सभी स्वयं सेवक/ सेविकाएं सम्मिलित

समाज से वंचित और कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को सशक्त बनाने एवं सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के प्रति महाविद्यालय अपने स्थापना काल से ही सचेष्ट है। महाविद्यालय परिसर में इस बात का सावधानीपूर्वक प्रयत्न किया जाता है कि ऐसे विद्यार्थियों को स्नेह–सम्मान मिलता रहे। प्राचार्य एवं प्रबन्धक महोदय द्वारा सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों के बीच सामाजिक समरसता पर निरन्तर बात–चीत की जाती रहती है। अपने मातृ संस्था के संस्थापक युगपुरुष ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी महाराज की पुण्यतिथि समारोह (आश्विन कृष्ण–1) में प्रतिवर्ष सामाजिक समरसता पर व्याख्यान आयोजित किया जाता है। जिसमें सभी छात्र, शिक्षक कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा अभिग्रहीत ग्राम एवं विस्तार कार्य के अन्तर्गत चयनित गांवों में निरन्तर सामाजिक सर्वेक्षण एवं प्रगति की समीक्षा तत्पश्चात आगामी जन–जागरण के कार्यक्रम सम्पन्न किये गये हैं। इन वर्गों के विद्यार्थियों को पढ़ने, आत्म–सम्मान एवं आत्म–विश्वास के प्रति सचेष्ट करने का प्रयत्न किया जाता है।

महाविद्यालय द्वारा विस्तार–गतिविधियों के संचालन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों–विद्यार्थियों–कर्मचारियों एवं चयनित ग्रामवासियों में सेवा एवं श्रम के प्रति श्रद्धाभाव पैदा कर तथा उन्हें प्रतिमान बनाकर समाज में भी 'श्रम' एवं 'सेवा' के प्रति श्रद्धाभाव विकसित करना, उन्हें समाज के प्रति संवेदनशील बनाना तथा राष्ट्रीय–सामाजिक विकास में सहभागी बनाना है। इस कार्य में सक्रियता से विद्यार्थियों में चिंतन की प्रक्रिया का विकास हुआ है जिससे उनके अध्यापन की गुणवत्ता का विकास हुआ है। वे पठन–पाठन के साथ–साथ अन्य सामाजिक राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति संवेदनशील हुए हैं, उन पर मुखर एवं उनके समाधान की दिशा में सक्रिय हुए हैं। इस प्रकार संस्था विद्यार्थियों–शिक्षकों–कर्मचारियों के व्यक्तित्त्व में विकास कर अपना उद्देश्य पूर्ण करती है। ग्रामवासियों में स्वयं के विकास के प्रति जागरूकता बढ़ी है। उनमें सामूहिक कार्य प्रणाली का विकास हुआ है। वस्तुतः अनुभव कहता है कि सीधे तौर पर जमीनी कार्य करने से विकसित मनोभाव, चिंतन प्रक्रिया एवं श्रम तथा सेवा के प्रति श्रद्धा भाव से विद्यार्थी अध्ययन में, प्राचार्य, शिक्षक, कर्मचारी अपने–अपने दायित्व के निर्वहन में जिम्मेदार और सचेष्ट होते गए हैं।

महाविद्यालय द्वारा विस्तार एवं अतिरिक्त पहुँच के कार्यक्रमों में महाविद्यालय के विद्यार्थियों की रुचि के साथ–साथ चयनित गांवों के युवा–युवतियों एवं विद्यार्थियों की स्वाभाविक सहभागिता हो जाती है।

महाविद्यालय द्वारा विस्तार एवं अतिरिक्त गतिविधियों में जिन संस्थानों के साथ रचनात्मक सम्बन्ध विकसित हुआ है उनका विवरण नीचे की तालिका में दिया जा रहा है–

क्र. सं.	संस्था	सहयोग किया जाता है	सहयोग प्राप्त होता है
1	गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय	आवश्यक रक्त की आपूर्ति रक्तदान द्वारा	एम्बुलेंस, चिकित्सक, दवा
2	दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय	प्रचार–प्रसार	चिकित्सक परामर्श एवं औषधि

3	गुरु श्रीगोरक्षनाथ सेवा संस्थान	सेवा के विविध कार्यों हेतु कार्यकर्ता उपलब्ध	अतिरिक्त व्यय की व्यवस्था
4	अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्	कार्यक्रमों के आयोजन में सुविधा प्रदान करना।	कार्यकर्ता

महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा अभिगृहीत गांवों में किए गए उल्लेखनीय कार्य के लिए 1 अक्टूबर 2011 को राष्ट्रीय सेवा योजना का श्रेष्ठतम पुरस्कार 'दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर राष्ट्रीय सेवा योजना पुरस्कार' तत्कालीन कुलपति प्रो. पी.सी. त्रिवेदी द्वारा महाविद्यालय को प्रदान किया गया। महाविद्यालय द्वारा किए गए श्रेष्ठतम सामाजिक–शैक्षिक प्रयासों के लिए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा 10 दिसम्बर 2014 को उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाइक की ओर से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अशोक कुमार के कर–कमलों से 'गुरु श्रीगोरक्षनाथ स्वर्ण पदक' महाविद्यालय ने प्राप्त किया। महाविद्यालय एवं चयनित गांवों में किए गये पर्यावरण संरक्षण हेतु पौधारोपड़ तथा धरती को हरा–भरा बनाने हेतु किए गये प्रयत्नों के लिए 'हिन्दुस्थान समाचार' द्वारा 'हरियाली पुरस्कार' महाविद्यालय को प्राप्त हुआ। सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था 'संगम' ने महाविद्यालय द्वारा किए गए सामाजिक–सांस्कृतिक प्रयत्नों के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य को 'संगम–सारस्वत सम्मान–2014' प्रदान किया।

देने वाली संस्था	**पुरस्कार**	**तिथि**
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय सेवा योजना पुरस्कार	01.10.2011
हिन्दुस्तान समाचार	हरियाली पुरस्कार	28.06.2014
संगम, सांस्कृति साहित्य और सामाजिक संगठन	संगम सारस्वत सम्मान–2014	24.11.2014
महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्	गुरु श्रीगोरक्षनाथ स्वर्ण पदक	10.12.2014

3.7 सहयोग

महाविद्यालय के जिन विभागों के सक्रिय शोध कार्य हो रहे हैं उनका सम्बन्ध और सहयोग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के उन–उन विभागों के प्रोफेसर से बना हुआ है। वे हमारी कार्य योजना में बौद्धिक सहायता प्रदान करते हैं और हम भी उनके शोध कार्यों में उनकी प्रश्नावली भरवाने में कभी–कभी अपनी संख्या का सहयोग देते हैं।

निम्नलिखित संस्थाओं के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्त्व के व्यावहारिक विकास के लिए महाविद्यालय सचेष्ट हैं –'भारत–नेपाल मैत्री संघ, भारतीय इतिहास संकलन समिति, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, बौद्ध संग्रहालय, अमर उजाला फाउन्डेशन, हिन्दुस्तान संस्थान, गोरखनाथ सेवा संस्थान, गोरखनाथ योग प्रशिक्षण केन्द्र, आई.टी.एम. गीडा, पूर्वोत्तर रेलवे पुस्तकालय।

महाविद्यालय द्वारा विगत चार शैक्षिक–सत्रों में आयोजित विविध कार्यक्रम एवं का विवरण नीचे दिया जा रहा है–

सत्र 2010–11

कार्यक्रम	तिथि	अतिथि	पद
व्याख्यान– 'देश विभाजन के गुनहगार'	13 अगस्त 2010	श्री अवधेश कुमार	वरिष्ठ स्तम्भकार, नई दिल्ली
		डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय	राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अ. भा.इ.सं.योजना, नई दिल्ली
		प्रो. अशोक श्रीवास्तव	अध्यक्ष, मध्यकालीन इतिहास विभाग, दी.द.उ. गो.वि.वि.गोरखपुर
व्याख्यान– 'युवाओं का राष्ट्र समाज के प्रति कर्त्तव्य'	17 अगस्त 2010	डॉ. शिव मोहन सिंह	पूर्व कुलपति, राम.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
व्याख्यान– 'भारतीय राष्ट्रीयता के मूल तत्त्व'	17 अगस्त 2010	डॉ. कन्हैया सिंह	पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
व्याख्यान– 'क्षार अम्लीयता और घेंघा का उपचार'	18 अगस्त 2010	डॉ. योगेन्द्र पाल कोहली	विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
व्याख्यान– लहसुन : प्रकृति का वरदान	19 अगस्त 2010	प्रो. डी.के. सिंह	प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'उत्तरदायित्त्व पूर्ण जीवन शैली और युवा'	20 अगस्त 2010	डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह	विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज, गोरखपुर
व्याख्यान– 'अशान्त भारतीय सीमाएँ'	21 अगस्त 2010	डॉ. श्रीभगवान सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज, गोरखपुर
व्याख्यान– 'गोरखपुर परिक्षेत्र : पर्यावरणीय परिदृश्य'	22 अगस्त 2010	प्रो. गोविन्द पाण्डेय	महामना मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
व्याख्यान– 'आर्थिक नियोजन का महत्त्व'	22 अगस्त 2010	मेजर आर.एन. गुप्ता	प्रधानाचार्य, मारवाड़ इण्टर कालेज, गोरखपुर
व्याख्यान– 'भारतीय जीवन दृष्टि'	23 अगस्त 2010	प्रो. यू.पी. सिंह	पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
व्याख्यान– 'भारत में विज्ञान की विकास यात्रा : एक विहंगम दृष्टि'	23 अगस्त 2010	प्रो. राम अचल सिंह	पूर्व कुलपति, रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या 'स्वतंत्रता के साढ़े छः दशक और हिन्दी की विकास यात्रा'	13 सितम्बर 2010	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	प्रतिष्ठित साहित्यकार, पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर
व्याख्यान– 'भगवान बुद्ध की लोकव्यापी शिक्षाएँ'	14 सितम्बर 2010	प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर	पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

एक दिवसीय संगोष्ठी 'छुआछूत और राष्ट्रीय एकता'	23 सितम्बर 2010	स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती	पूर्व गृह राज्यमंत्री, भारत सरकार
तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'नाथ पंथ एवं भक्ति आन्दोलन'	28–30 अक्टूबर 2010	प्रो. शिवाजी सिंह	पुरातत्त्ववेत्ता एवं इतिहासविद्, नई दिल्ली
		श्री आशीष कुमार	अध्यक्ष, दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार
		डॉ. कन्हैया सिंह	पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
		प्रो. वागीश शुक्ल	आई.आई.टी,. दिल्ली
		प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी	प्रोफेसर, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
		डॉ. कुँवर बहादुर कौशिक	पूर्व प्राचार्य, भटवली महाविद्यालय
व्याख्यान– 'ग्रीन हाउस इफेक्ट, सूक्ष्म तरंगीय विकिरणों का मानव शरीर पर प्रभाव'	3 नवम्बर 2010	डॉ. अनन्त नारायण भट्ट	युवा वैज्ञानिक डी.आर.डी.ओ. एवं इन्स्टीच्यूट ऑफ न्यूक्लियर मेडिसिन एण्ड एलायड साइंस, नई दिल्ली
व्याख्यान– इंसेफेलाइटिस	3 नवम्बर 2010	श्री बृजेश नारायण भट्ट	इण्डियन इन्स्टीच्यूट ऑफ साइंस, बंगलौर
व्याख्यान– 'रक्तदान और सामाजिक भ्रान्तियाँ'	2 जनवरी 2011	डॉ. अवधेश अग्रवाल	ब्लड बैंक प्रभारी, गुरुश्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, गोरखपुर
		श्री संजय तिवारी	वरिष्ठ पत्रकार, अमर उजाला, गोरखपुर
कार्यशाला– 'शिक्षक : आदर्श एवं व्यवहार'	01 मार्च 2011	प्रो. राम अचल सिंह	पूर्व कुलपति, रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
		डॉ. कन्हैया सिंह	पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
		डॉ. मयाशंकर सिंह	प्राचार्य, दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज, गोरखपुर

सत्र 2011–12

कार्यक्रम	तिथि	नाम	पद
व्याख्यान– देश विभाजन के गुनाहगार कौन	13 अगस्त 2011	डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	एसो.प्रोफेसर, इतिहास, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, गोरखपुर
		डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर
व्याख्यानमाला का उद्घाटन	23 अगस्त 2011	प्रो. उदय प्रताप सिंह	पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
सरस्वती नदी घाटी में सभ्यता की खोज : एक नया आयाम	23 अगस्त 2011	प्रो. शिवाजी सिंह	राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.इ.सं. योजना, नई दिल्ली
इण्डोनेशिया में शैवधर्म	23 अगस्त 2011	प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर	पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

व्याख्यान– 'राष्ट्रीय सुरक्षा की परम्परागत चुनौतियाँ'	24 अगस्त 2011	प्रो. हर्ष सिन्हा	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– भ्रष्टाचार निवारण के कुछ गैर कानूनी उपाय	25 अगस्त 2011	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	प्रतिष्ठित साहित्यकार, पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर
व्याख्यान– 'विकास की भारतीय अवधारणा'	26 अगस्त 2011	डॉ. सतीश द्विवेदी	एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
व्याख्यान– 'भारतीय विदेश नीति की चुनौतियाँ'	27 अगस्त 2011	प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी	अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'तारों का जन्म एवं मृत्यु'	28 अगस्त 2011	डॉ. सत्यपाल सिंह	मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
व्याख्यान– 'श्रीरामजन्म भूमि : एक सिंहावलोकन'	29 अगस्त 2011	प्रो. टी.पी. वर्मा	पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
		प्रो. माता प्रसाद त्रिपाठी	पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
हिन्दी दिवस **व्याख्यान–** हिन्दी की विकास यात्रा	14 सितम्बर 2011	श्री रणविजय सिंह	मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक एवं राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
		डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी	पूर्व संकायाध्यक्ष, कला संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
व्याख्यान– 'विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का योगदान'	01 अक्टूबर 2011	डॉ. योगेन्द्र पाल कोहली	विभागाध्यक्ष, रसायनशास्त्र विभाग, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
व्याख्यान– 'दलित आन्दोलन के विविध आयाम'	15 अक्टूबर 2011	डॉ. आनन्द शंकर सिंह	प्राचार्य, ईश्वर शरण पी.जी. कालेज, इलाहाबाद
व्याख्यान– 'गणित के क्षेत्र में भारत की देन'	16 अक्टूबर 2011	प्रो. आर.सी. श्रीवास्तव	प्रोफेसर, गणित विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'स्टेम सेल'	18 अक्टूबर 2011	प्रो. डी.के. सिंह	प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'मालीक्यूलर सिमेट्री' (रसायन शास्त्र विभाग द्वारा)	21 अक्टूबर 2011	डॉ. मीरा यादव	एसोसिएट प्रोफेसर, रसायन शास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर

व्याख्यान– 'अपवाह (Drainage) प्रणाली' (भूगोल विभाग द्वारा)	21 अक्टूबर 2011	डॉ. शिवाकान्त सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'नाभिकीय प्रसार एवं निःशस्त्रीकरण : भारत के परिप्रेक्ष्य में' (रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग)	21 अक्टूबर 2011	डॉ. विनोद कुमार सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'गोमूत्र से रोग उपचार' (प्राणिविज्ञान विभाग)	4 नवम्बर 2011	डॉ. विनय कुमार सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'रक्तदान मानव कल्याण का पवित्र साधन'	10 नवम्बर 2011	डॉ. अवधेश अग्रवाल	चिकित्सक एवं रक्तकोष प्रभारी, गुरुश्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, गोरखनाथ, गोरखपुर
व्याख्यान– 'इन्सेफेलाइटिस : कारण एवं निदान	12 नवम्बर 2011	डॉ. राजकिशोर सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, बाबा राघव दास मेडिकल कालेज, गोरखपुर
व्याख्यान– 'रसायन शास्त्र का आदिभूमि भारत' (रसायनशास्त्र विभाग द्वारा)	21 दिसम्बर 2011	प्रो. ईश्वर दास	विभागाध्यक्ष, रसायनशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती पर **युवा सप्ताह का उद्घाटन व्याख्यान** स्वामी विवेकानन्द और युवा वर्ग	11 जनवरी 2012	प्रो. मुरली मनोहर पाठक	प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी	पूर्व कला संकायाध्यक्ष, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
महाराणा प्रताप स्मृति व्याख्यान–हमारे आदर्श महाराणा प्रताप	19 जनवरी 2012	योगी आदित्यनाथ जी महाराज	सांसद (लोकसभा)
		श्री धर्मनारायण अवस्थी	पूर्व शिक्षा निदेशक, जयपुर, राजस्थान
दो दिवसीय कार्यशाला– 'सामाजिक मानविकी विषयों का वर्तमान बौद्धिक परिप्रेक्ष्यः एक विमर्श'	4–5 मार्च 2012	प्रो. शिवाजी सिंह	राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.इ.सं. योजना, नई दिल्ली
		डॉ. शंकर शरण	अध्यापक, राजनीतिशास्त्र, एन.सी.टी.इ. नई दिल्ली
		प्रो. कुसुमलता केडिया	गाँधी शोध संस्थान, राजघाट, वाराणसी
		डॉ. हर्ष कुमार	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी	मध्यकालीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर

		डॉ. ए.के. सिंह	अध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग, छात्रपति साहू जी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर
		प्रो. अनिल राय	प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह	एसो. प्रोफेसर, हिन्दी, डी.ए.वी. डिग्री कालेज, कानपुर
		डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर
कार्यशाला– विष्णु पुराण में राज्य एवं समाज	11 मार्च 2012	प्रो. अशोक कुमार	पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		डॉ. कुँवर बहादुर कौशिक	पूर्व प्राचार्य, भटवली महाविद्यालय, भटवली
		डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय	राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अ.भा.इ.सं. योजना, नई दिल्ली
		डॉ. मनोज तिवारी	एसो. प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर

सत्र 2012–13

कार्यक्रम	तिथि	नाम	पद
व्याख्यान– 'भारत विभाजन के गुनहगार'	13 अगस्त 2012	प्रो. महेश कुमार शरण	प्रोफेसर, दक्षिण–पूर्व एशिया अध्ययन विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार
व्याख्यानमाला का उद्घाटन	20 अगस्त 2012	योगी आदित्यनाथ जी महाराज	सांसद (लोकसभा), गोरखपुर
भारतीय संस्कृति की सामासिकता एवं हिन्दुत्त्व पर पुनर्विचार		प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा	अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
हिन्दुत्त्व		प्रो. उदय प्रताप सिंह	पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
व्याख्यान– 'भारत की ज्ञान परम्परा : धर्मशास्त्र'	21 अगस्त 2012	डॉ. सन्तोष शुक्ला	जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
'भारतीय इतिहास लेखन की अद्यतन प्रवृत्तियाँ'		डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय	राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अ.भा.इ.सं. योजना, नई दिल्ली
व्याख्यान– 'राष्ट्रीय चेतना और स्वामी विवेकानन्द'	22 अगस्त 2012	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर

'हमारे आदर्श नेताजी सुभाष चन्द्र बोस'		प्रो. एस.सी. बोस	पूर्व विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'सितारों की दुनिया'	23 अगस्त 2012	प्रो. डी.सी. श्रीवास्तव	अध्यक्ष, भौतिकी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर
'शून्य : एक विवेचन'		डॉ. श्रीकृष्णदेव दूबे	विभागाध्यक्ष, गणित, मदन मोहन मालवीय पी.जी. कालेज, भाटपार रानी, देवरिया
व्याख्यान– 'वैदिक संहिताओं में जीवन मूल्य'	24 अगस्त 2012	प्रो. मुरली मनोहर पाठक	प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर
'दक्षिण–पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति'		प्रो. महेश कुमार शरण	प्रोफेसर, दक्षिण–पूर्व एशिया अध्ययन विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार
व्याख्यान– '21वीं शताब्दी में भारत की नौसैनिक स्त्रातजी'	25 अगस्त 2012	प्रो. हरिशरण	अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि., गोरखपुर
'इन्सेफेलाइटिस और कुपोषण'		डॉ. राजकिशोर सिंह	प्रभारी, मेडिसिन विभाग, बाबा राघव दास मेडिकल कालेज, गोरखपुर
व्याख्यान– 'वेदों में विज्ञान'	26 अगस्त 2012	प्रो. राम अचल सिंह	पूर्व कुलपति, रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद; पूर्व अध्यक्ष, उच्चतर शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, उत्तर प्रदेश
'मीडिया और समाज'		डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी, डी.ए.वी. कालेज, कानपुर
व्याख्यान– 'जम्मू–कश्मीर का सच' (रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा)	01 सितम्बर 2012	श्री अरुण कुमार	निदेशक, जम्मू–कश्मीर अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली
हिन्दी दिवस 'हिन्दी की विकास यात्रा' (हिन्दी विभाग द्वारा)	14 सितम्बर 2012	डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी	पूर्व कला संकायाध्यक्ष, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल वि.वि., जौनपुर
राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय राष्ट्रीयता	09–10 अक्टूबर 2012	योगी आदित्यनाथ जी महाराज	सांसद (लोकसभा) गोरखपुर

एवं सन्त परम्परा'		श्री नरेन्द्र कोहली	प्रतिष्ठित साहित्यकार, नई दिल्ली
		प्रो. यू.पी. सिंह	पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
		डॉ. विश्वनाथ मिश्र	हरिश्चन्द्र पी.जी. कालेज, वाराणसी
		डॉ. बलवान सिंह	भटवली महाविद्यालय भटवली, गोरखपुर
		डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर
		डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी	पूर्व कला संकायाध्यक्ष, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
		प्रो. मुरली मनोहर पाठक	प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह	एसो. प्रोफेसर, हिन्दी, डी.ए.वी. कालेज, कानपुर
		प्रो. विपुला दूबे	अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		प्रो. रेखा चतुर्वेदी	प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		डॉ. संतोष शुक्ला	एसो. प्रोफेसर, संस्कृत, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
		प्रो. अमर सिंह	अ.प्रा. अध्यक्ष, अंग्रजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद सदस्य, उच्चतर शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, उत्तर प्रदेश

		प्रो. शिवाजी सिंह	राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.इ.सं. योजना, नई दिल्ली
व्याख्यान– 'विज्ञान के क्षेत्र में जगदीश चन्द्र बोस का योगदान' (रसायनशास्त्र विभाग द्वारा)	19 अक्टूबर 2012	डॉ. योगेन्द्र पाल कोहली	विभागाध्यक्ष, रसायनशास्त्र विभाग, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
व्याख्यान– 'मालीक्यूलर वाइब्रेशन' (रसायनशास्त्र विभाग द्वारा)	01 दिसम्बर 2012	डॉ. मीरा यादव	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती– भारत–भारती पखवारा का उद्घाटन	12 जनवरी 2013	डॉ. कन्हैया ओझा	एसो. प्रोफेसर, हिन्दी, सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर
महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि हमारे आदर्श – महाराणा प्रताप	19 जनवरी 2013	प्रो. राम अचल सिंह	पूर्व कुलपति, रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
		डॉ. रघुनाथ चन्द	एसो. प्रोफेसर (अ.प्रा.) प्राचीन इतिहास विभाग, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
सप्तदिवसीय कार्यशाला– 'भाषा एवं शोध प्रविधि'	04–10 मार्च 2013	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर
		प्रो. राजवन्त राव	प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह	एसो. प्रोफेसर, हिन्दी, डी.ए.वी. कालेज, कानपुर
		प्रो. डी.के. सिंह	प्रोफेसर, प्राणिविज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी	अध्यक्ष, मध्यकालीन इतिहास विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
		डॉ. शंकर शरण	एसो.प्रोफेसर, एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली

सत्र 2013–14

कार्यक्रम	तिथि	नाम	पद
व्याख्यान– 'सरस्वती नदी की गोद में भारतीय सभ्यता का उदय'	21 जुलाई 2013	प्रो. के.एन. दीक्षित	निदेशक, भारतीय पुरातत्त्व संस्थान, नई दिल्ली
		प्रो. शिवाजी सिंह	पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.इ.सं. योजना, नई दिल्ली
व्याख्यान– 'भारत–विभाजन के गुनहगार कौन?'	13 अगस्त 2013	श्री हरेन्द्र कुमार	सदस्य, विधान परिषद्, बिहार
		डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर
व्याख्यानमाल का उद्घाटन नाथपंथ का भक्ति आन्दोलन पर प्रभाव	17 अगस्त 2013	योगी आदित्यनाथ जी महाराज	सांसद(लोकसभा) गोरखपुर
		डॉ. कन्हैया सिंह	पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र.
		प्रो. यू.पी. सिंह	पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
व्याख्यान– 'दक्षिण–पूर्व एशिया और भारत : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के सन्दर्भ में'	18 अगस्त 2013	डॉ. सन्तोष शुक्ल	एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
व्याख्यान– 'सामाजिक पुनर्जागरण में नाथपंथ की भूमिका'	19 अगस्त 2013	डॉ. कन्हैया सिंह	पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र
व्याख्यान– 'स्वामी विवेकानन्द और भारतीय युवा'	20 अगस्त 2013	प्रो. एस.सी. बोस	पूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर
व्याख्यान– 'भारत–नेपाल सम्बन्ध : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में'	21 अगस्त 2013	श्री अजीत कुमार	निदेशक, भारत–नेपाल शोध संस्थान, नई दिल्ली
समारोप व्याख्यानमाला एक विहंगम यात्रा : पुष्पक विमान से माइक्रोलाइट तक	23 अगस्त 2013	श्री विश्वमोहन तिवारी	पूर्व एअर वाइस मार्शल, वायुसेना, नोएडा
		प्रो. राम अचल सिंह	पूर्व कुलपति रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

हिन्दी दिवस हिन्दी की विकास–यात्रा	14 सितम्बर 2013	प्रो. अमर सिंह	अ.प्रा. प्रोफेसर, पूर्व सदस्य, उच्चतर शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, उत्तर प्रदेश
		श्री रणविजय सिंह	मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक एवं राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
		श्री यशवन्त राव	विशेष सचिव,उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती 'स्वामी विवेकानन्द और भारतीय युवा'	12 जनवरी	श्री राजकुमार	सम्पादक, कमल ज्योति, लखनऊ
महाराणा प्रताप पुण्य तिथि 'हमारे आदर्श महाराणा प्रताप'	19 जनवरी	श्री राजनाथ सिंह सूर्य	पूर्व राज्यसभा सदस्य एवं वरिष्ठ पत्रकार
सप्तदिवसीय कार्यशाला (2–8 मार्च) 'वर्तमान शिक्षण प्रविधि एवं अनुभव आधारित सुधार'	02 मार्च 2014	डॉ. सूर्यपाल सिंह	पूर्व प्राचार्य, भटवली महाविद्यालय, भटवली, गोरखपुर
	03 मार्च 2014	प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त	प्रोफेसर, हिन्दी विभाग (अ.प्रा.), दीन दयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
	04 मार्च 2014	प्रो. डी.के. सिंह	प्रोफेसर, प्राणिविज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
	05 मार्च 2014	श्री रोहिताश्व श्रीवास्तव	अंग्रेजी साहित्यकार
	06 मार्च 2014	डॉ. डी.पी.एन. सिंह	एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
	07 मार्च 2014	डॉ. आर.पी. सिंह	एसो. प्रोफेसर, भौतिकी, सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर
	08 मार्च 2014	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही, कुशीनगर

समावर्तन संस्कार समारोह के उत्सव में विगत चार वर्षों के दौरान आमंत्रित ख्यातिलब्ध मुख्य अतिथियों का विवरण निम्नवत है–

समावर्तन संस्कार समारोह			
2010–2011	27 फरवरी	पद्म श्री प्रकाश सिंह	पूर्व महानिदेशक, भारतीय सीमा सुरक्षा बल, नई दिल्ली
2011–2012	26 फरवरी	श्री आशीष गौतम	अध्यक्ष, दिव्य सेवा मिशन, हरिद्वार
2012–2013	22 फरवरी	डॉ. कृष्ण गोपाल	सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, केशवकुन्ज, झण्डेवालाँ, नई दिल्ली
2013–2014	10 मार्च	न्यायमूर्ति के.डी. शाही (अ.प्रा.)	इलाहाबाद उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

महाविद्यालय निम्न औपचारिक सम्बन्धों द्वारा भी अपने विकास को सुदृढ़ करता है–

* दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के महाविद्यालय द्वारा शोध कार्य करने वाले विभाग के आचार्यगण	शोध एवं बाह्य शैक्षिक लेखांकन द्वारा पाठ्यक्रम सुदृढ़ीकरण में सहयोग करते हैं।
* अमर उजाला फाउण्डेशन, हिन्दुस्तान संस्थान, गोरखपुर, औद्योगिक विकास प्राधिकरण गोरखपुर की आई.टी.एम. संस्थान	महाविद्यालय के विद्यार्थियों को वरीयता देते हुए ग्रीष्मावकाश में प्रशिक्षण एवं रोजगार भी उपलब्ध कराते हैं।
* गुरु श्रीगोरक्षनाथ सेवा संस्थान एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्	हमारे द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता, प्रसार एवं विकास कार्यक्रमों में सहयोग एवं भागीदारी करते हैं।
* गोरक्षनाथ योग प्रशिक्षण केन्द्र	हमारे महाविद्यालय परिसर में एवं छात्रावास के विद्यार्थियों को योग एवं साधना के प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराते हैं।
* उत्तर पूर्व रेलवे मुख्यालय के पुस्तकालय एवं बौद्ध संग्रहालय	विभागों के शोध गतिविधियों में सहयोग करते हैं।
* भारत–नेपाल मैत्री संघ, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली।	हमारे निमन्त्रण को स्वीकार करने एवं महाविद्यालय में आने हेतु ख्यातिलब्ध भागीदार विद्वानों को प्रोत्साहित एवं आकर्षित करने का कार्य करते हैं।
* गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय, गोरखपुर	सप्ताह में दो दिन स्वास्थ्य जांच हेतु महाविद्यालय में चिकित्सक आते हैं एवं आवश्यकता पड़ने पर एम्बुलेन्स एवं स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराते हैं।
* शोध संचयन आई.एस.एस.एन. नं. 0975–1254 प्रकाशक–डॉ. सुनीता सिंह, 409, शान्तिवन, 2ए/244ए आजाद नगर, कानपुर–2088002 * इतिहास दर्पण ISSN-0974-3065 प्रकाशक अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, बाबा साहब आप्टे स्मृति भवन, केशर कुन्ज, झण्डेवाल, नई दिल्ली–110055 * योगवाणी RNI-NP/GR/125/14 प्रकाशक गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर	महाविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में शोध के प्रति रूचि विकसित करते हैं एवं महाविद्यालय के शोधार्थियों के शोधपत्र प्रकाशित करते हैं।
महामना मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर महाराणा प्रताप पालिटेक्निक, गोरखपुर	हमारे विद्यार्थियों को ग्रीष्मावकाश में रोजगार एवं कर्मचारियों को आई.सी.टी. सुविधा एवं प्रशिक्षण उपलब्ध कराते हैं।
बाबा राघवदास मेडिकल कालेज, गोरखपुर	स्वास्थ्य एवं सफाई से सम्बन्धित सामाजिक जागरूकता हेतु सूचना एवं सहयोग देते हैं।

स्थापना काल से ही महाविद्यालय का यह स्पष्ट उद्देश्य रहा है कि सामाजिक सेवा कार्यों में संलग्न समितियों एवं शैक्षिक क्षेत्र के ख्यातिलब्ध विद्वानों से सहभाग स्थापित करे। अनवरत प्रयत्नों से उपरोक्त सहभाग स्थापित करने में सक्षम हुए हैं। भविष्य में हम विज्ञान एवं तकनीकी संस्थाओं, वैज्ञानिकों एवं उद्योग से सहभाग स्थापित करने के प्रयास पर जोर देंगे।

मापदंड-IV
बुनियादी ढांचे और सीखने के संसाधन

4.1 भौतिक सुविधाएँ

अध्ययन–अध्यापन के लिए आवश्यक, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने में महाविद्यालय की स्पष्ट नीति है कि आवश्यकतानुसार निर्धारित समय पर भौतिक संसाधन उपलब्ध हो जाय, वे कम न हो पाए इसके लिए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् धन उपलब्ध करने में अत्यन्त उदार है। भवन निर्माण के कार्य महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के स्थायी इन्जीनियर्स एवं परामर्शदाताओं की देखरेख में सम्पन्न कराया जाता है। साथ ही साथ शिक्षण और अधिगम के लिए आवश्यक सुविधाएं आवश्यकता पड़ने के साथ–साथ तत्काल प्रभाव से बढ़ाने के लिए महाविद्यालय तत्पर रहता है। प्रबन्ध तन्त्र की ओर से प्राचार्य को स्पष्ट निर्देश है। समुचित अधिकार मिले हैं। इसलिए आवश्यक सुविधाएं पठन–पाठन में कभी बाधक नहीं बनी हैं। विगत चार सत्रों में रख–रखाव हेतु स्वीकृत धनराशि का विवरण निम्नव है–

मद	2010–11(रु.में)	2011–12(रु.में)	2012–13(रु.में)	2013–14(रु.में)
भवन	66,00,000.00	72,00,000.00	88,00,000.00	78,00,000,00
फर्निचर	3,90,000.00	6,30,000.00	2,00,000.00	1,50,000.00
उपकरण	1,10,000.00	10,000.00	1,20,000.00	–
कम्प्यूटर	–	2,50,000.00	2,20,000.00	1,25,000.00
वाहन	–	–	7,00,000.00	–
विद्युत, जनरेटर व जल प्रबन्ध	50,000.00	50,000.00	50,000.00	1,20,000.00
प्रयोगशाला	2,50,000.00	4,50,000.00	3,35,000.00	5,00,000.00
पुस्तकालय	1,50,000.00	5,00,000.00	2,70,000.00	5,50,000.00

क–1

शिक्षण कक्ष, प्रशासनिक कक्ष, क्रीड़ा, रासेयो आदि के लिए उपलब्ध कक्षों का विवरण

विवरण	संख्या	क्षेत्रफल (फीट में)
व्याख्यान कक्ष	24	25’ × 35’
ट्यूटोरियल कक्ष	02	25’ × 35’
सेमिनार हाल	01	25’ × 60’
प्रयोगशाला	11	25’ × 40’
शोध अध्ययन केन्द्र	01	25’ × 60’
एनिमल हाउस	01	15’ × 10’
प्राचार्य कक्ष	01	15’ × 20’
सामूहिक शिक्षक कक्ष	01	15’ × 20’
कार्यालय	02	15’ × 20’ 25’ × 30’
मुख्य नियन्ता	01	15’ × 20’
छात्रा सामान्य कक्ष	01	15’ × 20’
छात्र सामान्य कक्ष	01	15’ × 20’
छात्रसंघ कार्यालय	01	15’ × 20’
विभागीय शिक्षक कक्ष	12	15’ × 20’

क्रीड़ा कक्ष	01	25’ × 20’
जनरेटर कक्ष	01	20’ × 25’
परीक्षा	01	20’ × 25’
कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेन्टर	01	25’ × 40’
सिलाई एण्ड कढ़ाई ट्रेनिंग सेन्टर	01	25’ × 60’
स्टोर	01	25’ × 35’

क–2

प्रयोगशाला उपकरण

रसायन विज्ञान विभाग

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1.	एनालिटिकल केमिकल बैलेन्स	05	41.	थर्मामीटर 360°+1° सी	59+20
2.	इलेक्ट्रानिक बैलेन्स	01	42.	टेस्ट ट्यूब ब्रश	200
3.	बीकर–1000 मिली ली.,400 मिली ली.,250मिली ली.,100 मिली ली.	4+85+2 +80+125	43.	टांग	165
4.	ब्यूरेट	50	44.	टेस्ट ट्यूब होल्डर	230
5.	ब्यूरेट स्टैण्ड क्लैम्प के साथ	70	45.	विस्कोमीटर	24
6.	ब्वायलिंग ट्यूब	286	46.	वाश बाटल	150
7.	कोनिकल फ्लास्क 100+250 मिली	104+58	47.	विंचिस्टर बाटल 20+3+5 ली.	1+7+5
8.	कार्क रबर	20	48.	वायर गाज नं. 1	240
9.	कैपीलरी ट्यूब	12	49.	वाटर डिस्टीलेशन	1
10.	क्रुसीबल (सिलिका) 15 मिली ली.	37	50.	वाटर बाथ	92
11.	क्ले पाइप ट्राइऐंगिल	36	51.	एडाप्टर विथ रबर	5
12.	डेसीकेटर	39	52.	एयर कन्डेन्शरबोरोशिल (ग्लास – 25 मिमी.)	60
13.	फनल	97	53.	बुकनर फनल	59
14.	सेपरेटिंग फनल = 1000 मिली ली., 500 मिली ली.	2+3	54.	कन्डक्टीविटी मीटर	01
15.	फ्रेक्शनल वेट	5	55.	सेन्ट्रीफ्यूग मशीन	01
16.	ग्लास राड	197	56.	कन्डेन्शरलेविग	30
17.	गैस बर्नर	42+ 30	57	फिल्टरिंग फलास्क	30
18.	गैस जार	22	58	फिल्टर पम्प	40
19.	इगनिशन ट्यूब	2 बाक्स	59	सिन्टर्ड ग्लास क्रुसिबल	52
20.	एलीमेन्ट स्पेयर	2	60	ग्लास ट्यूब	30
21.	कीप्स उपकरण	2	61	हिटिंग मेन्टल 1 ली.	02
22.	मीजरिंगसिलेन्डर–1000+500+250 +100+25 मिली ली.	2+4+4+ 5+3+3	62	पीएच मीटर इलेक्ट्रोड सहित	01
23.	मेलटिंग प्वाइंट उपकरण	37	63	पोरस प्लेट	48
24.	मोर्टर पिस्टल	01	64	पिपेट स्टैण्ड पालीलैब	03
25.	मीजरिंग फ्लास्क	93+25	65	ग्रजुएटेड पिपेट मेकिंग सहित	30
26.	ओवन	01	66	राउण्ड बाटम फ्लास्क	55
27.	पोर्शलीन डिश	123	67	सैंड बाथ	40
28.	पिकनोमीटर	36	68	वैकुम पम्प इरसान	01
29.	पिपेट–10+25+0.1+1.0 मिली ली.	69+40+ 2+2	69	एटामिक माडल	01
30.	रियजेंट बाटल–250+125 मिली 1.08+2.50+5.00 ली (विनचेस्टर)	50+158+2 2+112+40	70	मेल्टिंग प्वाइंट अपार्चस इलेक्ट्रीकल	03
31.	फ्रिज	01	71	पिपेट स्टैण्ड	02
32.	रबर ट्यूब	05 मी.	72	टेस्ट ट्यूब एण्ड रैक	02

33.	स्टाप वाच	20	73	वाच ग्लास	170
34.	स्टेग्नोमीटर	36	74	कम्प्यूटर	02
35.	एस.जी. बाटल	36	75	लैपटाप	01
36.	स्प्रे बाटल	2	76	प्रोजेक्टर	01
37.	स्पैचुला स्टील	180	77	इन्टरनेट माडम	01
38.	टेस्ट ट्यूब	595			
39.	टेस्ट ट्यूब स्टैण्ड	174			
40.	ट्राइपाड स्टैण्ड	179			

भौतिकी विभाग

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	सेक्सटेन्ट	2	44	स्टैण्ड (फोटो सेल) राइड	1
2	स्पैक्ट्रोमीटर	5	45	ए/सी, डी/सी वोल्टेज विथ सी.आर.ओ.	1
3	फलाई ह्वील	3	46	सी.आर.ओ.	2
4	सोनो मीटर	2	47	सोडियम वैपर लैम्प	2
5	कैरीफास्टर ब्रिज	3	48	टीएक्सआर कैब इनेट फार ना–लैम्प	1
6	कम्पाउण्ड पेन्डुलम	2	49	बीकर	4
7	बेंडिंग आफ बीन	2	50	मीटर स्केल	19
8	मेल्डास मेथड	2	51	ग्लास ट्यूब	2
9	मैक्सवल नीडिल	2	52	कैपिलरी राड	2
10	पी.एन. जक्शन	5	53	ट्रैंगुलर फाइल	1
11	विस्कोसीटी	2	54	यूनिवर्सल गेट	2
12	सरफेस टेंसन	2	55	फेट	2
13	सर्ल्स उपकरण	5	56	एच/फुल वेव रेक्टीफायर	1
14	स्टाप वाच (इसल) प्रिग	2	57	क्वार्टज क्राइस्टल	1
15	स्टाप वाच (डायमण्ड) स्माल	14	58	आर.एफ. ओसीलेटर	2
16	ट्रायोड वैल्यू	3	59	लेजर (डायोड)	5
17	स्क्रूव गेज	9	60	क्लैम्प विथ स्टैण्ड	11
18	प्रिज्म	7	61	4 स्लिट	2
19	वेट हंगर	10	62	रेक्टुगुलर उपकरण	2
20	वर्मिइयरकैलिपर्स	10	63	आर.सी. नेटवर्क	2
21	गालवैनो मीटर	6	64	वी.टी.वी.एम.	1
22	फिजिकल बैलेंस विथ वाच बाक्स	1	65	आडियो ओसिलेटरफंक्शन जनरेटर	1
23	स्प्रिट लेवल	1	66	वोल्टेज रेगुलर (जेनर)	2
24	रेजिस्टेन्स वायर	30	67	बार वायर 12''	6
25	बीकर 500 मिली ली.	4	68	टू वे की	2
26	मीटर स्केल	19	69	वालमिटर (0–10वी)	6
27	एमोनियम क्लोराइड	500 ग्राम	70	मिलियम मीटर	9
28	चाइल्डस ला	02	71	माइक्रो मीटर	3
29	वोल्टेज रेगुलर+(जोनेट्रायड)	2+3=5	72	कैरेक्टरस्टिक्स आफ जेनेर	3
30	टेटराड/पेन्टॉड वैल्यू कैरेस्टिक	1	73	सी.आर.ओ. लीड	4
31	लेन्सी सेल	7	74	माइक्रो मीटर स्लिट	2
32	डिफट्रैक्शन क्राफ्टिंग		75	पोटेनिशयों मीटर	2
33	न्यूटन्स रिंग		76	बिम पावर ट्यूब	2
34	सिंगल स्लिट		77	अनरेगुलर पावर सप्लाई	1
35	डबल स्लिट		78	मेजरिंग सिलिन्डर	2
36	पोलरिमीटर+ट्यूब		79	टेबल लैम्प	2
37	प्लंक कान्सटेन्ट		80	टेटराड/पेन्टोड वैल्यू	1
38	पी.एन.पी. कैरेक्टरस्टिक्स		81	मरकरी लैम्प	1

39	शेयरिंग ब्रिज		82	कम्प्यूटर	1
40	लाजिक गेट	2	83	लैपटाप	1
41	रिजाल्विंग पावर आफ टेलेस्कोप	1	84	प्रोजेक्टर	1
42	पालीराइड्स	1	85	इन्टरनेट माडम	1
43	एण्डरसन ब्रिज	2			

प्राणि विज्ञान विभाग

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	माइक्रोस्कोप ऐण्ड डिसेक्टिंग माइक्रोस्कोप	30	19	एल्कोहल	3 ली.
2	स्टैनिंग रैक	20	20	फारमेल्डिहाइड	1.5 ली.
3	म्युजियम स्पेशीमेन	91	21	बोरेक्स	100 ग्राम
4	परमानेंट स्लाइड	106	22	एनीमल	500 पीस
5	डिसेक्टिंग ट्रे	89	23	टावेल	18 पीस
6	केमिकल एनालिटिकल बैलेंस	1	24	माडल	50 पीस
7	डिहाइड्रेशन मैटेरियल	3×3=9	25	बोन	14 पीस
8	स्लाइड (सादा)	137	26	फिजियोलॉजी उपकरण	05
9	कवर स्लिप	5 पैकेट	27	फिजियोलॉजी केमिकल (कोपालरी ट्यूब)	09 पीस
10	वाच ग्लास	50	28	स्टाप वाच	05 पीस
11	ड्रापिंग बॉटल	165	29	मिजरिंग सिलेण्डर पाली	04 पीस
12	कनाडा बालसम बॉटल	19	30	अमोनिया सलुशन	01 पीस
13	ग्लास फनल	2	31	ह्यूमन फिजियोलॉजी चार्ट	10 पीस
14	रियजेन्ट बॉटल	10	32	ग्लिसरीन	01
15	केमिकल (जायलिन)	3 ली.	33	कम्प्यूटर	01
16	केमिकल (डी.पी.एक्स माउन्ट)	2	34	एल.सी.डी. प्रोजेक्टर	01
17	केमिकल रियजेन्ट (कारमीन)	2	35	लैपटाप	01
18	डीहाइड्रेशन ट्यूब	90	36	मोडम	01

वनस्पति विज्ञान

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	गैनांग पोटोमीटर	1 सेट	11	मोर्टर पिस्टल	1 सेट
2	गैनांग रेस्पाइरोमीटर	1 सेट	12	क्रोमैटोग्राफी जार (गैस जार)	20 पीस
3	फार्मर पोटोमीटर	1 सेट	13	केमिकल बैलेन्स	1 सेट
4	विलमॉन्ट बुब्लर	1 पीस	14	फिजिकल बैलेन्स	1 सेट
5	ब्लैक मेनस उपकरण	1 पीस	15	एमीनो–एसिड किट	1 सेट
6	ओस्मोमीटर	10 पीस	16	हैण्ड लैन्स	10 पीस
7	स्टेज माइक्रोमीटर एवं आकुल्स	11 पीस	17	कम्प्यूटर	01
8	माइक्रोस्कोप कम्पाउण्ड	25	18	लैपटॉप	01
9	डिसेक्टिंग माइक्रोस्कोप	15 पीस	19	मोडम	01
10	इनोकुलेटिंग नीडल	5 पीस	20	एल.सी.डी. प्रोजेक्टर	01

इलेक्ट्रानिक्स विभाग

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	मेजरमेंट ऑफ आर.सी. एण्ड एल. यूजिंग एलसीआर ब्रिज	01 सेट	12	कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ फोटो डायोड	01 सेट
2	बीहेवियर ऑफ एलसीआर सर्किट एट डिफरेन्ट सिग्नल फ्रिक्वेन्सी	01 सेट	13	कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ थर्मीस्टर	01 सेट
3	कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ पी.एन. जंक्शन	01 सेट	14	डिजिटल मल्टीप्लायर (डीएमएम)	02 पीस

4	कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ जीनर डायोड	01 सेट	15	सीआरओ	02 पीस
5	वैरीफिकेशन ऑफ नेटवर्क थियोरेम	01 सेट	16	एमीटर फालोवर रेगुलेशन सर्किट	01 सेट
6	कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ एलईडी	01 सेट	17	कन्ट्रोल्ड रेक्टीफीकेशन यूजिंग एससीआर	01 पीस
7	पीएनपी ट्रांजिस्टर इन सीई कान्फीगुरेशन	01 सेट	18	स्टडी ऑफ एम्प्लीट्यूड मॉड्यूलेशन	01 पीस
8	पीएनडी ट्रांजिस्टर इन सीबी कान्फीगुरेशन	01 सेट	19	कम्प्यूटर	01
9	कैरेक्टरिस्टिक्स ऐण्ड पैरामीटरर्स ऑफ फेट	01 सेट	20	एल.सी.डी. प्रोजेक्टर	01
10	एनर्जी बैण्ड गैप इन सेमीकन्डक्टर	01 सेट	21	लैपटॉप	01
11	इन्क्रीमेन्टल इन्डक्टेन्स यूजिंग एसी ब्रिज	01 सेट	22	मोडम	01

कम्प्यूटर साइंस विभाग

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	डेस्कटाप	60	5	एल.सी.डी. प्रोजेक्टर	01
2	प्रिन्टर	02	6	यू.पी.एस.	60
3	इन्टरनेट वाइमेक्स	04	7	इनवर्टर	03
4	इन्टरनेट माडम	04			

भूगोल विभाग

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	समतल पट्ट सर्वेक्षण (उपकरण)	15 पीस	16	वाल मैप	10 पीस
2	भारतीय नतिमापी	10 पीस	17	ऐतिहासिक मानचित्र (भारत)	21 पीस
3	भू–पत्रक ग्राफिकल शीट्स	175 पीस	18	भौगोलिक मानचित्र	48 पीस
4	ग्लोब–20 सेमी	01 पीस	19	रेन गेज	01 पीस
5	ग्लोब–30 सेमी	01 पीस	20	विन्ड वेन	02 पीस
6	सेट स्क्वायर	01 पीस	21	एरियल फोटोग्राफ्स	10 पीस
7	वृत्त अंशाकित	02 पीस	22	ड्राई वेट थर्मोमीटर	02 पीस
8	सक्सटैन्ट	05 पीस	23	एल.सी.डी. प्रोजेक्टर	01 पीस
9	पाकेट स्टीरियो स्कोप	10 पीस	24	कम्प्यूटर	01
10	प्रिज्मेटिक कम्पास	05 पीस	25	लैपटाप	01
11	डाइगोनल स्केल	30 पीस	26	मोडम	01
12	वर्नियर कैलीपर्स	30 पीस	27	स्लाइड प्रोजेक्टर	01
13	जमेंट्री बाक्स	01 पीस	28	ओवर हेड प्रोजेक्टर	01
14	इंजिनियरिंग स्केल	01 पीस	29	एल.सी.डी. प्रोजेक्टर	01
15	एन्ड्रायड बैरोमीटर	01 पीस			

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	लिक्विड प्रिज्मेटिक कम्पास मार्क–।।। ए	10 पीस	9	प्रोजेक्टर	01
2	सर्विस प्रोजेक्टर मार्क–।।।	33 पीस	10	प्रिन्टर	01
3	ग्रिडेड टोपो शीट्स	30 पीस	11	स्कैनर	01
4	मैप	30 पीस	12	सैंड माडल	02
5	मैप (हार्ड बैकिंग)	05 पीस	13	कैमरा	01
6	टेप	10 पीस	14	मैप स्टैण्ड	02

7	प्रिज्मैटिक बाइनोकुलर्स मैग्नीफिकेशन	10 पीस	15	आउटर बाउण्ड्री मैप 1. इण्डिया 2. वर्ल्ड	 02 02
8	कम्प्यूटर	01	16	पालिटिकल ग्लोब्स 30सेमी	1 पीस

मनोविज्ञान विभाग

क्र.सं.	विवरण	संख्या	क्र.सं.	विवरण	संख्या
1	मेमोरी ड्रम	1	16	स्कूल एन्वायरमेंट स्केल	1 सेट
2	मूलर इल्यूशन (आपरेटस)	10	17	सिन्हा ऐंक्साइटी स्केल	1 सेट
3	मेट्रोनोम	1	18	एचिवमेंट नोटिव टेस्ट	1 सेट
4	टेचीस्टोस्कोप	5	19	टेस्ट ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेन्स	1 सेट
5	स्टाप वाच	10	20	फेमिली इन्वायरमेंट स्केल	1 सेट
6	टी.ए.टी.	2 सेट	21	एडजस्टमेंट इन्वेन्टरी	1 सेट
7	16 पी.एफ.	1 सेट	22	सोशल बीहैवियर	1 सेट
8	जे.एम.पी.आई.	1 सेट	23	सोशल प्रीफरेन्स	1 सेट
9	पीजीआई हेल्थ इन्वेन्टरी	1 सेट	24	एग्रेसिव बीहैवियर क्वेश्चनाइज	1 सेट
10	पैरेन्टिंग स्केल	1 सेट	25	एग्रेसिव बीहैवियर क्वेश्चनइयर	1 सेट
11	चाइल्ड रेरिंग प्रैक्टिसेस	1 सेट	26	कम्प्यूटर	01
12	एप्टीट्यूड टेस्ट	1 सेट	27	लैपटाप	1 सेट
13	इन्टेलीजेन्स टेस्ट	1 सेट	28	मोडम	01
14	एटीट्यूड स्केल	1 सेट	29	एल.सी.डी. प्रोजेक्टर	01
15	होम एन्वायरमेंट स्केल	1 सेट			

(बी) क्रीड़ा सुविधाएं

सामान	**संख्या**	**क्षेत्रफल (फीट में)**
क्रीड़ा कक्ष	01	25’ × 30’
<u>क्रीड़ा सामग्री</u>		
वालीबाल	03	
वालीबाल नेट	02	
फुटबाल	02	
बैडमिन्टन	02 सेट	
बैडमिन्टन नेट	02	
शटल काक (चिड़िया)	60	
बैटबल्ला	02 सेट	
बैट बॉल	12	
शतरंज	04 सेट	
कैरम बोर्ड	03 सेट	
डिस्क थ्रो	02 सेट	
शाटपुट थ्रो (गोला)	02 सेट	
जैबलिन (भाला)	01 सेट	
वालीबाल किट (पुरूष वर्ग)	10 सेट	
वालीबाल किट (महिला वर्ग)	10 सेट	
बैडमिन्टन किट (पुरूष वर्ग)	02 सेट	
बैडमिन्टन किट (महिला वर्ग)	02 सेट	
कबड्डी किट (पुरूष वर्ग)	10 सेट	
कबड्डी किट (महिला वर्ग)	10 सेट	
क्रिकेट किट	12 सेट	

जिम्नेजियम	01	25’ × 40’
सामानों की सूची		
डिप्स स्टैण्ड (सेट)	02	
प्लेट–5किग्रा (सेट)	02	
प्लेट–10किग्रा (सेट)	02	
प्लेट रॉड–4फीट	02	
सीटअप बेन्च	02	
ए.बी.एस. केयर मशीन	01	
डम्बल–2 किग्रा (सेट)	02	

आडिटोरियम	01	35’ × 172’
कुर्सी (मंच, माइक सेट)	600 / 03	
राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यालय	01	15’ × 20’
राष्ट्रीय सेवा योजना भण्डार कक्ष	01	25’ × 30’
सास्कृतिक कार्यक्रम (हारमोनियम, तबला, ढोल, झाल, बैण्ड)	01	25’ × 40’
योगिराज बाबा गम्भीरनाथ फ्री योग सेन्टर	01	25’ × 40’
गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र	01	15’ × 20’

महाविद्यालय के प्राचार्य एवं प्रबन्ध तन्त्र इस के प्रति अत्यन्त सचेत रहते हैं कि आवश्यकता बढ़ने के साथ–साथ भवन की कमी न होने पाए। उसकी सम्यक उपलब्धता सावधानीपूर्वक सुनिश्चित की जाती है।

पिछले चार वर्षों में इन कार्यों के लिए व्यय की गई धनराशि का विवरण दिया जा रहा है–

सत्र	राशि (रूपये में)	वर्गफीट	प्रयोजन
2010–2011	66,10,422.00	6000	क्लास रूम, छात्रसंघ, सेमिनार हाल
2011–2012	72,05,769.00	7750	पुस्तकालय वाचनालय
2012–2013	88,39,088.00	10664	आडिटोरियम एवं क्लास रूम
2013–2014	78,000,00.00	6196	छात्रावास

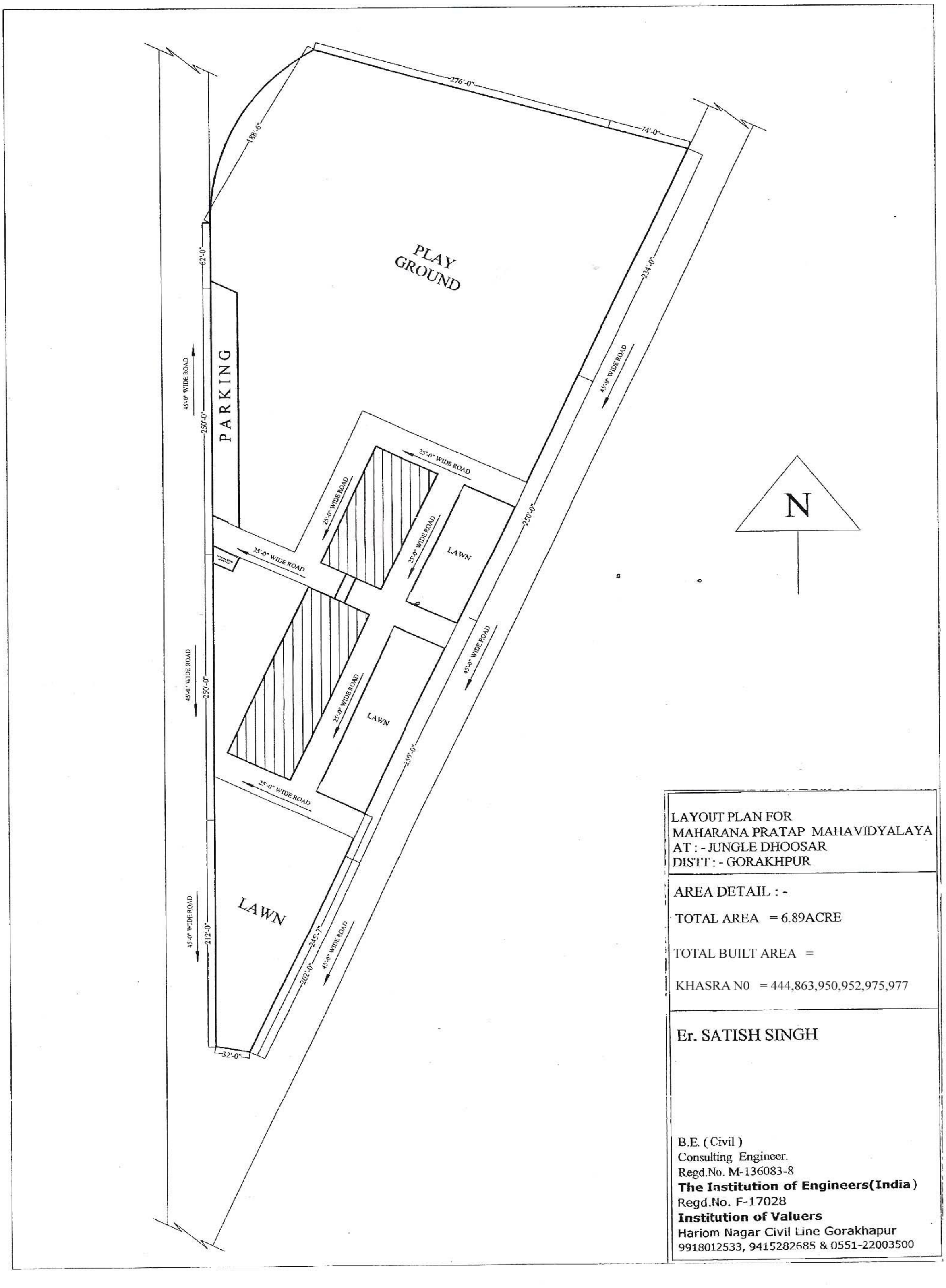
PLAY GROUND
PARKING
LAWN
LAWN
LAWN
N
45'-0" WIDE ROAD
25'-0" WIDE ROAD
276'-0"
74'-0"
188'-6"
62'-0"
234'-0"
250'-0"
212'-0"
245'-7"
202'-0"
32'-0"
LAYOUT PLAN FOR
MAHARANA PRATAP MAHAVIDYALAYA
AT : - JUNGLE DHOOSAR
DISTT : - GORAKHPUR
AREA DETAIL : -
TOTAL AREA = 6.89ACRE
TOTAL BUILT AREA =
KHASRA N0 = 444,863,950,952,975,977
Er. SATISH SINGH
B.E. (Civil)
Consulting Engineer.
Regd.No. M-136083-8
The Institution of Engineers(India)
Regd.No. F-17028
Institution of Valuers
Hariom Nagar Civil Line Gorakhapur
9918012533, 9415282685 & 0551-22003500

महाविद्यालय के भवन विन्यास की रुपरेखा स्थापना के समय से ही व्यवस्थित रूप से सुनिश्चित कर दी गई है। उसमें स्थापना अवधि से अब तक लगभग 75 प्रतिशत निर्माण क्रमबद्ध तरीके से पूरा हो चुका है। भविष्य में महिला छात्रावास, पुस्तकालय भवन एवं एक विशाल बहुउद्देशीय सभागार निर्माण की योजना का कार्य अवशेष है।

शारीरिक रूप से विकलांग छात्र–छात्राओं के लिए उनकी आवश्यकता को देखते हुए समुचित सुविधा प्रदान करना महाविद्यालय प्रशासन की दृष्टि में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है और आवश्यकतानुसार यह सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

छात्रों के लिए 80 अधिवासी की छात्रावास सुविधा उपलब्ध है। छात्रावास में जिन्मेजियम, योग केन्द्र, पुस्तकालय, इन्टरनेट सुविधा, प्राथमिक उपचार की सुविधा, आडियो–विडियो से सुसज्जित सेमिनार कक्ष, शुद्ध पेयजल, वालीबाल, बैडमिन्टन का सुव्यवस्थित मैदान, इनडोर खेल की सुविधा उपलब्ध है। सुरक्षा कर्मचारी के लिए मुख्य द्वार पर कार्यालय तथा आवास, अभिरक्षक का आवास निर्मित है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित छात्रावास, प्रताप आश्रम, गोलघर, गोरखपुर में महाविद्यालय के 40 छात्रों के लिए तथा मीराबाई महिला छात्रावास में 40 छात्राओं के लिए आवासीय सुविधा उपलब्ध है। महाविद्यालय छात्रावास का द्वितीय तल निर्माणाधीन है एवं महिला छात्रावास का निर्माण क्रमशः सुनिश्चित हैं। गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के साथ छात्रावास का अनुबन्ध है। फोन की सूचना पर 20 मिनट में एम्बुलेन्स सहित चिकित्सकों की टीम उपलब्ध हो जाती है।

परिसर में श्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र के द्वारा प्राथमिक उपचार की सुव्यवस्थित योजना क्रियान्वित है। गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के साथ अनुबन्ध के आधार पर चिकित्सकीय सुविधा छात्रों, कर्मचारियों एवं शिक्षकों के लिए उपलब्ध है। फोन पर 20 मिनट के अन्दर महाविद्यालय परिसर में भी एम्बुलेंस सहित चिकित्सकों की टीम उपलब्ध हो जाती है।

सामान्य सुविधाएं–

आई.क्यू.ए.सी.	सभी सुविधाओं सहित पृथक कार्यालय कक्ष आई.क्यू.ए.सी. के लिए उपलब्ध है।
शिकायत निवारण उपचार यूनिट	प्राचार्य कक्ष, मुख्य नियन्ता कार्यालय एवं छात्रा प्रभारी का कार्यालय शिकायत निवारण कार्यालय के रुप में कार्य करता है।
महिला प्रकोष्ठ	महाविद्यालय में सभी सुविधा से युक्त छात्रा प्रभारी कार्यालय उपलब्ध है।
सुझाव एवं परामर्श	महाविद्यालय में सुझाव एवं परामर्श का सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित कार्यालय है।
कैम्पस सलेक्शन	परिसर चयन हेतु पृथक कार्यालय की व्यवस्था नहीं है। प्रभारी के कार्यालय से ही यह व्यवस्था संचालित होती है।
स्वास्थ्य केन्द्र	एक बन्द कक्ष में एक बेड का ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरणों से युक्त स्थापित है। मुख्य द्वार पर भी एक कक्ष सुव्यवस्थित है, जिसमें प्रत्येक बुधवार एवं वृहस्पतिवार को चिकित्सकों द्वारा ग्रामीण मरीज भी देखे जाते हैं एवं उनका

	निःशुल्क उपचार होता है।
कैन्टीन	सुव्यवस्थित कैन्टीन है, जहां एक साथ 60 विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था है।
सुरक्षित पेयजल	महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं के लिए अलग–अलग वाटर प्यूरीफायर के साथ शुद्ध एवं सुरक्षित पेयजल की व्यवस्था है।
सुव्यवस्थित सभागार	महाविद्यालय में माइक, कुर्सी, प्रोजेक्टरयुक्त सुव्यवस्थित एक सेमिनार कक्ष एवं एक सभागार उपलब्ध है।

4.2 सीखने के संसाधन के रूप में पुस्तकालय

शिक्षक की अध्यक्षता में छात्रों की भी पुस्तकालय परामर्श समिति गठित है। वह निरन्तर पुस्तकालय की गतिविधि पर ध्यान रखती है तथा उसे समुन्नत बनाने के लिए प्रयत्नशील रहती है। समिति के सुझाव को महाविद्यालय प्रशासन द्वारा क्रियान्वयन करने में विलम्ब नहीं होता है।

अवकाश के दिन छोड़कर शेष कार्य दिवस में पुस्तकालय प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक खुला रहता है। एक समय में 100 विद्यार्थी–शिक्षक बैठकर पढ़ सकते हैं। महाविद्यालय में इन्टरनेट की सुविधा, विविध प्रकार की पुस्तकों की उपलब्धता एवं शान्ति पूर्ण वातावरण पुस्तकालय की विशेषता है। निरीक्षण के दौरान हमेशा विद्यार्थी–शिक्षक शान्त पढ़ते मिलते हैं। पुस्तकालय से पुस्तक निर्गत की व्यवस्था अलग है। पढ़ने वाले की अलग है। आगन्तुक पंजिका रखी हुई है जिस पर आते–जाते समय शिक्षक–विद्यार्थी हस्ताक्षर करते हैं।

पुस्तकालय का वर्तमान स्वरूप इस प्रकार है (पृथक नया पुस्तकालय भवन भविष्य की कार्य योजना में)–

- पुस्तकालय का कुल क्षेत्रफल — 420.33 वर्ग मीटर
- कुल बैठने की क्षमता — 100
- कार्य के घंटे–
  - कार्य दिवस — प्रातः 9 से सायं 5 बजे
  - अवकाश के दिन — बन्द
  - परीक्षा के पूर्व के दिनों में — प्रातः 9 से सायं 5 बजे
  - परीक्षा के दिनों में — प्रातः 9 से सायं 5 बजे
  - ग्रीष्मावकाश में — प्रातः 9 से सायं 4 बजे
- ई संसाधनों के उपयोग के लिए — आई.टी. क्षेत्र उपलबध

विभागों से शिक्षकों द्वारा प्राप्त सूची की पुस्तकें पुस्तकालय समिति की स्वीकृति के पश्चात् पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा क्रय की जाती है। किसी विद्यार्थी द्वारा मांगी गई पुस्तक उपलब्ध न होने पर स्थानीय बाजार से पुस्तकालयाध्यक्ष को क्रय करने का अधिकार प्राप्त है। पुस्तकालय के नियमानुसार अगले दिन सम्बन्धित विद्यार्थी को पुस्तक उपलब्ध करा देना अनिवार्य है। प्रत्येक शिक्षक छात्र–कर्मचारी को यह अधिकार प्राप्त है कि वह कहीं भी अपनी व्यक्गित यात्रा के दौरान पुस्तकालय के लिए उपयोगी पुस्तक देखता है तो उसे क्रय कर सकता है। क्रय करने की यह सीमा 10,000 (दस हजार रूपये) रूपये

तक है। पुस्तकालय में विगत चार सत्रों में क्रय की गई पुस्तकों एवं शोध पत्रिकाओं इत्यादि का विवरण निम्नवत है–

मद	वर्ष 2010–11		वर्ष 2011–12		वर्ष 2012–13		वर्ष 2013–14	
	संख्या	कुल लागत (रु. में)	संख्या	कुल लागत (रु. में)	संख्या	कुल लागत (रु. में)	संख्या	कुल लागत (रु. में)
पाठ्य–पुस्तक	3170	527185.00	2038	520653.00	91	25706.00	1215	210081.00
संदर्भ ग्रन्थ	396	41323.00	638	77146.00	400	79300.00	537	190234.00
पत्र–पत्रिकाएं	110	15971.00	178	15813.00	169	15139.00	220	26687.00
ई–संसाधन	–	–		105350.00		101448.00		137940.00
अन्य सुविधाएं	–	–	–	–	–	–	सोल	30000.00 10000 प्रतिवर्ष
							एन–लिस्ट	5000 प्रतिवर्ष

पुस्तकालय कम्प्यूटराइज्ड एवं आन लाइन है। पुस्तकालय में 4 कम्प्यूटर पर इन्टरनेट सुविधा सभी के लिए उपलब्ध है।

- साक्षात्कारों की औसत संख्या 125
- जारी की गई/वापस की गई पुस्तकों की औसत संख्या 80
- नामांकित छात्रों और पुस्तकालय की पुस्तकों का अनुपात 5:1
- पिछले तीन वर्षों में जोड़ी गई किताबों की औसत संख्या 1440
- आपेक (OPAC)में सत्रारम्भ करने की औसत संख्या 70
- ई संसाधनों की औसत डाउनलोड/छपाई संख्या 70
- संगठित सूचना साक्षारता प्रशिक्षण की सूचना 04
- किताबें और अन्य सामग्री की 'निराई बाहर' का विवरण 50

पुस्तकालय द्वारा प्रदान की गई विशेष सेवाओं की जानकारी–

- हस्तलेख नहीं
- सन्दर्भ ग्रन्थ हाँ
- रेपोग्रैफी हाँ
- आइ.एल.एल. (अन्तर पुस्तकालय ऋण सेवा) नहीं
- सूचना परिनियोजन और अधिसूचना हाँ
- डाउनलोड हाँ
- छपाई हाँ
- पठन सूची/ग्रंथ सूची संकलन हाँ
- घर या दूर–दराज से ई. संसाधनों तक पहुँच हाँ
- उपयोगकर्ता अभिविन्यास और जागरुकता हाँ
- डाटाबेस के खोज में सहायता हाँ
- Inflitbnet/UGC सुविधाएँ हाँ

पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं कर्मचारी का यह कर्तव्य निश्चित किया गया है कि शिक्षक और विद्यार्थी पुस्तकालय से जो सुविधा चाहते हैं, यदि वह उपलब्ध है तो वह उनको तत्काल उपलब्ध कराई जाय। यदि वह आवश्यक है, अनुपलब्ध है तो प्रशासन को अवगत कराया जाय और उसे शीघ्रातिशीघ्र उपलब्ध कराया जाय।

दृष्टिबाधित लोगों के लिए पुस्तकालय में कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। पुस्तकालय में पुस्तकालय का प्रयोग करने वाले विद्यार्थी और शिक्षकों से उन्हें पुस्तकालय में होने वाली असुविधाओं के बारे में बताने के लिए महाविद्यालय प्रशासन द्वारा निरन्तर प्रोत्साहित किया जाता है। प्राचार्य स्वयं उनकी असुविधाओं को सुनते हैं और उन सुविधाओं को बढ़ाने की दिशा में अपने सीमित संसाधनों के अन्तर्गत सदैव तत्पर रहते हैं।

4.3 आईटी का बुनियादी ढांचा

महाविद्यालय सुनिश्चित कार्य योजनानुसार महाविद्यालय में कार्य कर रहे कम्प्यूटर साइंस के शिक्षकों के परामर्श अनुसार क्रमबद्ध तरीके से सूचना प्रौद्योगिकी के क्रमिक विकास और अनुप्रयोग की दिशा में अग्रसर है। इस प्रक्रिया में हम अपने यहाँ के कर्मचारी को इस प्रौद्योगिकी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा उनके नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था है। जैसे–जैसे वे दक्ष होते जा रहे हैं वैसे–वैसे आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था महाविद्यालय करता जा रहा है। महाविद्यालय में उपलब्ध कम्प्यूटर एवं उनसे सम्बन्धित सामानों का विवरण नीचे दिया जा रहा है–

कम्प्यूटर्स	–	90
कम्प्यूटर साइंस छात्र अनुपात	–	1:2
LAN फैसिलिटी	–	हां
वाई–फाई फैकल्टी	–	नहीं
लाइसेन्स साफ्टवेयर	–	हां
नोड्स की संख्या/कम्प्यूटर इंटरनेट के साथ	–	10

चार वर्षों के खर्च का विवरण :

	2010–11 (रू. में)	2011–12 (रू. में)	2012–13 (रू. में)	2013–14 (रू. में)
व्यय	शून्य	2,50,000.00	2,20,000.00	1,25,000.00
रख–रखाव	18,925.00	12,650.00	26,800.00	19,568.00

शिक्षक द्वारा नई विधियों के उपयोग से शिक्षण करना एवं विद्यार्थी द्वारा इन्टरनेट के माध्यम से पठनीय सामग्री खोजना, संग्रह करना, ये दो कार्य महाविद्यालय के शिक्षकों–विद्यार्थियों द्वारा किये जा रहे हैं। लेकिन अभी इस कार्य में हमें उतनी सफलता नहीं मिली है कि हम सन्तुष्ट हो सकें। इस दिशा में अभी बहुत कार्य करना शेष है। महाविद्यालय राष्ट्रीय ज्ञान संजाल (National Knowledge Network) से जुड़ने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर चुका है।

4.4 परिसर की सुविधाओं का रख–रखाव

परिसर में उपलब्ध सुविधाओं के रख–रखाव की समुचित व्यवस्था प्राचार्य के कर्तव्यों में निहित है। इस कार्य हेतु उन्हें प्रबन्ध तन्त्र द्वारा अधिकार प्राप्त है और प्राचार्य इस दिशा में सचेष्ट रहते हैं। रख–रखाव कार्य सुव्यवस्थित योजनानुसार करने हेतु प्राचार्य द्वारा समिति गठित है। प्रबन्धक स्वयं उनके इस दायित्त्व के निर्वाह की गतिविधियों को निरीक्षण के जरिए देखते हैं। इसके लिए प्रतिवर्ष समुचित धनराशि का प्राविधान बजट में किया जाता और उसे आवश्यकतानुसार व्यय किया जाता है।

महाविद्यालय के भवन एवं उपकरणों का रख–रखाव सम्बन्धित विशेषज्ञों की सहायता से किया जाता है। प्राचार्य द्वारा निर्धारित कर्मचारी की देख–रेख में आवश्यकतानुसार उनके बुलावे पर अनुबन्ध के अनुसार निर्धारित समय में आकर कर्मचारी/विशेषज्ञ कार्य पूर्ण करते हैं। विगत चार शैक्षिक सत्रों में रख–रखाव पर हुए व्यय का विवरण नीचे दिया जा रहा है–

रख–रखाव (मेन्टीनेन्स)

मद	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14
भवन एवं सामान्य	74166.00	145807.00	40581.00	13630.00
फर्निचर	15900.00	19236.00	6000.00	25125.00
उपकरण	15259.00	11375.00	27025.00	30204.00
कम्प्यूटर	18925.00	12650.00	26800.00	19568.00
वाहन	7600.00	5500.00	11350.00	137887.00
पुस्तकालय (पुस्तक की बाइन्डिंग)	5350.00	1800.00	8725.00	10000.00
विद्युत	7680.00	7150.00	4877.00	28576.00
जलसंचार	3500	6500	5500	3280.00
अन्य	–	–	76055	34360.00

मापदंड-V
छात्र समर्थन और प्रगति

5.1 विद्यार्थी को सलाह और समर्थन

महाविद्यालय प्रतिवर्ष अद्यतन सूचनाओं सहित महाविद्यालय की विवरणिका प्रकाशित करता है और उसे महाविद्यालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराता है। विवरणिका में महाविद्यालय सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध रहती है। विवरणिका में महाविद्यालय का फोन, ईमेल, पता, वेबसाइट का पता, महाविद्याय के आदर्श वाक्य, संस्थान के संस्थापक एवं प्रबन्धक का परिचय और उनका चिन्तन, सत्रारम्भ, महाविद्यालय की दिनचर्या, उपस्थिति, गणवेश, छात्रसंघ, विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा, राष्ट्रीय सेवा योजना, क्रीड़ा, शिक्षक–अभिभावक बैठक का विवरण, स्वैच्छिक श्रमदान, विद्यार्थी द्वारा कक्षाध्यापन, मासिक मूल्यांकन, प्रगति आख्या, वार्षिक पाठ्यक्रम योजना, दीवाल पत्रिका, छात्रसंघ पत्रिका, महाविद्यालय की वार्षिक शोध पत्रिका 'विमर्श', एवं 'मानविकी', आन लाइन पुस्तकालय, संकाय एवं उनमें उपलब्ध विषय, पाठ्यक्रम, शुल्क विवरण, प्रवेश नियमावली, पुस्तकालय सुविधा, छात्रावास, वाहन सुविधा, प्रशासन में छात्र सहभागिता, उत्सव, विशेष कार्यक्रम, गत सत्र में सम्पन्न हुए विभिन्न कार्यक्रमों की झांकी और विवरण, शोध एवं अध्ययन केन्द्र, समावर्तन संस्कार समारोह, प्रबन्ध समिति, शिक्षक–अभिभावक संघ, शिक्षक–संघ, कर्मचारी–संघ, छात्रसंघ, पुरातन छात्र परिषद्, नियन्ता मण्डल, छात्र नियन्ता, प्रवेश समिति, छात्र प्रवेश समिति, प्रयोगशाला, छात्रा समिति, प्रार्थना एवं स्वच्छता छात्र समिति, क्रीड़ा छात्र समिति, पुस्तकालय छात्र समिति, सूचना एवं परामर्श छात्र समिति, सांस्कृतिक कार्यक्रम छात्र समिति, आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ, महाविद्यालय परिवार, महाविद्यालय की सुस्थापित कार्य और नीतियाँ, भावी कार्यक्रम और विकास, शिक्षा के साथ संस्कार का विस्तृत विवरण चित्रों सहित अंकित रहता है। यह विवरणिका निःशुल्क प्रवेश के इच्छुक छात्रों–अभिभावकों की मांग पर कार्यालय से उन्हें दी जाती है। महाविद्यालय अपने ध्येय के प्रति अपने लगाव और प्रयास को शब्दों के माध्यम से नहीं परिसर में प्रवेश करते ही परिसर संस्कृति के माध्यम से व्यक्त करता है। विवरणिका का आरम्भ ही मुख्य पृष्ठ पर अंकित इन दो वाक्यों– 'पढ़ना है तो जंगल धूसड़ आएं' एवं 'शिक्षा के साथ संस्कार भी' के साथ होता है।

संस्था द्वारा प्रतिवर्ष नियत समय पर नियत छात्रवृत्तियाँ छात्रों की दी जाती हैं। कक्षा में विश्वविद्यालयी परीक्षा में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 10 दिसम्बर को प्रतिवर्ष योग्यता छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। आर्थिक रूप से पिछड़े विभिन्न छात्रों को पहचान कर प्राचार्य द्वारा स्वयं संतुष्ट होने पर कि इनकी पढ़ाई में आर्थिक कारण बाधा है, उन्हें आर्थिक सहायता महाविद्यालय द्वारा दी जाती है। ताकि धन के अभाव में उनकी पढ़ाई बाधित न

हो। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् एवं महाविद्यालय के प्रबन्धक महोदय द्वारा गत चार शैक्षिक सत्रों में दिये गये विद्यार्थी सहायता का विवरण निम्नवत है–

सत्र	छात्रवृत्ति प्रकार	छात्रवृत्ति की संख्या	धनराशि (रु. में)	छात्रवृत्ति प्रकार	छात्रवृत्ति की संख्या	धनराशि (रु. में)
2010–11	मेरिट छात्रवृत्ति*	26	16900	निर्धन छात्र**	14	96000
2011–12	,,	26	16900	,,	14	101000
2012–13	,,	26	16900	,,	19	129000
2013–14	,,	26	16900	,,	13	78500
*महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् कोष				**महाविद्यालय प्रबन्धक कोष		

उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामान्य वर्ग के गरीब, अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को समाज कल्याण विभाग द्वारा सीधे उनके खाते में नियमानुसार छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति दी जाती है। महाविद्यालय इसमें नियत समय पर फार्म भरवाने, अग्रसारित करने, बैंक में खाता खोलवाने के कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर करता है ताकि कोई ऐसा छात्र इससे वंचित न रह जाय जो यह सुविधा पाने योग्य था।

महाविद्यालय के लगभग 50% विद्यार्थी उत्तर प्रदेश राज्य सरकार के समाज कल्याण विभाग द्वारा छात्रवत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति की सुविधा प्राप्त करते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विगत चार शैक्षिक सत्रों में दी गई छात्र सहायता का विवरण निम्नवत है–

छात्र वर्ग	2010–11		2011–12		2012–13		2013–14	
	संख्या	**रुपये**	**संख्या**	**रुपये**	**संख्या**	**रुपये**	**संख्या**	**रुपये**
अनुसूचित जाति	24	1,67,600	28	1,40,730	30	1,50,000	72	3,60,000
अनुसूचित जनजाति	01	7,800	00	00	00	00	03	15,000
अन्य पिछड़ा जाति	96	7,58,800	184	9,20,180	114	4,68,000	289	5,20,200
सामान्य जाति	–	–	42	2,11,600	20	88,000	96	1,72,800

राज्य सरकार एवं अन्य बाह्य संस्थाओं द्वारा आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों को महाविद्यालय द्वारा यात्रा एवं आवासीय सुविधा का व्यय प्रदान किया जाता है।

– प्रत्येक विद्यार्थी को महाविद्यालय में स्थापित गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ प्राथमिक उपचार केन्द्र में गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय से अनुबन्ध के आधार पर प्राप्त सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं स्वास्थ्य परामर्श दिया जाता है। सप्ताह में दो दिन बुधवार–बृहस्पतिवार को इस स्वास्थ्य केन्द्र पर वरिष्ठ चिकित्सकों की टीम उपलब्ध रहती है।
– महाविद्यालय में विश्वविद्यालय परीक्षा समाप्त होने के पश्चात् प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं के लिए निःशुल्क कक्षाओं का संचालन किया जाता है। निःशुल्क कम्प्यूटर एवं सिलाई–कढ़ाई का प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम

के द्वारा छात्र–छात्राओं एवं महिलाओं में कम्प्यूटर साक्षरता तथा उनमें आत्मनिर्भर बनने हेतु कुशलता के विकास का प्रयत्न किया जाता है।

- पढ़ने में कमजोर छात्र–छात्राओं के लिए अलग से उपचारात्मक कक्षाओं की व्यवस्था है।
- विद्यार्थियों को शिक्षकों के साथ दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर से सम्बन्धित विभागों एवं इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी एण्ड मैनेजमेंट, गीडा (ITM Gida, Gorakhpur) में क्रमशः वर्ष में दो बार एवं एक बार ले जाया जाता है। वहाँ के शिक्षकों एवं छात्रों से परिचर्चा का अवसर दिया जाता है।
- छात्रों की रचनाओं को प्रकाशित करने के लिए छात्रसंघ द्वारा वार्षिक पत्रिका '**चेतक**' प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका का सम्पादक मण्डल विद्यार्थियों का होता है। छात्रसंघ प्रभारी शिक्षक की देख–रेख में विद्यार्थी पत्रिका प्रकाशित करते हैं। इससे उन्हें चिंतन, लेखन एवं स्पष्ट विचारों के प्रस्फुटन तथा उसकी अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होता है।

निःशुल्क सिलाई–कढ़ाई एवं कम्प्यूटर प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं को स्वउद्यमिता में आत्म निर्भर बनाने के कौशल का विकास कराने का अवसर दिया जाता है। यह छः माह का प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम है, जिसमें महाविद्यालय के छात्राओं व आसपास की ग्रामीण महिलाओं को प्रवेश दिया जाता है।

शिक्षणेत्तर गतिविधियों में विद्यार्थियों की सहभागिता के लिए प्रार्थना सभा में तथा छात्रसंघ की साधारण सभा में विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाता है। उनके लाभों से उन्हें परिचित कराकर प्रोत्साहित किया जाता है। विविध आयोजन प्रारम्भ किए जाते हैं जिनमें कुछ छात्र–छात्राओं को योजनापूर्वक तैयार कर सहभाग कराया जाता है जिन्हें देखकर अन्य विद्यार्थी प्रोत्साहित होते हैं। प्राचार्य–शिक्षकों की स्वयं सहभागिता भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करती है। महाविद्यालय में वार्षिक योजनानुसार विविध आयोजन एवं कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनका उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्त्व को हर प्रकार के कार्यों के प्रति सचेत दृष्टि वाला और दक्ष बनाना है।

विद्यार्थियों को खेल के समय महाविद्यालय की ओर से समुचित अल्पाहार की व्यवस्था की जाती है, उन्हें अलग से उनके शिक्षण कार्य कराकर खेल में दिये जाने वाले समय से पढ़ाई में हुई हानि से बचाने का भरसक प्रयास किया जाता है। क्रीड़ा के लिए आवश्यक किट मैटेरियल महाविद्यालय उन्हें प्रदान करता है। क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने बाहर जाने पर उनको यात्रा–व्यय, ठहरने, खाने आदि की व्यवस्था महाविद्यालय करता है।

यद्यपि कि पाठ्येतर गतिविधियाँ वर्षभर चलती हैं तथापि नवम्बर में साप्ताहिक संस्थापक समारोह एवं स्वामी विवेकानन्द जयन्ती से गणतंत्र दिवस समारोह (12–26 जनवरी) तक भारत–भारती पखवारा के रूप में पाठ्येतर गतिविधियों का अब स्थाई स्वरूप बन चुका है।

गर्मी की छुट्टियों में महाविद्यालय द्वारा दो सप्ताह तक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु निःशुल्क कक्षाएँ चलाई जाती हैं। इसमें अध्ययनरत विद्यार्थियों में से सफलता पाने वाले विद्यार्थियों की जानकारी रख पाना अभी सम्भव नहीं हो पा रहा है।

शिक्षकों द्वारा छात्रों को उनकी योग्यता और क्षमता को ध्यान में रखते हुए स्नातक के बाद वे किस क्षेत्र में अपना शिक्षण बढ़ावें, इसका परामर्श प्रयत्नपूर्वक दिया जाता है। उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयों को भी सुना–समझा जाता है और उनमें उनको समुचित प्रोत्साहन और परामर्श दिया जाता है। इस कार्य हेतु महाविद्यालय में 'सूचना एवं परामर्श समिति' का गठन किया गया है।

सूचना एवं परामर्श समिति

1	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	असि.प्रो. गणित विभाग	प्रभारी
2	डॉ. संजय कुमार तिवारी	असि.प्रो. कम्प्यूटर साइंस विभाग	सदस्य
3	श्री सुभाष गुप्ता	असि.प्रो. वाणिज्य विभाग	सदस्य
4	श्री अरविन्द कुमार	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

कमजोर वर्ग से आए हुए विद्यार्थियों को विशेष रूप से ध्यान देकर समुचित सम्मान दिया जाता है जिससे कि उनके अन्दर हीन भावना का विकास न हो पाए। इस दिशा में महाविद्यालय प्रशासन की ओर से बारम्बार सभी को सचेत किया जाता है। महाविद्यालय में मुख्य रूप से कला, वाणिज्य, विज्ञान में स्नातक स्तर की शिक्षा दी जाती है। जिसका तत्काल नौकरी से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है।

विभागीय स्तर पर छात्रों को निःशुल्क परामर्श उस विभाग के शिक्षकों द्वारा दिया जाता है। महानगर के प्रतिष्ठित नियोक्ताओं को आमंत्रित किया जाता है। उनके आने की निर्धारित तिथि एवं समय की सूचना विद्यार्थियों को दी जाती है। विद्यार्थियों को उनसे मिलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महाविद्यालय द्वारा इस कार्य हेतु एक पृथक इकाई 'कैरियर मार्गदर्शन एवं नियुक्ति समिति' का गठन किया गया है।

महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए कैरियर गाइडेन्स और प्लेसमेन्ट का प्रयास करने के लिए सुनिश्चित नीतियाँ हैं। इस संदर्भ में गठित समिति स्थापित है जो विद्यार्थियों को सेवा कार्य/नौकरी की सम्भावनाओं के बारे में जानकारी देता है। उनको एतदर्थ साक्षात्कार के लिए तैयार करने की दिशा में प्रेरित करती है। विभिन्न नियोक्ताओं को आमंत्रित करती है कि वे अपने अधिकारियों को महाविद्यालय परिसर में भेजकर छात्रों का चुनाव नौकरी के लिए करें। महाविद्यालय के 58 विद्यार्थियों के बारे में जानकारी है, जो सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

कैरियर मार्गदर्शन एवं नियुक्ति समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	असि.प्रो. गणित विभाग	सदस्य
3	डॉ. आरती सिंह	असि.प्रो. हिन्दी विभाग	सदस्य
4	श्रीमती कविता मन्ध्यान	असि.प्रो. अंग्रेजी विभाग	सदस्य
5	श्री वीरेन्द्र तिवारी	असि.प्रो. कम्प्यूटर साइंस विभाग	सदस्य

विद्यार्थियों की समस्याओं, कठिनाइयों का प्रतिदिन त्वरित समाधान महाविद्यालय की नीति है। विद्यार्थियों को आगाह किया जाता है कि यदि महाविद्यालय में उन्हें किसी प्रकार की असुविधा है, कोई समस्या है तो उसे सीधे प्राचार्य से बताएं अथवा 'सुझाव एवं समस्या पेटिका' में लिखकर डाल दें। संज्ञान में आते ही उसका त्वरित निवारण सीधे प्राचार्य द्वारा किया जाता है। प्राचार्य किसी बन्द कक्ष में नहीं बैठते बल्कि वे सदैव सबके लिए उपलब्ध रहते हैं। इस कार्य के लिए औपचारिक तरीके से क्षोभ निवारण समिति भी गठित है जो इस दिशा में प्राचार्य की सहायता करती है। इसके अतिरिक्त छात्रसंघ कार्यालय में शिकायत पंजिका पर प्रतिदिन विद्यार्थी अपनी कठिनाई दर्ज करता है। छात्रसंघ की मासिक साधारण सभा भी मुख्यतः विद्यार्थियों के शिकायत–निवारण पर ही केन्द्रित रहती है। विगत चार शैक्षिक–सत्र के कुछ चुने हुए समस्या–निवारण उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं–

छात्र समस्या एवं समाधान

सत्र 2010–11

तिथि	शिकायत	शिकायत	माध्यम	निवारण	निवारण तिथि
07.08.2010	ज्योत्स्ना सिंह बी.ए. तृतीय वर्ष	कैण्टीन न होने से विद्यार्थियों को जलपान हेतु मध्याह्न में बाहर जाना पड़ता है।	छात्रसंघ की साधारण सभा में	प्राचार्य द्वारा कैन्टीन खोलने हेतु प्रबन्धक महोदय से अनुमति लेने के प्रयास का आश्वासन दिया गया।	07.08.2010 साधारण सभा में ही (कैन्टीन व्यवस्थित ढंग से चल रही है)
07.08.2010	सत्यवान चौरसिया बी.एस–सी. तृतीय वर्ष	पुस्तकालय में विज्ञान शोध पत्रिका का अभाव है।	छात्रसंघ की साधारण सभा में	प्राचार्य द्वारा पुस्तकालय समिति से विज्ञान शोध पत्रिका मंगाने का निर्देश दिया गया।	07.08.2010 साधारण सभा में ही (पुस्तकालय पत्रिकाओं की सदस्यता प्राप्त कर चुका है)
04.09.2010	जान्हवीं सिंह बी.एस–सी. प्रथम वर्ष	पुस्तकालय में प्राणि विज्ञान प्रथम प्रश्नपत्र की पुस्तक उपलब्ध नहीं है।	सुझाव–समस्या पेटिका में	प्राचार्य के निर्देश पर पुस्तकालय प्रभारी द्वारा पुस्तकालय में पुस्तक मंगाकर छात्रा को उपलब्ध करा दिया गया।	05.09.2010

30.09.2010	अनाम	महाविद्यालय परिसर के बाहर मुख्य चौराहे पर दो विद्यार्थियों द्वारा छात्राओं को परेशान किया जाता है।	सुझाव–समस्या पेटिका में	मुख्य नियन्ता द्वारा चौराहे की निगरानी में एक छात्र पकड़ा गया, वह बगल में इण्टर कालेज के कक्षा 11 का विद्यार्थी था, वहाँ के प्रधानाचार्य को बुलाकर उसे सौंप दिया गया। इण्टर कालेज के साथ मिलकर निरन्तर निगरानी से यह समस्या हल हुई।	03.10.2010
02.10.2010	सुधीर मिश्र बी.एस–सी. तृतीय वर्ष	कैण्टीन खोले जाने की मांग	साधारण सभा में	प्राचार्य द्वारा प्रबन्ध समिति में स्वीकृत हो जाने की सूचना दी गयी एवं कैण्टीन एक सप्ताह में प्रारम्भ कर दिये जाने का आवश्वासन।	02.10.2010 साधारण सभा में ही
02.10.2010	विश्वजीत शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष	सम्पन्न व्याख्यान प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र क्यों नहीं दिया गया?	साधारण सभा में	प्राचार्य द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी से प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र भी देने का निर्देश दिया गया।	02.10.2010 साधारण सभा में ही
05.10.2010	शर्मिला निषाद बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष	प्रार्थना सभा के समय कक्षा में रखे बैग से मोबाइल गायब	प्राचार्य से मिलकर	महाविद्यालय की प्रार्थना सभा में प्राचार्य द्वारा अपील कि ऐसा कार्य विद्यार्थी न करें। प्रार्थना सभा के समय बरामदी में तृतीय–चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की ड्यूटी लगने लगी। प्रार्थना के समय कोई भी कक्षा में न बचे, यह सुनिश्चित किया गया।	06.10.2010
14.12.2010	छात्रसंघ	छात्रसंघ पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियो को अतिरिक्त पुस्तकीय सुविधा दी जाय।	कार्यकारिणी की बैठक में	छात्रसंघ पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों को शिक्षकों के समान पुस्तक देने का निर्णय प्राचार्य द्वारा घोषित कर दिया गया।	14.12.2010
		सभी विद्यार्थियों को दी गई पुस्तक परीक्षा सम्पन्न हो जाने	कार्यकारिणी की बैठक में	छात्रसंघ द्वारा इस बात की लिखित जिम्मेदारी लेने पर कि विद्यार्थी पुस्तक	

		पर पुस्तकालय में जमा करायी जाय।		परीक्षा समाप्त होते ही जमा कर देंगे, विद्यार्थियों को यह छूट दे दी गई।	
		महाविद्यालय में प्रोजेक्टर की संख्या बढ़ाई जाय।	कार्यकारिणी की बैठक में	वर्तमान सत्र में दो प्रोजेक्टर लगाने हेतु प्रबन्ध समिति से अनुमति लेने के प्रयास का प्राचार्य द्वारा वचन दिया गया।	
16.12.2010	छात्रसंघ की साधारण सभा में अनेक विद्यार्थियों ने छात्रसंघ संविधान में संशोधन की मांग की एवं सुझाव दिये। (पूरी सूची बैठक कार्यवाही पंजिका में दर्ज)	छात्रसंघ संविधान और लोकतांत्रिक बनाया जाय।	छात्रसंघ की साधारण सभा	प्राचार्य द्वारा नौ सदस्यीय छात्रसंघ संविधान संशोधन समिति का साधारण सभा में ही गठन की घोषणा की गई– 1. अध्यक्ष–प्राचार्य 2. पेदन सदस्य– मुख्य नियन्ता छात्रा प्रभारी छात्रसंघ प्रभारी छात्रसंघ अध्यक्ष –उपाध्यक्ष –महामंत्री –दो पूर्व छात्रसंघ पदाधिकारी श्री दीपक सिंह, श्री प्रदीप पाण्डेय (समिति की बैठक 28 दिसम्बर को निर्धारित कर दी गयी) समिति द्वारा छात्रसंघ संविधान में अनेक संशोधन प्रस्तावित किय गए जिसे 03 जनवरी 2011 को सम्पन्न साधारण सभा की बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।	16.12.2010

30.01.2011	महाविद्यालय के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के समूह द्वारा लिखित आवेदन	अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों के विदाई समारोह के दिन शैक्षणिक कार्य स्थगित करने तथा पूर्वान्ह 11 बजे से 3 तक आयोजन करने की मांग।	सामूहिक आवेदन–पत्र के साथ प्राचार्य से मिलकर	प्राचार्य द्वारा समझा–बुझाकर समावर्तन संस्कार समारोह को विदाई समारोह मानने का आग्रह किन्तु विद्यार्थियों के हठ पर कक्षाएं 40 मिनट कर 2 बजे से 4 बजे तक आयोजन की स्वीकृति इस शर्त पर कि प्राचार्य एवं शिक्षक आयोजन में रहेंगें।	तत्काल

सत्र 2011–12

तिथि	शिकायत	शिकायत	माध्यम	निवारण	निवारण तिथि
14.09.2011	काजल सोनकर बी.ए. द्वितीय वर्ष (कुल 19 विद्यार्थियों ने अपनी समस्या रखी, कार्यवाही पंजिका में दर्ज)	प्रार्थना सभा के समय तक उपस्थित न होने वाले विद्यार्थियों को 10.15 बजे तक गेट से बाहर न रोका जाय। प्रार्थना सभा के बाद मुख्य गेट खोल दिया जाय।	छात्रसंघ की साधारण सभा में	प्राचार्य द्वारा अपना पक्ष समझाया गया कि प्रार्थना सभा के तुरन्त बाद पहली घंटी की पढ़ाई प्रारम्भ हो जाती है। विद्यार्थियों के बीच में आने पर पढ़ाई बाधित होगी, अतः यह मांग छात्रहित में स्वीकार नहीं की जा सकती। साधारण सभा ने भी प्राचार्य के मत से अपनी सहमति जताई।	14.09.2011 साधारण सभा में ही
03.10.2011	रेनू चौहान बी.ए. प्रथम वर्ष	मेरे घर वाले मुझे प्रतिदिन विद्यालय आने से मना करते हैं। अतः मैं पढ़ नहीं पा रही हूँ।	छात्रा समिति प्रभारी श्रीमती कविता मन्ध्यान से मिलकर	छात्रा प्रभारी द्वारा प्राचार्य से वार्ता की गई। प्राचार्य महोदय द्वारा स्वयं छात्रा के घर जाकर परिवार से वार्ता कर छात्रा की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित कराई गई।	07.10.2011

08.11.2011	छात्रसंघ महामंत्री के नेतृत्व में 271 विद्यार्थियों के समर्थन का आवेदन पत्र	छात्रसंघ कार्यकारिणी द्वारा बहुमत के आधार पर पारित मध्यावकाश समाप्त करने के निर्णय से सामान्यतः सभी छात्र सहमत नहीं।	हस्ताक्षरयुक्त आवेदन पत्र प्राचार्य को	प्राचार्य द्वारा कोई भी निर्णय साधारण सभा में किये जाने की बात कही गयी।	10.11.2011
09.11.2011	सतीश गौड़, बी.एस–सी. तृतीय वर्ष	पुस्तकालय में बी. एस–सी. भाग–तीन रसायन विज्ञान द्वितीय प्रश्नपत्र की पुस्तक छात्रों द्वारा ले लिये जाने के कारण उपलब्ध नहीं है।	शिकायत निवारण प्रकोष्ठ के प्रभारी से मिलकर	शिकायत निवारण प्रकोष्ठ के प्रभारी डॉ. शिवकुमार बर्नवाल द्वारा प्राचार्य से मिलकर समस्या बताई गई। प्राचार्य ने स्थानीय बाजार से पुस्तक क्रय करने हेतु पुस्तकालय समिति को निर्देशित किया। पुस्तक क्रय कर 10 नवम्बर 2011 को छात्र को उपलब्ध करा दी गई।	10.11.2011
12.12.2011	राहुल शर्मा, बी.काम. प्रथम वर्ष	महाविद्यालय में बाहर से क्रीड़ा हेतु ट्रेनर क्यों नही बुलाये जाते?	छात्रसंघ साधारण सभा में	साधारण सभा में प्राचार्य द्वारा बताया गया कि वालीबाल एवं कबड्डी के लिए ट्रेनर बाहर से बुलाये जाते हैं। क्रिकेट के ट्रेनर बुलाने का भी प्रयास जारी है। छात्र भी प्रयास करें।	12.12.2011 साधारण सभा में ही
		फिल्ड के किनारे की झाड़ियां क्यों नहीं कटवाई जाती, बाल गुम हो जाता है।		फिल्ड के किनारे झाड़ी नहीं पौधे हैं जो लगाए गए हैं। उनके बड़े होने तक इस समस्या का व्यावहारिक हल स्वयं क्रीड़ा समिति निकाले।	12.12.2011 साधारण सभा में ही

	सतीश गौड़, बी.एस–सी. तृतीय वर्ष	महाविद्यालय के बाहर की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागी भेजने से पूर्व वह प्रतियोगिता महाविद्यालय में कराकर चयनित प्रतिभागी ही बाहर भेजे जाय।		यह सुझाव अच्छा है। आगे से ऐसा ही होगा।	12.12.2011 साधारण सभा में ही
	गौरव शुक्ला, बी.एस–सी. प्रथम वर्ष	कक्षाओं में सूचना आने से पढ़ाई में व्यवधान पड़ता है। अतः सूचना कक्षाओं में न भेजकर निर्धारित सूचना पट्ट पर लगा दिया जाय, छात्र–छात्राएं वहीं देखें।		सुझाव अमूल्य है, कल से लागू हो जाएगा।	12.12.2011 साधारण सभा में ही
	अजय त्रिपाठी, बी. एस–सी. प्रथम वर्ष	युवा महोत्सव में सम्पन्न वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का पुरस्कार अभी तक प्राप्त नहीं हुआ।		यह पुरस्कार गणतंत्र दिवस समारोह में देने की सुस्थापित परम्परानुसार प्राप्त हो जाएगा।	12.12.2011 साधारण सभा में ही
22.12.2011	मनु कुमार सैनी	कैण्टीन में चाय–समोसा की क्वालिटी ठीक नहीं।	प्राचार्य से	कैण्टीन चलाने वाले को बुलाकर तुरन्त उसे चेतावनी दी गई। नियन्ता मण्डल को प्रतिदिन गुणवत्ता जाँच का निर्देश दिाय गया।	22.12.2011
24.12.2011	सुजीत कुमार सिंह, बी.ए. द्वितीय वर्ष	छात्रसंघ की मासिक साधारण सभा पिछले माह क्यों नहीं सम्पन्न हुई?	साधारण सभा में	प्राचार्य द्वारा बताया गया कि दिसम्बर माह के प्रथम सप्ताह में संस्थापक सप्ताह की तैयारी के कारण दिसम्बर माह के प्रथम कार्य दिवस पर छात्रसंघ द्वारा साधारण सभा नहीं की जा सकी।	24.12.2011 साधारण सभा में ही

		मध्यावकाश सम्बन्धी प्रश्न पर हस्ताक्षर महामंत्री द्वारा कक्षाओं में क्यों कराया गया?	साधारण सभा में	मध्यावकाश सम्बन्धी हस्ताक्षर प्रत्येक कक्षा में एक शिक्षक के जाने तथा दूसरे के प्रवेश करने के समय अनुमति लेकर कराया गया इससे पठन–पाठन एवं अनुशासन पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ा।	24.12.2011 साधारण सभा में ही
		महाविद्यालय में एन.सी.सी. की व्यवस्था क्यों नहीं	साधारण सभा में	एन.सी.सी. खोलने का प्रयास चल रहा है।	24.12.2011 साधारण सभा में ही
		छः दिन की भीषण ढंढी के बावजूद शीतावकाश क्यों नहीं किया गया?	साधारण सभा में	ठंढ में अवकाश करने से पाठ्यक्रम योजना का पालन नहीं हो पाता तथा इतनी ठढंक नहीं कि हम पढ़ाई न कर सकें।	24.12.2011 साधारण सभा में ही
24.12.2011	मनीष, बी. एस–सी. तृतीय वर्ष	महाविद्यालय के परिचय पत्र पर अवकाश की सूचना क्यों नहीं प्रकाशित होती	साधारण सभा में	अगले सत्र से प्रवेश समिति एवं नियन्ता मण्डल इस विषय पर विचार–विमर्श पर निर्णय लेंगें।	24.12.2011 (वर्तमान में परिचय पत्र पर अवकाश की सूचना रहती है)

	विजय कुमार गौड़, बी. एस–सी. प्रथम वर्ष	छात्रसंघ के कोष का व्यय छात्र संघ क्यों नहीं निर्धारित करता	साधारण सभा में	छात्रसंघ के कोष छात्रसंघ की नियमावली के अनुसार छात्रसंघ ही करता है। महाविद्यालय की वेबसाइट पर, पुस्तकालय में, छात्रसंघ कार्यालय में छात्रसंघ संविधान एवं नियमावली की प्रति है। सर्वप्रथम छात्रसंघ अपनी कार्यकारिणी की बैठक में वार्षिक बजट बनाता है। प्रत्येक मद पर व्यय का निर्णय कार्यकारिणी में होता है जिसे साधारण सभा में अनुमोदित कराकर ही व्यय किया जाता है।	24.12.2011
24.12.2011	दीपक कुमार, एम. एस–सी. प्रथम वर्ष	मध्यावकाश समाप्त न किया जाय।	साधारण सभा में	मध्यावकाश समाप्त न किए जाने पर खुला मतदान हुआ जिसमें 95 प्रतिशत विद्यार्थी मध्यावकाश समाप्त न किये जाने के पक्ष में हाथ उठायें और मध्यावकाश समाप्त न किये जाने का निर्णय घोषित कर दिया गया।	24.12.2011

24.12.2011	अविनाश, एम.एस–सी. प्रथम वर्ष	महाविद्यालय की पुरातन छात्र परिषद् द्वारा महाविद्यालय से उत्तीर्ण पढ़ने–लिखने में आगे पहुँचे अथवा महत्वूपर्ण स्थान पर पहुँचे पूर्व विद्यार्थियों की खोज–खोजकर सूची बनायी जाय, हमारे मार्गदर्शन के लिए उन्हें महाविद्यालय में बुलाकर हमारे साथ संवाद कार्यक्रम कराया जाय।		सुझाव उत्तम है। प्राचार्य–शिक्षक भी प्रयास करेंगे। पुरातन छात्र परिषद् इसे क्रियान्वित करेगा।	
24.12.2011	राकेश मौर्या, बी.एस–सी. तृतीय वर्ष	महाविद्यालय के कैन्टीन तो चल रही है किन्तु वहां विद्यार्थियों–शिक्षकों के बैठने की पर्याप्त और समुचित व्यवस्था नहीं है। महाविद्यालय में प्राथमिक उपचार के नाम पर मात्र एक आलमारी में कुछ सामान्य दवाएं हैं और प्रभारी एवं समिति के सदस्य प्राथमिक उपचार की दृष्टि से प्रशिक्षित भी नहीं है। इसकी व्यवस्था क्यों नहीं की जाती?	छात्रसंघ की साधारण सभा में	यह समस्या हमारे ध्यान में है, बजट प्रबन्ध समिति द्वारा स्वीकृत हो चुका है, फरवरी माह तक इस समस्या का हल हो जायेगा। किसी भी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय की टीम एम्बुलेन्स सहित महाविद्यालय परिसर में पहुँच जाती है। 20 दिन पूर्व एक विद्यार्थी की तवियत खराब होने पर एम्बुलेन्सयुक्त चिकित्सकीय टीम का उपस्थित होना इसका प्रमाण है। इस दृष्टि से महाविद्यालय प्रशासन एवं प्रबन्ध तन्त्र पूर्णतः सचेष्ट है।	

07.01.2012	वागीश राज पाण्डेय, पूर्व छात्र	हमने चेतक पत्रिका हेतु कुछ कार्टून दिये थे जो सम्पादन हेतु रखी गई, पत्रावली में नहीं है।		पत्रिका में कार्टून होना चाहिए। सम्भव है प्रति गायब हुई हो,आप सम्पादक मण्डल को दे दें। प्रकाशन योग्य होने पर प्रकाशित होगा।	07.01.2012
09.01.2012	रूष्पा चौहान	चेतक पत्रिका में छात्रसंघ की वार्षिक उपलब्धि क्यों नहीं दी जा रही है?		न देने का कोई निर्णय नहीं। छात्रसंघ रिपोर्ट बनाकर सम्पादक मण्डल को दे प्रकाशित होगा।	09.01.2012
24.01.2012	अनाम	कक्षा में इतिहास विषय के प्राध्यापक मोबाइल पर वार्ता करते हैं, जबकि कक्षा में मोबाइल प्रतिबन्धित है।	सुझाव पेटिका में	प्राचार्य द्वारा सम्बन्धित प्राध्यापक से वार्ता कर शिकायत की पुष्टि की गई तथा उन्हें कक्षा में मोबाइल न ले जाने की चेतावनी दी गई तथा गणतन्त्र दिवस समारोह पर प्राचार्य ने एक बार फिर शिक्षक–विद्यार्थी आचरण–व्यवहार को अपने प्रबोधन का हिस्सा बनाया।	25.01.2012

सत्र 2012–13

15.09.2012	अमित साहनी, बी.ए. द्वितीय वर्ष	मेरी छात्रसंघ प्रतिनिधि की सदस्यता क्यों रद्द कर दी गई। अनुत्तीर्ण होने के बाद भी तो मैं पूर्व कक्षा का विद्यार्थी हूँ।	प्राचार्य से मिलकर	प्राचार्य द्वारा बताया गया कि–प्रतिनिधि चुनाव के समय परीक्षा परिणाम न आने के कारण आप प्रतिनिधि चुने गए थे किन्तु परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के आधार पर आप प्रतिनिधि नहीं रह सकते क्योंकि विद्यालय की नियमावली के अनुसार अनुत्तीर्ण छात्र भूतपूर्व (Ex-student) छात्र के रूप में परीक्षा फार्म भर सकता है, संस्थागत छात्र नहीं हो सकता। छात्र संतुष्ट।	15.09.2012

09.11.2012	मणि भूषण, बी.एस–सी. प्रथम वर्ष	कक्षा के बाहर प्राणि विज्ञान के श्री सत्य प्रकाश सर से प्रश्न पूछने पर हर बार कहते हैं कि बाद में आइए।	प्राचार्य से मिलकर	प्राचार्य द्वारा सम्बन्धित शिक्षक से पूछ–ताछ कर उन्हें हिदायत दी गई कि विद्यार्थी जब भी मिले, प्रश्न पूछे उसका तुरन्त समाधान किया जाय, कक्षा के बाहर भी खाली पीरियड में पढ़ने वाले विद्यार्थी पढ़ाए जायें।	10.11.2012
12.11.2012	शिवेन्द्र मिश्रा, बी. एस–सी. प्रथम वर्ष	मेरा बैग क्लास में पहली पंक्ति में था लेकिन जब मैं प्रार्थना सभा के बाद वापस कक्षा में आया तो मेरा बैग पीछे सीट पर फेंक दिया गया था।	प्राचार्य से मिलकर	प्राचार्य द्वारा शिक्षकों को अपनी–अपनी कक्षाओं में विद्यार्थियों के आचार–व्यवहार सम्बन्धी अनौपचारिक बात–चीत करते रहने की समीक्षा की गई। अगले दिन कक्षा में स्वयं जाकर विद्यार्थियों से बातचीत की गई। छात्र सन्तुष्ट।	13.11.2012
27.01.2013	छात्र समूह द्वारा	विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा दोनों पाली मे एक साथ न कराई जाय। जिनका सुबह–शाम परीक्षा होगी वे तैयारी कैसे करेंगे।	परीक्षा प्रभारी से मिलकर	परीक्षा समिति द्वारा समय–सारणी में यथा सम्भव परिवर्तन कर अधिकांश विषय/प्रश्नपत्र की परीक्षा एक पाली में कर दी गई। छात्र सन्तुष्ट।	28.01.2013

सत्र 2013–14

08.09.2013	सुधांशु रंजन, बी.काम. तृतीय वर्ष	चेतक पत्रिका में मेरी कविता दूसरे छात्र के नाम से प्रकाशित की गई है।	प्राचार्य से मिलकर	प्राचार्य द्वारा सम्पादक के साथ वार्ता कर तथ्य की पुष्टि की गई। अगले दिन छात्र से प्रूफ की गलती स्वीकार करते हुए शेष बची चेतक पत्रिका में संशोधन कर वितरित करने के निर्देश से अवगत करा दिया गया। छात्र सन्तुष्ट	09.09.2013

13.10.2013	अनाम	मैं आवश्यक कार्य से प्राणि विज्ञान के डॉ. आर.एन. सिंह सर की कक्षा में उपस्थिति बोलने के समय बिना पूछे पीछे से बाहर निकल गई कि वे डिस्टर्व न हो, वापस आने पर उन्होंने मुझे कक्षा से बाहर निकाल दिया।	समस्या एवं सुझाव पेटिका में	प्राचार्य द्वारा अगले दिन में डॉ. आर. एन. सिंह जी की कक्षा में जाकर उनकी उपस्थिति में सामान्य संस्कारित आचरण–व्यवहार, अनुशासन पर बात कर विद्यार्थी सन्तुष्ट किये गये। कहा गया कि यदि शिक्षक पूछ कर जाने की अनुमति चाहता है तो ऐसा ही करना चाहिए।	14.10.2013
18.10.2013	अनाम	प्राचार्य महोदय से निवेदन है कि जब कक्षा चल रही है तो भवन में उपर–नीचे कोई काम न करायें, हमारी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है।	समस्या–सुझाव पेटिका	उपर नये भवन में दरवाजे लगाने का कार्य चल रहा था। उसे बन्द करा दिया गया। प्राचार्य द्वारा अवकाश में कराने का निर्णय लिया गया।	19.10.2013
10.11.2013	अनाम	छात्रसंघ कार्यालय में उपाध्यक्ष महोदय के साथ अनावश्यक विद्यार्थी बैठकर गप करते हैं।	सुझाव–समस्या पेटिका में	उपर्युक्त तथ्य सही नहीं पाया गया। सम्भावना कि किसी छात्र द्वारा द्वेषवश यह पत्र डाला गया। तथापि छात्रसंघ प्रभारी को इस हेतु सचेत किया गया।	12.11.2013
18.11.2013	धनन्जय विश्वकर्मा	क्रिकेट–वालीबाल का सामान दिया जा रहा है किन्तु बैडमिन्टन माँगने पर कर्मचारी द्वारा मना कर दिया कर दिया जा रहा है।	प्राचार्य से मिलकर	शिकायतकर्ता के सामने ही तुरन्त कर्मचारी को प्राचार्य द्वारा तलब किया गया, कर्मचारी को हिदायत दी गई कि ऐसी गलती की पुनरावृत्ति न हो।	18.11.2013
17.12.2013	छात्र समूह द्वारा	पानी पीने हेतु वाटर प्यूरीफायर की संख्या बढ़ाई जाय।	लिखित आवेदन प्राचार्य से मिलकर	प्राचार्य द्वारा सैद्धान्तिक सहमति दी गई तथा प्रबन्ध समिति से स्वीकृति के लिए प्रयास का आश्वासन दिया गया।	17.12.2013

16.01.2014	अनाम	सरस्वती पूजा के दिन सरस्वती जी की बड़ी प्रतिमा स्थापित कर उसका विसर्जन किया जाय।	सुझाव–समस्या पेटिका में		17.02.2014
31.01.2014	अनाम	बी.काम. प्रथम वर्ष में शुभम् पाण्डेय कक्षा में सभी को परेशान करता है।	सुझाव–समस्या पेटिका में	प्राचार्य द्वारा मुख्य नियन्ता एवं वाणिज्य संकाय प्रभारी को स्थिति से अवगत कराकर प्रभावी कार्यवाही करने का कहा गया। सम्बन्धित छात्र ने प्राचार्य से मिलकर अपनी गलती स्वीकारी तथा भविष्य में गलती न करने का मुख्य नियन्ता को लिखित आवश्वासन प्रस्तुत किया।	31.01.2014

महाविद्यालय परिसर में विकसित हो चुकी परिसर संस्कृति में यौन उत्पीड़न की कहीं कोई गुंजाइश नहीं है तथापि छात्रा समिति और शिक्षिकाओं की समिति इस पर गूढ़ दृष्टि रखती है। अब तक ऐसी कोई घटना या शिकायत सामने नहीं आई है। यद्यपि कि औपचारिक रूप से 'छात्रा प्रभारी' की देख–रेख में 'महिला यौन उत्पीड़न निवारण समिति' गठित है।

महाविद्यालय में पहले से पढ़ रहे छात्रों द्वारा नवागत छात्रों का स्नेह से स्वागत किया जाता है। उन्हें सुविधाएं दी जाती हैं। परिसर के अन्दर–बाहर, छात्रावास में कहीं भी नवागत छात्रों के साथ पूर्व से पढ़ रहे छात्रों (वरिष्ठ विद्यार्थियों) द्वारा दुर्व्यवहार की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। उपर अंकित कार्यों के लिए प्राचार्य एवं नियन्ता की सचेत दृष्टि सदैव बनी रहती है। 'परिसर संस्कृति' को कायम रखने की दिशा में हर क्षण छात्रसंघ के पदाधिकारियों सहित सभी प्राध्यापक तत्पर रहते हैं। तथापि नियमानुसार एन्टी रैंगिग कमेटी का गठन किया गया है।

महाविद्यालय में छात्र कल्याण समिति छात्र–छात्राओं के पठन–पाठन में सुविधाओं को प्रदान करने में चिन्तन करती है और तत्परतापूर्वक कार्य करती है। छात्र कल्याण समिति निरन्तर सक्रिय रहकर परिसर में एवं परिसर के बाहर छात्र–छात्राओं के लिए कल्याणकारी कार्य सुनिश्चित करती है। समिति द्वारा सामान्यतः किये जाने वाले कार्य निम्न हैं–

1. गरीब विद्यार्थियों को चिह्नित कर उन्हें आर्थिक सहयोग उपलब्ध करवाना।
2. अंग्रेजी भाषा की निःशुल्क कक्षाएँ चलवाकर भाषायी समस्या का यथासम्भव समाधान करना।

3. पढ़ने में कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त कक्षा चलाने की व्यवस्था करवाना।
4. आवश्यक पुस्तकों की कमी की समस्या का समाधान करना।
5. योग्यता–छात्रवृत्ति हेतु विद्यार्थियों को चिह्नित कर उन्हें यह लाभ उपलब्ध कराना।
6. छात्रसंघ प्रतिनिधियों, विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों एवं अन्य मेधावी विद्यार्थियों को पुस्तकालय की 'शिक्षक–समान सुविधा' का लाभ दिलाना।

महाविद्यालय में पुरातन छात्र परिषद् कार्य कर रहा है। प्रति वर्ष 2 अक्टूबर एवं 26 जनवरी को पुरातन छात्र परिषद् के सम्मेलन की तिथि स्थापना काल से पूर्व निर्धारित है। इस सम्मेलन में पुरातन छात्र उत्साह से हिस्सा लेते हैं। महाविद्यालय का फेसबुक बनाकर पूर्व छात्रों ने अपना संजाल खड़ा कर रखा है। फेसबुक के माध्यम से 800 से अधिक विद्यार्थी आपस में निरन्तर संवादरत हैं। पुरातन छात्र परिषद् के पदाधिकारी एवं सदस्य निरन्तर महाविद्यालय के सम्पर्क में बने रहते हैं। वे महाविद्यालय के महत्त्वपूर्ण बड़े आयोजनों, संगोष्ठी, कार्याशाला, समावर्तन में सक्रिय सहयोग करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे प्रतियोगी परीक्षाओं को सम्पन्न कराने एवं विश्वविद्यालयी परीक्षा को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने में भूमिका निभाते हैं। महाविद्यालय के विकास में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका, चिन्तन और लगाव के रूप में हैं। वे पुरातन छात्र परिषद् में पुराने छात्रों की संख्या स्वयं जोड़ते–बढ़ाते रहते हैं। महाविद्यालय की परिसर संस्कृति कायम रखने, नये विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क में इसका समावेश करने में उनका योगदान अतुलनीय है। गत सत्र से पढ़ने में कमजोर विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए भी पूर्व विद्यार्थी सक्रिय हुए हैं। वर्तमान सत्र के पुरातन छात्र परिषद् का विवरण निम्नवत है–

पुरातन छात्र परिषद् 2014–15

पद	नाम	सम्पर्क सूत्र (मोबाइल)
अध्यक्ष	श्री राहुल कुमार शर्मा	8869941282
उपाध्यक्ष	श्री सचिन चौहान	9956829910
महामंत्री	श्री चन्द्रभान निषाद	9956400625
कोषाध्यक्ष (प्रभारी छात्रसंघ)	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	9450489652
संयुक्त मंत्री	श्री अनुराग शाह	9580130133
सदस्य	श्री दीपक कुमार	7784848610
सदस्य	श्री वागीश राज पाण्डेय	9454365181
सदस्य	श्री राकेश मौर्य	9598775581
सदस्य	श्री जयहिन्द यादव	8931942149
सदस्य	श्री पुष्पेन्द्र कुमार	8115194882
सदस्य	श्री महेन्द्र कुमार	8381864260
सदस्य	श्री विश्वजीत शर्मा	9453624630

5.2 छात्र प्रगति

छात्र प्रगति प्रतिशत में

यू.जी. से पी.जी.	14%
पी.जी. से एम.फिल.	2%
पी.जी. से पी.एच.डी.	2%
नियोजित	60%
परिसर चयन	मात्र 58 (5.8%)
परिसर के बाहर चयन	54%
उद्यमिता एवं स्वरोजगार	15%

महाविद्यालय में प्रमुख रुप से स्नातक स्तर की शिक्षा दी जा रही है। इसलिए उत्तीर्ण हुए सभी छात्रों के आगे की प्रगति के बारे में प्रयत्न करने पर भी जानकारी जुटा पाने में अपने को असमर्थ पाते हैं। महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज जंगल धूसड़ का गत 4 शैक्षिक सत्रों का विश्वविद्यालय परीक्षा परिणाम निम्नवत है–

पाठ्यक्रम	सत्र 2010–11		सत्र 2011–12		सत्र 2012–13		सत्र 2013–14	
	उत्तीर्ण %	पूर्णता%	उत्तीर्ण %	पूर्णता %	उत्तीर्ण %	पूर्णता %	उत्तीर्ण %	पूर्णता %
बी.ए.–1	83	81	83	78	74	68	77	77
बी.ए.–2	86	86	93	90	94	88	91	91
बी.ए.–3	100	97	92	95	88	84	96	88
एम.ए.–1(प्रा.इति.)	50	50	75	75	100	94	88	78
एम.ए.–2 (प्रा.इति.)	–	–	100	100	100	75	100	93
बी.काम.–1	77	76	90	89	79	78	63	62
बी.काम.–2	78	78	96	95	96	95	78	77
बी.काम.–3	100	100	96	95	92	89	98	97
बी.एस–सी.–1	24	23	45	41	33	31	30	29
बी.एस–सी.–2	71	71	85	81	51	46	75	73
बी.एस–सी.–3	54	52	75	69	82	76	94	91
एम.एस–सी.–1 (रसायन)	30	30	69	55	96	81	89	50
एम.एस–सी.–2 (रसायन)	–	–	100	100	75	55	81	69

सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर के चार शैक्षिक सत्रों का विश्वविद्यालय परीक्षा परिणाम–

कक्षा	सत्र 2010–11		सत्र 2011–12		सत्र 2012–13		सत्र 2013–14	
	उत्तीर्ण %	पूर्णता %	उत्तीर्ण %	पूर्णता %	उत्तीर्ण %	पूर्णता %	उत्तीर्ण %	पूर्णता %
बी.ए.–1	86	85	76	76	79	77	83	81
बी.ए.–2	93	92	90	88	93	92	94	93
बी.ए.–3	91	90	91	90	92	90	92	89
बी.काम.–1	91	90	91	90	80	79	76	75
बी.काम.–2	92	92	93	92	98	98	93	93
बी.काम.–3	96	96	96	95	97	97	99	99
बी.एस–सी.–1	54	52	38	36	44	42	49	47
बी.एस–सी.–2	84	83	83	82	80	79	87	86
बी.एस–सी.–3	92	91	92	92	89	89	93	92
एम.एस–सी.–1 (रसायन)	56	56	53	53	65	65	79	79
एम.एस–सी.–2 (रसायन)	96	96	88	88	50	50	69	69

दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर के चार शैक्षिक सत्रों का विश्वविद्यालय परीक्षा परिणाम (एम.ए. प्राचीन इतिहास)–

कक्षा	सत्र 2010–11		सत्र 2011–12		सत्र 2012–13		सत्र 2013–14	
	उत्तीर्ण %	पूर्णता %	उत्तीर्ण %	पूर्णता %	उत्तीर्ण %	पूर्णता %	उत्तीर्ण %	पूर्णता %
एम.ए.–1 (प्रा. इतिहास)	93	86	78	78	85	84	97	95
एम.ए.–2 (प्रा. इतिहास)	99	97	97	97	100	97	95	93

जो पढ़ने लिखने में अच्छे छात्र रहे हैं वे छात्र यहां के सम्पर्क में रहते हैं। उन्हें नौकरी पाने या उच्च शिक्षा में जाने हेतु महाविद्यालय द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है तथा उनको यथासम्भव सहायता दिया जाता है।

मासिक मूल्यांकन के आधार पर जिन छात्रों के बारे में अंदाजा लगता है कि वे परीक्षा में असफल हो सकते हैं, उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयों, कमियों को दूर करने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है। ताकि वे अपने लक्ष्य में आगे बढ़ सकें, सफल हो सकें और हतोत्साहित होकर शिक्षा छोड़कर न भागे।

5.3 छात्र भागीदारी और गतिविधियाँ

प्रतिदिन अपराह्न एक बजे से चार बजे तक पठन–पाठन के समानान्तर क्रीड़ा–खेल सम्बन्धी गतिविधियाँ क्रीड़ा प्रभारी की देख–रेख में छात्रों की क्रीड़ा समिति द्वारा संचालित की जाती हैं। महाविद्यालय परिसर में प्रतिदिन क्रीड़ा एवं खेल की निम्न गतिविधियों में रुचि रखने वाले एवं देखकर प्रोत्साहित होने वाले विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं।

वाह्य प्रांगण क्रीड़ा–वालीबाल, कबड्डी, बैडमिन्टन, क्रिकेट, कुश्ती।

अन्तः कक्ष क्रीड़ा–कैरम बोर्ड, शतरंज।

स्पोर्टस–भाला प्रक्षेप, डिस्क थ्रो (चक्र प्रक्षेपण), दौड़, कूद।

पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ– महाविद्यालय में वर्ष भर विभागों द्वारा चित्रकला, पोस्टर, रंगोली, काव्य पाठ, वाद विवाद, भाषण, आशुभाषण, प्रश्नमंच, कम्प्यूटर प्रश्नमंच, शोध व्याख्यान, व्याख्यान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहता है।

क्रीड़ा एवं प्रतियोगिताओं को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से संस्थापक समारोह (नवम्बर माह) एवं भारत–भारती पखवारा (12–26 जनवरी) में क्रीड़ा एवं पाठ्यसहगामी गतिविधियों का महाविद्यालय स्तर पर समारोह पूर्वक आयोजन किया जाता है। यहाँ पर विगत चार शैक्षिक सत्रों में सम्पन्न महाविद्यालय स्तर की प्रतियोगिताओं का विवरण दिया जा रहा है–

दिनांक	प्रतियोगिता	प्रतिभाग	स्थान
सत्र 2010–2011			
18 नवम्बर 2010	क्रीड़ा प्रतियोगिता वालीबाल प्रतियोगिता (बालक)	महाविद्यालय में यह प्रतियोगिता दो स्तरों पर सम्पन्न हुई– दो टीम टीम–ए टीम–बी	विजेता–टीम–ए शंकर निषाद (कप्तान)

18 नवम्बर 2010	कबड्डी प्रतियोगिता (बालक)	कुल 4टीम टीम–ए टीम–बी टीम–सी टीम–डी	विजेता– टीम–सी राकेश यादव (कप्तान) उपविजेता– टीम बी अनुराग शाह
18 नवम्बर 2010	कबड्डी प्रतियोगिता (बालिका)	कुल 3 टीम टीम–ए टीम–बी टीम–सी	विजेता– टीम–ए अंजलि सिंह (कप्तान) उपविजेता– टीम–सी बेबी यादव (कप्तान)
19 नवम्बर 2010	वालीबाल (बालिका)	दो टीम टीम–ए टीम–बी	विजेता–टीम बी सुश्री सुमन (कप्तान)
19 नवम्बर 2010	दौड़ प्रतियोगिता (100 मी.)	कुल–10 प्रतिभागी	प्रथम-विपिन सिंह द्वितीय-रमजानअली तृतीय-सुधीर मिश्रा
19 नवम्बर 2010	लम्बी कूद	कुल–8प्रतिभागी	प्रथम-शंकर निषाद द्वितीय-सतीश गौड़ तृतीय-विनय कु. शर्मा
19 नवम्बर 2010	ऊँची कूद	कुल–10 प्रतिभागी	प्रथम-शंकर निषाद द्वितीय-राहुल पाण्डेय तृतीय -राकेश यादव
19 नवम्बर 2010	जैबलिन थ्रो	कुल–13 प्रतिभागी	प्रथम-राकेश यादव द्वितीय -विपिन सिंह तृतीय -सतीश गौड़
19 नवम्बर 2010	गोला थ्रो	कुल–15 प्रतिभागी	प्रथम-मंजूलता शर्मा द्वितीय -विभा शर्मा तृतीय -रीवा सिंह
19 नवम्बर 2010	कुश्ती प्रतियोगिता	कुल–6 प्रतिभागी	प्रथम-रवि रंजन दीक्षित द्वितीय -राकेश यादव तृतीय -विपिन सिंह
21 नवम्बर 2010	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता	कुल–43 प्रतिभागी	प्रथम-सुधीर मिश्र द्वितीय-आलोक रंजन दीक्षित तृतीय -आलोक शुक्ला तथा अर्चना द्विवेदी
22 नवम्बर 2010	प्रश्नमंच प्रतियोगिता	कुल–23 प्रतिभागी	प्रथम-अर्चना द्विवेदी द्वितीय -सुधीर मिश्रा तृतीय -सुजीत सिंह
28 जनवरी 2011	शोध व्याख्यान प्रतियोगिता	स्नातक स्तर– प्रतिभागी–13	स्नातक स्तर– प्रथम-सत्यवान चौरसिया द्वितीय-प्रदीप पाण्डेय तृतीय-स्नेहा मिश्रा
		स्नातकोत्तर स्तर–8छात्र	स्नातकोत्तर स्तर– I–दीपक कुमार II -अदिति शंकर III -बृजेश मणि त्रिपाठी

सत्र 2011–12

16 नवम्बर 2011	शोध व्याख्यान प्रतियोगिता (कला संकाय)	स्नातक कला– (23 छात्र)	प्रथम-रेनू मिश्रा द्वितीय-राकेश सिंह तृतीय–कृति पाण्डेय
17 नवम्बर 2011	शोध व्याख्यान प्रतियोगिता (विज्ञान संकाय)	स्नातक विज्ञान स्तर–13 छात्र	प्रथम–अवनीश पाण्डेय द्वितीय–सत्यवान चौरसिया तृतीय–स्नेहलता चौहान
	शोध व्याख्यान प्रतियोगिता (वाणिज्य संकाय)	स्नातक–वाणिज्य स्तर–13 छात्र	प्रथम-राजेश निषाद द्वितीय-संतोष कुमार प्रजापति तृतीय–जयहिन्द यादव
18 नवम्बर 2011	वालीबाल प्रतियोगिता (बालक)	12 टीमों ने हिस्सा लिया।	महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज विजयी
18 नवम्बर 2011	वालीबाल प्रतियोगिता (बालिका)	4 टीमों ने हिस्सा लिया।	दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज विजयी
18 नवम्बर 2011	बैडमिंटन प्रतियोगिता (बालक)	4 टीमों ने हिस्सा लिया।	महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज विजयी
18 नवम्बर 2011	बैडमिंटन प्रतियोगिता (बालिका)	4 टीमों ने हिस्सा लिया।	सरस्वती देवी नन्दापार जैतपुर, गोरखपुर विजयी
19 नवम्बर 2011	दौड़ प्रतियोगिता (100 मीटर)	छः विद्यालयों ने हिस्सा लिया	माँ वैष्णों विद्यालय, महुआचाफी विजयी
19 नवम्बर 2011	कबड्डी प्रतियोगिता (बालक)	5 टीमों ने हिस्सा लिया।	महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज विजयी
	कबड्डी प्रतियोगिता (बालिका)	4 टीमों ने हिस्सा लिया।	दिग्विजयनाथ पी. जी. कालेज विजयी

सत्र – 2012–13

18 नवम्बर 2012	वालीबाल प्रतियोगिता (बालक वर्ग)	7 टीमों ने प्रतिभाग किया।	विजेता– पाइका केन्द्र पनियरा, महाराजगंज
18 नवम्बर 2012	वालीबाल प्रतियोगिता (महिला वर्ग)	4 टीमों ने प्रतिभाग किया	विजेता– डी.वी.एन.पी.जी. कालेज, गोरखपुर
29 नवम्बर 2012	प्रश्नमंच प्रतियोगिता	50 प्रतिभागी।	प्रथम-अभिषेक कुमार दूबे द्वितीय-प्रदीप पाण्डेय तृतीय-सुजीत कुमार सिंह एवं पवन कुमार गुप्ता (संयुक्त)
29 नवम्बर 2012	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता	45 प्रतिभागी।	प्रथम-मनोज कु. चौहान द्वितीय-प्रदीप पाण्डेय तृतीय–शंकर निषाद सान्त्वना पुरस्कार– अभिषेक कुमार दूबे, पवन कुमार गुप्ता
30 नवम्बर 2012	अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता	25 प्रतिभागी।	प्रथम-प्रदीप पाण्डेय द्वितीय-आंचल श्रीवास्तव तृतीय–कृष्ण कुमारी श्रीवास्तव

17 जनवरी 2013	शोध व्याख्यान प्रतियोगिता (कला संकाय)	19 छात्रों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये	प्रथम-अमित कु. पाण्डेय द्वितीय-राजेशिवा मौर्य तृतीय-सुजीत कुमार सिंह
18 जनवरी 2013	शोध व्याख्यान प्रतियोगिता (विज्ञान संकाय)	21 छात्रों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये	प्रथम-रोहित त्रिपाठी द्वितीय-कृष्ण कुमार गुप्ता तृतीय-अर्चना सिंह तथा सीमा चौधरी
	शोध व्याख्यान प्रतियोगिता (वाणिज्य संकाय)	14 छात्रों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये	प्रथम-सुधांशु रंजन त्रिपाठी द्वितीय-राहुल शर्मा तृतीय-अक्षिता राय

सत्र – 2013–14

9 नवम्बर 2013	हिन्दी भाषण प्रतियोगिता	25 प्रतिभागी	प्रथम-शुभम् कुमार द्वितीय-रामेश्वर मणि तृतीय-अनिल कुमार
11 नवम्बर 2013	प्रश्नमंच प्रतियोगिता	50 प्रतिभागी।	प्रथम-मनोज चौहान द्वितीय-अमन चौहान तृतीय-किशनदेव निषाद
12 नवम्बर 2013	हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता	30 प्रतिभागी।	प्रथम-रामेश्वर मणि द्वितीय-प्राची शर्मा तृतीय-सिद्धार्थ कु. द्विवेदी
16 नवम्बर 2013	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता	125 छात्रों ने हिस्सा लिया	प्रथम-मनोज कुमार चौहान द्वितीय-पंकज कुमार यादव तृतीय-सुजीत कुमार सिंह, पुष्पेन्द्र कुमार, योगेन्द्र कुमार एवं संदीप कुमार
	कम्प्यूटर प्रश्न मंच	25 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।	प्रथम-कु. प्रगति द्वितीय-अनुज कुमार मौर्य तृतीय-आदित्य कुमार
18 नवम्बर 2013	अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता	20 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।	प्रथम-अनिल कु.सिंह द्वितीय-अनिल कुमार तृतीय-अरुणिमा पाठक
20–21 दिसम्बर 2013	शोध व्याख्यान प्रतियोगिता	53 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया	प्रथम–दुर्गेश सिंह द्वितीय–सीमा राजभर राय तृतीय–दीपक कुमार जायसवाल
13 जनवरी 2014	'स्वामी विवेकानन्द मण्डलीय वालीबाल प्रतियोगिता'	14 टीमों ने भाग लिया।	**बालक वर्ग**– महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर **बालिका वर्ग**– दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज गो.
14 जनवरी 2014	100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता	8 विद्यालय ने प्रतिभाग किया।	प्रथम-राहुल शर्मा (महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़) द्वितीय-निशान्त सिंह (महाराणा प्रताप पी.जी.

			कालेज, जंगल धूसड़) तृतीय-सिद्धार्थ द्विवेदी (महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़)
14 जनवरी 2014	1500 मीटर दौड़ प्रतियोगिता	4 विद्यालय ने प्रतिभाग किया।	प्रथम-राकेश निषाद (नेताजी सुभाष चन्द्र बोस डिग्री कालेज, तुर्रा बाजार) द्वितीय-ईश्वर साहनी (सरस्वती इण्टर कालेज, नाहरपुर) तृतीय–बृजेश प्रजापति (सरस्वती इण्टर कालेज, नाहरपुर)
	3000 मी. दौड़ प्रतियोगिता	5 विद्यालय ने प्रतिभाग किया।	प्रथम-राकेश निषाद (नेताजी सुभाष चन्द्र बोस डिग्री कालेज, तुर्रा बाजार) द्वितीय-संतोष कुमार निषाद (महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़) तृतीय-ऋषिकेश तिवारी (महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़)
16 जनवरी 2014	बैडमिण्टन प्रतियोगिता	8 टीमों ने हिस्सा लिया।	बालक वर्ग– महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ बालिका वर्ग– महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज , जंगल धूसड़
19 जनवरी 2014	कबड्डी प्रतियोगिता	9 टीमों ने हिस्सा लिया।	बालक वर्ग– महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, गोरखपुर बालिका वर्ग– दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर

पुरातन छात्र परिषद् के 2 अक्टूबर तथा 26 जनवरी की बैठक में प्राप्त सुझाव पर महाविद्यालय में गुणात्मक सुधार किये गए हैं। पठन–पाठन, कक्षाध्यापन की गतिविधियों में उनके सुझाव पर नए कार्य जैसे विद्यार्थी द्वारा कक्षाध्यापन की योजना लागू की गई। इस योजना से पठन–पाठन की गुणवत्ता में निश्चित रूप से अभिवृद्धि हुई है। महाविद्यालय की परिसर संस्कृति को आत्मसात करने वाले पूर्व विद्यार्थी महाविद्यालय के सम्पर्क में बने रहते हैं। कई पूर्व विद्यार्थियों के नियोक्ता से भी प्राचार्य सम्पर्क में हैं और नियोक्ता द्वारा उनकी प्रशंसा का बैठकों में प्राचार्य उल्लेख करते रहते हैं। पूर्व विद्यार्थी सक्रिय रूप से महाविद्यालय के साथ जुड़े हुए हैं। हमें यह कहने में अत्यन्त सन्तोष का अनुभव होता है कि बहुत से नियोक्ता ऐसे हैं जो साक्षात्कार के समय यह जानने के बाद कि प्रतिभागी हमारे महाविद्यालय का स्नातक, कर्मचारी एवं शिक्षक है, उसके चयन में वरीयता देते हैं।

महाविद्यालय में विद्यार्थियों को अच्छे लेखन के माध्यम से सुव्यवस्थित अभिव्यक्ति करने की सामर्थ्य विकसित करने के लिए लेख लिखना, पत्रिका तैयार करना और उसको प्रकाशित करने की कार्य योजना पर क्रमशः कार्य किया गया और आज यह एक सुगठित कार्यशैली बन गई है। पिछले चार वर्षों में किए गए कार्य का विवरण नीचे लिखे सारणी से स्पष्ट है।

सत्र	प्रकाशन कार्य
2010–11	दीवाल पत्रिका (मासिक)
2011–12	दीवाल पत्रिका (मासिक), हस्तलिखित पत्रिका (वार्षिक)
2012–13	दीवाल पत्रिका (मासिक), 'चेतक' मुद्रित एवं प्रकाशित पत्रिका (वार्षिक)
2013–14	दीवाल पत्रिका (मासिक), चेतक (वार्षिक), हस्त लिखित समाचार पत्र (अर्द्धवार्षिक)

महाविद्यालय में स्थापना काल से ही छात्रसंघ है। छात्रसंघ का अपनी लिखित नियमावली एवं संविधान है। तीन चरणों में छात्रसंघ का क्रमशः विकास हुआ। प्रारम्भिक सत्र में प्रतिनिधि एवं पदाधिकारी शैक्षिक योग्यता के आधार पर चुने जाते थे। बाद में चुने गए प्रतिनिधियों के मतदान द्वारा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं महामंत्री का चुनाव किया जाता था। किन्तु चुनाव चुने गये कक्षा प्रतिनिधि ही लड़ सकते हैं। तीसरे चरण में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा महामंत्री का चुनाव सभी विद्यार्थियों द्वारा मतदान के आधार पर किया जाने लगा है। क्रीड़ा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम के आधार पर दो प्रतिनिधि प्राचार्य द्वारा मनोनीत किए जाते हैं। इस प्रकार 54 प्रतिनिधियों तथा पदाधिकारियों का छात्रसंघ प्रतिवर्ष 30 अगस्त तक गठित कर दिया जाता है। छात्रसंघ के सभी प्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों को पुस्तकालय से शिक्षकों जैसी पुस्तकीय सुविधा प्रदान की जाती है।

महाविद्यालय में छात्रसंघ का अपना कार्यालय है। छात्र–संघ की अपनी विशिष्ट कार्यपद्धति विकसित हो चुकी है। छात्रसंघ की महाविद्यालय के विकास में सक्रिय भागीदारी है। महाविद्यालय प्रशासन में छात्र सहभाग छात्रसंघ के माध्यम से सुनिश्चित किया जाता है। नवगठित छात्रसंघ 10 दिन के अन्दर अपनी कार्यकारिणी की बैठक कर विभिन्न समितियों के सदस्य नामित कर छात्रसंघ अध्यक्ष, छात्रसंघ प्रभारी एवं प्राचार्य को दे देता है। प्राचार्य द्वारा इन नामित सदस्यों की सूची सम्बन्धित विभाग के प्रभारी शिक्षक के पास भेज दिया जाता है। तत्पश्चात् इन समितियों के माध्यम से विद्यार्थी महाविद्यालय के प्रशासन में प्रत्यक्ष सहभागी बन जाता है। इस योजना से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, किसी विषय पर चर्चा–परिचर्चा से बौद्धिक विकास में वृद्धि होती है और उनके व्यक्तित्त्व का बहुआयामी विकास होता है।

प्रत्येक विद्यार्थी छात्रसंघ शुल्क के रूप में प्रतिवर्ष 100रू. देता है। छात्रसंघ कार्यकारिणी की बैठक में वार्षिक बजट पारित होता है। छात्रसंघ खाते का संचालन प्राचार्य एवं छात्रसंघ महामंत्री के संयुक्त हस्ताक्षर से होता है। छात्रसंघ अपना बजट अपनी वार्षिक पत्रिका 'चेतक' के प्रकाशन, प्रति व्याख्यान दिये जाने वाले सारांश के छायाप्रति, प्रतिवर्ष एक से दो प्रोजेक्टर लगाने,

स्वच्छ पानी हेतु प्यूरीफायर लगवाने, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, विविध प्रतियोगिताओं पर व्यय करता है। हम यह गर्व से कह सकते हैं कि हमारे महाविद्यालय के छात्रसंघ की कार्य प्रणाली अन्यों के लिए अनुकरणीय है।

महाविद्यालय के प्रशासनिक कार्यों में विद्यार्थियों का सक्रिय सहभाग महाविद्यालय की कार्य–संस्कृति का हिस्सा बन चुका है। नीचे विद्यार्थियों की समितियों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनके माध्यम से विद्यार्थी महाविद्यालय के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक निकायों में प्रतिनिधित्त्व करते हैं–

सत्र 2014–15 हेतु छात्रों की प्रवेश समिति हेतु चयनित विद्यार्थी

क्र.सं.	छात्र का नाम	कक्षा
1	शबनम बानो	बी.ए. भाग–एक
2	आनन्द कुमार चौरसिया	बी.ए. भाग–एक
3	यशवन्त कुमार मौर्या	बी.ए. भाग–एक
4	ममता चौहान	बी.ए. भाग–दो
5	राकेश गुप्ता	बी.ए. भाग–दो
6	सुजीत कुमार गुप्ता	बी.ए. भाग–दो
7	ज्योति सिंह	बी.ए. भाग–तीन
8	गौरव सिंह	बी.ए. भाग–तीन
9	प्रिया वर्मा	बी.ए. भाग–तीन
10	प्रियंका चौहान	बी.एस–सी.(बायो) भाग–एक
11	निखिता सिंह	बी.एस–सी. (मैथ) भाग–एक
12	गीता सिंह	बी.एस–सी. (बायो) भाग–एक
13	अनिल कुमार सिंह	बी.एस–सी. (बायो) भाग–दो
14	मणि भूषण राव	बी.एस–सी. (मैथ) भाग–दो
15	धीरज कुमार शर्मा	बी.एस–सी. (मैथ) भाग–दो
16	सिकन्दर पटेल	बी.एस–सी. (मैथ) भाग–तीन
17	शुभम् पाण्डेय	बी.काम. भाग–एक
18	श्वेता मौर्या	बी.काम. भाग–एक
19	उमा सिंह	बी.काम. भाग–दो
20	ऋषिकेश तिवारी	बी.काम. भाग–दो
21	भीम मौर्या	बी.काम. भाग–दो
22	प्रमोद कुमार गुप्ता	बी.काम. भाग–तीन

विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों का चयन छात्र प्रवेश समिति गठित करने के लिए किया जाता है। इनमें से दो सदस्य एवं एक समन्वयक की तीन समितियाँ प्रवेश के दिन अपने खाली पीरियड में कार्य करने के लिए प्राचार्य द्वारा नियुक्त कर दी जाती है। जो उस दिन अपना कार्य चक्रानुक्रम में करती हैं।

छात्रों की नियन्ता समिति–2014–15

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, उपप्राचार्य, समन्वयक				
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा	प्रतिदिन समयावधि	मोबाइल नं.
1	श्री सन्नी कुमार साहनी	बी.ए.–II	प्रातः 9.00 - 9.40	7309535981
2	सुश्री मिनाक्षी शर्मा	बी.ए.–III	अपराह्न 2.10 - 3.00	9935699142
3	श्री अमित कुमार गुप्ता	बी.ए.–III	अपराह्न 2.10 - 3.00	9628510327
4	श्री आशीष राय	बी.ए.–III	प्रातः 10.10 - 12.10	7379133972
5	सुश्री किरन चौहान	बी.ए.–II	दोपहर 12.10 - 1.20	8756182375
6	श्री किशन देव निषाद	बी.ए.–II	दोपहर 12.10 - 2.10 (सोम, बुध, बृह)	9935073797
7	सुश्री शशि गुप्ता	बी.ए.–II	दोपहर 12.10 - 12.30	9369177835
8	सुश्री अराधना वर्मा	बी.ए.–II	दोपहर 12.30-1.20 (मंगल,बुध, बृह.)	9794186502

छात्रों की पुस्तकालय समिति–2014–15

डॉ. अमित मिश्र, उपप्राचार्य, समन्वयक				
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा	प्रतिदिन समयावधि	मोबाइल नं.
1	श्री ऋषिकेश तिवारी	बी.काम.–III	पूर्वाह्न 11.20 - 12.30	8565904605
2	श्री चन्द्रेश कुमार	बी.ए.–I	दोपहर 12.10 - 1.10	7752830293
3	श्री जश्वन्त कुमार मौर्या	बी.ए.–II	दोपहर 12.10 - 1.10	8858276891
4	सुश्री नीता कुमारी	बी.ए.–I	दोपहर 12.10 - 1.10	9565018246
5	श्री गौरव कुशवाहा	बी.एस–सी.–II	प्रातः 09.40 - 12.10 (शुक्र, शनि)	8853299210
6	सुश्री करिश्मा निषाद	बी.एस–सी.–I	दोपहर 12.10 - 1.10	8853314813
7	श्री राहुल सिंह	बी.ए.–I	दोपहर 12.10 - 1.10	8174807210

छात्रों की क्रीड़ा समिति–2014–15

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, उपप्राचार्य, समन्वयक			
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा	मोबाइल नं.
1	श्री सुशील कुमार सिंह	बी.ए.–I	8858120464
2	श्री संदीप प्रजापति	बी.ए.–I	7897116325
3	श्री फजले अख्तर	बी.ए.–I	8737821704
4	श्री सुजीत प्रजापति	बी.ए.–I	7080312815
5	श्री अहमद हुसैन	बी.एस–सी.–I	9793730838
6	श्री दयाराम निषाद	बी.ए.–II	8009154076
7	श्री अनुपम त्रिपाठी	बी.काम.–II	9451350589

छात्रों की प्रयोगशाला समिति–2014–15

डॉ. अमित मिश्रा, उपप्राचार्य, समन्वयक			
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा	मोबाइल नं.
1	सुश्री ऋचा शुक्ला	बी.एस–सी.–III	8858171259
2	श्री आकाश उपाध्याय	बी.एस–सी.–I	9792297953
3	सुश्री गरिमा मिश्रा	एम.एस–सी.–II	8115655911
4	श्री कृष्णम	बी.एस–सी.–I	9170681387
5	सुश्री अर्चना गुप्ता	बी.एस–सी.–I	9936115812
6	श्री विजय प्रताप मझानी	एम.एस–सी.–I	9628012414

छात्रों की सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति–2014–15

श्रीमती कविता मन्ध्यान, उपप्राचार्य, समन्वयक			
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा	मोबाइल नं.
1	सुश्री नलिनी शर्मा	बी.ए.–III	980781308
2	सुश्री शीबा वर्मा	बी.ए.–III	8115502429
3	सुश्री नन्दिनी गुप्ता	बी.ए.–I	7860399056
4	सुश्री सुमन प्रजापति	बी.ए.–I	856582679
5	श्री सूरज कुमार पाल	बी.ए.–I	7388724231
6	सुश्री ममता प्रजापति	बी.ए.–I	980783301

छात्रा समिति–2014–15

सुश्री मनीता सिंह, अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, भौतिकी, प्रभारी छात्रा समिति, समन्वयक			
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा	मोबाइल नं.
1	सुश्री निखिता सिंह	बी.एस–सी.–II	9956553671
2	सुश्री गीता सिंह	बी.एस–सी.–II	9935579189
3	सुश्री ममता चौहान	बी.ए.–III	9936058129
4	सुश्री मनीषा सिंह	बी.ए.–II	9984552426

छात्रों की स्वच्छता समिति–2014–15

श्रीमती शालिनी चौधरी, अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, समन्वयक			
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा	मोबाइल नं.
1	सुश्री नम्रता मल्ल	बी.एस–सी.–II	8005384895
2	सुश्री आराधना सिंह	बी.एस–सी.–II	8756738475
3	सुश्री रूक्मणि मिश्रा	बी.ए.–II	9532028112
4	श्री अरविन्द कुमार	बी.काम.–I	8382978197

छात्रों की बागवानी समिति–2014–15

डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, समन्वयक		
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा
1	श्री नीरज खेतान	बी.एस–सी.–I
2	सुश्री आंचल कर्ण	बी.एस–सी.–I
3	श्री चक्रधर चौधरी	बी.एस–सी.–III
4	श्री रमेश सिंह	बी.एस–सी.–I
5	श्री सुजीत कुमार गुप्त	बी.एस–सी.–I
6	सुश्री श्रीभावती	बी.ए.–III
7	सुश्री कादम्बरी	एम.ए.–II

छात्रों की प्रार्थना समिति–2014–15

श्री सुबोध कुमार, उपप्राचार्य, प्राचीन इतिहास, समन्वयक			
क्र.सं.	विद्यार्थी सदस्य	कक्षा	प्रतिदिन समयावधि
1	सुश्री मनीषा सिंह	बी.ए.–II	प्रातः 9.00 से 9.40
2	सुश्री रूपांजलि	बी.ए.–II	
3	श्री आशीष राय	बी.ए.–III	
4	श्री विवेक भारती	बी.एस–सी.–I	

महाविद्यालय में स्थापना काल से ही गठित पुरातन छात्र परिषद् है। महाविद्यालय के पुरातन छात्र परिषद् ने ही पुरातन छात्रों से सम्पर्क का मजबूत नेटवर्क खड़ा कर रखा है। फेसबुक के माध्यम से स्वयं के प्रयास से महाविद्यालय के साथ आठ सौ से अधिक छात्र–छात्राएं जुड़ी हुई हैं। पुरातन छात्र परिषद् महाविद्यालय की अत्यन्त सक्रिय संस्था है। महानगर में ही लगभग डेढ़ सौ विद्यार्थियों का ऐसा संजाल खड़ा है, जिनके सहयोग से महाविद्यालय किसी प्रकार के सामाजिक–सांस्कृतिक कार्य को सम्पन्न करा लेने हेतु आश्वस्त रहता है। महाविद्यालय के पूर्व शिक्षक एवं कर्मचारी महाविद्यालय के पूर्व निर्धारित वार्षिक आयोजनों अथवा समारोहों यथा स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, समावर्तन संस्कार समारोह में आमंत्रित किए जाते हैं, इस प्रकार उनसे भी सम्पर्क बनाए रखने का प्रयत्न किया जाता है। पुरातन छात्र और पूर्व कर्मचारी के सम्पर्क का नेटवर्क–वेबसाइट, फेसबुक, वर्ष में निर्धारित स्थाई बैठकें हैं। पूर्व छात्र अपने–अपने बैच के छात्रों को जानते हैं और एक से दूसरे तक होते हुए सभी को महाविद्यालय से जोड़ने का प्रयास करते हैं। महाविद्यालय प्राचार्य एवं सम्बन्धित समिति इस दिशा में सदैव सक्रिय रहते हैं।

मापदंड–VI
शासन, नेतृत्व और प्रबंधन

6.1 संस्थागत दृष्टि और नेतृत्व

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा गोरखपुर महानगर के पूर्वी उत्तरी छोर पर महानगरीय प्रभाव से दूर उच्च शिक्षा से अति पिछड़े क्षेत्र में आधुनिक ज्ञान–विज्ञान एवं तकनीक से सम्पन्न गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा के प्रसार एवं राष्ट्र को समर्पित व्यक्तित्त्व से युक्त युवा पीढ़ी खड़ा करने के उद्देश्य से महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना 2005 ई. में की गई। इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए चार चरणों में महाविद्यालय के विकास की योजना पर कार्य प्रारम्भ हुआ। **प्रथम चरण**–उद्देश्य की पूर्ति हेतु योजनानुसार महाविद्यालय प्राचार्य द्वारा चलाया जाएगा। **दूसरा चरण–** शिक्षक उद्देश्य से परिचित होकर पूरी योजना का हिस्सा बनेंगे तथा महाविद्यालय सम्पूर्ण शिक्षकों द्वारा संचालित होगा। **तीसरा चरण–**छात्रसंघ के माध्यम से विद्यार्थी भी महाविद्यालय के संचालन का सहभागी बनेगा। **चौथा चरण–** इस स्तर तक आते–आते महाविद्यालय स्व–स्फूर्त भाव से सभी के द्वारा संचालित होने लगेगा। इस योजनान्तर्गत सामूहिकता के आधार पर महाविद्यालय का संचालन प्रारम्भ किया गया। इस प्रकार प्रबन्ध तंत्र, प्राचार्य, शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी, पूर्व विद्यार्थी, अभिभावक सभी अपने–अपने दायित्व के निर्वहन में संलग्न हैं। प्रति वर्ष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह (1–2 जुलाई) में सम्पन्न वार्षिक योजना बैठक में महाविद्यालय में कार्य का विभाजन कर अलग–अलग शिक्षक अलग–अलग कार्य का प्रभारी बनता है। छात्रसंघ के पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि शिक्षकों के साथ विभागीय समितियों के सदस्य के रूप में कार्य करते हैं। महाविद्यालय की यह कार्य पद्धति स्थायी रूप धारण कर परम्परा बन चुकी है।

प्राचार्य अकादमिक एवं प्रशासनिक प्रमुख के रूप में निम्नवत कार्य करता है–

– महाविद्यालय के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली को प्राप्त करने की दृष्टि से वह सम्पूर्ण कार्य की निगरानी करता है। परिसर संस्कृति के अनुरूप प्रतिदिन की दिनचर्या, अनुशासन, पाठ्यक्रम योजनानुसार कक्षाध्यापन, सारांश के साथ व्याख्यान, विद्यार्थियों द्वारा साप्ताहिक कक्षाध्यापन, उनका मासिक मूल्यांकन, साप्ताहिक स्वैच्छिक श्रमदान, शिक्षक कार्यवृत्त, शिक्षक आचार संहिता इत्यादि का सम्बन्धित समितियों के माध्यम से योजनानुसार पालन हो रहा है, इस पर प्राचार्य की पैनी दृष्टि होती है।

– दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा प्रस्तावित अद्यतन पाठ्यक्रम, विश्वविद्यालय अधिनियम एवं परिनियमावली के अनुरूप महाविद्यालय का संचालन।

– शिक्षक–कर्मचारी की निर्धारित कार्य–काल में नियमित उपस्थिति तथा उनके कार्य सम्पादन सुनिश्चित करना, उनकी सुविधाओं, उनकी

समस्याओं का त्वरित निस्तारण का प्रयास प्राचार्य की कार्यप्रणाली का हिस्सा है।

- प्रतिदिन, साप्ताहिक और अन्ततः मासिक आय–व्यय की जाँच प्राचार्य द्वारा होती है। महाविद्यालय का आय–व्यय प्रति क्षण अद्यतन रखने के प्रति प्राचार्य प्रतिबद्ध रहते हैं।
- महाविद्यालय के लाभार्थियों के अभिमत के आधार पर छात्रकोष का संचालन प्राचार्य द्वारा किया जाता है।
- सभी कर्मचारियों की सेवा पंजिका एवं चरित्र पंजिका व्यवस्थित रखना एवं किसी प्रकार की अनुशासनहीनता पर अनुशासनात्मक कार्यवाही हेतु संस्तुति कर महाविद्यालय में अनुशासन सुनिश्चित किये रहना।
- महाविद्यालय में सभी प्रकार के पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी कार्यक्रम, विविध कार्यक्रम एवं आयोजन, नूतन आयामों, प्रशासनिक व्यवस्थाओं के सुव्यवस्थित संचालन हेतु समितियों का गठन एवं उनके कार्यों पर सचेष्ट दृष्टि रखना।

महाविद्यालय के सभी प्रशासनिक कार्य महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् गोरखपुर द्वारा चयनित प्रबन्ध समिति द्वारा संचालित किया जाता है। प्रबन्ध समिति में पदाधिकारियों सहित कुल 15 सदस्य हैं। प्रबन्ध समिति उत्तर प्रदेश अधिनियम 1973 के अनुच्छेद 3(13) के अन्तर्गत दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित है। प्रबन्ध समिति निम्नवत है–

क्र.सं.	नाम	पद
1	प्रो. उदय प्रताप सिंह	अध्यक्ष
2	श्री धर्मेन्द्र नाथ वर्मा, एडवोकेट	उपाध्यक्ष
3	महन्त योगी आदित्यनाथ	प्रबन्धक / मंत्री
4	श्री प्रमोद चौधरी	सदस्य
5	श्री पारस नाथ मिश्रा	सदस्य
6	श्री प्यारे मोहन सरकार	सदस्य
7	श्री गोरक्ष प्रताप सिंह	सदस्य
8	योगी कमल नाथ	सदस्य
9	डॉ. मया शंकर सिंह	सदस्य
10	श्री राम जन्म सिंह	सदस्य
11	प्राचार्य	पदेन सदस्य
12	2 वरिष्ठ प्रवक्ता (दो वर्ष के चक्रानुक्रम से)	पदेन सदस्य
13	2 गैर–शैक्षणिक स्टाफ (दो वर्ष के चक्रानुक्रम से)	पदेन सदस्य

प्रबन्ध समिति द्वारा महाविद्यालय का वार्षिक बजट स्वीकृत किया जाता है। प्रबन्ध समिति द्वारा महाविद्यालय के अकादमिक एवं प्रशासनिक कार्यों का सतत निरीक्षण किया जाता है। अपने संवैधानिक एवं कानूनी पक्षों पर प्रबन्ध समिति जागरूक रहती है। महाविद्यालय के हित में नियुक्ति, प्रोन्नति, दण्ड एवं सेवामुक्ति का प्रबन्ध समिति यथासमय त्वरित निर्णय लेती है।

महाविद्यालय द्वारा गुणवत्तायुक्त शिक्षा, संस्कार तथा राष्ट्रभक्ति को एक साथ विद्यार्थी के व्यक्तित्त्व का हिस्सा बनाने के अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु जहाँ

नियमित अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त नित–नूतन प्रयोगों के साथ कक्षाध्यापन होता है वहीं प्रतिदिन प्रार्थना सभा में राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, सरस्वती वन्दना, प्रार्थना के साथ–साथ महापुरुषों की जयन्ती अथवा पुण्यतिथि पर उनके प्रेरणादायी पक्षों का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि देने, महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तिथियों पर उनके महत्त्व का उल्लेख करने एवं संकल्प लेने अथवा श्रीमद्भगवद्गीता के पांच श्लोकों का हिन्दी अनुवाद सहित वाचन के साथ महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ होती है। महाविद्यालय के प्रत्येक कक्ष का नाम किसी न किसी महापुरुष के नाम पर है। सभी कक्ष पर उस महापुरुष की फोटो सहित नाम पट्टिका लगी हुई है। कक्षा में सम्बन्धित महापुरुष का संक्षिप्त जीवन–परिचय लगा हुआ है। जिससे कि प्रतिदिन शिक्षक–कर्मचारी–छात्र को प्रेरणास्रोत के रूप में ये महापुरुष स्मरण रहें। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष महापुरुषों के जीवन–वृत्त पर व्याख्यान, 'हमारे महापुरुष' नाम से प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम, साप्ताहिक स्वैच्छिक श्रमदान, निःशुल्क सिलाई–कढ़ाई, निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं महाविद्यालय के आसपास के गांवों के साथ सामाजिक कार्यों तथा स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से ग्रामीण जनता के साथ सम्पर्क वे प्रमुख आधार हैं जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व का समग्र विकास सुनिश्चित करते हैं। महाविद्यालय परिवार और आसपास का समाज एक साथ जुड़कर एक दूसरे के सहयोगी भूमिका में कार्य करते हैं। परिणामतः विद्यार्थियों के समग्र विकास का उद्देश्य पूर्ण हो रहा है।

जैसे–जैसे हमारे महाविद्यालय में छात्र संख्या बढ़ रही है। वैसे–वैसे भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, उपकरण का क्रमिक विकास प्रबन्ध तन्त्र एवं मातृ संस्था महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग से हुआ है। अब तक यह सुनिश्चित है कि छात्र संख्या के हिसाब से ये संसाधन क्रमशः बढ़ते रहे हैं। महाविद्यालय की बढ़ती शाख से दूर–दराज से छात्र/छात्राओं के प्रवेश की बढ़ती संख्या के कारण आगामी वर्षों में अलग से पुस्तकालय भवन, विशाल बहुउद्देशीय सभागार एवं महिला छात्रावास का निर्माण विचाराधीन है। हम जानते हैं कि एक साथ बड़ी पूँजी और संसाधन के साथ महाविद्यालय का भौतिक–संसाधन युक्त ढांचा खड़ा करना आसान है। प्रबन्ध तन्त्र इसमें सक्षम भी हैं, किन्तु स्वस्थ परिसर संस्कृति के विकास हेतु अपेक्षित समय के साथ क्रमिक विकास पथ का हम अनुसरण कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी (ICS) सुविधाओं को महाविद्यालय में प्रमुखता से स्थापित करना और उसके लिए कार्य योजना तैयार करने का कार्य वर्तमान में चल रहा है। आवश्यक बजट का प्रावधान होने के बाद इस दिशा में पूर्ण सक्षम बनना वर्तमान में हमारा प्रमुख लक्ष्य हैं। इसे प्राप्त कर लेने के बाद तब और विषयों में स्नातकोत्तर कक्षाएँ और शोध की सुविधाएँ विकसित करना भविष्य के दूसरे चरण का लक्ष्य है।

पुरातन छात्र परिषद्, शिक्षक–अभिभावक संघ की बैठक में प्राप्त सुझाव, वर्तमान छात्रसंघ पदाधिकारी एवं सदस्य, शिक्षक तथा प्राचार्य की बैठक में आए सुझाव पर सम्यक विचारोपरान्त उपर्युक्त सुनिश्चित दृष्टिकोण,

आवश्यकता और संसाधन के अनुरूप प्रस्ताव पर कार्य योजनाएं बनायी जाती हैं। उन्हें आई.क्यू.ए.सी. के पास सम्यक् विचार हेतु भेजा जाता है। उनमें से जिसे वे वर्तमान सत्र की कार्य योजना में प्राथमिकता के आधार पर स्थान देते हैं, उनको प्रबन्ध तन्त्र के समक्ष स्वीकृत हेतु प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्ताव स्वीकृत होने पर प्रबन्ध तन्त्र समुचित बजट एवं अनुदान की व्यवस्था करता है और कार्य को लागू करने के लिए एक समिति का गठन करता है जिसके अध्यक्ष प्राचार्य होते हैं। सदस्य के रूप में उस कार्य से सम्बद्ध कुछ विशेषज्ञ नामित कर दिये जाते हैं।

समिति कार्य का निरीक्षण करती है, मासिक रिपोर्ट प्रबन्ध तन्त्र को देती रहती है। प्राचार्य और प्रबन्धतन्त्र इस बात के प्रति सचेष्ट रहते हैं कि परिसर संस्कृति के अनुरुप कार्य नियत अवधि में पूरा हो। संस्था का दृष्टिकोण भवन निर्माण कार्य में यह रहता है कि इससे संस्था की पढ़ाई–लिखाई एवं सामान्य गतिविधियाँ कदापि प्रभावित न होने पाए इसलिए भवन निर्माण कार्य की सर्वाधिक गतिशीलता 15 फरवरी से 15 जुलाई तक रखी जाती है। शिक्षा और शिक्षण प्रणाली में छात्रों के व्यक्तित्त्व विकास की गतिविधियों को सम्बन्धित शिक्षकों द्वारा निरन्तर निगरानी में रखा जाता है और मासिक बैठक में इन पर विचार किया जाता है कि गतिविधियाँ सुदृढ़ परम्परा के अनुरूप स्वसंचालित चलती रहें। छात्रसंघ की मासिक बैठक में विद्यार्थियों की समस्याओं, शिक्षण विधियों, उनके कौशल विकास इत्यादि सभी बिन्दुओं पर बारीकी से विचार किया जाता है। विद्यार्थियों की बात सुनी जाती है, उन्हें इस कार्यों में संलग्न बनाने के लिए कार्यभार दिया जाता है। जिसकी सीधी निगरानी प्राचार्य करते हैं। यह प्रक्रिया महाविद्यालय की अपनी विशिष्टता है जिससे छात्र आजीवन महाविद्यालय के साथ मानसिक लगाव अनुभव करने लगे हैं और निश्चय ही हमारे कार्यों की गुणवत्ता संवर्धन में उनका योगदान है। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की वृद्धि तथा व्यक्तित्त्व विकास में इस कार्य का योगदान पूर्व छात्र अनुभव करते हैं, व्यक्त करते हैं।

छात्रों के अभिभावक और 10 किमी परिक्षेत्र के लोग, जहाँ महाविद्यालय के 19 विभाग अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के अन्तर्गत सतत शिक्षा प्रसार का कार्य करते हैं वहाँ से चुने हुए लोगों की पूर्व निर्धारित वार्षिक बैठक में महाविद्यालय–गतिविधियों की चर्चा होती है, सुझाव आते हैं, जिनके आधार पर कमियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। उनके द्वारा दिये गए समानुकूल उचित सुझाव को कार्यरूप में परिणत किया जाता है। जिससे वे भी महाविद्यालय परिवार से अपने को जुड़ा हुआ अनुभव करते हैं। इसका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि महाविद्यालय में अनुशासन की समस्या समस्या रह ही नहीं गई है। उनके साथ हुई बैठकों से नीति एवं कार्य योजना के अनुरूप तत्कालिक आवश्यकताओं का विश्लेषण बहुत सरलता से हो जाता है, जिसे संसाधन और समय को ध्यान में रखते हुए लागू किया जाता है। इसके माध्यम से भवन, संसाधन, परिसर की स्वच्छता, उसके भव्य आकर्षक स्वरूप, पठन–पाठन की सुदृढ़ व्यवस्था, आचरण की सभ्यता, व्यक्तित्त्व की दृढ़ता,

स्वस्थ नीतियों के प्रति अडिग रहने और सुख–सुविधा की जगह शान्ति और सम्यक विचार पूर्ण कार्य संस्कृति के विकास को निरन्तर दृढ़ता प्रदान करने में सहायता मिल रही है। जिसकी प्रशंसा महाविद्यालय में प्रवेश करने वाले नए लोग महाविद्यालय के बाहर करते हैं। उदाहरण के लिए प्रायोगिक परीक्षाओं में आए हुए परीक्षक, परीक्षा के दौरान आए हुए उड़ाका दल के लोग, चलते हुए कालेज के निरीक्षण में आए हुए विश्वविद्यालय के कुलपति, संस्था में आमंत्रित किए गये गणमान्य विद्वान, जब संस्था के परिसर संस्कृति की बाहर प्रशंसा करते हैं, चर्चा करते हैं तो इससे संस्था का स्वतः एक श्रेष्ठ शिक्षा संस्था के रूप में प्रचार–प्रसार हो रहा है और हमारे कार्यों को मजबूती मिल रही है। इस दिशा में हमारा प्रबन्ध तन्त्र अपनी अभिरूचि और गहरी करता जा रहा है।

स्ववित्तपोषित संस्थान होने के नाते हमारी बहुत सी कमजोरियाँ हैं, हम अपने शिक्षकों–कर्मचारियों को उनकी योग्यता एवं कार्य के अनुसार वह वेतन देने में सर्वथा अक्षम हैं जो वेतन इसी प्रकार का कार्य करने वाले शासकीय एवं शासन से सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों–कर्मचारियों को मिलता है। योग्य शिक्षकों को अपने यहाँ रोके रखने में भी इसी कारण भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। फिर भी इस कार्य में लगे हुए लोगों को वर्तमान में समाज में जो प्रतिष्ठा मिल रही है वह मानसिक रूप से उसकी क्षतिपूर्ति करती है और वे इस कार्य में संलग्न है। संस्था की यश–प्रतिष्ठा से प्रबन्ध तंत्र भी सन्तुष्ट है और इसका परिणाम है कि महाविद्यालय के विकास में प्रबन्ध तंत्र गहरी रुचि लेता है।

महाविद्यालय के प्रबन्ध तन्त्र में उच्च शिक्षाविद्, ख्यातिलब्ध प्रबन्धक और प्राचार्य, वरिष्ठ एडवोकेट, प्रतिष्ठित व्यापारी एवं सामाजिक कार्यकर्ता सम्मिलित हैं। महाविद्यालय में संचालित होने वाली नीतियों और कार्य योजनाओं को प्रभावी तरीके से लागू करने और उनमें अपेक्षित सुधार करने की दक्षता से सम्पन्न एक–दो सदस्यों को प्रबन्ध तन्त्र इस कार्य के लिए नामित करता है, वह उसका निरीक्षण नियत अन्तराल पर करते रहते हैं और उसकी रिपोर्ट प्रबन्धक महोदय को देते हैं, इस प्रकार से प्रबन्धक भी इन कार्यों की निगरानी में अपनी ओर से व्यवस्था बनाए रखते हैं। संस्था के प्राचार्य के उपर सम्पूर्ण निरीक्षण का दायित्त्व एवं सुनिश्चित निर्णयों के क्रियान्वयन का अधिकार रहता है। वह शिक्षकों के माध्यम से और स्वयं संलग्न रहकर कार्यों को प्रभावी तरीके से लागू कराने में सक्रिय रहते हैं। प्रबन्ध तन्त्र में सम्मिलित उच्च शिक्षाविद् नियत अन्तराल पर महाविद्यालय के शिक्षकों से महाविद्यालय में आकर मिलते हैं, संवाद करते हैं और उनको शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में बहुमूल्य सुझाव एवं प्रोत्साहन देते हैं। इसका परिणाम यह है कि विभिन्न स्तरों पर महाविद्यालय धीरे–धीरे दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर परिक्षेत्र के स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अग्रणी संस्था के रूप में स्थापित हो चुका है। जिसकी प्रतिपुष्टि कोई कभी भी किसी भी स्तर पर कर सकता है। ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जिसमें लोग महाविद्यालय की कार्य संस्कृति का अनुकरण करने की

अभिरूचि रखने लगे हैं। क्योंकि हमारे महाविद्यालय में वचनों का व्यवहार कम आचरण को प्रमुखता देने का कार्य ज्यादा होता है।

विभाग का सम्पूर्ण दायित्त्व एवं अधिकार विभागाध्यक्ष को है। अन्य कार्यक्रमों/आयोजनों का कार्य सन्दर्भित समितियाँ देखती हैं। इन सबका सहयोग एवं निरीक्षण हेतु प्राचार्य द्वारा नियुक्त 6 उप–प्राचार्य अपने–अपने विभागानुसार खाली पीरियड में करते रहते हैं।

हमारी परिसर संस्कृति के अनुरूप प्रशासन में शिक्षक और विद्यार्थी दोनों शामिल हैं। अपनी कक्षाओं एवं पठन–पाठन में रिक्त समय में ये महाविद्यालयी कार्यों में सक्रिय रहते हैं।

प्राचार्य सभी समितियों, विभाग प्रभारी शिक्षकों, कर्मचारियों के साथ मिलकर, उनका सहयोग कर सामूहिक कार्य प्रणाली के आधार पर कार्य करते हैं। प्राचार्य द्वारा विविध कार्य हेतु गठित समितियाँ नीचे दी जा रही हैं–

1. प्रशासनिक एवं आन्तरिक शैक्षिक निगरानी समिति (छः उपप्राचार्यो की इस समिति में सभी के जिम्मे विभाग एवं कार्य बटे हुए हैं)

1	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	असि.प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग
2	श्रीमती कविता मन्ध्यान	असि.प्रो. अंग्रेजी विभाग
3	डॉ. अमित मिश्र	असि.प्रो. भौतिक विज्ञान विभाग
4	श्री सुबोध कुमार मिश्र	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग
5	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	असि.प्रो. गणित विभाग
6	डॉ. राजेश कुमार शुक्ल	असि.प्रो. वाणिज्य विभाग

2. परिसर संस्कृति समिति

1	श्रीमती कविता मन्ध्यान	असि.प्रो. अंग्रेजी विभाग	प्रभारी
2	डॉ. लोकेश कुमार प्रजापति	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य
3	डॉ. शालिनी सिंह	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
4	सुश्री नलिनी शर्मा	छात्र प्रतिनिधि बी.ए. तृतीय वर्ष	सदस्य

3. प्रवेश समिति

1	डॉ. विजय कुमार चौधरी	असि.प्रो. भूगोल विभाग	प्रभारी
2	डॉ. आर.एन. सिंह	असि.प्रो. प्राणि विज्ञान विभाग	सदस्य
3	डॉ. शिव कुमार वर्नवाल	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
4	डॉ. शालिनी सिंह	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
5	श्री लोकेश कुमार प्रजापति	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य
6	डॉ. राजेश कुमार शुक्ल	असि.प्रो. वाणिज्य विभाग	सदस्य
7	श्री नन्दन शर्मा	असि.प्रो. वाणिज्य विभाग	सदस्य
8	डॉ. राम सहाय	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
9	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	असि.प्रो. वनस्पति विज्ञान विभाग	सदस्य
10	सुश्री मनीता सिंह	असि.प्रो. भौतिक विज्ञान विभाग	सदस्य
11	डॉ. शालिनी चौधरी	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य

4. नियन्ता मण्डल (प्रति घंटी का एक शिक्षक नियन्ता होता है)

घंटी	अवधि	नियन्ता का नाम	पद	विभाग
पहली घंटी	9.40– 10.30	डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	असि. प्रोफेसर	इतिहास
दूसरी घंटी	10.30–11.20	श्री सुबोध कुमार मिश्र	असि. प्रोफेसर	प्रा. इतिहास
तीसरी घंटी	11.20–12.10	श्री नन्दन शर्मा	असि. प्रोफेसर	वाणिज्य
मध्यावकाश	12.10–12.30	डॉ. संजय कुमार तिवारी	असि. प्रोफेसर	कम्प्यूटर साइंस
चौथी घंटी	12.30–1.20	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	असि. प्रोफेसर	राजनीति विज्ञान
पाँचवीं घंटी	1.20–2.10	श्री प्रकाश प्रियदर्शी	असि. प्रोफेसर	समाजशास्त्र
छठवीं घंटी	2.10–3.00	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	असि. प्रोफेसर	रक्षा एवं स्त्रा. अध्ययन
सातवीं घंटी	3.00–3.50	डॉ. अजय बहादुर सिंह	असि. प्रोफेसर	मनोविज्ञान

5. छात्र कल्याण समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	अध्यक्ष
2	डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	असि.प्रो. इतिहास विभाग	सदस्य
3	श्री वीरेन्द्र तिवारी	असि.प्रो. कम्प्यूटर साइंस विभाग	सदस्य
4	श्री किशन देव निषाद	अध्यक्ष, छात्रसंघ	सदस्य

6. पुस्तकालय परामर्श समिति

1	डॉ. अमित कुमार मिश्र	असि.प्रो. भौतिक विज्ञान विभाग	प्रभारी
2	श्री शिव प्रसाद शर्मा	ग्रंथालयी	सदस्य
3	श्री सुभाष गुप्ता	असि.प्रो. वाणिज्य विभाग	सदस्य
4	सुश्री मीनाक्षी शर्मा	छात्रसंघ प्रतिनिधि	सदस्य

7. पाठ्यक्रम संवर्धन समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	अध्यक्ष
2	प्रो. यू.पी. सिंह	पूर्व कुलपति	सदस्य
3	प्रो. राम अचल सिंह	पूर्व कुलपति	सदस्य
4.	श्री ज्योति मसकरा	प्रतिष्ठित व्यवसायी	सदस्य
5.	श्री वागीश राज पाण्डेय	पुरातन छात्र परिषद्	सदस्य
6.	श्री राहुल सिंह	पुरातन छात्र परिषद्	सदस्य

8. सेवा–नियोजन और पाठ्यक्रम सार्थकता समिति

1	प्रो. यू.पी. सिंह व प्रो. राम अचल सिंह – सुप्रसिद्ध गणितज्ञ एवं भौतिकविद्
2	श्री ओम जालान, प्रमुख उद्योगपति एवं श्री श्याम बिहारी अग्रवाल, प्रमुख व्यवसायी
3	श्री वागीश राज पाण्डेय व श्री राहुल सिंह, पूर्व छात्र परिषद्

9. सूचना–संचार तकनीक समिति

1	श्री वीरेन्द्र तिवारी	असि.प्रो. कम्प्यूटर साइंस विभाग	प्रभारी
2	श्री शिव प्रसाद शर्मा	ग्रंथालयी	सदस्य
3	श्री अमित कुमार गुप्ता	छात्र प्रतिनिधि बी.ए. तृतीय वर्ष	सदस्य

10. आंतरिक मूल्यांकन एवं परीक्षा समिति

1	श्री सुबोध कुमार मिश्र	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	प्रभारी
2	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	असि.प्रो. गणित विभाग	सदस्य
3	श्री सुभाष कुमार	असि.प्रो. वाणिज्य विभाग	सदस्य
4	श्री प्रतीक दास	असि.प्रो. गणित विभाग	सदस्य
5	सुश्री प्रियंका मिश्रा	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
6	श्री ऋषिकेश तिवारी	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

11. शैक्षिक गुणवत्ता समीक्षा समिति

1	डॉ. आर.एन. सिंह	असि.प्रो. प्राणि विज्ञान विभाग	प्रभारी
2	डॉ. राजेश कुमार शुक्ल	असि.प्रो. वाणिज्य विभाग	सदस्य
3	डॉ. आरती सिंह	असि.प्रो. हिन्दी विभाग	सदस्य
4	सुश्री आराधना सिंह	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

12. शोध–संवर्धन समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	अध्यक्ष
2	श्री अमित कुमार	असि.प्रो. कम्प्यूटर साइंस विभाग	सचिव
3	डॉ. विजय कुमार चौधरी	असि.प्रो. एवं अध्यक्ष भूगोल विभाग	सदस्य
4	डॉ. शिव कुमार वर्नवाल	अध्यक्ष रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
5	सुश्री गरिमा मिश्रा	प्रतिनिधि छात्रसंघ	छात्र सदस्य

13. व्याख्यान/सेमिनार/कार्यशाला समिति

1	डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	असि.प्रो. रक्षा एवं स्त्रात. अध्ययन विभाग	प्रभारी
2	डॉ. सुनील कुमार मिश्र	असि.प्रो. मनोविज्ञान विभाग	सदस्य
3	डॉ. राम सहाय	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
4	सुश्री किरन चौहान	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

14. सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

1	श्रीमती कविता मन्ध्यान	असि.प्रो. अंग्रेजी विभाग	प्रभारी
2	श्रीमती शालिनी चौधरी	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य
3	डॉ. लोकेश कुमार प्रजापति	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य
4	सुश्री मनीता सिंह	असि.प्रो. भौतिक विज्ञान विभाग	सदस्य
5	सुश्री नलिनी शर्मा	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

15. क्रीड़ा समिति

1	डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही	असि.प्रो. भूगोल विभाग	प्रभारी
2	डॉ. अजय बहादुर सिंह	असि.प्रो. मनोविज्ञान विभाग	सदस्य
3	डॉ. शालिनी सिंह	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
4	श्री संदीप प्रजापति	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

16. महिला यौन उत्पीड़न निवारण समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	नियन्ता	सदस्य
3	सुश्री मनीता सिंह	छात्रा प्रभारी	सदस्य
4	डॉ. शालिनी सिंह	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
5	सुश्री मनीषा सिंह	उपाध्यक्ष– छात्रसंघ	सदस्य

17. एण्टीरैगिंग समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य	अध्यक्ष
2	जिलाधिकारी का नामित प्रतिनिधि	सदस्य
3	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक का नामित प्रतिनिधि	सदस्य
4	श्री अजय सिंह, वरिष्ठ पत्रकार, हिन्दुस्तान	सदस्य
5	श्री रघुनाथ चन्द, सामाजिक कार्यकर्ता	सदस्य
6	डॉ. राजेश कुमार शुक्ल, प्रभारी कला एवं वाणिज्य संकाय	सदस्य
7	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, मुख्य नियन्ता	सदस्य
8	डॉ. शिव कुमार बर्नवाल, विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान	सदस्य

18. ग्रीन ऑडिट समिति

1	डॉ. विजय कुमार चौधरी	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	प्रभारी
2	डॉ. आर.एन. सिंह	असि.प्रो. प्राणि विज्ञान विभाग	सदस्य
3	श्री प्रदीप वर्मा	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
4	डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही	असि.प्रो. भूगोल विभाग	सदस्य
5	प्रो. भारत भूषण	प्रोफेसर, संस्कृति व संगीत विभाग	सदस्य
6	श्री अजय सिंह	वरिष्ठ पत्रकार, हिन्दुस्तान	सदस्य

19. राष्ट्रीय सेवा योजना समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	श्रीमती कविता मन्ध्यान	असि.प्रो. अंग्रेजी विभाग	सदस्य
3	डॉ. शशिकान्त सिंह	असि.प्रो. रक्षा एवं स्त्रात. अध्ययन विभाग	सदस्य
4	डॉ. शालिनी चौधरी	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य
5.	सुश्री नलिनी शर्मा	छात्रसंघ प्रतिनिधि	सदस्य

20. सामुदायिक/कल्याण सेवा समिति (आईएसआर)

1	डॉ. शशिकान्त सिंह	असि.प्रो. रक्षा एवं स्त्रात. अध्ययन विभाग	प्रभारी
2	डॉ. अजय बहादुर सिंह	असि.प्रो. मनोविज्ञान विभाग	सदस्य
3	डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी	असि.प्रो. समाज शास्त्र विभाग	सदस्य
4	श्री सुजीत प्रजापति	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

21. प्रकाशन समिति

1	डॉ. आरती सिंह	असि.प्रो. हिन्दी विभाग	प्रभारी
2	श्री सुबोध कुमार मिश्र	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य
3	डॉ. शालिनी चौधरी	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य
4	श्री दयाराम निषाद	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

22. पुरातन छात्र समिति

क्रम	नाम	पद	
1	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	अस्सि. प्रोफेसर, प्रभारी	प्रभारी
2	श्री वागीश राज पाण्डेय	पूर्व अध्यक्ष, पुरातन छात्र परिषद्	सदस्य
3	श्री आशीष राय	महामंत्री छात्रसंघ	सदस्य

23. विश्वविद्यालय कार्य प्रकोष्ठ

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	श्री सुबोध कुमार मिश्र	परीक्षा नियंत्रक	सदस्य
3	श्री लक्ष्मीकान्त दूबे	कार्यालय सहायक	सदस्य

24. वित्त समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	डॉ. विजय कुमार चौधरी	असि.प्रो. भूगोल विभाग	सदस्य
3	डॉ. आर.एन. सिंह	असि.प्रो. प्राणि विज्ञान विभाग	सदस्य
4	डॉ. शिव कुमार वर्नवाल	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
5	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	असि.प्रो. वनस्पति विज्ञान विभाग	सदस्य
6	श्री किशन देव निषाद	अध्यक्ष– छात्रसंघ	सदस्य

25. क्रय समिति

1	डॉ. अमित कुमार मिश्र	असि.प्रो. भौतिक विज्ञान विभाग	प्रभारी
2	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	असि.प्रो. वनस्पति विज्ञान विभाग	सदस्य
3	डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही	असि.प्रो. भूगोल विभाग	सदस्य
4	श्री अनुपम त्रिपाठी	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

26. ढांचागत सुविधा समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	डॉ. आर.एन. सिंह	असि.प्रो. प्राणि विज्ञान विभाग	सदस्य
3	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	असि.प्रो. राजनीति विज्ञान विभाग	सदस्य
4	सुश्री गीता सिंह	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य
5	श्री राहुल शर्मा	अध्यक्ष, पुरातन छात्र परिषद्	सदस्य

27. स्थायी रख–रखाव समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	श्री प्रदीप वर्मा	असि.प्रो. रसायन विज्ञान विभाग	सदस्य
3	श्री वीरेन्द्र तिवारी	असि.प्रो. कम्प्यूटर साइंस विभाग	सदस्य
4	सुश्री नन्दिनी गुप्ता	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

28. अवस्थापना प्रकोष्ठ

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	श्री सुबोध कुमार मिश्र	असि.प्रो. प्राचीन इतिहास विभाग	सदस्य
3	श्री सुभाष कुमार	कार्यालयाध्यक्ष	सदस्य

29. भण्डार सत्यापन समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	श्री शिव प्रसाद शर्मा	ग्रंथालयी	सदस्य
3	श्री सुभाष कुमार	कार्यालयाध्यक्ष	सदस्य

30. कैरियर गाइडेन्स एवं प्लेसमेंट समिति

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	प्रभारी
2	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	असि.प्रो. गणित विभाग	सदस्य
3	डॉ. आरती सिंह	असि.प्रो. हिन्दी विभाग	सदस्य
4	श्रीमती कविता मन्ध्यान	असि.प्रो. अंग्रेजी विभाग	सदस्य
5	श्री वीरेन्द्र तिवारी	असि.प्रो. कम्प्यूटर साइंस विभाग	सदस्य

31. सूचना एवं परामर्श समिति

1	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	असि.प्रो. गणित विभाग	प्रभारी
2	डॉ. संजय कुमार तिवारी	असि.प्रो. कम्प्यूटर साइंस विभाग	सदस्य
3	श्री सुभाष गुप्ता	असि.प्रो. वाणिज्य विभाग	सदस्य
4	श्री अरविन्द कुमार	प्रतिनिधि छात्रसंघ	सदस्य

32. आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ

1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	अध्यक्ष
2	महन्त योगी आदित्यनाथजी	प्रबन्धक	सदस्य
3	प्रो. यू.पी. सिंह	बाह्य विशेषज्ञ	सदस्य
4	प्रो. राम अचल सिंह	बाह्य विशेषज्ञ	सदस्य
5	डॉ. शेर बहादुर सिंह	बाह्य विशेषज्ञ	सदस्य
6	श्री राहुल शर्मा	अध्यक्ष, पुरातन छात्र परिषद्	सदस्य
7	डॉ. टी.एन. मिश्रा	अध्यक्ष, अभिभावक संघ	सदस्य
8	श्री गजेन्द्र प्रताप सिंह	समाजसेवी	सदस्य
9	श्री ज्योति मस्करा	उद्योगपति	सदस्य
10	डॉ. विजय कुमार चौधरी	शिक्षक सदस्य	सदस्य
11	डॉ. आर.एन. सिंह	शिक्षक सदस्य	सदस्य
12	डॉ. शिव कुमार वर्नवाल	शिक्षक सदस्य	सदस्य
13	डॉ. शालिनी सिंह	शिक्षक सदस्य	सदस्य
14	डॉ. राजेश कुमार शुक्ल	शिक्षक सदस्य	सदस्य
15	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	अनुशासन	सदस्य
16	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	समन्वयक / सचिव	सदस्य

प्रत्येक समिति / विभाग अपने लिए निर्धारित कार्य के लिए स्वायत्त होती है। लक्ष्य पूर्ण करने में आई कठिनाइयाँ प्राचार्य के साथ मिलकर हल की जाती हैं। यदि किसी समस्या के समाधान हेतु प्रबन्धक / सचिव महोदय के सहयोग की आवश्यकता महसूस की जाती है तो प्राचार्य द्वारा उनसे सम्पर्क कर अथवा मोबाइल पर वार्ता कर उनका भी सहयोग लिया जाता है। प्राचार्य द्वारा संस्था के नियमित प्रगति की सूचना प्रबन्धक महोदय को दी जाती है। प्रबन्धक महोदय समय–समय पर सम्पन्न प्रबन्ध समिति की बैठक में महाविद्यालय के अनवरत प्रगति की सूचना देते हैं, विचार–विमर्श करते हैं। प्रबन्ध समिति का सुझाव प्राचार्य क्रियान्वित करते हैं।

प्रबन्ध समिति महाविद्यालय के शिक्षकों–कर्मचारियों को संस्था में प्रभावी भूमिका बनाए रखने हेतु प्रोत्साहित करती है। उनकी कठिनाइयों पर सकारात्मक ढंग से विचार कर उनका समाधान करती है। शिक्षकों–कर्मचारियों को दी जाने वाली सुविधाओं के प्रति प्रबन्ध समिति अत्यन्त संवेदनशील है। शिक्षकों–कर्मचारियों तक प्राचार्य के माध्यम से प्रबन्ध समिति की सदाशयता के निर्णय, उनके चिंतन, उनके भाव पहुँचते रहते हैं।

6.2 रणनीति का विकास और परिनियोजन

गुणवत्ता की कोई अधिकतम सीमा नहीं है। इसलिए गुणवत्ता की ओर निरन्तर सचेष्ट रूप से बढ़ते रहना, उसके नए–नए आयामों को ढूढ़ना, ध्यान देना यह हमारी घोषित और क्रियान्वित गुणवत्ता नीति है। इसे ही महाविद्यालय प्राचार्य के नेतृत्त्व में विकसित करने की चेष्टा हर आधार पर कर रहा है। प्राचार्य स्वयं

बिना किसी लाग—लपेट के वह सारे कार्य करते कभी कभार दिखाई दे जाते हैं जो कार्य महाविद्यालय में भिन्न वर्ग के कर्मचारियों को आवंटित हैं। यही वह मनोभाव है जिससे हमारी गुणवत्ता नीति विकसित एवं संचालित हो रही है और सबकी क्षमताओं का स्वचालित उपयोग करने में हम सफल हैं। शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी सभी महाविद्यालय का कार्य अहंकार रहित होकर सेवाभाव से इसे राष्ट्रीय एवं ईश्वरी कार्य मानकर करते हैं।

महाविद्यालय के पास अपने विकास की भावी रूपरेखा तय है। स्थापना काल से अब तक नौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। महाविद्यालय को स्वायत्तशासी महाविद्यालय बनाने की स्पष्ट कार्य योजना है। स्वायत्तशासी महाविद्यालय होने के लिए 10 वर्ष न्यूनतम अवधि आवश्यक है। दो—तीन वर्षों में हम सभी मानक पूरा कर लेंगे। पुस्तकालय भवन, विशाल बहुउद्‌देश्यीय सभागार, महिला छात्रावास, शिक्षक—कर्मचारी आवास युक्त आवासीय महाविद्यालय बनाने की ओर क्रमशः विकास की कार्य योजना पर बढ़ना है। महाविद्यालय में शोध—संस्कृति का विकास, स्नातक के सभी विषयों में परास्नातक पाठ्‌यक्रम की मान्यता, तकनीकी पाठ्‌यक्रम, रोजगारपरक पाठ्‌यक्रम संचालित करने की योजनाएँ विचाराधीन हैं। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी एवं आधुनिक ज्ञान—विज्ञान से युक्त गुणवत्ता युक्त शिक्षा एवं सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व विकास की स्थापित परम्परा से निकला विद्यार्थी स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ अपने गांव, समाज एवं देश के लिए समर्पित भाव से कार्य कर सके इस दिशा में लक्ष्य तक महाविद्यालय द्वारा अपनी चल रही योजनाओं को पहुँचाना एवं जिस ग्रामसभा में महाविद्यालय स्थापित है उसे शिक्षको—विद्यार्थियों की सहायता से प्रतिमान के लिए आदर्श गांव के रूप में विकसित करना हमारी भावी योजना का हिस्सा है।

निर्णय लेने की क्रमिक अवस्थाएँ हैं। प्रथम विद्यार्थियों की साधारण सभा में आए हुए सुझावों का संकलन, शिक्षकों के साथ की गई मासिक बैठक में आने वाले सुझाव, शिक्षक—अभिभावक बैठक एवं पुरातन छात्र परिषद् की बैठक के सुझावों का संकलन किया जाता है। इन सुझावों पर सम्बन्धित समिति द्वारा औचित्य, संसाधन, सामर्थ्य को ध्यान में रखकर प्रस्ताव तैयार किया जाता है। यह प्रस्ताव आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ के पास भेज दिया जाता है। वहाँ का निर्णय प्राथमिकता के आधार पर वार्षिक योजना का हिस्सा बन जाता है। वार्षिक योजना प्रबन्ध समिति की बैठक में प्रस्तुत किया जाता है जहाँ से स्वीकृति के बाद निर्णायक वार्षिक योजना का क्रियान्वयन प्रारम्भ हो जाता है।

शिक्षण और अधिगम में गुणवत्ता मूलक सुधार के लिए सत्र के अन्त में सप्त दिवसीय कार्यशाला शिक्षक, प्राचार्य और विषय विशेषज्ञ के साथ सम्पन्न होती है। कार्यशाला की पूरी कार्यवाही सावधानीपूर्वक लिखी जाती है। अधिकांश शिक्षक अपना अनुभव, सुझाव, नई योजना लिखित रूप में प्रस्तुत करते हैं। सर्व—सम्मति से लिये गये निर्णय अगले सत्र की वार्षिक योजना का हिस्सा बन जाता है। इसी कार्यशाला में शोध और विकास, ग्राम अंचल के समुदाय के विकास, महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों, कर्मचारियों और महाविद्यालय में

पढ़ने वाले विद्यार्थियों की क्षमता और दक्षता में विकास तथा पढ़कर निकलने वाले छात्रों को उद्यमशीलता के विकास के बारे में भी विचार–विमर्श कर निश्चित निर्णय लिये जाते हैं। जिन्हें अगले सत्र की वार्षिक योजना बैठक में विषय लाकर लागू कर दिया जाता। कार्यवृत्त सूक्ष्मता से तैयार कर प्रकाशित किये जाते हैं। उनका बारम्बार अवलोकन किया जाता है ताकि कोई निर्णीत पहलू छूटने न पाए। यदि किसी निर्णय के क्रियान्वयन में व्यावहारिक स्तर पर कोई कठिनाई या अवरोध आता है तो उस पर शान्तपूर्वक सोच–विचार कर प्रयत्न पूर्वक उसे क्रियान्वित करने की दिशा में अग्रसर हुआ जाता है।

संस्था के प्रबन्धक नगर के गणमान्य व्यक्ति हैं। गोरखपुर संसदीय क्षेत्र के चुने हुए सांसद हैं। उनके व्यक्तिगत सम्पर्क में हर आयु एवं हर वर्ग के लोग हैं। वे स्वयं सचेष्ट रहकर उन लोगों से संस्था के बारे में उनके अनुभव और धारणाओं को निरन्तर जानते रहते हैं। लोगों से प्राप्त सूचनाओं के आलोक में संस्था की गतिविधियों का निरीक्षण–परीक्षण अपने व्यस्त समय में से भी समय निकालकर करते रहते हैं। निरीक्षण के दौरान सभी शिक्षकों–कर्मचारियों से वे मिलते हैं, उन सभी की बात सुनते हैं।

संस्था के प्रबन्धक, प्रबन्ध समिति के सदस्य समय–समय पर संस्था में उपस्थित होकर संस्था में कार्यरत कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते हैं और उनकी कठिनाइयों को सुनते हैं और उसका निवारण तत्काल कर उन्हें सन्तुष्ट करते हैं। जिसके कारण संस्था में कार्यरत सभी कर्मचारियों के प्रति उनका स्नेह सम्मान सीधे उन तक पहुँचता है इससे संस्था के कार्यों में गुणवत्ता मूलक वृद्धि प्रभावी ढंग से होती है।

गत वर्ष प्रबन्ध तन्त्र की दो बैठकों के कार्यवृत्त की प्रतिलिपि नीचे दी जा रही है–

सत्य प्रतिलिपि

30 जून, 2013, रविवार

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर प्रबन्ध समिति की बैठक 30 जून 2013, दिन–रविवार को अपराह्न 4 बजे से गोरखनाथ मंदिर में प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष गोरक्षपीठाधीश्वर परमपूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निम्न विषय विचारार्थ प्रस्तुत हुए–

1. पिछली कार्यवाही की पुष्टि।
2. महाविद्यालय में बी.एड. पाठ्यक्रम तथा नये पाठ्यक्रमों की सम्बद्धता के सन्दर्भ में विचार।
3. महाविद्यालय के नये सत्र के शैक्षिक पंचांग एवं प्रवेश पर विचार।
4. महाविद्यालय में पठन–पाठन, प्रयोगशाला, पुस्तकालय एवं सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के सन्दर्भ में विचार।
5. शिक्षकों–कर्मचारियों के वेतन वृद्धि के सन्दर्भ में विचार।
6. नए भवन तथा छात्रावास के सन्दर्भ में विचार।

प्रबन्ध समिति की बैठक में अध्यक्ष द्वारा सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् सर्वसम्मति से पिछली कार्यवाही की पुष्टि की गई एवं सभी निर्णयों के सफल क्रियान्वयन पर हर्ष व्यक्त किया गया।

प्राचार्य द्वारा बी.एड. पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में एन.सी.टी.ई. जयपुर द्वारा सभी पत्राचार तथा तत्सम्बन्धी अद्यतन स्थिति से सभी को अवगत कराया गया। निर्णय

लिया गया कि बी.एड. पाठ्यक्रम संचालन की एन.सी.टी.ई., विश्वविद्यालय तथा उ.प्र. प्रदेश शासन स्तर की सभी औपचारिकताएं समय से महाविद्यालय द्वारा पूर्ण कर लिये जाए। उक्त कार्य हेतु प्रबन्धक/प्राचार्य को अधिकृत किया गया।

प्रबन्ध समिति की बैठक में प्रबन्धक महोदय के निर्देश पर प्राचार्य ने नए विषयों की सम्बद्धता की स्थिति से सभी को अवगत कराते हुए बताया कि स्नातकोत्तर स्तर पर प्राचीन इतिहास एवं रसायन शास्त्र विषय की सम्बद्धता हेतु पत्रावली नियमानुसार दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के माध्यम से उत्तर प्रदेश शासन को भेज दिया गया है। स्नातक स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, मनोविज्ञान तथा इतिहास विषय में तथा विज्ञान संकाय के अन्तर्गत कम्प्यूटर साइंस, सांख्यिकी तथा इलेक्ट्रानिक्स विषय में सम्बद्धता विस्तरण की पत्रावली पूर्ण कर नियमानुसार दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के माध्यम से उत्तर प्रदेश शासन को भेज दिया गया है। 31 जुलाई तक सम्बद्धता से सम्बन्धित आदेश प्राप्त हो जाने की पूर्ण सम्भावना है। सम्बद्धता की कार्यवाही पर सभी सदस्यों ने सन्तोष व्यक्त किया तथा सम्बद्धता प्राप्त हो जाते ही कक्षा संचालन की समस्त कार्यवाही पूरी करने हेतु प्रबन्धक महोदय को अधिकृत किया गया।

प्राचार्य द्वारा प्रस्तावित महाविद्यालय में नए सत्र के शैक्षिक पंचांग तथा प्रवेश प्रक्रिया पर विचार–विमर्श किया गया। प्रबन्धक महोदय द्वारा यह सुझाव रखा गया कि विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा (16 से 23 फरवरी) के पश्चात् विश्वविद्यालय परीक्षा से पूर्व के अन्तराल में नियमित कक्षाएँ चलाकर परीक्षा की तैयारी करायी जाय। विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा के आधार पर चयनित कमजोर विद्यार्थियों को विशेष रूप से परीक्षा तैयारी कराई जाय। प्रबन्धक महोदय के इस सुझाव से सभी ने सहमति जताई तथा प्राचार्य को शैक्षिक पंचांग को संशोधित कर लागू करने का निर्देश दिया।

प्रबन्ध समिति की बैठक में वर्तमान सत्र के पठन–पाठन की भावी योजनाओं, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, प्रोजेक्टर सहित आवश्यक उपकरणों की आवश्यकता के सन्दर्भ में प्रबन्धक महोदय के निर्देश पर प्राचार्य द्वारा विस्तृत वृत्त प्रस्तुत किया गया। इस सन्दर्भ में प्रबन्ध समिति द्वारा प्रबन्धक महोदय को निर्णय लेने एवं वार्षिक बजट के अनुसार क्रय करने के लिए अधिकृत कर दिया गया।

प्रबन्धक महोदय द्वारा शिक्षकों–कर्मचारियों के वेतन वृद्धि का प्रस्ताव बैठक में प्रस्तुत किया गया। उनके द्वारा महंगायी का हवाला देते हुए वेतन वृद्धि का औचित्य प्रस्तुत किया गया। उन्होंने इस बात पर भी ध्यान आकर्षित किया कि गत बैठक में वार्षिक बजट में इस वर्ष वेतन वृद्धि को ध्यान में रखकर बजट स्वीकार किया जा चुका है। प्रबन्ध समिति ने वार्षिक बजट में वेतन मद में स्वीकृत धनराशि के अनुसार जुलाई माह से वेतन वृद्धि कर लागू करने हेतु प्रबन्धक महोदय को अधिकृत कर दिया।

प्रबन्धक महोदय द्वारा महाविद्यालय के नए भवन के पूर्ण हो जाने की जानकारी तथा 240 छात्र–छात्राओं के लिए तीन–तीन तलों के दो छात्रावास के निर्माण का प्रस्ताव रखा गया। प्रबन्धक महोदय द्वारा पूर्ण योजना को प्रस्तुत करते हुए कहा गया कि प्रत्येक वर्ष 40 विद्यार्थियों का एक तल का छात्रावास तथा छात्रावास अभिरक्षक आवास तैयार कर छः वर्षों में यह योजना पूर्ण की जा सकती है किन्तु इस कार्य हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् से अनुदान प्राप्त करना होगा। प्रबन्ध समिति द्वारा यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर इस कार्य हेतु

सभी प्रकार के निर्णय के लिए प्रबन्धक महोदय को पूर्ण रूप से अधिकृत कर दिया गया।

अन्त में अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी के प्रति आभार के साथ बैठक सम्पन्न होने की घोषणा की गई।

सत्य प्रतिलिपि

25 जून 2014, बुधवार

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर प्रबन्ध समिति की बैठक गोरखनाथ मंदिर में संस्था के अध्यक्ष परम् पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में 25 जून 2014 दिन बुधवार को पूर्वाह्न 10 बजे से बैठक सम्पन्न हुई। बैठक निम्न विषय पर विचार–विमर्श कर निर्णय लिया गया–

1. पिछली कार्यवाही की पुष्टि।
2. गत सत्र के पठन–पाठन एवं शैक्षणिक गुणवत्ता पर विचार।
3. सत्र 2014–15 का आय–व्यय।
4. सत्र 2014–15 में नवीन पाठ्यक्रमों पर विचार।
5. छात्रावास के संचालन एवं आगामी निर्माण पर विचार।
6. राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा महाविद्यालय का मूल्यांकन करने पर विचार।

सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय द्वारा प्रबन्ध समिति के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के स्वागत के साथ बैठक प्रारम्भ किया गया।

1. प्रबन्धक महोदय द्वारा पूर्व बैठक का कार्यवृत्त पढ़कर सुनाया गया, जिसे सभी ने सर्वसम्मति से पुष्टि की।
2. प्राचार्य द्वारा पूरे सत्र के पठन–पाठन, शैक्षिक पंचांग एवं पाठ्यक्रम योजना का शत–प्रतिशत पालन, विविध शैक्षणिक गतिविधियों, शिक्षण–विधि में प्रोजेक्टर के प्रयोग को बढ़ाये जाने, विद्यार्थियों द्वारा साप्ताहिक कक्षाध्यापन, सारांश देकर कक्षाध्यापन, विद्यार्थियों के मासिक मूल्यांकन, शिक्षकों का विद्यार्थियों द्वारा मूल्यांकन व प्रगति आख्या, समावर्तन संस्कार समारोह इत्यादि पर विस्तृत वृत्त प्रस्तुत किया गया। एक–एक बिन्दु पर विस्तार से समीक्षा की गई। कार्य तथा उसके परिणाम का पिछले सत्र से तुलनात्मक समीक्षा के साथ सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया तथा यह सभी गतिविधियाँ अगले सत्र में बनाए रखने का प्राचार्य को निर्देश दिया गया। शैक्षणिक गुणवत्ता, कार्यरत समस्त कर्मचारियों के योगक्षेम निर्वहन और संतोष, विद्यार्थियों में गुणवत्ता मूलक शिक्षण के माध्यम से बौद्धिक योग्यता, कुशलता एवं चरित्र मूलक दृढ़ता के विकास के सन्दर्भ में अभिभावकों से प्राप्त संतोषजनक सूचनाओं एवं संसाधनों की समीक्षा के साथ आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति हेतु प्रबन्धक महोदय को अधिकृत कर दिया गया।
3. सत्र 2014–15 का वार्षिक बजट प्रबन्धक महोदय द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसे सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने किंचित संशोधन एवं परिवर्तन के साथ स्वीकृति दे दी।
4. सत्र 2014–15 में नए पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत स्तर पर गृह विज्ञान, संस्कृत एवं शिक्षाशास्त्र विषय तथा स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र एवं वाणिज्य संकाय में एम.काम. पाठ्यक्रम संचालित करने का निर्णय लिया गया। इस कार्य हेतु प्रबन्धक एवं प्राचार्य को अधिकृत कर दिया गया।

5. महाविद्यालय के लिए 'योगीराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम' नाम से छात्रावास के प्रथम तल एवं अभिरक्षक आवास के निर्माण की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया गया तथा क्रमशः आगे द्वितीय तल के निर्माण के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी गई। यह निर्णय भी हुआ कि प्रथम तल में छात्रावास प्रारम्भ कर दिया जाय।

6. महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा मूल्यांकन कराने का प्रस्ताव प्रबन्धक महोदय द्वारा रखा गया जिसे सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया। NAACद्वारा मूल्यांकन कराने हेतु प्रबन्धक तथा प्राचार्य को अधिकृत कर दिया गया।

   अन्त में सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को आभार देने के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

संस्था को सम्बद्धता देने वाले दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर में संस्था को स्वायत्तता देने का प्राविधान है। हम भविष्य में स्वायत्तशासी महाविद्यालय के रूप में अपने को स्थापित करने की कार्य योजना पर चल रहे हैं। लेकिन संस्था की न्यूनतम समयावधि 10 वर्ष पूरा न कर पाने के कारण स्वायत्तशासी बनने के लिए आवेदन नहीं कर पाए। स्वायत्तशासी महाविद्यालय हेतु आवेदन करना हमारी भावी कार्ययोजना में समाहित है। महाविद्यालय का राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा मूल्यांकन कराना इसी योजना की कड़ी है।

संस्था में सभी श्रेणी के कार्यरत कर्मचारियों, छात्र–छात्राओं और अभिभावकों की शिकायतें, कठिनाइयां जानने के लिए निम्नलिखित प्रबन्ध किए गए हैं–

महाविद्यालय में प्राचार्य कक्ष के सामने, पुस्तकालय एवं छात्रा सामान्य कक्ष में सुझाव–समस्या पेटिका लगाई गई है। सुझाव पेटिका प्रतिदिन प्रातः प्रार्थना सभा के पूर्व खोली जाती है। सुझाव–समस्या पेटिका में किसी भी विद्यार्थी, कर्मचारी, शिक्षक, अभिभावक द्वारा बिना अपना नाम दिये अथवा नाम–पता सहित समस्या एवं सुझाव मांगे जाते हैं। प्राचार्य प्रतिदिन प्रातः प्रार्थना सभा से पूर्व ही सुझाव समस्या पेटिका से प्राप्त सुझाव एवं समस्या देखते हैं तथा उसका त्वरित समाधान करते हैं।

सभी छात्र, कर्मचारी, शिक्षक, अभिभावक ईमेल द्वारा भी अपनी शिकायत एवं सुझाव देते हैं। प्राचार्य के सहायक कम्प्यूटर आपरेटर द्वारा प्रतिदिन प्रार्थना सभा से पूर्व ईमेल देखा जाता है। आए हुए सुझाव एवं समस्या प्राचार्य के समक्ष प्रस्तुत कर दिया जाता है, जिसका त्वरित समाधान भी प्राचार्य द्वारा किया जाता है। जिन समस्याओं का निवारण प्रबन्धक महोदय के स्तर का होता है, प्राचार्य द्वारा प्रबन्धक महोदय से मिलकर उसके समाधान का त्वरित एवं सार्थक प्रयास किया जाता है।

सभी शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी एवं अभिभावकों को इस बात के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है कि यदि कोई ऐसी शिकायत है जो प्रबन्धक महोदय से करना ही उचित है तो वे प्रबन्धक महोदय से उनके कार्यालय में प्रतिदिन प्रातः 8.30 से 10 बजे के बीच मिलकर कर सकते हैं। प्रबन्धक महोदय के गोरखपुर में होने की दशा में उपर्युक्त समय में कार्यालय में बैठना उनकी

अनिवार्य दिनचर्या का हिस्सा है। इस तरह लिए गए त्वरित कठिनाई निवारण कार्य से महाविद्यालय के छात्रों, अभिभावकों, कर्मचारियों, शिक्षकों में भयमुक्त संतोष और सौहार्दपूर्ण भावनात्मक सम्बन्ध का विकास हो चुका है। इस दिशा में संस्था दृढ़तापूर्वक अपने लक्ष्य को एक अच्छी कार्य परम्परा के रूप में सुनिश्चित कर प्राप्त कर चुकी है।

महाविद्यालय की स्थापना काल से अब तक न तो महाविद्यालय के उपर कोई मुकदमा किया गया और न ही महाविद्यालय ने किसी के उपर कोई मुकदमा किया है। कोई लम्बित वाद नहीं है।

पुरातन छात्र परिषद् के छात्रों के साथ निरन्तर सम्पर्क में बने रहकर अर्धवार्षिक बैठकों के माध्यम से और पुरातन छात्रों तथा वर्तमान छात्रों द्वारा भेजे गए ईमेल के माध्यम से महाविद्यालय ने एक तन्त्र विकसित कर रखा है, जिससे महाविद्यालय की कार्य प्रणाली पर उनकी स्पष्ट धारणा जानी जा सके। अभी तक हमको उनके द्वारा व्यक्त किए गए संतोष और प्रसन्नता की ही सूचना प्राप्त हुई है।

6.3. संकाय अधिकारिता रणनीतियाँ

अभिविन्यास, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में प्रयत्नपूर्वक प्रोत्साहित कर शिक्षकों को भेजा जाता है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में एकेडमिक स्टाफ कालेज द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रम वर्ष भर आयोजित होता है। विश्वविद्यालय के विभाग भी कार्यशाला, संगोष्ठी एवं व्याख्यान आायोजित करते रहते हैं जिनमें महाविद्यालय शिक्षकों को आग्रहपूर्वक अवकाश देकर भेजता है। विषय के प्रख्यात् विद्वानों को महाविद्यालय स्वयं आमंत्रित करता है तथा विभाग में शिक्षकों के साथ विचार विनिमय के माध्यम से शिक्षकों की योग्यता की अभिवृद्धि का प्रयास किया जाता है। सत्र के अन्त में मार्च माह के प्रथम सप्ताह में शिक्षकों की साप्ताहिक कार्यशाला उनके व्यक्तित्त्व विकास एवं क्षमता विकास के लिए आयोजित की जाती है जिनमें विषय विशेषज्ञ आमंत्रित कर बुलाए जाते हैं।

शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की दक्षता एवं कुशलता बढ़ाने के लिए उस क्षेत्र के कुशल और कार्य दक्ष लोगों से कार्य सीखने की व्यवस्था की जाती है ताकि वे अपने उस कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पादित कर सकें, जो उन्हें दिया गया है। प्रत्येक शिक्षक अपने द्वारा किए गये कार्य का कार्यवृत्त स्वयं भरता है, जिसमें उसके द्वारा की गई सभी गतिविधियों का विवरण रहता है। सभी के साथ बैठकर उसका विश्लेषण किया जाता है। जिससे कार्य दक्षता एवं गुणवत्ता बढ़ाने में निरन्तर सहायता मिल रही है।

ई.पी.एफ. योजना लागू है। यह योजना शिक्षकों एवं कर्मचारियों के भविष्य हेतु कल्याणकारी योजना है। इस योजना के तहत 12.50 प्रतिशत वेतन से तथा 13.50 प्रतिशत प्रबन्ध समिति की ओर से ई.पी.एफ. खाते में प्रतिमाह जमा होता है। प्राचार्य के पास एक ऐसा कोष का प्राविधान है जिसमें से संकट काल में चुपचाप नियत आर्थिक धनराशि कर्मचारी को दे दी जाती है। हमारे संसाधन सीमित है तथापि शिक्षक को 15000, कर्मचारी को 10,000 तथा चतुर्थ श्रेणी

को 5000 रू. सहायता दी जाती है। पिछले चार वर्षों में इस योजनान्तर्गत 3 शिक्षक, 5 तृतीय श्रेणी, 3 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी लाभान्वित हो चुके हैं।

6.4 वित्तीय प्रबंधन एवं संसाधन संग्रहण

महाविद्यालय के प्राचार्य की अध्यक्षता में गठित वित्त समिति द्वारा 1–2 जुलाई की बैठक में प्रबन्ध समिति द्वारा घोषित वार्षिक बजट पर विचार कर उसे क्रियान्वित किया जाता है। यदि कोई मद बढ़ाना होता है तो उसका प्रस्ताव तैयार किया जाता है। इस प्रस्ताव को प्रबन्धक महोदय के पास स्वीकृति हेतु भेज दिया जाता है। प्रबन्ध समिति की स्वीकृति के बाद इस प्रस्ताव को भी वार्षिक बजट का हिस्सा मानकर वार्षिक योजना का अंग बना लिया जाता है।
महाविद्यालय के पास आय का स्रोत विद्यार्थियों से प्राप्त शुल्क और मातृ संस्था महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा दिया जाने वाला अनुदान है। अन्य कहीं से चन्दा या अन्य संसाधन जुटाने का प्राविधान नहीं है। स्ववित्तपोषित संस्था होने के कारण राज्य सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा महिलाओं एवं अनुसूचित जाति–जनजाति के लिए छात्रावास हेतु धन मिल सकता है जिसके लिए 12वीं योजनान्तर्गत आवेदन दिया गया है।
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट द्वारा महाविद्यालय के समस्त आय–व्यय की वार्षिक आडिट अप्रैल माह में होती है। गत सत्र की आडिट अप्रैल 2014 में की गई। अब तक कोई आडिट आपत्ति नहीं आई है।
संस्था की आय का मुख्य और एकमात्र स्रोत विद्यार्थियों से प्राप्त शुल्क है। विद्यार्थियों को शुल्क की नियमानुसार रसीद दी जाती है। प्राप्त शुल्क प्रतिदिन नियमानुसार खाते में जमा की जाती है। पिछले 4 वर्षों के आय–व्यय और आडिट के समय प्रतिवर्ष की शेष धनराशि का विवरण निम्नवत है–

मद	2010–11 (रु.में)	2011–12 (रु.में)	2012–13 (रु.में)	2013–14 (रु.में)
आय	80,86,700.00	1,10,53,041.00	1,58,47,991.00	1,88,96,638.00
व्यय	53,35,317.00	83,11,049.00	95,80,290.00	1,22,12,999.00
शेष	18,04,250.00	27,41,991.00	62,67,701.00	66,83,639.00

निर्धारित बजट में कार्य पूरा न होने पर अभाव की पूर्ति महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् से अनुदान प्राप्त कर की जाती है।
जैसा कि उपर उल्लिखित है निर्माण कार्य, उपकरण क्रय एवं रख–रखाव के लिए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् से अतिरिक्त धन अनुदान स्वरूप प्राप्त होती है और उसे उसी मद में व्यय किया जाता है जिस मद में वह अनुदान प्राप्त होता है।

6.5 आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली (IQAS)

2011 ई. से महाविद्यालय में आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) स्थापित है जो निरन्तर कार्यरत है। आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ प्रतिवर्ष सत्रारम्भ में महाविद्यालय की वार्षिक कार्य योजना बनाती है। कार्य योजना अनुमोदित की जाती है। उस कार्य योजना पर आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ कार्य करती है और जून माह में वार्षिक रिपोर्ट बनाकर प्राचार्य के पास जमा करती है। आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ का गठन नियमानुसार इस तरह है–

आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ

क्र.सं.	नाम	पद	
1	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	अध्यक्ष
2	महन्त योगी आदित्यनाथजी	प्रबन्धक	सदस्य
3	प्रो. यू.पी. सिंह	बाह्य विशेषज्ञ	सदस्य
4	प्रो. राम अचल सिंह	बाह्य विशेषज्ञ	सदस्य
5	डॉ. शेर बहादुर सिंह	बाह्य विशेषज्ञ	सदस्य
6	श्री राहुल शर्मा	अध्यक्ष, पुरातन छात्र परिषद्	सदस्य
7	डॉ. टी.एन. मिश्रा	अध्यक्ष, अभिभावक संघ	सदस्य
8	श्री गजेन्द्र प्रताप सिंह	समाजसेवी	सदस्य
9	श्री ज्योति मस्करा	उद्योगपति	सदस्य
10	डॉ. विजय कुमार चौधरी	शिक्षक सदस्य	सदस्य
11	डॉ. आर.एन. सिंह	शिक्षक सदस्य	सदस्य
12	डॉ. शिव कुमार बर्नवाल	शिक्षक सदस्य	सदस्य
13	डॉ. शालिनी सिंह	शिक्षक सदस्य	सदस्य
14	डॉ. राजेश कुमार शुक्ल	शिक्षक सदस्य	सदस्य
15	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	अनुशासन	सदस्य
16	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	समन्वयक / सचिव	सदस्य

आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ के संयोजक और शिक्षक सदस्य महाविद्यालय के शिक्षकों से सम्पर्क में रहते हैं। ये सभी परस्पर विचार विमर्श और सहयोग के द्वारा महाविद्यालय की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने में कार्य करते हैं। आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ द्वारा गुणवत्ता सुनिश्चयन के लिए गये निर्णय वर्तमान सत्र में लागू किये जाते हैं। आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ में महाविद्यालय और प्रबन्ध तन्त्र के अलावा बाहर से नामित सदस्य अपने अनुभव के आधार पर मूल्यवान सलाह देते हैं। आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ में पूर्व छात्र भी सदस्य हैं जो महाविद्यालय की कार्य संस्कृति के अनुरूप गुणवत्ता के विकास के लिए चिन्तन से और सक्रिय रूप से कार्य करते हैं। संस्था के सभी विभाग एक ही परिसर में स्थित हैं और आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ के सदस्य संयोजक सम्पूर्ण सम्बन्धित स्टाफ से व्यक्तिगत मिलकर आपसी सम्पर्क कायम करते हैं।

महाविद्यालय गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ समन्वित कार्य योजना तैयार करता है। जिसमें शैक्षणिक और प्रशासनिक दोनों गतिविधियों पर सम्यक ध्यान दिया जाता है। आवश्यकतानुसार संसाधनों का विकास एवं उनकी उपलब्धता, सामुदायिक सेवा, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के समग्र विकास पर आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ की सचेष्ट नजर रहती है।

महाविद्यालय गुणवत्ता सुनिश्चयन की कार्यवाहियों से मासिक बैठक में सम्पूर्ण शिक्षकों–कर्मचारियों को अवगत कराता है जिसका प्रभाव यह है कि महाविद्यालय में हर स्तर पर गुणवत्ता बनाए रखने की चेष्टा प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने दायित्व के अनुसार करता है।

संस्था चलती हुई कक्षा की जांच, विश्वविद्यालय से या निकटवर्ती महाविद्यालय से, ख्यातिलब्ध शिक्षकों को बुलाकर कराती है। वे अपनी निष्पक्ष जांच रिपोर्ट

तत्काल प्राचार्य को देते हैं। इस कार्य के लिए उनको सम्मानपूर्वक आमंत्रित किया जाता है, लाया जाता है, पहुँचाया जाता है। मानदेय देने की भी व्यवस्था है। उनके द्वारा दिये गए सुझाव और कमियों से प्राचार्य सम्बन्धित शिक्षकों तथा कभी–कभी विद्यार्थियों को बुलाकर अवगत कराते हैं और कमियों को तत्काल प्रभाव से दूर करने की सफल चेष्टा की जाती है तथा सुझाव यथासम्भव क्रियान्वित किए जाते हैं। जिस कार्य की विशेषज्ञों द्वारा प्रशंसा की जाती है वह सूचना भी प्राचार्य द्वारा कक्षा में स्वयं जाकर साधुवाद के रुप में दी जाती है, ताकि गुणवत्ता बनाए रखने में सबका भावनात्मक सहयोग मिलता रहे।

महाविद्यालय की आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश राज्य सरकार के उच्च शिक्षा मंत्रालय द्वारा दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर में स्थापित क्षेत्रीय केन्द्र के निरन्तर सम्पर्क में रहती है। उनकी गतिविधियों से स्वयं अवगत होती रहती है तथा अपनी वार्षिक रिपोर्ट उन्हें भेजती रहती है।

शिक्षक–अधिगम के निरन्तर पुनरीक्षण हेतु विद्यार्थियों का मासिक मूल्यांकन, शिक्षक कार्यवृत्त, उपस्थिति, कक्षा संचालन आदि का पुनरीक्षण शिक्षकों की मासिक बैठक में गम्भीरतापूर्वक किया जाता है। पुनरीक्षण रिपोर्ट संकलित कर प्रगति आख्या के रूप में तैयार किया जाता है। कमियों को चिह्नित कर उन्हें दूर किया जाता है। सारा कार्यवृत्त पुनरावलोक और तुलनात्मक प्रगति समीक्षा के लिए उपलब्ध रहता है। इसके अलावा प्रतिदिन चलती हुई कक्षाओं का अवलोकन प्राचार्य और उनके उपप्राचार्यों की टीम इस आशय से करती रहती है कि कहीं कोई चूक हो रही हो तो उसे सुधारा जाय और पठन–पाठन की गुणवत्ता परम्परागत संस्कार का अंग बनी रहे।

महाविद्यालय की कार्य प्रणाली की गुणवत्ता का सम्पूर्ण वृत्त अद्यतन वेबसाइट पर उपलब्ध रहता है, जिससे आन्तरिक या बाह्य लाभार्थी जब चाहें उससे अवगत होते रहते हैं। वार्षिक शिक्षक–अभिभावक बैठक, छात्रसंघ की मासिक साधारण सभा तथा पुरातन छात्र परिषद् की अर्धवार्षिक सभा में खुलकर आमने–सामने बात होती है।

मापदंड-VII
नवाचार और सर्वोत्तम अभ्यास

7.1 पर्यावरण चेतना

7.1.1 महाविद्यालय परिसर में उपलब्ध सभी सुविधाओं और परिसर को हराभरा सुन्दर भव्य आकर्षक बन प्रान्तर के रूप में बनाए रखने के लिए महाविद्यालय द्वारा ग्रीन आडिट की व्यवस्था तथा कूड़े–कचरे के प्रतिदिन निस्तारण हेतु ग्रीन आडिट कमेटी एवं बागवानी समिति कार्य करती है। शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी और ग्रीन आडिट कमेटी तथा बागवानी समिति उपर्युक्त दृष्टि से निरन्तर सक्रिय रहती है। बागवानी समिति प्रतिदिन सम्पूर्ण परिसर का निरीक्षण करती है। प्रतिदिन की समीक्षा के पश्चात् अगले दिन का कार्य सुनिश्चित कर दिया जाता है। अलग–अलग परिसर के निरीक्षण के लिए चक्रानुक्रम से कार्य विभाजन तय है। ग्रीन आडिट कमेटी अपनी बैठकों की रपट से बागवानी समिति को अवगत कराती रहती है। महाविद्यालय परिसर तथा उसके बाहर की सड़क चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के सहयोग से स्वच्छ रखा जाता है। प्रत्येक शनिवार को 12.10 से 1.10 बजे तक प्राचार्य, शिक्षक, कर्मचारी तथा विद्यार्थी स्वैच्छिक श्रमदान कर पूरा परिसर साफ करते हैं जिससे स्वच्छता के साथ–साथ पर्यावरण के प्रति वे संवेदनशील बनते हैं। इस तरह से सावधानीपूर्वक कूड़ा–कचरा अलग–अलग इकट्ठा किया जाता है। सड़ने–गलने वाले कूड़े खाद हेतु बनाए गए गड्ढे में तथा अन्य को इकट्ठा कर जला दिया जाता है। वर्तमान सत्र तक पूरा परिसर पौधरोपण की दृष्टि से संतृप्त हो चुका है। खेल का मैदान, फर्श, छत, भवन सभी निरन्तर साफ–सुथरा रहता है।

7.1.2 महाविद्यालय परिसर को प्रयत्नपूर्वक पर्यावरण के अनुकूल बनाए रखने हेतु हमारे निम्न प्रयास उल्लेखनीय हैं–

1. महाविद्यालय परिसर में यथेष्ट मात्रा में इनवर्टर लगाए गए है ताकि सामान्य कार्य के लिए विद्युत आपूर्ति न रहने पर व्यर्थ में जनरेटर चलाना न पड़े। इसके दो फायदे होते हैं। अनावश्यक डीजल की खपत बचती है एवं जनरेटर चलने से होने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण से बचाव होता है। महाविद्यालय की परिसर संस्कृति में इस बात पर बहुत जोर दिया जाता है। सभी इस बात के लिए सचेष्ट रहते हैं कि बिना जरूरत न तो कहीं रोशनी के बल्ब जले, न ही पंखा चले। स्वीच तत्काल आफ कर दिये जाय। ताकि ऊर्जा संरक्षण हो सके। बिजली की अनावश्यक खपत राष्ट्रीय क्षति है इसे विद्यार्थियों को निरन्तर समझाया जाता है।
2. महाविद्यालय परिसर में सौर्य ऊर्जा को वैकल्पिक ऊर्जा के रुप में प्रयोग करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है परिसर में सौर्य ऊर्जा संचालित लाइट की व्यवस्था है।

3. जल संचयन के प्रति महाविद्यालय सचेत है। जल संचयन की समुचित व्यवस्था महाविद्यालय परिसर में बनाने की योजना विचाराधीन है। महाविद्यालय में एक छोटा सा स्थान बनाया गया है। जिसके जरिए बरसात का पानी मिट्टी–बालू के कड़ों से क्रमशः छनता हुआ भूगर्भ जल में मिल जाता है, बाहर जाकर व्यर्थ नहीं होने पाता। महाविद्यालय परिसर का पानी परिसर में ही रुकता है तथा एक–दो दिन में भूमि में नीचे चला जाता है। ये सारे प्रयत्न भूगर्भ जल संचयन को बढ़ावा देने और भूगर्भ जल संचयन की दिशा में किये गए मामूली प्रयास हैं। छात्रों को निरन्तर सचेत किया जाता है कि जलाभाव भावी समय की प्रबल समस्या है अतः जल संचयन मानव एवं सृष्टि के कल्याण हेतु आवश्यक है।
4. परिसर में अनेक प्रकार के शाकीय झाड़ी और वृक्षों के पौधे लगाए गए हैं जिनसे परिसर हरा–भरा, सुन्दर दिखाई देता है और ये पौधे हमारी अपनी जरूरत के लिए ईधन जलाने से उत्पन्न कार्बनडाई आक्साइड को प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से स्टार्च (जन्तुओं के लिए ऊर्जा स्रोत) में बदलने के लिए पर्याप्त से ज्यादा है। हम धरती पर कार्बन उदासीनीकरण की दिशा में अपने इस प्रयत्न से सचेष्ट हैं और इसकी महत्ता से विद्यार्थी वर्ग को आगाह करते रहते हैं कि मनुष्य को धरती पर सम्यक रूप से दीर्घ कालिक जीवन जीने के लिए वन–प्रान्तर कायम करना ही होगा।
5. अनेकों प्रकार के प्लास्टिक और अन्य संशेलिष्ट पदार्थों के कूड़े–कचरे एकत्र करके अलग गड्ढे में डाले जाते हैं और उन्हें जला दिया जाता है। जलाते समय सावधानी बरती जाती है कि उनका हानिकारक धुंआ इतनी सीमित मात्रा में निकले जितना कि हानिकारक न हो।
6. घास–फूस, तृण–पतवार जो इकट्ठे होते हैं, उन्हें अलग गड्ढे में डाला जाता है जहाँ उन्हें सड़ने का मौका दिया जाता है और फिर उसे कम्पोस्ट खाद के रूप में बागवानी में प्रयोग कर लिया जाता है। उसे बाहर सड़क पर फेका या जलाया नहीं जाता है।
7. कम्प्यूटर और इलेक्ट्रानिक उपकरणों के कूड़े कचरे सावधानी से अलग रखे जाते हैं और उनका प्रबन्धन कुशल बाहरी एजेन्सीज को इस आशय के साथ करने को कहा जाता है कि उनके विषाक्त और हानिकारक प्रभावों से पर्यावरण को हानि न पहुँचे।
8. रसायन विज्ञान प्रयोगशाला से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों को भूगर्भ जल में मिलने से प्रयत्नपर्वूक रोकने की व्यवस्था की गई है ताकि विषैले तत्त्व पानी को दूषित न कर सके।

7.2. नवाचार

अपने स्थापना काल (2005 ई.) से ही महाविद्यालय ने कई नये प्रयोग आरम्भ किए। कई नूतन आयाम विकसित किया। इन नए प्रयोगों एवं नूतन आयामों द्वारा योजनाबद्ध ढंग से प्रयत्नपूर्वक अपने परिसर संस्कति का विकास आज महाविद्यालय की विशेषता बन चुकी है। महाविद्यालय की नियमित दिनचर्या का हिस्सा बन चुके निम्नवत नवाचार उल्लेखनीय हैं–

1. प्रतिदिन प्रातः 9.25 बजे से प्रार्थना सभा में राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, सरस्वती वन्दना एवं 'वह शक्ति हमें दो दया निधे...' की ईशवन्दना के साथ दिनचर्या प्रारम्भ होती है। प्रार्थना सभा के अन्त में प्रतिदिन श्रीमद्भगवद्गीता के 5 श्लोक का वाचन अथवा महापुरुष की जयन्ती/पुण्यतिथि होने पर उनसे प्रेरणा लेने के संकल्प के साथ श्रद्धांजलि दी जाती है अथवा राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्मरणीय तिथियों पर उनके महत्त्व पर प्रकाश डाला जाता है।
2. 15 जुलाई तक महाविद्यालय की वेबसाइट पर प्रत्येक विषय के प्रत्येक प्रश्नपत्र का तिथिवार पाठ्यक्रम योजना अपलोड कर दिया जाता है। इस पाठ्यक्रम योजनानुसार शिक्षक कक्षाध्यापन करता है परिणामतः पाठ्यक्रम पूर्ण नियोजित ढंग से निर्धारित अवधि पर पूर्ण हो जाता है।
3. पाठ्यक्रम योजनानुसार शिक्षक अपने व्याख्यान के 'सारांश' की छायाप्रति सभी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराकर अध्यापन प्रारम्भ करता है। अगले दिन प्रारम्भ में पिछले व्याख्यान एवं सारांश से सम्बन्धित विद्यार्थियों के प्रश्नोत्तर के पश्चात् कक्षा प्रारम्भ होती है। इससे पाठ्यक्रम के महत्त्वपूर्ण बिन्दु पर शिक्षक–विद्यार्थी केन्द्रित रहते हैं और एक–एक क्षण का सदुपयोग करते हैं।
4. महाविद्यालय के स्थापना काल से ही प्रत्येक शनिवार को मध्यावकाश के पश्चात की चार कक्षाएं 10 मिनट कम कर दी जाती हैं। मध्यावकाश स्थगित कर दिया जाता है। इस प्रकार 12.10 से 1.10 बजे तक सभी विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी, प्राचार्य स्वैच्छिक श्रमदान करते हैं।
5. महाविद्यालय द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी की मासिक रपट (प्रगति आख्या) क्रमशः शिक्षक, विभाग एवं संकाय द्वारा तैयार होकर प्राचार्य को प्रतिमाह दे दी जाती है। प्राचार्य कार्यालय उसे वेबसाइट पर अपलोड कर देता है। इसका लाभ यह है कि कोई अभिभावक अपने पाल्य का गत–माह की उपस्थिति, स्वैच्छिक श्रमदान, उसके द्वारा किये गए कक्षाध्यापन, मासिक मूल्यांकन के प्राप्तांक तथा महाविद्यालय के कार्य दिवस से सीधे तौर पर परिचित हो जाता है। यही मासिक रपट क्रमशः तैयार होते हुए वार्षिक रपट बनती है। जिस आधार पर सम्बन्धित शिक्षक एवं प्राचार्य प्रत्येक विद्यार्थी के क्रमिक विकास का अध्ययन कर विद्यार्थी एवं महाविद्यालय योजना में गुणात्मक सुधार प्रयास करते हैं।
6. शिक्षकों के गुणात्मक विकास हेतु वर्ष में दो बार (सितम्बर–जनवरी) विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के प्रति अभिमत प्राप्त (शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र द्वारा) किया जाता है। छात्रों से प्राप्त यह अभिमत सम्बन्धित शिक्षक एवं प्राचार्य देखते हैं। इसका परिणाम है कि शिक्षक के बारे में छात्र क्या सोच रहा है, इससे शिक्षक अद्यतन होता रहता है और स्वयं मूल्यांकन एवं सुधार की प्रक्रिया निरन्तर बनी रहती है।
7. प्रत्येक शिक्षक द्वारा प्रतिमाह निर्धारित प्रारूप पर 'शिक्षक कार्यवृत्त' तैयार किया जाता है। जिसमें शिक्षक द्वारा कक्षाध्यापन, पाठ्यक्रम योजना के

पालन करने की जानकारी, छात्रों द्वारा कराया गया कक्षाध्यापन, स्वैच्छिक श्रमदान, शिक्षणेत्तर गतिविधियों सहित उनके द्वारा किये गये अन्य सामाजिक–सामूहिक उत्तरदायित्व का विवरण दिया जाता है। यह कार्यवृत्त सभी शिक्षकों द्वारा सीधे प्राचार्य को दिया जाता है। प्राचार्य द्वारा इसकी समीक्षा एवं आवश्यकतानुसार शिक्षकों से त्वरित संवाद कायम किया जाता है। इससे शिक्षकों का गुणात्मक विकास हुआ है। महाविद्यालय की अकादमिक योजनाओं का पूर्णरूपेण पालन एवं उनमें स्वप्रेरणा से कार्य करने की प्रवृत्ति का निरन्तर विकास हुआ है।

8. महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के भावी जीवन के लिए अपनी शुभकामना, उनसे अपेक्षाएं एवं उनके पारिवारिक, सामाजिक–राष्ट्रीय दायित्व बोध कराने के उद्देश्य से महाविद्यालय में शिक्षा पूर्ण कर रहे अन्तिम सत्र के विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक वर्ष विश्वविद्यालय परीक्षा से ठीक पूर्व 'समावर्तन–संस्कार समारोह' का आयोजन किया जाता है। इस समारोह में छात्र धोती–कुर्ता तथा छात्राएं साड़ी में (निर्धारित गणवेश) समावर्तन उपदेश ग्रहण करते हैं एवं उन्हें आचरण–व्यवहार का हिस्सा बनाने का संकल्प लेते हैं।
9. विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में सभी कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को अगले सत्र की प्रवेश समिति का सदस्य मनोनीत कर दिया जाता है। सर्वप्रथम विद्यार्थियों की प्रवेश समिति ही नवागन्तुक प्रवेशार्थी का साक्षात्कार करती है, इनकी संस्तुति पर ही शिक्षकों की प्रवेश समिति तत्पश्चात् प्राचार्य/संयोजक प्रवेश समिति द्वारा प्रवेश स्वीकृत होता है। इस योजना का उद्देश्य विद्यार्थी में विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करना, योग्य विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की वृद्धि करना, साक्षात्कार लेने के रूप में साक्षात्कार की तैयारी करना, नवागन्तुक प्रवेशार्थियों पर प्रारम्भ से ही महाविद्यालय परिसर संस्कृति की छाप छोड़ना है।
10. महाविद्यालय में सुव्यवस्थित स्वरूप में छात्रसंघ का प्रतिवर्ष गठन होता है। छात्रसंघ चुनाव एवं छात्रसंघ की अभिनव कार्य प्रणाली महाविद्यालय के अपने तरह के अलग प्रयास का परिणाम है। महाविद्यालय के निरन्तर विकास में छात्रसंघ की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
11. महाविद्यालय प्रशासन में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी महाविद्यालय परिसर संस्कृति के एक और नए आयाम का उदाहरण है। विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा के द्वारा प्रवेश समिति के माध्यम से तथा छात्रसंघ द्वारा महाविद्यालय के अन्य सभी प्रमुख विभागों की समितियों के माध्यम से विद्यार्थियों का महाविद्यालय प्रशासन में प्रयत्नपूर्वक सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। सभी छात्र–छात्राओं की समितियों का प्रभारी शिक्षक होता है तथा शिक्षकों की सभी समितियों में एक सदस्य छात्रसंघ का प्रतिनिधि होता है। पठन–पाठन के अतिरिक्त विद्यार्थियों में विचार,

चिंतन, निर्णय लेने के गुणों के साथ प्रशासनिक क्षमता का विकास इस योजना का उद्देश्य है।

12. प्रति वर्ष महाविद्यालय द्वारा समय–समय पर बाह्य विषय विशेषज्ञों द्वारा एकेडमिक आडिट कराया जाता है। विषय विशेषज्ञ द्वारा कक्षाओं में बैठकर पढ़ाई जा रही कक्षा का मूल्यांकन किया जाता है; तत्पश्चात् प्राचार्य की उपस्थिति में सम्बन्धित शिक्षक को प्रोत्साहित करते हुए कमियों के निवारण हेतु सुझाव दिया जाता है। प्रति वर्ष महाविद्यालय द्वारा एकाध बार शिक्षाविदों द्वारा कक्षाओं का निरीक्षण कराया जाता है तथा उनके सुझाव लागू किए जाते हैं।
13. महाविद्यालय के प्रत्येक शिक्षक द्वारा पाँच विद्यार्थियों को गोद लेकर अभिभावक की तरह उनके पोषण एवं उनके विकास का प्रयत्न किया जाता है।
14. महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग महाविद्यालय की एक निश्चित सीमा में आने वाले आस–पास के कुछ गाँव गोद लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाओं की जानकारी, स्वच्छता, सामाजिक समरसता के विषय पर निरन्तर जन–जागरण अभियान चलाते रहते हैं। वर्ष में चार एकदिवसीय शिविर लगाकर शिक्षक–विद्यार्थी गाँव में साथ रहते हैं। इससे गाँवों में जागरूकता के साथ–साथ विद्यार्थियों में भी सामाजिक संवेदना का विकास होता है और दोनों एक दूसरे का पूरक बनकर एक दूसरे के विकास में सहभागी बने हुए हैं।

7.3 उत्तम अभ्यास

उपर्युक्त नवाचार एवं विकसित नए आयाम महाविद्यालय में विकसित हो चुकी 'परिसर संस्कृति' का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। वर्ष–प्रतिवर्ष बार–बार दुहराए जाने के कारण ये अभ्यास सुस्थापित व्यवस्था का रूप धारण कर चुके हैं तथा विद्यार्थियों को योग्य नागरिक, आत्मनिर्भर बनाने तथा राष्ट्र–समाज के प्रति समर्पित भाव उत्पन्न कर उन्हें राष्ट्र–भक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं। उपर्युक्त सभी नवाचार हमारी सर्वोत्तम प्रथाएं हैं तथापि इनमें से दो निर्धारित प्रारूप पर दिये जा रहे हैं।

सर्वोत्तम अभ्यास – 1

1. **अभ्यास का शीर्षक –** प्रार्थना सभा
2. **लक्ष्य –** महाविद्यालय के विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी तथा प्राचार्य को अच्छा मनुष्य तथा उन्हें अपने–अपने दैनिक कर्तव्यों के प्रति ईमानदार बना देने के लिए दैनिक प्रार्थना सभा आयोजित होती है।
3. **संदर्भ –** प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक ज्ञान विज्ञान को निरन्तर बढ़ाने का पाठ्यक्रम बना हुआ है किन्तु 'प्रार्थना' के प्रति इसका विपरीत प्रभाव है। प्राथमिक विद्यालयों की दिनचर्या व्यवस्थित प्रार्थना सभा से होती है, इण्टरमीडिएट कालेजों में प्रार्थना औपचारिक बन जाता है और उच्च शिक्षा संस्थान में काल्पनिक। जबकि हमारी यह मान्यता है कि कोई भी कार्य

'प्रार्थना' के साथ प्रारम्भ करने से उसकी पूर्णता रचनात्मकता के साथ होती है। इस दृष्टि से महाविद्यालय ने प्रार्थना सभा प्रारम्भ की और आज प्रार्थना सभा हमारी दिनचर्या का हिस्सा है।

4. **अभ्यास** – प्रार्थना सभा महाविद्यालय के प्रथम सत्र में ही विजयादशमी अवकाश के बाद प्रारम्भ कर दिया गया। प्रातः 9.25 से 9.40 बजे तक प्रार्थना सभा आयोजित की जाती है। 8.25 तक प्राचार्य, 8.30 बजे तक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, 9.00 बजे तक तृतीय श्रेणी कर्मचारी एवं 9.15 तक महाविद्यालय में शिक्षक उपस्थित हो जाते हैं। पूरे सत्र की प्रार्थना सभा की मासिक योजना जुलाई माह में बना दी जाती है। प्रार्थना सभा समिति द्वारा प्रतिमाह की 'प्रार्थना सभा योजना' सूचना पट्ट पर सम्बन्धित माह प्रारम्भ होने के एक दिन पूर्व लगा दिया जाता है। प्रार्थना सभा का समय होते ही नियन्ता द्वारा मुख्य द्वार के बाहर खड़ा रहकर मुख्य द्वार बन्द करा दिया जाता है। परिसर के अन्दर विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी, प्राचार्य प्रार्थना सभा में समय से पूर्व पहुँचकर कुर्सी पर बैठे होते हैं। घंटी लगते ही सभी अपने स्थान पर खड़े हो जाते हैं। राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, सरस्वती वन्दना 'वर दे वीणा वादिनी.....' एवं प्रार्थना 'वह शक्ति हमें दो दयानिधे.... सस्वर सम्पन्न होता है। पुनश्च सभी अपने–अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। प्राचार्य/प्रभारी शिक्षक द्वारा यदि किसी महापुरूष की पुण्यतिथि/जयन्ती है तो उस महापुरुष के संक्षिप्त परिचय के साथ श्रद्धांजलि अथवा कोई विशेष राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय दिवस है, तो उसके सन्दर्भ में प्रेरणास्पद सम्बोधन अथवा श्रीमद्भगवद्गीता के 5 श्लोक का वाचन हिन्दी अनुवाद सहित किया जाता है। तत्पश्चात् सभी अपनी–अपनी कक्षाओं में जाते हैं और पहली घंटी प्रारम्भ हो जाती है।

5. **सफलता का प्रमाण** – प्रार्थना सभा के कारण महाविद्यालय का पूरा परिसर आध्यात्मिक बना रहता है। हमारी मान्यता है कि प्रार्थना सभा के कारण ही महाविद्यालय कठिन से कठिन कार्य तय कर सफलतापूर्वक सम्पन्न कर ले जाता है। शिक्षक–कर्मचारी की शत–प्रतिशत आर्थिक एवं दायित्वसह ईमानदारी प्रमाणित है।

6. **समस्याओं का सामना करना और संसाधनों की आवश्यकता** – प्रार्थना सभा प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षक मानने को तैयार नहीं था कि उच्च शिक्षा में 'प्रार्थना' के लिए विद्यार्थी सहज तैयार होगा। जुलाई माह की योजना बैठक में विषय विचारार्थ अगले माह तक बढ़ा दिया गया। अगस्त माह की प्राध्यापक बैठक में भी सहमति नहीं बन सकी और यह विषय विचारार्थ अगले माह तक के लिए बढ़ा दिया गया। सितम्बर माह की बैठक में भी शिक्षक स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि 'प्रार्थना सभा' जैसी योजना उच्च शिक्षा संस्थान में लागू हो सकती है। तब प्राचार्य का प्रस्ताव स्वीकार हो गया कि विजयादशमी के अवकाश के पूर्व यह सूचना की जायेगी कि अवकाश के बाद महाविद्यालय खुलेगा और प्रार्थना सभा के लिए 9.30 पर सभी विद्यार्थी सामने के मैदान में उपस्थित होंगे। इस सूचना पर यदि विद्यार्थी मैदान में उपस्थित हो गया तो प्रार्थना शुरू हो जायेगी अन्यथा पुनश्च इस पर विचार किया जायेगा।

विजयादशमी अवकाश के बाद महाविद्यालय द्वारा घंटी लगते ही विद्यार्थी मैदान में पहुँचे और प्रार्थना प्रारम्भ कर दी गई। प्रार्थना सभा के लिए अब विद्यार्थी स्वतः सक्रिय रहते हैं। प्रार्थना सभा हमारे महाविद्यालय की स्वाभाविक दिनचर्या का हिस्सा बन चुकी है। इस योजना हेतु प्रारम्भ में माइक की व्यवस्था हेतु महाविद्यालय प्रबन्धक द्वारा धन उपलब्ध करा दिया गया। अब कोई अतिरिक्त व्यय की आवश्यकता नहीं है।

प्राचार्य : **डॉ. प्रदीप कुमार राव** संस्था : महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ शहर : गोरखपुर पिन : 273014 वेबसाइटः www.mpm.edu.in ई–मेल : mpmpg5@gmail.com मोबा. : 09794299451	**श्री सुबोध कुमार मिश्र** **प्रभारी– प्रार्थना समिति** महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर मो0 – 08574779415 **सुश्री मनीषा सिंह** **सदस्य– प्रार्थना समिति** उपाध्यक्ष, छात्रसंघ महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर मो0 – 09984552426

सर्वोत्तम अभ्यास – 2

1. **अभ्यास का शीर्षक –**छात्रसंघ की अभिनव कार्य प्रणाली
2. **लक्ष्य –** छात्रसंघ एवं उसकी कार्य प्रणाली का विकास इस उद्देश्य से किया गया कि महाविद्यालय के संचालन में विद्यार्थियों को सहभाग के माध्यम से उनमें आत्म विश्वास, प्रशासनिक क्षमता एवं नेतृत्त्व क्षमता का योग्य विकास किया जा सके। यह कार्य प्रणाली यह सोचकर विकसित की गई कि इस योजना से विद्यार्थियों में पठन–पाठन के प्रति स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का और उनके सहयोग से महाविद्यालय का विद्यार्थी केन्द्रित विकास होगा।
3. **संदर्भ –** छात्रसंघ एवं उसकी विकसित कार्यपद्धति के विकास के पीछे मुख्य सोच यह था कि इससे महाविद्यालय की सम्पूर्ण योजना एवं व्यवस्था विद्यार्थी केन्द्रित और पारदर्शी होगी। विद्यार्थियों के बहुआयामी व्यक्तित्त्व विकास के साथ–साथ महाविद्यालय के विकास में निष्कपट–उत्साही युवा शक्ति का उपयोग किया जा सकेगा। उत्तर प्रदेश में छात्रसंघ का विकृत स्वरूप एवं उसके महत्त्व को योजनापूर्वक ढंग से समाप्त करने की पीड़ा से उच्च शिक्षा के लिए छात्रसंघ की उपादेयता को पुनर्प्रतिष्ठित करने को चुनौती रुप में स्वीकार कर छात्रसंघ का गठन एवं संचालन की योजना बनायी गई।
4. **अभ्यास –** महाविद्यालय में छात्रसंघ के गठन एवं उसकी कार्यप्रणाली का योजनाबद्ध ढंग से क्रमिक विकास हुआ। महाविद्यालय की स्थापना के समय सन् 2005 ई. में उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए छात्रसंघ अभिशाप बन चुका था। स्थिति इतनी खराब हुई कि 2008 ई. में उत्तर प्रदेश सरकार को छात्रसंघ चुनाव न कराने का अध्यादेश जारी करना पड़ा। इन परिस्थितियों में स्वस्थ विकल्प देने के लिए स्ववित्तपोषित महाविद्यालय होने के बावजूद महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति एवं प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय के स्थापना वर्ष में ही 'छात्र परिषद्' का गठन कर सुपरिभाषित, मानक छात्रसंघ के सुनियोजित

विकास की नींव डाली गई। निम्न तीन चरणों में छात्र परिषद् से छात्रसंघ का विकास हुआ–

प्रथम चरण– 30 अगस्त तक छात्र परिषद् का गठन। सभी कक्षाओं में लिखित प्रश्नपत्र की परीक्षा में सर्वोच्च अंक के आधार पर कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव शिक्षक द्वारा किया जाता है। इन कक्षा प्रतनिधियों में से ही भाषण प्रतियोगिता के आधार पर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिनिधि अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं महामंत्री चुने जाने लगे। छात्र परिषद् का लिखित संविधान बनाकर, सभी छात्र–छात्राओं की स्वीकृति के साथ लागू किया गया। छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्त्व विकास में यह मंच अत्यन्त सक्रिय भूमिका निभाने लगा। किन्तु अच्छे छात्र अभी प्रतिनिधि बनने से बचते रहे। इसे समझते हुए प्रतिनिधियों को शिक्षकों के समान पुस्तकीय सुविधा दे दी गई। यह योजना काम कर गई।

द्वितीय चरण–छात्रसंघ की साधारण–सभा, छात्रसंघ कार्यकारिणी एवं शिक्षकों की मासिक बैठक, प्रबन्ध समिति की बैठक में निरन्तर विचार–विमर्श कर दूसरे चरण में छात्रसंघ संविधान संशोधन समिति द्वारा 2008 ई. में संशोधन किया गया। प्रतिनिधियों के चुनाव में प्राप्तांक के साथ उपस्थिति को जोड़ कर औसत अंक के आधार पर कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव तथा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री का कक्षा प्रतिनिधियों के मतदान द्वारा चुनाव की प्रक्रिया लागू कर छात्र परिषद् के स्थान पर 'छात्रसंघ' नाम दे दिया गया। विद्यार्थी महाविद्यालय प्रशासन के सहभागी बनने लगे।

तृतीय चरण–छात्रसंघ की विकसित कार्य प्रणाली अत्यन्त उत्साहजनक रही। विद्यार्थी इस मंच के माध्यम से महाविद्यालय के संचालन में सहभागी होने के कारण निर्णयों में प्रभावी भूमिका में आ गए। छात्रसंघ की साधारण सभा ने छात्रसंघ संविधान में संशोधन करने की तर्क पूर्ण–तथ्यपूर्ण ढंग से आवाज उठाई। प्राचार्य द्वारा पुनः गठित 'छात्रसंघ संविधान संशोधन समिति' ने निम्न संशोधन प्रस्तुत किए– 'अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री का चुनाव सभी विद्यार्थियों के मतदान द्वारा कराया जाय'।

साधारण सभा में यह संशोधन स्वीकृत हो गया। 'चुनाव आचार संहिता' छात्रसंघ संविधान का हिस्सा बन गया। छात्रसंघ संविधान महाविद्यालय की वेबसाइट www.mpm.edu.in पर उपलब्ध है।

चुनाव–छात्र संघ का गठन सितम्बर प्रथम सप्ताह तक सम्पन्न हो जाता है। तीन दिनों में छात्रसंघ चुनाव निम्नवत होता है–

1. **प्रथम दिन** कक्षाएं चलती रहती हैं। शिक्षक अपनी–अपनी कक्षा में सीलबन्द लिफाफे में प्रश्नपत्र (10 प्रश्न) के साथ जाता है, परीक्षा लेता है, मूल्यांकन करता है, प्राप्तांक एवं उपस्थिति के सर्वाधिक औसत अंक पाने वाले विद्यार्थी को कक्षा में ही प्रतिनिधि घोषित कर घंटी लगने के बाद चुनाव अधिकारी को नाम दे देता है। प्राचार्य कार्यालय के बाहर प्रत्येक घंटी में चुने गए प्रतिनिधियों का नाम बोर्ड पर प्रदर्शित (डिस्पले) किया जाता रहता है। इस प्रकार सातवीं घंटी तक 54 कक्षा प्रतिनिधियों का

चुनाव सम्पन्न हो जाता है। सायं 3 बजे से 5 बजे तक चुने गये कक्षा प्रतिनिधियों में से अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री पद हेतु प्रतिनिधि अपना–अपना पर्चा भर देते हैं।

2. दूसरे दिन प्रातः 9 बजे से 10 बजे तक पर्चों की जांच, 10.30 बजे से 11.30 बजे तक पर्चा वापसी एवं 1.30 बजे से योग्यता भाषण का आयोजन किया जाता है। योग्यता भाषण में सभी विद्यार्थी, शिक्षक, प्राचार्य उपस्थित रहते हैं। सभी प्रत्याशी अपना–अपना पक्ष रखते हैं।
3. तीसरे दिन विद्यार्थी 8 बजे से 1 बजे तक मतदान करते हैं। दो बजे से मतगणना कर परिणाम घोषित कर दिया जाता है।

अभिनव कार्य प्रणाली–

–छात्रसंघ चुनाव सम्पन्न होने एवं शपथ ग्रहण समारोह के पश्चात् 10 दिन के अन्दर प्रथम कार्यकारिणी की बैठक में निम्न दो बिन्दु अवश्य होते हैं–

1. वार्षिक योजना
2. समितियों का गठन

–छात्रसंघ की प्रथम बैठक में वार्षिक योजना बनाने के साथ महाविद्यालय की पुस्तकालय समिति, प्रयोगशाला समिति, नियन्ता मण्डल, छात्रा समित, क्रीड़ा समिति, सूचना एवं परामर्श समिति, बागवानी समिति, प्रार्थना एवं स्वच्छता समिति, सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति स्वेच्छानुसार सभी प्रतिनिधियों की सहमति से बना ली जाती है। छात्रसंघ अध्यक्ष द्वारा समितियों की सूची प्राचार्य को दे दी जाती है। प्राचार्य सभी सम्बन्धित प्राध्यापक प्रभारी के पास समिति का नाम भेज देते हैं। ये समितियाँ वर्ष भर प्रभारी शिक्षक की देख–रेख में कार्य करती हैं। इस प्रकार विद्यार्थी सीधे महाविद्यालय प्रशासन का हिस्सा बन जाता है। धीरे–धीरे उसमें योजना बनाने, किसी विषय पर समग्रता से सोचने, चिन्तन करने एवं निर्णय लेने की प्रवृत्ति का विकास होने लगता है। महाविद्यालय की व्यवस्था में अनेक सुधार इन विद्यार्थियों के सुझाव एवं उनके स्वयं की पहल पर हुआ है। उदाहरण के लिए प्रार्थना समिति के सुझाव पर ही प्रार्थना सभा में श्रीमद्भगवद्गीता पाठ जोड़ा गया।

–छात्रसंघ की मासिक साधारण सभा की बैठक प्रत्येक माह के प्रथम कार्य दिवस पर होती है। बैठक की अध्यक्षता छात्रसंघ अध्यक्ष एवं संचालन महामंत्री करता है। इस साधारण सभा में महाविद्यालय के सभी विद्यार्थी, शिक्षक, प्राचार्य, कर्मचारी उपस्थित रहते हैं। साधारण सभा तीन भाग में चलती है–

क. समस्या एवं समाधान – कोई भी छात्र अपनी समस्या मंच से आकर प्रस्तुत करता है, प्राचार्य विद्यार्थी के नाम सहित समस्या लिखते रहते हैं। सभी समस्या आ जाने पर प्राचार्य द्वारा मंच से ही समस्या के समाधान अथवा उस पर अपना पक्ष रखना होता है, जिससे कि विद्यार्थी सन्तुष्ट हो जाय। प्रति प्रश्न की भी छूट रहती है।

ख. छात्र–संकल्प –समस्या एवं समाधान के पष्चात् छात्र–संकल्प का सत्र प्रारम्भ होता है। इस समय कोई भी विद्यार्थी महाविद्यालय परिसर, समाज, परिवार में अपने द्वारा किये जाने वाले अधिकतम तीन रचनात्मक कार्यों का

उल्लेख करता है। ऐसे कार्यों की सूची पूरी होने के पश्चात् छात्रसंघ अध्यक्ष द्वारा प्रस्तावित तीन कार्य व्यवहार में लागू करने का सभी विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी एवं प्राचार्य संकल्प लेते हैं।

ग. **परिचर्चा** –तीसरे भाग में पूर्व निर्धारित स्थानीय/राष्ट्रीय/ अन्तर्राष्ट्रीय विषय पर परिचर्चा होती है जिसमें सभी शामिल होते हैं। छात्रसंघ की साधारण सभा छात्रसंघ प्रभारी के समारोप उद्‌बोधन के साथ पूर्ण होता है।

5. **सफलता का प्रमाण** – महाविद्यालय के छात्रसंघ की उपर्युक्त कार्यप्रणाली से महाविद्यालय की पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला सदैव आवश्यकतानुसार अद्यतन होता रहता है। महाविद्यालय में क्रीड़ा शिक्षक न होने के बावजूद छात्रसंघ द्वारा गठित समिति के विद्यार्थियों द्वारा सफलतापूर्वक खेल सम्बन्धी सम्पूर्ण गतिविधियाँ संचालित होती हैं। अनुशासन एवं स्वच्छता जैसी कोई समस्या महाविद्यालय में उत्पन्न नहीं होती। स्वैच्छिक श्रमदान का छात्रसंघ ने अपने लिए अनिवार्य बना रखा है। महाविद्यालय को हरा–भरा बनाने, प्रार्थना सभा के संचालन, व्याख्यान, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि की व्यवस्था एवं उसके संचालन में छात्रसंघ सक्रिय है। स्वतन्त्रता दिवस एवं गणतन्त्र दिवस समारोह का आयोजन छात्रसंघ करता है।

6. **समस्याओं का सामना करना और संसाधनों की आवश्यकता** – छात्रसंघ में सर्वाधिक प्रमुख समस्या 'परम्परागत छात्रसंघ का विकृत स्वरूप' बना। परिणामतः अच्छे विद्यार्थी प्रतिनिधि चुनाव के दिन अनुपस्थित रहते थे, अभिभावक 'नेतागिरी नहीं करनी है' के उपदेश के साथ अपने पाल्यों को रोकते थे। सर्वप्रथम इस स्थिति को भांपकर छात्रसंघ प्रतिनिधि को शिक्षकों के समान पुस्तकालय से पुस्तकीय सुविधा तथा परीक्षा पूर्ण होने पर पुस्तक जमा करने की सुविधा महाविद्यालय द्वारा घोषित किया गया। प्राचार्य द्वारा अभिभावकों से स्वयं सम्पर्क कर, दूरभाष पर वार्ता कर समाचार पत्रों के माध्यम से छात्रसंघ की विशिष्टता के प्रचार–प्रसार के द्वारा इस समस्या को अब पूर्णतः हल कर लिया गया है। प्रतिनिधि चुनाव के लिए अब जबर्दस्त प्रतिस्पर्धा रहती है।

छात्रसंघ का बैंक खाता है। प्रति छात्र रू. 100.00 शुल्क छात्रसंघ खाते में जमा होता है। खाते का संचालन प्राचार्य तथा छात्रसंघ महामंत्री के संयुक्त हस्ताक्षर से किया जाता है। कोई भी व्यय कार्यकारिणी में निर्णय के बाद ही किया जाता है।

प्राचार्य : **डॉ. प्रदीप कुमार राव** संस्था : महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ शहर : गोरखपुर पिन : 273014 वेबसाइटः www.mpm.edu.in ई–मेल : mpmpg5@gmail.com मोबा. : 09794299451	**श्री किशन देव निषाद** **अध्यक्ष– छात्रसंघ** महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर मो0 – 09935073797 **श्री आशीष राय** **महामंत्री– छात्रसंघ** महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर मो0 – 07379133972

E–विभागों की मूल्यांकन रिपोर्ट

1. वाणिज्य विभाग

1	**विभाग का नाम**	**वाणिज्य**
2	स्थापना वर्ष	2005
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी.जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक वाणिज्य–1,2,3
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	स्नातक वाणिज्य, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	स्नातक वाणिज्य, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, वार्षिक
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	नहीं
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9 शिक्षण पदों की संख्या :

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायक प्राध्यापक	03	03

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी. लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच. डी.
डॉ. राजेश शुक्ल	एम. काम,पी–एच.डी.	सहायक आचार्य	लोक प्रशासन	07 वर्ष	लागू नहीं
श्री सुभाष कुमार गुप्ता	एम.काम., नेट, एम. फिल.	सहायक आचार्य	लेखांकन एवं प्रबन्धन	5 वर्ष	लागू नहीं
श्री नन्दन शर्मा	एम.काम.	सहायक आचार्य	वित्त एवं लेखांकन	5 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. पी.सी. शुक्ला, अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय, दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 2. डॉ. संजीत कुमार गुप्ता, वाणिज्य संकाय, दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 3. डॉ. बृजेश जायसवाल, वाणिज्य संकाय, हरिश्चन्द्र कालेज, वाराणसी
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं

13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	स्नातक वाणिज्य प्रथम वर्ष 100:1 स्नातक वाणिज्य द्वितीय वर्ष 70:1 स्नातक वाणिज्य तृतीय वर्ष 78:1 स्नातक वाणिज्य संयुक्त – 83:1 (औसत)		
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	स्वीकृत–02, भर्ती–02		
15	डी.एससी / डी.लिट / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी.एच.डी–01, एम.फिल, नेट–01, स्नातकोत्तर–01		
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	कोई नहीं		
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी.एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	कोई नहीं		
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	शोध सुविधा उपलब्ध		
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन	डॉ. राजेश शुक्ला	श्री सुभाष कुमार गुप्ता	श्री नन्दन शर्मा
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	–	08	01
	•अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–	–
	•मोनोग्राफ	–	–	–
	•पुस्तक के अध्याय	–	–	–
	•संपादित पुस्तकें	01	01	01
	•आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–	–	–
	•प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–	–
	•एस.एन.आई.पी.	–	–	–
	•एस.जे.आर.	–	–	–
	•प्रभाव कारक	–	–	–
	•एस.सूचकांक	–	–	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	स्थानीय ग्रामवासियों को व्यवसायपरक निःशुल्क परामर्श दिया जाता है।		

21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड....	कोई नहीं
22	छात्र परियोजनाएँ	
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनाओं की है	नहीं
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा महन्त अवेद्यनाथ स्मृति स्वर्णपदक–तेजस्विनी यादव–बी.काम. प्रथम वर्ष ने प्राप्त किया
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. डॉ. भोलेन्द्र, पूर्व कुलपति, वी.ब.पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर 2. प्रो.आर.के. भाटिया, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 3. प्रो.एम.सी. गुप्ता, पूर्व अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय, दीनदयाल उपाध्याय, गो.वि.वि. गोरखपुर 4. श्री भरत झुनझुनवाला, अर्थशास्त्री, नई दिल्ली 5. श्री के.एन. गोविन्दाचार्य, सामाजिक कार्यकर्त्ता, नई दिल्ली
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	महाविद्यालय के आर्थिक सहयोग से दो कार्यशाला (22 अगस्त 2010 एवं 26 अगस्त 2011) आयोजित।
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	

26 कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा :

पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.काम. भाग–एक	सत्र 2010–11	205	105	90	15	76
	सत्र 2011–12	730	279	247	32	89
	सत्र 2012–13	905	280	239	41	72
	सत्र 2013–14	1068	299	244	55	62
बी.काम. भाग–दो	सत्र 2010–11	210	210	196	14	79
	सत्र 2011–12	112	112	97	15	91
	सत्र 2012–13	238	238	212	26	93
	सत्र 2013–14	209	209	182	27	78
बी.काम. भाग–तीन	सत्र 2010–11	64	64	57	07	100
	सत्र 2011–12	161	161	149	12	93
	सत्र 2012–13	106	106	93	13	91
	सत्र 2013–14	234	234	207	27	95

27 छात्रों की विविधता–2013–14

पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बी.काम.–1	100%	–	–
बी.काम.–2	98.19%	1.81%	–
बी.काम.–3	96.84%	3.16%	–

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आँकड़ा उपलब्ध नहीं
29	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	10%
	पीजी से एम.फिल.	–
	पीजी से पीएच.डी.	–
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	–
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 – आँकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता/स्वरोजगार	3.8%
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	उपलब्ध–02 व्याख्यान कक्ष
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	उ.प्र. सरकार द्वारा प्रदत्त अनु.जाति/जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्प संख्यक एवं गरीब सामान्य वर्ग के 54 छात्रों को छात्रवृत्ति प्राप्त
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	वाहय विषय विशेषज्ञों द्वारा विशेष व्याख्यान एवं विभागीय कार्यशाला प्रतिवर्ष
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	पूर्व निर्धारित वार्षिक पाठ्यक्रम योजना के अनुसार व्याख्यान, सभी विद्यार्थियों को सारांश की छायाप्रति, प्रोजेक्टर, मासिक मूल्यांकन, ट्यूटोरियल, समूह चर्चा, केस स्टडी विधि का उपयोग।
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	ग्राम सभा तिनकोनिया को विभाग द्वारा गोद लेकर इन गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, इन्सेफेलाइटिस, सामाजिक जागरूकता, नारी सशक्तिकरण के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस कार्य हेतु वर्ष में चार एक दिवसीय शिविर सम्बन्धित गांव में आयोजित किए जाते हैं।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- सामर्थ्य W- कमजोरी O- अवसर C- चुनौती	**सामर्थ्य**–योग्य शिक्षक, सम्पन्न पुस्तकालय, सूचना–प्रौद्योगिकी सुविधा। **कमजोरी**–ग्रामीण क्षेत्र के छात्र, जिनमें नियमित अध्ययन का आभाव। **अवसर**–कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को पढ़ाने एवं गढ़ने का। **चुनौती**–छात्र–शिक्षक अनुपात का अधिक होना। **भावी योजनाएं–** 1. परास्नातक कोर्स शुरू कराना। 2. शोध कार्य का विकास।

2. वनस्पति विज्ञान विभाग

<table>
<tr><td>1</td><td colspan="3">विभाग का नाम</td><td colspan="3">वनस्पति विज्ञान</td></tr>
<tr><td>2</td><td colspan="3">स्थापना वर्ष</td><td colspan="3">2005</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="3">प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी.जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)</td><td colspan="3">स्नातक विज्ञान–1,2,3</td></tr>
<tr><td>4</td><td colspan="3">अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम</td><td colspan="3">स्नातक वनस्पति विज्ञान, एक इकाई</td></tr>
<tr><td>5</td><td colspan="3">वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)</td><td colspan="3">स्नातक वनस्पति, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, वार्षिक</td></tr>
<tr><td>6</td><td colspan="3">अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता</td><td colspan="3">नहीं</td></tr>
<tr><td>7</td><td colspan="3">अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग</td><td colspan="3">नहीं</td></tr>
<tr><td>8</td><td colspan="3">पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ</td><td colspan="3">कोई नहीं</td></tr>
<tr><td rowspan="3">9</td><td colspan="6">शिक्षण पदों की संख्या</td></tr>
<tr><td colspan="2"></td><td colspan="2">स्वीकृत</td><td colspan="2">भर्ती किया गया</td></tr>
<tr><td colspan="2">सहायक प्राध्यापक</td><td colspan="2">02</td><td colspan="2">02</td></tr>
<tr><td rowspan="4">10</td><td colspan="6">नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)</td></tr>
<tr><td>नाम</td><td>योग्यता</td><td>पदनाम</td><td>विशेषज्ञता</td><td>अनुभव वर्षों में</td><td>निर्देशित पी–एच.डी.</td></tr>
<tr><td>डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव</td><td>नेट, पी.एच–डी.</td><td>सहायक आचार्य</td><td>प्लाण्ट पैथॉलॉजी</td><td>17 वर्ष</td><td>लागू नहीं</td></tr>
<tr><td>सुश्री आम्रपाली वर्मा</td><td>एम. एस–सी.</td><td>सहायक आचार्य</td><td>प्लाण्ट पैथॉलॉजी</td><td>3 वर्ष</td><td>लागू नहीं</td></tr>
<tr><td>11</td><td colspan="3">वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची</td><td colspan="3">1. प्रो. एस.सी. त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
2. प्रो. वी.एन. पाण्डेय, वनस्पति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
3. डॉ. वाई.एन. श्रीवास्तव, वनस्पति विज्ञान विभाग, सेण्टएण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर</td></tr>
<tr><td>12</td><td colspan="4">अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत</td><td colspan="2">नहीं</td></tr>
<tr><td>13</td><td colspan="3">विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार)
सत्र – 2013–14</td><td colspan="3">स्नातक विज्ञान भाग–एक 27 : 1
स्नातक विज्ञान भाग–दो 14 : 1
स्नातक विज्ञान भाग–तीन 05 : 1</td></tr>
</table>

14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	01—प्रयोगशाला सहायक 01—प्रयोगशाला अनुचर	
15	डी.एससी / डी.लिट / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	01—पी—एच.डी. 01—एम.एस—सी.	
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं	
17	डी.एस.टी.—एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी.एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	कोई नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं	
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	सुश्री आम्रपाली वर्मा
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	02	—
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस—अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	—	—
	• मोनोग्राफ	—	—
	• पुस्तक के अध्याय	01	—
	• संपादित पुस्तकें	—	—
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	—	—
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	—	—
	• एस.एन.आई.पी.	—	—
	• एस.जे.आर.	—	—
	• प्रभाव कारक	—	—
	• एस.सूचकांक	—	—
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	पादप रोग की पहचान, पादप रोग कारक की पहचान एवं उसके नियन्त्रण सम्बन्धी परामर्श विद्यार्थी एवं किसान को निःशुल्क दिया जाता है।	
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड....	नहीं	

22	छात्र परियोजनाएँ				नहीं		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनाओं की है				–		
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत				–		
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव ने राष्ट्रीय सेमीनार के शोध चित्र आरेख प्रस्तुतीकरण सत्र में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया है।					
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. आचार्य, कलावती शुक्ला, दी.द.उ.गो. विश्वविद्यालय, गोरखपुर 2. आचार्य, निशा मिश्रा, दी.द.उ.गो. विश्वविद्यालय, गोरखपुर 3. आचार्य, मालविका श्रीवास्तव, दी.द.उ.गो. विश्वविद्यालय, गोरखपुर					
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत						
	ए) राष्ट्रीय				नहीं		
	बी) अंतर्राष्ट्रीय				नहीं		
26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा :						

पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	46	40	19	21	56.00
	सत्र 2011–12	42	34	14	20	79.00
	सत्र 2012–13	65	58	24	34	27.70
	सत्र 2013–14	68	53	21	32	32.00
बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	11	11	05	06	100.00
	सत्र 2011–12	15	15	03	12	86.60
	सत्र 2012–13	21	21	05	16	45.00
	सत्र 2013–14	27	27	10	17	80.00
बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	13	13	07	06	69.00
	सत्र 2011–12	12	12	06	06	66.60
	सत्र 2012–13	14	14	04	10	86.60
	सत्र 2013–14	09	09	02	07	100.00

27 छात्रों की विविधता

पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बी.एस–सी. भाग–एक	100	शून्य	शून्य
बी.एस–सी. भाग–दो	100	शून्य	शून्य
बी.एस–सी. भाग–तीन	100	शून्य	शून्य

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	01 – नेट उत्तीर्ण

29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	8.0%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ाँ उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ाँ उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ाँ उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	– 10% रैनबैक्सी केमीकल्स 6%
	उद्यमिता / स्वरोजगार	आंकड़ाँ उपलब्ध नहीं
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी)कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01 अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	01 प्रयोगशाला
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	22 उ.प्र. राज्य सरकार से (सा.–4, ओबीसी.–17, अजजा–1)
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• बाह्य विशेषज्ञ के द्वारा तीन कार्यशाला • बाह्य विशेषज्ञ द्वारा तीन विशिष्ट व्याख्यान।
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व निर्धारित वार्षिक पाठ्यक्रम योजना के अनुसार कक्षाध्यापन 2. सारांश के साथ व्याख्यान 3. प्रोजेक्टर, चार्ट एवं माडेल द्वारा व्याख्यान प्रस्तुतीकरण 4. चार्ट एवं माडेल 5. क्षेत्र सर्वेक्षण 6. संवाद
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	विद्यार्थी एवं संकाय गोद लिये ग्राम सेखवनिया विकास हेतु कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस. डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–योग्य शिक्षक, योग्य कर्मचारी एवं उपकरण से सुसज्जित प्रयोगशाला। **कमजोरी**–समाज के कमजोर वर्ग के विद्यार्थी। **अवसर**–विद्यार्थियों को राष्ट्र सेवा के लिये प्रेरित करना। **चुनौती**–उत्तम परिणाम देना एवं पढ़ाई छोड़ने वाले विद्यार्थियों में कमी लाना। **भावी योजनाए–** 1. स्नातकोत्तर पढ़ाई का आरम्भ करना। 2. शोध परियोजनाओं का आरम्भ करना।

3. प्राणि विज्ञान विभाग

1	**विभाग का नाम**	**प्राणि विज्ञान**
2	स्थापना वर्ष	2005 (स्नातक)
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक (बी.एस.सी.–भाग एक,दो,तीन)
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	स्नातक प्राणि विज्ञान, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक(बी.एस.सी.–भाग एक,दो,तीन)
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	नहीं
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9	शिक्षण पदों की संख्या :		
		स्वीकृत	भर्ती किया गया
	सहायक प्राध्यापक	02	02

10	नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)					
	नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
	डॉ. रघुवीर नारायण सिंह	एम.एस–सी., पी–एच.डी.	एसोसिएट प्रोफेसर	कीट विज्ञान	9 वर्ष	लागू नहीं
	श्री विनय कुमार सिंह	एम.एस–सी.	एसोसिएट प्रोफेसर	मत्स्य विज्ञान	2 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. दिनेश कुमार सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर। 2. डॉ. विनय कुमार सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर ।
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.एस–सी. भाग–एक 27 : 1 बी.एस–सी. भाग–दो 14 : 1 बी.एस–सी. भाग–तीन 06 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	एक लैब असिस्टेन्ट एवं एक लैब बेयरर
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी.एच–डी.–01 स्नातकोत्तर–01
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं

19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन		
		डॉ. रघुबीर नारायण सिंह	श्री विनय कुमार सिंह
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	03	–
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–
	• मोनोग्राफ	–	–
	• पुस्तक के अध्याय	–	–
	• संपादित पुस्तकें	–	–
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–	–
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–
	• एस.एन.आई.पी.	–	–
	• एस.जे.आर.	1.746	–
	• प्रभाव कारक	3.867+2.667=6.534	–
	• एच.सूचकांक	–	–

20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	बिना किसी आय के विद्यार्थियों और उनके माता–पिता को कीटों तथा मछलियों के आर्थिक महत्व के बारे में परामर्श देना।
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड....	 नहीं नहीं नहीं
22	छात्र परियोजनाएँ	
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं केलिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	नहीं
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. प्रो. सी.पी.एम. त्रिपाठी, प्राणि विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 2. प्रो. राजेन्द्र सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.विश्वविद्यालय, गोरखपुर 3. प्रो. अशोक कुमार, कुलपति, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 4. डॉ. आई.जे. दास, प्राणि विज्ञान विभाग, सेण्टएण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर 5. डॉ.एस.के. सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग, टी.डी. कालेज, जौनपुर 6. डॉ.बी.एस. उपाध्याय, प्राणि विज्ञान विभाग, स्वामी देवानन्द पी.जी. कालेज, मठलार

25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	नहीं
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11		40	19	21	70
		सत्र 2011–12		34	14	20	38.23
		सत्र 2012–13		58	24	34	79.31
		सत्र 2013–14		53	21	32	50.94
	बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11		11	05	06	100
		सत्र 2011–12		15	03	12	80
		सत्र 2012–13		21	05	16	85.71
		सत्र 2013–14		27	10	17	81.48
	बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11		09	07	02	22.22
		सत्र 2011–12		14	09	05	64.28
		सत्र 2012–13		17	05	12	82.35
		सत्र 2013–14		11	02	09	90.90

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	स्नातक	100%	शून्य	शून्य

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	7.0%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 आंकड़ा उपलब्ध नहीं आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	01–उपलब्ध
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	सत्र 2013–14, 22 छात्र उत्तर प्रदेश राज्य सरकार से छात्रवृत्ति प्राप्त

32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• दस बाहरी विशेषज्ञों ने विभिन्न अवसरों पर आकर अपने विशेष व्याख्यान विद्यार्थियों के बीच दिये तथा उनसे सामूहिक परिचर्चा भी की। • विगत चार वर्षों में विभाग द्वारा तीन कार्यशाला आयोजित की गई।
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना 2. सारांश और व्याख्यान देना 3. कक्षाएं पी.पी.टी., चार्ट और माडल पर आधारित 4. उपचारात्मक कक्षाएं 5. गृह कार्य 6. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन 7. छात्रों का मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	विभाग के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों द्वारा नियमित अन्तराल पर ग्रामसभा लक्ष्मीपुर में विकास हेतु सेवा कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–शिक्षण अधिगम की सशक्त विधि। **कमजोरी**–छात्रों की भाषा कमजोरी। **अवसर**–विद्यार्थियों की भाषा सुधारने का प्रयास। **चुनौती** –छात्रों में कौशल उत्पन्न करना **भावी योजनाएं–** 1. फैकेल्टी द्वारा शोध, प्रोजेक्ट आयोजित करना। 2. प्राणि विज्ञान विषय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू करना।

4. रसायन विज्ञान विभाग

1	**विभाग का नाम**	**रसायन विज्ञान**
2	स्थापना वर्ष	2005 (स्नातक), 2010 (परास्नातक)
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक विज्ञान–1,2,3 परास्नातक रसायन विज्ञान–1,2
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों/अंतर्निहित इकाइयों के नाम	रसायनशास्त्र, (एक इकाई)
5	वार्षिक/सेमेस्टर/विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	• स्नातक–1,2,3, वार्षिक • स्नातकोत्तर प्रथम एवं अंतिम वर्ष, सेमेस्टर
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	नहीं
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों/कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं
9	शिक्षण पदों की संख्या :	

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायक प्राध्यापक	05	05

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी/डी.लिट/पी.एच.डी. /एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
डॉ. शिवकुमार वर्नवाल	एम.एस–सी., पी. एच.डी.	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	कार्बनिक रसायन	09 वर्ष	लागू नहीं
डॉ. शालिनी सिंह	एम.एस–सी., पी. एच.डी.	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	भौतिक रसायन	08 वर्ष	लागू नहीं
डॉ. राम सहाय	एम.एस–सी., पी. एच.डी.	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	भौतिक रसायन	03 वर्ष	लागू नहीं
श्री प्रदीप कुमार वर्मा	एम.एस–सी.	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	अकार्बनिक रसायन	01 वर्ष	लागू नहीं
सुश्री प्रियंका मिश्रा	एम.एस–सी.	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	कार्बनिक रसायन	01 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. ईश्वर दास, पूर्व विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान, दी.द.उ. गोरखपुर वि.वि. गोरखपुर 2. प्रो. हरि जी सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गोरखपुर वि.वि. गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.एस–सी.. भाग–एक 25 : 1 बी.एस–सी. भाग–दो 09 : 1 बी.एस–सी. भाग–तीन 02 : 1 एम.एस–सी. प्रथम वर्ष 02 : 1 एम.एस–सी. अंतिम वर्ष 02 : 1

14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	02–प्रयोगशाला सहायक 02–लैब वियरर				
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी.एच–डी.–03 एम.एस–सी–02				
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं				
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं				
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं				
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन					
		डॉ. शिवकुमार वर्नवाल	डॉ. शालिनी सिंह	डॉ. राम सहाय	सुश्री प्रियंका मिश्रा	श्री प्रदीप कुमार वर्मा
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	05		03		
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)					
	• मोनोग्राफ					
	• पुस्तक के अध्याय					
	• संपादित पुस्तकें					
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें					
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	33	30			
	• एस.एन.आई.पी.					
	• एस.जे.आर.					
	• प्रभाव कारक	3.410	4.936			
	• एच.सूचकांक					
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	ग्रामवासियों को रासायनिक कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से सतर्क करने का परामर्श।				
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड....	नहीं				

22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है		एम.एस–सी. अंतिम वर्ष (100%)
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत		2%
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ		चाँदनी सिंह (एम.एस–सी., अंतिम वर्ष) को ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्वर्ण पदक तथा स्व. कृष्णा कुमारी चौधरी स्मृति पुरस्कार प्राप्त
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. प्रो.आर.एल. प्रसाद, विज्ञान संकाय, रसायन विज्ञान विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी। 2. प्रो. राजेश कुमार, विज्ञान संकाय, रसायन विज्ञान विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी। 3. प्रो.आर.एम. नाइक, रसायन विज्ञान विभाग, लखनऊ वि.वि. लखनऊ। 4. प्रो.के.डी.एस. यादव, पूर्व विभागाध्यक्ष एवं इमेरिटस फेलो, यू.जी.सी., रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय वि.वि. गोरखपुर। 5. प्रो.एस.के. सेनगुप्ता, विभागाध्यक्ष रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गोरखपुर गोरखपुर 6. प्रो.ईश्वर दास, पूर्व विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 7. प्रो. हरि जी सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि. वि. गोरखपुर 8. प्रो. गुरूदीप सिंह(अवकाश प्राप्त), रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि. वि.गोरखपुर 9. प्रो.ए.के. श्रीमल (अवकाश प्राप्त) रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 10. प्रो. आर.एस. सिंह (अवकाश प्राप्त), रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि. वि. गोरखपुर 11. प्रो.ए.के. जैन (अवकाश प्राप्त), रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 12. प्रो.एच.सी. गुप्ता (अवकाश प्राप्त), रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो. वि. गोरखपुर 13. प्रो. निजामुद्दीन, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 14. प्रो. बी.पी. बरनवाल, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 15. प्रो.ओ.पी. पाण्डेय, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 16. प्रो. सुधा यादव, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 17. प्रो.यू.एन. त्रिपाठी, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 18. प्रो. आफशां सिद्दकी, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 19. प्रो.ए.के. तिवारी, रसायन विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 20. डॉ. मीरा यादव, वूमेन साइन्टिस्ट–ए, रसायन विज्ञान विभाग दी.द.उ.गो. वि.वि. गोरखपुर	
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत		
	ए) राष्ट्रीय		नहीं
	बी) अंतर्राष्ट्रीय		नहीं

26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	120	103	74	29	26
		सत्र 2011–12	100	83	62	21	49
		सत्र 2012–13	130	114	83	31	38
		सत्र 2013–14	150	121	80	41	23
	बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	30	30	22	08	73
		सत्र 2011–12	33	33	17	16	79
		सत्र 2012–13	38	38	27	11	26
		सत्र 2013–14	45	45	32	13	86
	बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	17	17	09	08	59
		सत्र 2011–12	11	11	10	01	91
		सत्र 2012–13	10	10	08	02	80
		सत्र 2013–14	09	09	05	04	100
	एम.एस–सी. प्रथम वर्ष	सत्र 2010–11	60	40	27	13	30
		सत्र 2011–12	62	30	14	16	77
		सत्र 2012–13	80	35	20	15	97
		सत्र 2013–14	45	15	11	04	80
	एम.एस–सी. अंतिम वर्ष	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	10	10	05	05	100
		सत्र 2012–13	22	22	09	13	63
		सत्र 2013–14	31	31	17	14	84

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	स्नातक	100%	शून्य	शून्य
	स्नातकोत्तर	100%	शून्य	शून्य

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं है।

29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	66%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	2%
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं 25%
	उद्यमिता / स्वरोजगार	10%

30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	02–उपलब्ध, 01 स्नातक तथा 01 स्नातकोत्तर हेतु
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	93 विद्यार्थियों को (2013–2014) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा छात्रवृत्ति प्राप्त
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	1. बाहरी विशेषज्ञों द्वारा नियमित व्याख्यान 2. विभाग द्वारा चार कार्यशालाओं का आयोजन
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना 2. सारांश वितरण के साथ व्याख्यान 3. आणिवक माडल प्रदर्शन 4. प्रोजेक्टर एवं चार्ट–माडल आधारित कक्षायें 5. छात्रों द्वारा कक्षाध्यापन 6. समूह चर्चा 7. मासिक मूल्यांकन 8. एम.एस–सी. अंतिम वर्ष के छात्रों द्वारा बी.एस–सी. की प्रायोगिक कक्षाओं में सहयोग। 9. एम.एस–सी. अंतिम वर्ष के छात्रों द्वारा प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण 10. शैक्षणिक भ्रमण
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई. एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	अभिगृहित गाँव रामपुर में समय– समय पर छात्रों के साथ भ्रमण तथा द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, जल एवं विज्ञान के सम्बन्ध में जागरूकता अभियान एवं विकास कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य -** अनुभवी शिक्षक, समृद्ध पुस्तकालय एवं प्रयोगशालायें, शिक्षक एवं छात्रों के लिए कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट सुविधा। **कमजोरी -** छात्रों का कमजोर भाषा–ज्ञान एवं उनकी अनियमित उपस्थिति **अवसर -** निःशुल्क इन्टरनेट सुविधा, जिससे रसायनशास्त्र विषय में कौशल युक्त स्नातक तथा स्नातकोत्तर छात्र बनें। **चुनौती -** रसायनशास्त्र विषय में दक्ष स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र बनाना। **भविष्य की योजनायें–** 1. राष्ट्रीय सेमिनार एवं कार्यशाला का आयोजन करना। 2. विभागीय पुस्तकालय तथा प्रयोगशाला को शोध हेतु उच्चीकृत करना। 3. भौतिक एवं अकार्बनिक रसायन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू करना।

5. गणित विभाग

1	**विभाग का नाम**	**गणित विभाग**
2	स्थापना वर्ष	2005, स्नातक
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक विज्ञान एवं कला, प्रथम, द्वितीय, तृतीय
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	गणित विभाग, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक विज्ञान एवं कला, प्रथम, द्वितीय, तृतीय
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	कम्प्यूटर साइंस व भौतिकी विभाग की सहभागिता
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9 शिक्षण पदों की संख्या :

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायक प्राध्यापक	02	02

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	एम.एस–सी.गणित, एम.जे.	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	जीव गणित	05 वर्ष	लागू नहीं
प्रतीक कुमार दास	एम.एस–सी. गणित	असिस्टेन्ट प्रोफेसर	तरल गतिकी	02 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. आर.सी. श्रीवास्तव, गणित विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 2. प्रो. एच.एस. शुक्ला,गणित विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 3. डॉ. एस.के.डी. दूबे, गणित विभाग, एम.एम.एम. पी.जी. कालेज, भाटपार रानी, देवरिया 4. डॉ. ए.पी. श्रीवास्तव, गणित विभाग, एम.जी.पी.जी. कालेज, गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र–2013–14	बीए. / बी.एस.सी. भाग–एक 85 : 1 बीए. / बी.एस.सी. भाग–दो 29 : 1 बीए. / बी.एस.सी. भाग–तीन 8 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	लागू नहीं
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	स्नातकोत्तर–02

16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं	
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी.एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं	
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन		
		श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	प्रतीक कुमार दास
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	–	–
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–
	• मोनोग्राफ	–	–
	• पुस्तक के अध्याय	–	–
	• संपादित पुस्तकें	–	–
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	04 विमर्श (आई.एस.एस.एन. –0976–0849)	–
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–
	• एस.एन.आई.पी.	–	–
	• एस.जे.आर.	–	–
	• प्रभाव कारक	–	–
	• एच.सूचकांक	–	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	महाविद्यालय में परामर्श केन्द्र का संचालन गणित विभाग द्वारा संचालित होता है। इसमें विद्यार्थियों को निःशुल्क परामर्श प्रदान किया जाता है।	
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड....	 नहीं नहीं नहीं	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	100%	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं केलिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	

23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	22 दिसम्बर 2014 को विश्वविद्यालय में गणित विभाग द्वारा आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में विभागीय टीम को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. डॉ. के.बी. गुप्ता, एसो.प्रोफेसर, सेण्टएण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर 2. डॉ. आर.तिवारी, ए.डी.ओ. प्लानिंग, उ.प्र. सरकार

25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	नहीं
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26 कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा

पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	150	91	78	13	17.82
	सत्र 2011–12	130	99	83	16	33.33
	सत्र 2012–13	165	143	102	41	23.77
	सत्र 2013–14	180	166	122	44	35.54
बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	23	23	20	03	69.56
	सत्र 2011–12	26	26	17	09	80.76
	सत्र 2012–13	37	37	32	05	62.16
	सत्र 2013–14	55	55	41	14	60.00
बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	09	09	05	04	100.00
	सत्र 2011–12	18	18	15	03	77.77
	सत्र 2012–13	21	21	15	06	100.00
	सत्र 2013–14	17	17	14	03	100.00
बी.ए. भाग–एक	सत्र 2010–11	05	01	01	–	100.00
	सत्र 2011–12	20	14	12	02	21.42
	सत्र 2012–13	15	10	09	01	00.00
	सत्र 2013–14	10	05	05	–	100.00
बी.ए. भाग–दो	सत्र 2010–11	02	02	02	–	50.00
	सत्र 2011–12	03	03	03	–	100.00
	सत्र 2012–13	03	03	03	–	33.33
	सत्र 2013–14	03	03	03	–	33.33
बी.ए. भाग–तीन	सत्र 2010–11	01	01	01	–	100.00
	सत्र 2011–12	01	01	01	–	100.00
	सत्र 2012–13	03	03	03	–	100.00
	सत्र 2013–14	–	–	–	–	–

27 छात्रों की विविधता

पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बीए. / बी.एस–सी. भाग–एक	100%	शून्य	शून्य
बीए. / बी.एस–सी. भाग–दो	100%	शून्य	शून्य
बीए. / बी.एस–सी. भाग–तीन	100%	शून्य	शून्य

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल. ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	60%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता/स्वरोजगार	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	सत्र (2013–2014) में विभाग के 80 छात्र/ छात्राओं को उ.प्र. सरकार द्वारा छात्रवृत्ति शुल्क प्रतिपूर्ति प्रदान की गयी है।
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• विभाग द्वारा बाहरी विषय विशेषज्ञ द्वारा कार्यशाला • विशेष व्याख्यान
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना। 3. पी.पी.टी. पर आधारित कक्षाएं। 4. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन। 5. गृह कार्य। 6. समूह चर्चा। 7. उपचारात्मक कक्षाएँ। 8. मासिक मूल्यांकन।
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	विभाग द्वारा धोधड़ा गाँव को गोद लिया गया है। विकास हेतु सेवा कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–शिक्षण प्रविधि में श्रमपूर्वक पढ़ाना। **कमजोरी**–कमजोर छात्रों की संख्या ज्यादा है। **अवसर**–कमजोर वर्ग के छात्रों को सेवा देना। **चुनौती**–ट्यूटोरियल कक्षा की सहायता से छात्रों के मानसिक व बौद्धिक स्तर का विकास करना। **भावी योजनाएं –** 1. विभाग द्वारा प्रतिवर्ष 22 दिसम्बर को पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना। 2. विभाग द्वारा प्रख्यात शिक्षाविदों के व्याख्यान का आयोजन किया जाना। 3. विभाग द्वारा छात्रों में गणित को रूचिकर बनाने एवं दैनिक जीवन में गणित के उपयोग को बढ़ावा देना।

6. भौतिकी विभाग

<table>
<tr><td>1</td><td colspan="6">विभाग का नाम</td><td colspan="2">भौतिकी</td></tr>
<tr><td>2</td><td colspan="6">स्थापना वर्ष</td><td colspan="2">2005 (स्नातक)</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="6">प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)</td><td colspan="2">स्नातक विज्ञान–भाग एक,दो,तीन</td></tr>
<tr><td>4</td><td colspan="6">अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम</td><td colspan="2">भौतिकी, स्नातक–एक इकाई</td></tr>
<tr><td>5</td><td colspan="6">वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)</td><td colspan="2">वार्षिक, स्नातक विज्ञान–भाग एक,दो,तीन</td></tr>
<tr><td>6</td><td colspan="6">अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता</td><td colspan="2">इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग</td></tr>
<tr><td>7</td><td colspan="6">अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग</td><td colspan="2">नहीं</td></tr>
<tr><td>8</td><td colspan="6">पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ</td><td colspan="2">कोई नहीं</td></tr>
<tr><td rowspan="3">9</td><td colspan="8">शिक्षण पदों की संख्या :</td></tr>
<tr><td colspan="3"></td><td colspan="3">स्वीकृत</td><td colspan="2">भर्ती किया गया</td></tr>
<tr><td colspan="3">सहायक प्राध्यापक</td><td colspan="3">02</td><td colspan="2">02</td></tr>
<tr><td rowspan="4">10</td><td colspan="8">नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)</td></tr>
<tr><td>नाम</td><td>योग्यता</td><td>पदनाम</td><td colspan="2">विशेषज्ञता</td><td>अनुभव वर्षों में</td><td colspan="2">निर्देशित पी–एच.डी.</td></tr>
<tr><td>मनीता सिंह</td><td>एम.एस–सी.</td><td>सहायक आचार्य</td><td colspan="2">बॉयो फिजिक्स</td><td>3 वर्ष</td><td colspan="2">लागू नहीं</td></tr>
<tr><td>डॉ. अमित कुमार मिश्र</td><td>एम.एस–सी., पी–एच.डी.</td><td>सहायक आचार्य</td><td colspan="2">भौतिकी</td><td>1 वर्ष</td><td colspan="2">लागू नहीं</td></tr>
<tr><td>11</td><td colspan="6">वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची</td><td colspan="2">1. डॉ. आर.पी. सिंह, सेण्टएण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर
2. डॉ. सत्यपाल सिंह, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर</td></tr>
<tr><td>12</td><td colspan="6">अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत</td><td colspan="2">नहीं</td></tr>
<tr><td>13</td><td colspan="6">विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार)
सत्र – 2014–15</td><td colspan="2">बी.एस–सी. भाग–एक 82 : 1
बी.एस–सी. भाग–दो 27 : 1
बी.एस–सी. भाग–तीन 08 : 1</td></tr>
<tr><td>14</td><td colspan="6">अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए</td><td colspan="2">01 लैब असिस्टेन्ट
01 लैब बेयरर</td></tr>
<tr><td>15</td><td colspan="6">डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।</td><td colspan="2">पी.एच–डी.–01
पी.जी.–01</td></tr>
<tr><td>16</td><td colspan="6">ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या</td><td colspan="2">नहीं</td></tr>
</table>

17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं	
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन		
		मनीता सिंह	डॉ. अमित कुमार मिश्र
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	–	–
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	07
	• मोनोग्राफ	–	–
	• पुस्तक के अध्याय	–	–
	• संपादित पुस्तकें	–	–
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–	–
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–
	• एस.एन.आई.पी.	–	–
	• एस.जे.आर.	–	–
	• प्रभाव कारक	–	–
	• एच.सूचकांक	–	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	महाविद्यालय के विद्यार्थियों को निःशुल्क परामर्श।	
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड....	 नहीं नहीं नहीं	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	100%	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ		
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. प्रो. राम अचल सिंह, पूर्व कुलपति, रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद 2. डॉ. एस.एन. तिवारी, भौतिकी, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 3. प्रो. मिहिर राय चौधरी, भौतिकी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि.गोरखपुर 4. डॉ. आर.एस. सिंह, भौतिकी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 5. प्रो. डी.सी. श्रीवास्तव, पूर्व विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग, दी.द.उ. गो.वि.वि. गोरखपुर 6. डॉ.ए.के. निषाद, भौतिकी विभाग, सेण्टएण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर	

25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	कार्यशाला–01, भारत सरकार
	ए) राष्ट्रीय	''कठपुतली के माध्यम से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का संचार'', भारत सरकार
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा					
पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11		103	87	16	21.87
	सत्र 2011–12		118	89	29	36.60
	सत्र 2012–13		158	123	35	32.26
	सत्र 2013–14		163	125	38	29.44
बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11		24	21	03	66.60
	सत्र 2011–12		26	19	07	80.77
	सत्र 2012–13		39	32	07	69.23
	सत्र 2013–14		54	38	16	66.66
बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11		04	04	–	50.00
	सत्र 2011–12		08	07	01	100.00
	सत्र 2012–13		16	11	05	93.75
	सत्र 2013–14		15	12	03	93.33

27	छात्रों की विविधता		
पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बी.एस–सी. भाग–एक	100%	शून्य	शून्य
बी.एस–सी. भाग–दो	100%	शून्य	शून्य
बी.एस–सी. भाग–तीन	100%	शून्य	शून्य

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं

29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	6.0%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	आंकड़ा उपलब्ध नहीं

30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	01–उपलब्ध

31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	राज्य सरकार द्वारा 88 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति शुल्क प्रतिपूर्ति प्राप्त।
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	विशेष विशेषज्ञों द्वारा कार्यशाला : 1. प्रो. ओंकार सिंह, कुलपति, एम.एम.एम. प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर 2. डॉ. योगेन्द्र सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, डी.ए.वी. कालेज, कानपुर 3. प्रो. ईश्वरदास, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 4. डॉ. राजकिशोर सिंह, असि.प्रो., बी.आर.डी. मेडिकल कालेज, गोरखपुर विशेष व्याख्यान : 1. प्रो. राम अचल सिंह, पूर्व कुलपति, रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद 2. डॉ. आर.पी. सिंह, सेण्ट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर 3. प्रो. डी.सी. श्रीवास्तव, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान। 3. पी.पी.टी., चार्ट और माडल पर आधारित कक्षाएँ 4. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन 5. सामूह चर्चा 6. मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	विभाग की ओर से दो गाँवों भगवानपुर व हरिपुर में शिक्षा, स्वास्थ्य, इन्सेफेलाइटिस, स्वच्छता व सामाजिकता के प्रति जागरूकता हेतु कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–कुशल और योग्य अध्यापक, उत्तम प्रयोगशाला सुविधा। **कमजोरी**–विज्ञान में मूलभूत समझ की कमी। **अवसर**–विज्ञान के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों को स्वउद्यमी बनाना। **चुनौती**–विज्ञान का प्रसार और दैनिक जीवन में उसका प्रयोग। **भावी योजनाएं**– भौतिकी में परास्नातक कोर्स के लिए प्रयास।

7. इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग

1	**विभाग का नाम**	**इलेक्ट्रॉनिक्स**
2	स्थापना वर्ष	2010 (स्नातक)
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक विज्ञान–भाग एक,दो,तीन
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	इलेक्ट्रॉनिक्स, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक विज्ञान–भाग एक,दो,तीन
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	भौतिकी और कम्प्यूटर विज्ञान विभाग
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9 शिक्षण पदों की संख्या :

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायक प्राध्यापक	01	01

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
श्री प्रखर वैभव सिंह	एम.एस–सी., नेट	सहायक आचार्य	इलेक्ट्रॉनिक्स	1 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	4. डॉ.डी.के. द्विवेदी, म.मो.मा. प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर 5. डॉ. ए.जी. राव, वैज्ञानिक, दी.द. उ.गो.वि.वि. गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.एस–सी. भाग–एक 05 : 1 बी.एस–सी. भाग–दो 05 : 1 बी.एस–सी. भाग–तीन 01 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	01 लैब असिस्टेन्ट, 01 लैब बेयरर
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	एम.एस–सी., नेट
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी.एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं

19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन		
		प्रखर वैभव सिंह	
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	–	
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	
	• मोनोग्राफ	–	
	• पुस्तक के अध्याय	–	
	• संपादित पुस्तकें	–	
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–	
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	
	• एस.एन.आई.पी.	–	
	• एस.जे.आर.	–	
	• प्रभाव कारक	–	
	• एच.सूचकांक	–	
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	विद्यार्थियों को निःशुल्क परामर्श	
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	 नहीं नहीं नहीं	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	नहीं	
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. डॉ. मनीष मिश्र, इलेक्ट्रानिक्स विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर 2. श्री अनुराग गोविन्द राव, दी.द. उ.गो.वि.वि., गोरखपुर	
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत		
	ए) राष्ट्रीय	नहीं	
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं	

26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा					
पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	–	03	03	–	0.0
	सत्र 2011–12	–	08	07	01	62.50
	सत्र 2012–13	–	08	07	01	60.00
	सत्र 2013–14	–	05	04	01	60.00
बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
	सत्र 2012–13	–	03	03	–	100.00
	सत्र 2013–14	–	05	05	–	100.00
बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2012–13	–	–	–	–	–
	सत्र 2013–14	–	01	01	–	100.00

27	छात्रों की विविधता		
पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बी.एस–सी. स्नातक	100%	शून्य	शून्य

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	लागू नहीं

29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	100%
	पीजी से एम.फिल.	लागू नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	लागू नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	लागू नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 लागू नहीं लागू नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	–

30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	उपलब्ध–01 कक्ष
	डी) प्रयोगशालाएँ	उपलब्ध–01 प्रयोगशाला
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	02 विद्यार्थियों को राज्य सरकार द्वारा छात्रवृत्ति प्राप्त
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• बाह्य विशेषज्ञों द्वारा विशेष • व्याख्यान कार्यशाला
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना।

		3. पी.पी.टी., चार्ट और माडल पर आधारित 4. गृह कार्य 5. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन 6. समूह चर्चा 7. मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	विभाग की ओर से धूसिया गाँव जागरूकता हेतु कार्यक्रमों का आयोजन।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–अध्यापन में गुणवत्ता और इसके हेतु प्रयास। **कमजोरी**–विद्यार्थियों की विषय की उपयोगिता के प्रति जानकारी का अभाव और कम प्रवेश। **अवसर**–यू.जी. लेबल में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाना। **चुनौती**–ग्रामीण परिवेश के छात्रों में इलेक्ट्रानिक्स के प्रति महत्व दर्शाना। **भावी योजनाएं**– • असेम्बली भाषा कार्यक्रम हेतु यंत्र प्राप्त करना। • प्रयोगशाला को समृद्ध बनाना।

8. कम्प्यूटर साइंस विभाग

1	**विभाग का नाम**	**कम्प्यूटर साइंस**
2	स्थापना वर्ष	2010 स्नातक
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी.जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक विज्ञान–भाग एक,दो,तीन
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	कम्प्यूटर साइंस, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक विज्ञान–भाग एक,दो,तीन
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	सांख्यिकी एवं गणित विभाग
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9	शिक्षण पदों की संख्या :		
		स्वीकृत	भर्ती किया गया
	सहायक प्राध्यापक	02	02

10	नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)					
	नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
	श्री वीरेन्द्र तिवारी	एम.एस–सी., पी.जी.डी.सी.ए., एम.फिल.	सहायक आचार्य	डाटा बेस	3 वर्ष	लागू नहीं
	डॉ. संजय कुमार तिवारी	एम.सी.ए., पी–एच.डी.	सहायक आचार्य	डाटा बेस एण्ड रीयल टाइम सिस्टम	6 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. डॉ. एस.पी. सिंह, के. आई. पी. एम. कालेज, गोरखपुर 2. डॉ. रामेश्वर पति, आईसीएआर–एनबीएफजीआर, लखनऊ
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.एस–सी. भाग–एक 28 : 1 बी.एस–सी. भाग–दो 03 : 2 बी.एस–सी. भाग–तीन 02 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	01 लैब असिस्टेन्ट 01 लैब बेयरर
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी.एच–डी.–01 एम.फिल.–01
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं

17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी.एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं	
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन		
		विरेन्द्र तिवारी	डॉ. संजय कुमार तिवारी
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	–	14
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–
	• मोनोग्राफ	–	–
	• पुस्तक के अध्याय	–	–
	• संपादित पुस्तकें	01	–
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–	–
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–
	• एस.एन.आई.पी.	–	–
	• एस.जे.आर.	–	–
	• प्रभाव कारक	–	–
	• एच.सूचकांक	–	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा।	
21	सदस्य के रूप में संकाय		
	ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	नहीं नहीं नहीं	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	100%	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा (कम्प्यूर प्रश्नमंच प्रतियोगिता) 2011–12 – प्रथम स्थान 2012–13 – तृतीय स्थान	
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. डॉ. यू.एन. त्रिपाठी, सहायक आचार्य, कम्प्यूटर साइंस विभाग, दी.द.उ. गो.वि.वि. गोरखपुर 2. डॉ. जी.आर. मिश्रा, एमेटी विश्वविद्यालय, लखनऊ।	

25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	नहीं
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	10	05	05	–	80.00
		सत्र 2011–12	25	18	15	03	44.44
		सत्र 2012–13	35	28	16	12	35.71
		सत्र 2013–14	65	55	43	12	41.82
	बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
		सत्र 2012–13	04	04	04	–	100.00
		सत्र 2013–14	05	05	01	04	100.00
	बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2012–13	–	–	–	–	–
		सत्र 2013–14	03	03	03	–	100.00

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	बी.एस–सी. भाग–एक	100%	शून्य	शून्य
	बी.एस–सी. भाग–दो	100%	शून्य	शून्य
	बी.एस–सी. भाग–तीन	100%	शून्य	शून्य

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	लागू नहीं

29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	100%
	पीजी से एम.फिल.	लागू नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	लागू नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	लागू नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं लागू नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	लागू नहीं

30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	01–उपलब्ध (संगणक के साथ)

31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	राज्य सरकार द्वारा 02 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्राप्त।

32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• प्रतिवर्ष कार्यशाला • विशिष्ट व्याख्यान बाह्य विशेषज्ञ
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना। 3. पी.पी.टी., चार्ट और माडल पर आधारित कक्षाएं 4. उपचारात्मक कक्षाएं 5. मासिक मूल्यांकन 6. विद्यार्थियों द्वारा साप्ताहिक कक्षाध्यापन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	बड़ी जमुनहिया गाँव के विकास हेतु कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–सुव्यवस्थित प्रयोगशाला। **कमजोरी**–कमजोर पृष्ठभूमि के छात्र। **अवसर**–उपचार कक्षाएँ ज्ञान अन्तराल को पढ़ने के लिए। **चुनौती**–ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में कम्प्यूटर साइंस विषय पढ़ने की अभिरूचि बढ़ाना। **भावी योजनाएं –** 1. डब्ल्यू.एफ. इन्फ्रास्ट्रक्चर लैब 2. स्मार्ट क्लासेज 3. एन.के.एन. कनेक्शन 4. कम्प्यूटर साइंस में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम लागू कराने का प्रयास।

9. सांख्यिकी विभाग

1	**विभाग का नाम**	**सांख्यिकी विभाग**
2	स्थापना वर्ष	2010 (स्नातक)
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक विज्ञान–भाग एक,दो,तीन
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	सांख्यिकी एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक विज्ञान–भाग एक,दो,तीन
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	कम्प्यूटर साइंस व गणित विभाग की सहभागिता
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9	शिक्षण पदों की संख्या :		
		स्वीकृत	भर्ती किया गया
	सहायक प्राध्यापक	01	01

10	नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)					
	नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
	डॉ. राजेन्द्र तिवारी	एम.एस–सी. (सांख्यिकी), पी.जी.डी.सी.ए., पी–एच.डी.	सहायक प्राध्यापक	डेमोग्राफी	4 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. डॉ. उमा श्रीवास्तव, सांख्यिकी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर 2. प्रो. आर.डी. सिंह, सांख्यिकी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.एस–सी. भाग–एक 08 : 1 बी.एस–सी. भाग–दो 02 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	प्रयोगशाला सहायक–01 प्रयोगशाला परिचय–01
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी–एच.डी.–01
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं

17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन	
		डॉ. राजेन्द्र तिवारी
	♦ संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	06
	♦ अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–
	♦ मोनोग्राफ	–
	♦ पुस्तक के अध्याय	–
	♦ संपादित पुस्तकें	–
	♦ आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–
	♦ प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–
	♦ एस.एन.आई.पी.	–
	♦ एस.जे.आर.	–
	♦ प्रभाव कारक	–
	♦ एच. सूचकांक	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	महाविद्यालय में सूचना एवं परामर्श विभाग में निःशुल्क सहयोग करते हैं तथा महाविद्यालय के आस–पास के क्षेत्रों के लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक करते रहते हैं।
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	 नहीं नहीं नहीं
22	छात्र परियोजनाएँ	
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	100%
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	नहीं

24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. डॉ. ओ.एन. पाण्डेय, सांख्यिकी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर 2. डॉ. विजय कुमार, सांख्यिकी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर 3. डॉ. ए.के. राव, सांख्यिकी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	नहीं
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26 कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा

पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	05	01	01	–	100.00
	सत्र 2011–12	05	02	01	01	100.00
	सत्र 2012–13	05	03	01	02	33.33
	सत्र 2013–14	15	08	03	05	100.00
बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
	सत्र 2012–13	01	01	01	–	100.00
	सत्र 2013–14	02	02	02	–	100.00
बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2012–13	–	–	–	–	–
	सत्र 2013–14	–	–	–	–	–

27 छात्रों की विविधता

पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बी.एस–सी. भाग–एक	100%	0%	0%
बी.एस–सी. भाग–दो	100%	0%	0%

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	लागू नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	लागू नहीं
	पीजी से एम.फिल.	लागू नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	लागू नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	लागू नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं लागू नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	लागू नहीं
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध

	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	01–प्रयोगशाला उपलब्ध
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	नहीं
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• विशेष व्याख्यान, बाहरी विशेषज्ञों के द्वारा। • प्रतिवर्ष कार्यशाला
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना। 3. पी.पी.टी., चार्ट और माडल पर आधारित कक्षा। 4. उपचारात्मक कक्षाएं 5. गृह कार्य 6. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन 7. समूह चर्चा 8. मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	केवटहिया गाँव के विकास हेतु कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–शैक्षणिक सुविधाएं एवं संगणक की व्यवस्था। **कमजोरी**–बहुत कम छात्र इस विषय का चुनाव करते हैं। **अवसर**–कमजोर वर्ग के छात्रों को सेवा देना। **चुनौती**–छात्रों को इस विषय के प्रति प्रेरित करना। **भावी योजनाएं–** 1. प्रतियोगिता एवं व्याख्यान के माध्यम से विषय के प्रति अभिरुचि पैदा करना। 2. सामान्य जीवन में सांख्यिकी के उपयोग के महत्त्व को रेखांकित करना ताकि छात्र इसके अध्ययन में रुचि लें।

10. अंग्रेजी विभाग

1	**विभाग का नाम**	**अंग्रेजी**
2	स्थापना वर्ष	2005 (स्नातक)
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक कला–भाग एक,दो,तीन
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	अंग्रेजी, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक कला–भाग एक,दो,तीन
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	नहीं
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9 शिक्षण पदों की संख्या :

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायक प्राध्यापक	01	01

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
श्रीमती कविता मन्ध्यान	परास्नातक, एम. फिल.	सहायक प्राध्यापक	टी.एस. इलियट एण्ड कॉन्सेप्ट ऑफ ट्रेडिसन एण्ड रिसेसमेन्ट	10 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. एस.सी. बोस, भूतपूर्व, विभागाध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 2. श्री रोहिताश्व श्रीवास्तव, अ.प्रा., म.गाँ,इ.का. गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.ए. भाग–एक 80 : 1 बी.ए. भाग–दो 67 : 1 बी.ए. भाग–तीन 08 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	नहीं
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	एम.फिल.–01
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं

17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	शोध कार्य हो रहा है।
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन	
		श्रीमती कविता मन्ध्यान
	♦ संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (च्ममत त्मअपमूमक श्रवनतदंसे) में प्रकाशित	–
	♦ अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–
	♦ मोनोग्राफ	–
	♦ पुस्तक के अध्याय	–
	♦ संपादित पुस्तकें	03
	♦ आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	01
	♦ प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–
	♦ एस.एन.आई.पी.	–
	♦ एस.जे.आर.	–
	♦ प्रभाव कारक	–
	♦ एच. सूचकांक	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	विभिन्न प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने वाले छात्रों को निःशुल्क सामान्य अंग्रेजी परामर्श
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	 नहीं नहीं नहीं
22	छात्र परियोजनाएँ	
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	2010 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान।

24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों/विजिटरों की सूची	1. प्रो. अमर सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद। 2. प्रो. प्रताप सिंह, पूर्व अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
25	आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	नहीं
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26 कार्यक्रम/कोर्स वार छात्र रूपरेखा

पाठ्यक्रम/कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	30	24	14	10	86.36
	सत्र 2011–12	48	36	30	06	75.00
	सत्र 2012–13	100	94	50	44	80.85
	सत्र 2013–14	88	80	48	32	81.25
बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	31	31	20	11	61.29
	सत्र 2011–12	20	20	12	08	100.00
	सत्र 2012–13	25	25	19	06	96.00
	सत्र 2013–14	67	67	28	39	94.02
बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	06	06	02	04	100.00
	सत्र 2011–12	07	07	05	02	100.00
	सत्र 2012–13	10	10	05	05	80.00
	सत्र 2013–14	08	08	07	01	100.00

27 छात्रों की विविधता

पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बी.ए. स्नातक	100%	0%	0%

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	3.0%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता/स्वरोजगार	आंकड़ा उपलब्ध नहीं

30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	उपलब्ध–01 कक्ष
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग–31 छात्र (उ.प्र. राज्य सरकार द्वारा)
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	नियमित विशेष व्याख्यान, कार्यशाला एवं अंग्रेजी भाषा कक्षाएं।
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना। 3. पी.पी.टी. आधारित कक्षा। 4. उपचारात्मक कक्षा। 5. गृह कार्य 6. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन 7. समूह चर्चा। 8. मासिक मूल्यांकन।
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	शाहपुर में स्वच्छता, सामाजिक जागरूकता एवं गुरुश्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के सहयोग से स्वास्थ्य सुविधाएं एवं शिक्षा का प्रचार–प्रसार।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–नियमित व्याकरण एवं सामान्य अंग्रेजी कक्षाओं का संचालन। **कमजोरी**–छात्रों में अंग्रेजी भाषा की कम जानकारी। **अवसर**–कमजोर परन्तु जिज्ञासु छात्रों में अंग्रेजी भाषा ज्ञान का संवर्धन। **चुनौती**–अंग्रेजी साहित्य एवं भाषा को पढ़ने में रूचि जाग्रत करना। **भावी योजनाएं –** 1. सभी छात्रों में अंग्रेजी बोलने की प्रवृत्ति का विकास। 2. पाठ्यक्रम को नाटक तथा एकांकी के माध्यम से प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास।

11. हिन्दी विभाग

1	**विभाग का नाम**	**हिन्दी**
2	स्थापना वर्ष	2005, स्नातक
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक कला–भाग एक,दो,तीन
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	हिन्दी, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक कला–भाग एक,दो,तीन
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	राष्ट्रगौरव, इतिहास विभाग, प्राचीन इतिहास विभाग
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं
9	शिक्षण पदों की संख्या :	

		स्वीकृत	भर्ती किया गया
	सहायक प्राध्यापक	01	01

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
डॉ. आरती सिंह	एम.ए., पी–एच.डी.	सहायक आचार्य	उत्तर आधुनिकता सूरदास	10 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. सदानन्दप्रसाद गुप्त, हिन्दी विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 2. डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही 3. डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी, पूर्व संकायाध्यक्ष, कला संकाय, वी.ब.सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.ए. भाग–एक 107 : 1 बी.ए. भाग–दो 74 : 1 बी.ए. भाग–तीन 34 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	नहीं
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी.एच.डी.–01
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं

17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	शोध कार्य चल रहा है।	
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन		
		डॉ. आरती सिंह	
	♦ संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	06	
	♦ अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	नहीं	
	♦ मोनोग्राफ	–	
	♦ पुस्तक के अध्याय	–	
	♦ संपादित पुस्तकें	–	
	♦ आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–	
	♦ प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	
	♦ एस.एन.आई.पी.	–	
	♦ एस.जे.आर.	–	
	♦ प्रभाव कारक	–	
	♦ एच. सूचकांक	–	
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	सामान्य हिन्दी एवं प्रतियोगी रोजगारपरक निःशुल्क कक्षाएं।	
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	 नहीं नहीं नहीं	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	नहीं	
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. श्री नरेन्द्र कोहली, प्रतिष्ठित साहित्यकार, दिल्ली 2. प्रो. रामदेव शुक्ल, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्या गो.वि.वि.गोरखपुर 3. डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह – डी.ए.वी. कालेज, कानपुर 4. डॉ. कन्हैया सिंह, पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, लखनऊ 5. डॉ. शिव मोहन सिंह, पूर्व कुलपति, राम.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, 6. प्रो. अनिल राय, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर 7. प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय, राजस्थान विश्वविद्यालय	

25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	महाविद्यालय द्वारा सम्पूर्ण व्यय
	ए) राष्ट्रीय	राष्ट्रीय संगोष्ठी : ●नाथ पंथ एवं भक्ति आन्दोलन–28, 29, 30 अक्टूबर, 2010 ●भारतीय राष्ट्रीय, सन्त परम्परा–10 अक्टूबर 2012
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26 कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा

पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	50	49	25	24	95.91
	सत्र 2011–12	55	53	21	32	77.35
	सत्र 2012–13	98	96	50	46	90.62
	सत्र 2013–14	85	80	48	32	90.00
बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	41	41	19	22	100.00
	सत्र 2011–12	41	41	23	18	100.00
	सत्र 2012–13	44	44	20	24	93.18
	सत्र 2013–14	71	71	35	34	95.74
बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	15	15	07	08	100.00
	सत्र 2011–12	26	26	11	15	100.00
	सत्र 2012–13	28	28	14	14	85.71
	सत्र 2013–14	30	30	12	18	100.00

27 छात्रों की विविधता

पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बी.ए. प्रथम वर्ष	100%	0%	0%
बी.ए. द्वितीय वर्ष	100%	0%	0%
बी.ए. तृतीय वर्ष	100%	0%	0%

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	5.0%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	आंकड़ा उपलब्ध नहीं

30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	उपलब्ध–01 कक्ष
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग–45 छात्र–छात्राएँ, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा छात्रवृत्ति प्राप्त।
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	प्रत्येक वर्ष दो अतिथि व्याख्यान और एक कार्यशाला बाह्य विशेषज्ञों द्वारा
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना। 3. पी.पी.टी. और चार्ट और आधारित कक्षा। 4. गृह कार्य। 5. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन। 6. समूह चर्चा। 7. मासिक मूल्यांकन।
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	छोटी रेतवहिया, बड़ी रेतवहिया गाँव में समय–समय पर विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी एवं ग्रामीण विकास के लिए कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–विद्यार्थियों का हिन्दी भाषा भाषी होना। **कमजोरी**–इण्टरमीडिएट स्तर पर भाषा की कमजोर पढ़ाई। **अवसर**–समाज के कमजोर वर्ग में हिन्दी साहित्य को पहुँचाने में रूचि। **चुनौती**–छात्र शिक्षक अनुपात। **भावी योजनाएं –** 1. जनजागरण हेतु नाट्य–मण्डली की स्थापना 2. भाषा संवर्द्धन हेतु साहित्य संस्थान की स्थापना। 3. पी.जी. पाठ्यक्रम हेतु प्रयास 4. विभागीय पत्रिका का प्रकाशन

12. राजनीतिशास्त्र विभाग

1	**विभाग का नाम**	**राजनीति शास्त्र**
2	स्थापना वर्ष	2005, स्नातक
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक कला–भाग एक,दो,तीन
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	राजनीति शास्त्र, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक कला–भाग एक,दो,तीन
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	राष्ट्रगौरव
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं
9	शिक्षण पदों की संख्या :	

		स्वीकृत	भर्ती किया गया
9	सहायक प्राध्यापक	01	01+01

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	एम.ए., पी–एच.डी.	सहायक प्राध्यापक	भारतीय शासन एवं राजनीति	11 वर्ष	लागू नहीं
कु. प्रिया वर्मा (अस्थायी)	एम.ए.	सहायक प्राध्यापक	भारतीय शासन एवं राजनीति	–	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. राजेश कुमार सिंह, अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर 2. प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि., गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	50 प्रतिशत
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.ए. भाग–एक 131 : 1 बी.ए. भाग–दो 97 : 1 बी.ए. भाग–तीन 36 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	नहीं
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी.एच.डी.–01, एम.ए.–01
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं

17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	वनटांगिया जनजातियों में राजनैतिक एवं सामाजिक जागरूकता पर शोध कार्य जारी।
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन	
		डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
	♦ संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	06
	♦ अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–
	♦ मोनोग्राफ	–
	♦ पुस्तक के अध्याय	06
	♦ संपादित पुस्तकें	09
	♦ आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–
	♦ प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–
	♦ एस.एन.आई.पी.	–
	♦ एस.जे.आर.	–
	♦ प्रभाव कारक	–
	♦ एच. सूचकांक	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	भारतीय राजनीति का निःशुल्क ज्ञान उपलब्ध कराना।
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	 नहीं नहीं नहीं
22	छात्र परियोजनाएँ	विमर्श एवं महाविद्यालय कार्यशाला
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	योगिराज गम्भीरनाथ स्वर्णपदक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह को श्रेष्ठतम शिक्षक के लिए।
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. डॉ. शंकर शरण, एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली 2. प्रो. सी.बी. सिंह, पूर्व अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, दी.द.उ. गो.वि.वि. गोरखपुर

25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत						
	ए) राष्ट्रीय			नहीं			
	बी) अंतर्राष्ट्रीय			नहीं			
26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.ए . भाग–एक	सत्र 2010–11	135	111	56	55	96
		सत्र 2011–12	140	121	63	58	93
		सत्र 2012–13	300	268	155	113	79
		सत्र 2013–14	315	262	150	112	78
	बी.ए . भाग–दो	सत्र 2010–11	94	94	62	32	98
		सत्र 2011–12	96	96	47	49	95
		सत्र 2012–13	103	103	51	52	96
		सत्र 2013–14	194	194	118	76	97
	बी.ए . भाग–तीन	सत्र 2010–11	35	35	21	14	100
		सत्र 2011–12	51	51	37	14	100
		सत्र 2012–13	44	44	28	16	100
		सत्र 2013–14	71	71	39	32	99

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	बी.ए.	100%	0%	0%

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकाड़ा उपलब्ध नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	3.0%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं आंकाड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	आंकाड़ा उपलब्ध नहीं
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01 कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	अनु.जाति, अनु. जनजाति, पिछड़ा वर्ग–128 विद्यार्थियों को राज्य से छात्रवृत्ति उपलब्ध।

32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	प्रत्येक वर्ष दो विशेष व्याख्यान तथा एक कार्यशाला का आयोजन बाहरी विशेषज्ञों द्वारा।
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना। 3. पी.पी.टी., चार्ट पर आधारित कक्षा। 4. उपचारात्मक कक्षाएं। 5. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन। 6. समूह चर्चा। 7. मासिक मूल्यांकन।
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	बसंतपुर एवं ग्राम में विभाग द्वारा विकासात्मक कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–समूह चर्चा एवं विभागीय कार्यशाला **कमजोरी**–गामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी **अवसर**–पिछड़े ग्रामीण समाज को शैक्षिक समाज में उन्नत करना। **चुनौती**–शोध प्रवृत्ति बढ़ाना, समूह चर्चा एवं चार्ट एवं माडल का प्रयोग। **भविष्य की योजनाएं**– 1. राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर कक्षा का संचालन। 2. विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी का अधिक से अधिक भाव जागृत करना।

13. समाजशास्त्र विभाग

<table>
<tr><td>1</td><td colspan="3">विभाग का नाम</td><td colspan="3">समाजशास्त्र</td></tr>
<tr><td>2</td><td colspan="3">स्थापना वर्ष</td><td colspan="3">2005, स्नातक</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="3">प्रस्तुत कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)</td><td colspan="3">स्नातक कला–भाग एक,दो,तीन</td></tr>
<tr><td>4</td><td colspan="3">अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों/अंतर्निहित इकाइयों के नाम</td><td colspan="3">समाजशास्त्र, एक इकाई</td></tr>
<tr><td>5</td><td colspan="3">वार्षिक/सेमेस्टर/विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)</td><td colspan="3">वार्षिक, स्नातक कला–भाग एक,दो,तीन)</td></tr>
<tr><td>6</td><td colspan="3">अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता</td><td colspan="3">नहीं</td></tr>
<tr><td>7</td><td colspan="3">अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग</td><td colspan="3">नहीं</td></tr>
<tr><td>8</td><td colspan="3">पाठ्यक्रमों/कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ</td><td colspan="3">कोई नहीं</td></tr>
<tr><td rowspan="3">9</td><td colspan="6">शिक्षण पदों की संख्या :</td></tr>
<tr><td colspan="2"></td><td colspan="2">स्वीकृत</td><td colspan="2">भर्ती किया गया</td></tr>
<tr><td colspan="2">सहायक प्राध्यापक</td><td colspan="2">01+01</td><td colspan="2">01+01</td></tr>
<tr><td rowspan="4">10</td><td colspan="6">नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी/डी.लिट/पी.एच.डी. /एम.फिल, आदि)</td></tr>
<tr><td>नाम</td><td>योग्यता</td><td>पदनाम</td><td>विशेषज्ञता</td><td>अनुभव वर्षों में</td><td>निर्देशित पी–एच.डी.</td></tr>
<tr><td>प्रकाश प्रियदर्शी</td><td>एम.ए., एम.फिल., यू.जी.सी. नेट (2007).</td><td>सहायक आचार्य</td><td>क्रिमिनोलॉजी, डेमोग्राफी, इन्डस्ट्रियल सोशियोलॉजी</td><td>7 वर्ष</td><td>लागू नहीं</td></tr>
<tr><td>कु. पूनम (अस्थायी)</td><td>एम.ए.</td><td>सहायक आचार्य</td><td>रूरल सोशियोलॉजी, अरबन सोशियोलॉजी</td><td>3 वर्ष</td><td>लागू नहीं</td></tr>
<tr><td>11</td><td colspan="4">वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची</td><td colspan="2">1. प्रो. कीर्ति पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, दी.द.उ.गो. वि.वि. गोरखपुर
2. प्रो. मानवेन्द्र प्रताप सिंह, समाजशास्त्र विभाग, दी.द.उ.गो. वि.वि. गोरखपुर</td></tr>
<tr><td>12</td><td colspan="4">अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत</td><td colspan="2">50 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td>13</td><td colspan="4">विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार)
सत्र – 2013–14</td><td colspan="2">बी.ए. भाग–एक 146 : 1
बी.ए. भाग–दो 93 : 1
बी.ए. भाग–तीन 37 : 1</td></tr>
<tr><td>14</td><td colspan="4">अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए</td><td colspan="2">नहीं</td></tr>
</table>

15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	एम.फिल.–01 स्नातकोत्तर–01	
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं	
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	शोध कार्य जारी।	
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन		
		प्रकाश प्रियदर्शी	कु. पूनम
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	03	–
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–
	• मोनोग्राफ	–	–
	• पुस्तक के अध्याय	01	–
	• संपादित पुस्तकें	–	–
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–	–
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–
	• एस.एन.आई.पी.	–	–
	• एस.जे.आर.	–	–
	• प्रभाव कारक	–	–
	• एच.सूचकांक	–	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	सामाजिक अपराधों की रोकथाम के लिए निःशुल्क परामर्श।	
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	 नहीं नहीं नहीं	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं केलिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	

23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	अर्चना सिंह, बी.ए. तृतीय (वालीबाल–राज्य स्तर)
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. प्रो. प्रभाशंकर पाण्डेय (पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र, दी.द.उ. गो.वि.वि. गोरखपुर) 2. प्रो. शिव बहाल सिंह (पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र, दी.द.उ. गो.वि.वि. गोरखपुर
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	नहीं
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26 कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा

पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
				पुरुष	स्त्री	
बी.ए. भाग–एक	सत्र 2010–11	110	89	45	44	88.76
	सत्र 2011–12	175	151	76	75	79.47
	सत्र 2012–13	292	263	127	136	86.69
	सत्र 2013–14	326	291	142	149	83.84
बी.ए. भाग–दो	सत्र 2010–11	70	70	43	27	91.42
	सत्र 2011–12	79	79	41	38	77.21
	सत्र 2012–13	113	113	52	61	99.11
	सत्र 2013–14	186	186	82	104	80.64
बी.ए. भाग–तीन	सत्र 2010–11	36	36	20	16	100
	सत्र 2011–12	45	45	29	16	95.55
	सत्र 2012–13	46	46	19	27	100.00
	सत्र 2013–14	73	73	31	42	95.89

27 छात्रों की विविधता

पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
बी.ए. भाग–एक	100%	शून्य	शून्य
बी.ए. भाग–दो	100%	शून्य	शून्य
बी.ए. भाग–तीन	100%	शून्य	शून्य

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	3.5%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं आँकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	आँकड़ा उपलब्ध नहीं

30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	अ.जा., अ.ज.जा., अ.पि. वर्ग 2013–14 में 112 विद्यार्थी राज्य सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त किए।
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	विगत चार वर्षों में चार कार्यशालाओं और 9 विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन।
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना 2. सारांश और व्याख्यान देना 3. पी.पी.टी. आधारित कक्षा 4. उपचारात्मक कक्षाएं 5. गृह कार्य 6. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन 7. समूह चर्चा 8. मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	जंगल तिनकोनिया नं.1 के विकास हेतु कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–गुणवत्तायुक्त अध्यापन एवं शैक्षणिक वातावरण। **कमजोरी**–पढ़ने में कमजोर छात्रों की उपलब्धता। **अवसर**–विद्यार्थियों में पढ़ने की ललक। **चुनौती**–शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात। **भावी योजनाएं**– 1. विभाग को परास्नातक की मान्यता का प्रयास 2. शोध कार्य की गुणवत्ता का विकास।

14. प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग

1	**विभाग का नाम**	**प्राचीन इतिहास**
2	स्थापना वर्ष	2005 (स्नातक), 2010 (परास्नातक)
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक कला भाग–1,2,3 परास्नातक कला भाग–1,2
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	स्नातक कला–प्रथम, द्वितीय, तृतीय, वार्षिक परास्नातक कला–प्रथम, द्वितीय, वार्षिक
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	हिन्दी, राष्ट्रगौरव
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9 शिक्षण पदों की संख्या :

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायक प्राध्यापक	05	05

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
श्री लोकेश कुमार प्रजापति	एम.ए., नेट .	सहायक प्राध्यापक	कला एवं वास्तुकला	08 वर्ष	लागू नहीं
श्रीमती शालिनी चौधरी	एम.ए., नेट	सहायक प्राध्यापक	पुरातत्त्व	03 वर्ष	लागू नहीं
डॉ. मुरली तिवारी	एम.ए., पी–एच.डी.	सहायक प्राध्यापक	धर्म, कला	04 वर्ष	लागू नहीं
डॉ. भारती सिंह	एम.ए., पी–एच.डी.	सहायक प्राध्यापक	धर्म, कला	04 वर्ष	लागू नहीं
श्री सुबोध मिश्र	एम.ए.	सहायक प्राध्यापक	लिपि एवं अभिलेख	04 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. शिवाजी सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 2. डॉ. कुँवर बहादुर कौशिक, पूर्व प्राचार्य, डिग्री कालेज, भटौली बाजार, गोरखपुर 3. प्रो. राजवन्त राव, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर

12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.ए. भाग–एक 24 : 1 बी.ए. भाग–दो 06 : 1 बी.ए. भाग–तीन 06 : 1 एम.ए. भाग–एक 02 : 1 एम.ए. भाग–दो 03 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	01 स्वीकृत 01 भर्ती
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी.एच.डी.–02 स्नातकोत्तर–03
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी.एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध अध्ययन केन्द्र (स्थापित–2012 ई., शोध कार्य जारी)
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन	

	लोकेश प्रजापति	शालिनी चौधरी	सुबोध मिश्र	डॉ. मुरली तिवारी	डॉ. भारती सिंह
• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	08	03	04	–	02
• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–	–	–	–
• मोनोग्राफ	–	–	–	–	–
• पुस्तक के अध्याय	3	–	–	–	01
• संपादित पुस्तकें	04	–	–	–	–
• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–	–	–	–	01
• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–	–	–	–
• एस.एन.आई.पी.	–	–	–	–	–
• एस.जे.आर.	–	–	–	–	–
• प्रभाव कारक	–	–	–	–	–
• एच.सूचकांक	–	–	–	–	–

20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	शोध छात्रों को मुद्रा एवं तिथि पहचानने में मदद देना।

21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	 नहीं नहीं श्री लोकेश कुमार प्रजापति, विमर्श श्री सुबोध कुमार मिश्र, विमर्श
22	छात्र परियोजनाएँ	
	ए) अंतर विभागीय/कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं/उद्योग/अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार/मान्यताएँ	महाराणा प्रताप. शिक्षा परिषद् की प्रश्नमंच प्रतियोगिता में प्रथम स्थान
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों/विजिटरों की सूची	1. प्रो. शिवाजी सिंह, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दल्ली 2. प्रो. माखन लाल, नई दिल्ली 3. प्रो. टी.पी. वर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 4. प्रो. विपुला दूबे, अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 5. प्रो. महेश शरण श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष, दक्षिण पूर्व एशिया, विभाग, मगध विश्वविद्यालय, मगध 6. डॉ. आनन्द शंकर सिंह, प्राचार्य, ईश्वरशरण पी.जी. कालेज, इलाहाबाद 7. प्रो. रेखा चतुर्वेदी, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो. वि.वि. गोरखपुर 8. डॉ. के.एन. दीक्षित, निदेशक, भारतीय पुरातत्त्व संस्थान, नई दिल्ली
25	आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन/ कार्यशाला और धन के स्रोत	महाविद्यालय द्वारा व्यय
	ए) राष्ट्रीय	1. नाथ पंथ एवं भक्ति आन्दोलन, (28–30 अक्टूबर 2010), (महाविद्यालय कोष) हिन्दी व प्राचीन इतिहास विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 2. भारतीय राष्ट्रीयता एवं सन्त परम्परा (9–10 अक्टूबर 2012) भारतीय इतिहास संकलन समिति नई दिल्ली एवं हिन्दी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित (महाविद्यालय कोष)
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	–

26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.ए. भाग–एक	सत्र 2010–11	89	79	44	35	97.41
		सत्र 2011–12	96	85	42	43	100.00
		सत्र 2012–13	128	109	56	53	58.72
		सत्र 2013–14	130	117	50	67	78.70
	बी.ए. भाग–दो	सत्र 2010–11	66	66	43	23	86.16
		सत्र 2011–12	67	67	36	31	100.00
		सत्र 2012–13	71	71	43	28	98.57
		सत्र 2013–14	30	30	15	15	100.00
	बी.ए. भाग–तीन	सत्र 2010–11	21	21	10	11	100.00
		सत्र 2011–12	30	30	17	13	86.67
		सत्र 2012–13	44	46	23	23	90.91
		सत्र 2013–14	30	30	15	15	100.00
	एम.ए. भाग–एक	सत्र 2010–11	25	25	23	02	50.00
		सत्र 2011–12	05	4	3	1	75.00
		सत्र 2012–13	35	16	11	5	93.75
		सत्र 2013–14	26	8	5	3	87.50
	एम.ए. भाग–दो	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	07	7	6	1	100.00
		सत्र 2012–13	04	4	3	1	75.00
		सत्र 2013–14	15	15	11	4	93.33

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	बी.ए. प्रथम वर्ष	100%	0%	0%
	बी.ए. द्वितीय वर्ष	100%	0%	0%
	बी.ए. तृतीय वर्ष	100%	0%	0%
	एम.ए. प्रथम वर्ष	100%	0%	0%
	एम.ए. द्वितीय वर्ष	100%	0%	0%

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	5.0%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 नहीं आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	–

30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	अनु.जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग के 66 विद्यार्थियों को राज्य सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त।
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• विशेष व्याख्यान–04 (प्रतिवर्ष) • कार्यशाला–02 (प्रतिवर्ष)
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व घोषित पाठ्यक्रम योजना 2. व्याख्यान एवं सारांश वितरण 3. प्रोजेक्टर, चार्ट–माडल एवं मैप आधारित कक्षा। 4. छात्रों द्वारा कक्षाध्यापन 5. समूह चर्चा 6. मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	ग्राम हनुमन्त नगर एवं हैदरगंज को विभाग द्वारा गोद लिया गया और छात्रों द्वारा गाँव में जाकर लोगों को शिक्षित किया जाता है। राष्ट्रगौरव, स्वच्छता, राष्ट्रीय धरोहर और जागरूकता संबंधी शिक्षा दी जाती है।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–योग्य शिक्षक, समृद्ध पुस्तकालय, स्मार्ट क्लास रूम **कमजोरी**–छात्रों की संख्या **अवसर**–विद्यार्थियों को पुरातत्त्वेत्ता बनाना। **चुनौती**–स्नातकोत्तर कक्षाओं में छात्रों की संख्या। **भावी योजनाएं–** 1. प्रोजेक्ट कार्य 2. विभाग द्वारा संग्रहालय की स्थापना 3. पराुतत्त्व में प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम

15. मध्यकालीन इतिहास

1	**विभाग का नाम**	**मध्यकालीन इतिहास**
2	स्थापना वर्ष	2011, स्नातक
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक कला भाग–1,2,3
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	स्नातक कला, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	स्नातक कला, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, वार्षिक
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	राष्ट्रगौरव
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	नहीं
9	शिक्षण पदों की संख्या :	

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायक प्राध्यापक	01	01

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	एम.ए., पी–एच.डी.	एसोसिएट प्रोफेसर	–	10 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. अशोक कुमार श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 2. प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.ए. भाग–एक 143:1 बी.ए. भाग–दो 107:1 बी.ए. भाग–तीन 28:1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	नहीं
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी.एच.डी.–01
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्त पोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं

18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन	
		डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	05
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–
	• मोनोग्राफ	–
	• पुस्तक के अध्याय	05
	• संपादित पुस्तकें	–
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–
	• एस.एन.आई.पी.	–
	• एस.जे.आर.	–
	• प्रभाव कारक	–
	• एच.सूचकांक	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	नहीं
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	– नहीं नहीं नहीं
22	छात्र परियोजनाएँ	
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	नहीं
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. प्रो. सतीश चन्द्र मित्तल, पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा। 2. प्रो. ए.के. मित्तल, कुलपति, दीन दयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर 3. प्रो. अशोक श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर

25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत						
	ए) राष्ट्रीय			नहीं			
	बी) अंतर्राष्ट्रीय			नहीं			
26	कार्यक्रम / कोर्स वार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.ए. भाग–एक	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	65	65	34	31	94
		सत्र 2012–13	105	93	57	36	
		सत्र 2013–14	165	143	82	61	83
	बी.ए. भाग–दो	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
		सत्र 2012–13	99	93	57	36	94
		सत्र 2013–14	107	107	73	34	88
	बी.ए. भाग–तीन	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
		सत्र 2012–13	–	–	–	–	–
		सत्र 2013–14	28	28	17	11	96

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	बी.ए. प्रथम वर्ष	100%	0%	0%
	बी.ए. द्वितीय वर्ष	100%	0%	0%
	बी.ए. तृतीय वर्ष	100%	0%	0%

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	लागू नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	15%
	पीजी से एम.फिल.	लागू नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	लागू नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	लागू नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 लागू नहीं लागू नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	उपलब्ध–01 अध्ययन कक्ष
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं

31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	81 विद्यार्थी उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• प्रतिवर्ष बाह्य विशेषज्ञों के साथ कार्यशाला • बाह्य विशेषज्ञों के नियमित व्याख्यान
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित वार्षिक पाठ्यक्रम योजना 2. व्याख्यान एवं सारांश वितरण 3. प्रोजेक्टर एवं चार्ट एवं मानचित्र आधारित कक्षायें 4. छात्रों द्वारा कक्षाध्यापन 5. समूह चर्चा 6. मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	ग्राम सभा ककरहिया में विकास हेतु कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–योग्य शिक्षक एवं सावधानीपूर्वक अध्यापन। **कमजोरी**–विद्यार्थियों में भाषा क्षमता की कमी। **अवसर**–भाषायी अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों का विकास। **चुनौती**– ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को शिक्षा के द्वारा योग्य नागरिक बनाना। **भावी योजनाएं –** 1. मध्यकालीन इतिहास विभाग में स्नातकोत्तर स्तर की स्थापना। 2. शोध कार्य संस्कृति का विकास।

16. भूगोल विभाग

1	**विभाग का नाम**	**भूगोल**
2	स्थापना वर्ष	2005, स्नातक
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक कला / विज्ञान भाग–1,2,3
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	स्नातक कला / विज्ञान, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	स्नातक कला / विज्ञान, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, वार्षिक
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	नहीं
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9 शिक्षण पदों की संख्या :

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायक प्राध्यापक	02	02

10 नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथसंकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
डॉ. विजय कुमार चौधरी	एम.ए., पी–एच.डी.	सहायक प्राध्यापक	भौतिक भूगोल एवं पर्यावरण भूगोल	9 वर्ष	लागू नहीं
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार	एम.ए., पी–एच.डी.	सहायक प्राध्यापक	भूमि एवं जल संसाधन	16 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. शिव शंकर वर्मा, पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय, गो.वि.वि. गोरखपुर 2. डॉ. एस.के. सिंह, भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बीए. / बी.एस.सी.भाग–एक 27:1 बीए. / बी.एस.सी.भाग–दो 34:1 बीए. / बी.एस.सी.भाग–तीन 10:1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	01–लैब असिस्टेंट 01–लैब बियरर
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी–एच.डी.–02
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं

17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्तपोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	शोध कार्य हो रहा है।	
19	ए) संकाय और प्रतिप्रकाशन		
		डॉ. विजय कुमार चौधरी	डॉ. प्रवीन्द्र कुमार
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	02	–
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञानवेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयरडेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–
	• मोनोग्राफ	–	–
	• पुस्तक के अध्याय	05	–
	• संपादितपुस्तकें	02	–
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	01	–
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–
	• एस.एन.आई.पी.	–	–
	• एस.जे.आर.	–	–
	• प्रभावकारक	–	–
	• एच.सूचकांक	–	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	नहीं	
21	सदस्य के रूप में संकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	**डॉ. विजय कुमार चौधरी** 1. आई.जी.यू. कमीशन ऑन कामर्शियल एक्टिविटीज 1992–96; 2. नेशनल एसोसिएशन ऑफज्योग्राफर्स ऑफ इण्डिया 3. एसोसिएशन ऑफ नार्थ इंडियन ज्योग्राफर्स 4. एसोसिएशन ऑफ मार्केटिंग ज्योग्राफर आफ इंडिया 5. भौगालिक विकास शोध संस्थान, भारत	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	100%स्नातक कला एवं विज्ञान विद्यार्थियों द्वारा प्रोजेक्ट हेतु ग्रामीण स्तर पर सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	

23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार/मान्यताएँ			डॉ. विजय कुमार चौधरी को 2008 में उच्च शिक्षा विभाग, उ.प्र. शासन द्वारा 'शिक्षकश्री' सम्मान प्राप्त हुआ			
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों/विजिटरों की सूची			1. प्रो. आर.पी. मिश्र, पूर्वकुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद 2. डॉ. पी. नाग पूर्व महासर्वेक्षक, भारत सरकार एवं डायरेक्टर नाटमों, कोलकाता 3. प्रो. नूरमोहम्मद, पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 4. डॉ. एम.एन. निगम, पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग, डी.ए.वी. कालेज, अजमेर 5. प्रो. पी.आर. चौहान, भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर			
25	आयोजित संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला और धन के स्रोत						
	ए) राष्ट्रीय			राष्ट्रीय संगोष्ठी ''ग्रामीण भारत का भविष्य'' 07–09 जनवरी, 2006			
	बी) अंतर्राष्ट्रीय			नहीं			
26	कार्यक्रम/कोर्सवार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम/कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.ए./बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	55	39	25	14	92.30
		सत्र 2011–12	42	35	29	06	97.10
		सत्र 2012–13	125	99	73	26	97.90
		सत्र 2013–14	67	53	38	15	90.50
	बी.ए./बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	25	25	20	05	100.00
		सत्र 2011–12	24	24	13	11	100.00
		सत्र 2012–13	21	21	15	06	100.00
		सत्र 2013–14	68	68	49	19	100.00
	बी.ए./बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	08	08	05	03	100.00
		सत्र 2011–12	19	19	14	05	100.00
		सत्र 2012–13	16	16	11	05	100.00
		सत्र 2013–14	19	19	16	03	100.00

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	स्नातक	100%	0%	0%
28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं		

29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	5.5%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	– नहीं आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	–
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	01–उपलब्ध
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	51 विद्यार्थियों को उ.प्र. सरकार द्वारा छात्रवृत्ति प्राप्त।
32	छात्र संवर्धनकार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	1. बाह्य विशेषज्ञों द्वारा 'कार्यशाला' 2. आमंत्रित अतिथि व्याख्यान
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना। 3. कक्षाएं, पी.पी.टी., चार्ट और माडल पर आधारित 4. उपचारात्मक कक्षाएं 5. गृहकार्य 6. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रसार एवं स्वास्थ्य सेवा व स्वच्छता के लिए ग्राम जंगल औराही, दहला एवं हरसेवकपुर नं.2 के लोगों को निरन्तर जागरूक करना एवं विकास के कार्य करना।
35	विभागऔरभविष्य की योजनाओं के एस. डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–पाठ्य योजना एवं सारांश वितरण के अनुसार नियमित शिक्षण। **कमजोरी**–भाषा में लचर विद्यार्थी। **अवसर**–राष्ट्रीय स्तर पर पिछड़े समाज के विद्यार्थियों को शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार करना। **चुनौती**–विद्यार्थियों में ज्ञान की समझ बढ़ाने के लिए सीखने और अध्ययन की विद्यार्थियों में आदत डालना। **भावी योजनाएं**– 1. छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा शोध परियोजना 2. राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रस्तावित

17. मनोविज्ञान विभाग

1	**विभाग का नाम**	**मनोविज्ञान**
2	स्थापना वर्ष	2011, स्नातक
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक कला / विज्ञान भाग–1,2,3
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	स्नातक कला / विज्ञान, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	स्नातक कला / विज्ञान, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, वार्षिक
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	नहीं
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमोंका बंद होनेकाविवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं

9	शिक्षणपदों की संख्या :		
		स्वीकृत	भर्ती किया गया
	सहायकप्राध्यापक	02	02

10	नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)					
	नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशितपी–एच.डी.
	डॉ. सुनील कुमार मिश्र	एम.ए., पी–एच.डी.	सहायक आचार्य	बाल एवं विकास मनोविज्ञान	07 वर्ष	लागू नहीं
	डॉ. अजय बहादुर सिंह	एम.ए., पी–एच.डी.	सहायक आचार्य	पर्यावरणीय व सामाजिक मनोविज्ञान	11 वर्ष	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. डॉ. पी.सी. वर्मा, अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी.पी. जी. कालेज, गोरखपुर 2. डॉ. श्याम कृष्णा, अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी.पी. जी. कालेज, गोरखपुर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बीए. / बी.एस.सी. भाग–एक 19 : 1 बीए. / बी.एस.सी. भाग–दो 15 : 1 बीए. / बी.एस.सी. भाग–तीन 3 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	प्रयोगशाला सहायक– 01, लैब बियरर– 01, कम्प्यूटर आपरेटर– 01
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।	पी–एच.डी.–02

16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं	
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी.एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्तपोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारामान्यताप्राप्तअनुसंधानकेन्द्र / सुविधा	शोध कार्य हो रहा है।	
19	ए) संकाय औरप्रतिप्रकाशन		
		डॉ. सुनील कुमार मिश्रा	डॉ. अजय बहादुर सिंह
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	02	04
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञानवेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयर डेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–
	• मोनोग्राफ	–	–
	• पुस्तक के अध्याय	–	–
	• संपादित पुस्तकें	–	–
	• आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	01	–
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–
	• एस.एन.आई.पी.	–	–
	• एस.जे.आर.	–	–
	• प्रभावकारक	–	–
	• एच.सूचकांक	–	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	वातावरणीय एवं सामाजिक मनोविज्ञान के विषय में निःशुल्क जानकारी देना।	
21	सदस्य के रूप मेंसंकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड....	नहीं	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	100%	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	नहीं	

24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. प्रो. अनुपमनाथ त्रिपाठी, मनोविज्ञान विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि. गोरखपुर 2. डॉ. शीला सिंह, भूतपूर्व अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, डी.वी.एन.पी.जी. कालेज, गोरखपुर 3. डॉ. विजय कुमार चौधरी, भूतपूर्व, मनोविज्ञान विभाग, एग्लोवैदिक कालेज आफ कामर्स, पटना बिहार 4. डॉ. रूद्रदत्त, चतुर्वेदी, पूर्व प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, गजरौला, उ.प्र.					
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत			नहीं			
	ए) राष्ट्रीय			नहीं			
	बी) अंतर्राष्ट्रीय			नहीं			
26	कार्यक्रम / कोर्सवार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	18	15	08	07	100
		सत्र 2012–13	60	57	19	38	84.21
		सत्र 2013–14	45	37	14	23	89.19
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
		सत्र 2012–13	08	08	04	04	87.50
		सत्र 2013–14	30	30	07	23	90.00
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
		सत्र 2012–13	–	–	–	–	–
		सत्र 2013–14	05	05	03	02	80.00

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	स्नातककला / विज्ञान–एक	100%	0%	0%
	स्नातककला / विज्ञान–दो	100%	0%	0%
	स्नातककला / विज्ञान–तीन	100%	0%	0%
28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?		लागू नहीं	

29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकितप्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	50%
	पीजी से एम.फिल.	लागू नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	लागू नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	लागू नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसर भर्ती के अलावा	 लागू नहीं लागू नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	लागू नहीं

30	मूलभूतसुविधाओंकाविवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवंविभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारीऔरछात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटीसुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	01–प्रयोगशाला उपलब्ध
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, सामान्य के 22 छात्र को राज्य सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त।
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	1. विशेष व्याख्यान वाह्य विशेषज्ञ द्वारा 2. कार्यशाला प्रतिवर्ष
33	छात्र शिक्षामेंसुधारकरने के लिए अपनाईगईशिक्षणविधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान। 3. पी.पी.टी., चार्ट और माडल पर आधारित कक्षा। 4. उपचारात्मक कक्षाएं 5. गृहकार्य 6. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन 7. समूह चर्चा 8. मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	छोटी जमुनहिया गॉव के विकास के लिए कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–योग्य शिक्षक, समृद्ध प्रयोगशाला एवं विभागीय पुस्तकालय। **कमजोरी**–अशिक्षित परिवार के विद्यार्थी। **अवसर**–ऐसे विद्यार्थियों को सुशिक्षित बनाना। **चुनौती**–मनोविज्ञान के अध्ययन में छात्रों को प्रोत्साहित करना। **भावी योजना**– 1. सामुदायिक मनोविज्ञान केन्द्र की स्थापना। 2. व्यावहारिक मनोविज्ञान का अध्ययन।

18. रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग

<table>
<tr><td>1</td><td colspan="3">विभाग का नाम</td><td colspan="3">रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन</td></tr>
<tr><td>2</td><td colspan="3">स्थापना वर्ष</td><td colspan="3">2011 स्नातक</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="3">प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)</td><td colspan="3">स्नातक कला / विज्ञान भाग–1,2,3</td></tr>
<tr><td>4</td><td colspan="3">अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम</td><td colspan="3">स्नातक कला / विज्ञान, एक इकाई</td></tr>
<tr><td>5</td><td colspan="3">वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)</td><td colspan="3">स्नातक कला / विज्ञान, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, वार्षिक</td></tr>
<tr><td>6</td><td colspan="3">अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता</td><td colspan="3">राष्ट्रगौरव</td></tr>
<tr><td>7</td><td colspan="3">अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग</td><td colspan="3">नहीं</td></tr>
<tr><td>8</td><td colspan="3">पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमोंका बंद होनेकाविवरण (यदि हो तो) कारण के साथ</td><td colspan="3">कोई नहीं</td></tr>
<tr><td rowspan="3">9</td><td colspan="6">शिक्षणपदों की संख्या :</td></tr>
<tr><td colspan="2"></td><td colspan="2">स्वीकृत</td><td colspan="2">भर्तीकियागया</td></tr>
<tr><td colspan="2">सहायकप्राध्यापक</td><td colspan="2">02</td><td colspan="2">02</td></tr>
<tr><td rowspan="4">10</td><td colspan="6">नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथ संकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)</td></tr>
<tr><td>नाम</td><td>योग्यता</td><td>पदनाम</td><td>विशेषज्ञता</td><td>अनुभववर्षोंमें</td><td>निर्देशितपी–एच.डी.</td></tr>
<tr><td>डॉ. शुभ्रांभुशेखर सिंह</td><td>एम.ए., नेट, पी–एच.डी.</td><td>सहायक प्राध्यापक</td><td>नक्सलवाद</td><td>03 वर्ष</td><td>–</td></tr>
<tr><td>डॉ. शशिकान्त सिंह</td><td>एम.ए., पी–एच.डी.</td><td>सहायक प्राध्यापक</td><td>हिन्द महासागर</td><td>01 वर्ष</td><td>–</td></tr>
<tr><td>11</td><td colspan="3">वरिष्ठविजिटिंगसंकाय की सूची</td><td colspan="3">1. प्रो. हरिशरण, पूर्व विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो. वि.वि. गोरखपुर
2. डॉ. हर्ष सिन्हा, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर
3. डॉ. विनोद कुमार सिंह, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर</td></tr>
<tr><td>12</td><td colspan="3">अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधन का (कार्यक्रम वार) प्रतिशत</td><td colspan="3">नहीं</td></tr>
<tr><td>13</td><td colspan="3">विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार)
सत्र – 2014–15</td><td colspan="3">बीए. / बी.एस.सी. भाग–एक 14 : 1
बीए. / बी.एस.सी. भाग–दो 10 : 1
बीए. / बी.एस.सी. भाग–तीन 4 : 1</td></tr>
<tr><td>14</td><td colspan="3">अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए</td><td colspan="3">प्रयोगशाला सहायक– 01,
लैब बियरर– 01</td></tr>
<tr><td>15</td><td colspan="3">डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण संकाय की योग्यता।</td><td colspan="3">पी–एच.डी.–02</td></tr>
</table>

16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं	
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी./डी.बी.टी., आई.सी.एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्तपोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं	
18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र/सुविधा	नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र	
19	ए) संकाय और प्रतिप्रकाशन		
		डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह	डॉ. शशिकान्त सिंह
	• संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	22	12
	• अंतर्राष्ट्रीय डाटाबेसमेंसूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञानवेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयरडेटाबेस – अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–	–
	• मोनोग्राफ	–	–
	• पुस्तक के अध्याय	17	08
	• संपादित पुस्तकें	–	–
	• आई.एस.बी.एन./आई.एस.एस.एन. संख्या युक्तप्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	05	04
	• प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–	–
	• एस.एन.आई.पी.	–	–
	• एस.जे.आर.	–	–
	• प्रभाव कारक	–	–
	• एच.सूचकांक	–	–
20	परामर्श के क्षेत्र औरआय उत्पन्न	ग्रामीण सुरक्षा जागरूकता के सन्दर्भ में परामर्श	
21	सदस्य के रूप मेंसंकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	– नहीं नहीं नहीं	
22	छात्र परियोजनाएँ		
	ए) अंतर विभागीय/कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	100%	
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं/उद्योग/अन्य अभिकरणोंमें संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं	
23	संकाय औरछात्रों द्वाराप्राप्तपुरस्कार/मान्यताएँ	नहीं	

24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. प्रो. राजेन्द्र प्रसाद, पूर्व अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर 2. डॉ. अनन्तनारायण भट्ट, वैज्ञानिक, डी. आर.डी.ओ., नई दिल्ली
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 2015 में राष्ट्रीय संगोष्ठी स्वीकृत
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26	कार्यक्रम / कोर्सवार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम का नाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–एक	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	23	19	14	05	89.47
		सत्र 2012–13	38	35	31	04	71.43
		सत्र 2013–14	30	27	19	08	62.96
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
		सत्र 2012–13	11	10	05	05	100
		सत्र 2013–14	20	20	16	04	100
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	–	–	–	–	–
		सत्र 2011–12	–	–	–	–	–
		सत्र 2012–13	–	–	–	–	–
		सत्र 2013–14	07	07	04	03	100

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक हीराज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–एक	100%	0%	0%
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–दो	100%	0%	0%
	बी.ए. / बी.एस–सी. भाग–तीन	100%	0%	0%

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण किया है?	लागू नहीं
29	छात्र प्रगति	
	छात्र प्रगति	नामांकितप्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजीसेपीजी	42.8%
	पीजीसे एम.फिल.	लागू नहीं
	पीजीसेपीएच.डी.	लागू नहीं
	पीएच.डी. सेपोस्टडॉक्टरेट	लागू नहीं
	नियोजित –परिसरचयन –परिसरभर्ती के अलावा	 लागू नहीं लागू नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	लागू नहीं

30	मूलभूत सुविधाओं काविवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01–अध्ययन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	01–उपलब्ध
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	अनु.जाति, पिछड़ा तथा सामान्य 14 छात्र
32	छात्र संवर्धन कार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• प्रत्येक सत्र में बाहरी विशेषज्ञों द्वारा कार्यशाला। • विशेष व्याख्यानों का आयोजन बाह्य विशेषज्ञों द्वारा।
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान। 3. पी.पी.टी., चार्ट और माडल पर आधारित कक्षाएं। 4. उपचारात्मक कक्षाएं। 5. गृहकार्य। 6. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन। 7. समूह चर्चा। 8. मासिक मूल्यांकन।
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	मीरगंज तथा लालगंज गांव में सुरक्षा तथा समसामयिक समस्याओं पर जागरूकता तथा ग्रामीण विकास हेतु कार्य।
35	विभाग और भविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–पाठ्यक्रम योजना, योग्य शिक्षक तथा विभागीय पुस्तकालय। **कमजोरी**–विषय का इण्टरमीडिएट स्तर 'लोकप्रिय न होना। **अवसर**–छात्र तथा समाज में राष्ट्रीय सुरक्षा की समस्याओं में जागरूकता का विकास। **चुनौती**–छात्रों में विषय के चयन की अभिरूचि को बढ़ाना। **भावी योजनाएं**– 1. प्रशिक्षण शिविर का आयोजन। 2. विभाग में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का संचालन।

19. अर्थशास्त्र विभाग

1	**विभाग का नाम**	**अर्थशास्त्र**
2	स्थापना वर्ष	2005 स्नातक
3	प्रस्तुत कार्यक्रमों / पाठ्यक्रमों के नाम (यू.जी., पी. जी., एम.फिल., पी–एच.डी., एकीकृत स्नातकोत्तर, एकीकृत पी–एच.डी., आदि)	स्नातक–भाग एक,दो,तीन
4	अंतः विषय पाठ्यक्रम और विभागों / अंतर्निहित इकाइयों के नाम	अर्थशास्त्र, एक इकाई
5	वार्षिक / सेमेस्टर / विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (कार्यक्रम वार)	वार्षिक, स्नातक–भाग एक,दो,तीन)
6	अन्य विभागों द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में विभाग की सहभागिता	नहीं
7	अन्य विश्वविद्यालयों, उद्योग, विदेशी संस्थाओं, आदि के साथ पाठ्यक्रम में सहयोग	नहीं
8	पाठ्यक्रमों / कार्यक्रमों का बंद होने का विवरण (यदि हो तो) कारण के साथ	कोई नहीं
9	शिक्षण पदों की संख्या :	

	स्वीकृत	भर्ती किया गया
सहायकआचार्य	01	01

10	नाम, योग्यता, पद, विशेषज्ञता, के साथसंकाय सदस्य की रूपरेखा (डी.एससी / डी.लिट / पी.एच.डी. / एम.फिल, आदि)

नाम	योग्यता	पदनाम	विशेषज्ञता	अनुभव वर्षों में	निर्देशित पी–एच.डी.
श्री अखिलेश दूबे	एम.ए., नेट	सहायक अध्यापक	अर्थशास्त्र	–	लागू नहीं

11	वरिष्ठ विजिटिंग संकाय की सूची	1. प्रो. पी.सी. शुक्ला, अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गो.वि.वि. गोरखपुर 2. डॉ. सतीश द्विवेदी, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर
12	अस्थायी शिक्षकों द्वारा वितरित व्याख्यानों और प्रायोगिक कक्षाओं के प्रबंधनका (कार्यक्रम वार) प्रतिशत	नहीं
13	विद्यार्थी–अध्यापक अनुपात (कार्यक्रम वार) सत्र – 2013–14	बी.ए. भाग–एक 34 : 1 बी.ए. भाग–दो 17 : 1 बी.ए. भाग–तीन 4 : 1
14	अकादमिक सहायक कर्मचारी (तकनीकी) और प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत और भर्ती किए गए	नहीं
15	डी.एससी. / डी.लिट. / पी.एचडी. / एम.फिल. / स्नातकोत्तर के साथ शिक्षण ासंकाय की योग्यता।	एम.ए.–01
16	ए) राष्ट्रीय बी) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता अभिकरण और अनुदान प्राप्त के द्वारा चालू परियोजनाओं के साथ शिक्षकों की संख्या	नहीं
17	डी.एस.टी.–एफ.आई.एस.टी., यू.जी.सी. / डी.बी.टी., आई.सी. एस.एस.आर. आदि द्वारा वित्तपोषित विभागीय परियोजनाएँ और कुल अनुदान प्राप्त	नहीं

18	विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र / सुविधा	नहीं
19	ए) संकाय और प्रति प्रकाशन	
		श्री अखिलेश दूबे
	♦ संकाय और छात्रों द्वारा पीअर समीक्षा की पत्रिकाओं (Peer Reviewed Journals) में प्रकाशित	–
	♦ अंतर्राष्ट्रीय डाटा बेस में सूचीबद्ध प्रकाशनों की संख्या (उदाहरण के लिए : विज्ञान वेब, क्षेत्र, मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कंप्लीट, डेयरडेटाबेस–अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान निर्देशिका, ई.बी.एस.सी.ओ. होस्ट आदि)	–
	♦ मोनोग्राफ	–
	♦ पुस्तक के अध्याय	–
	♦ संपादितपुस्तकें	–
	♦ आई.एस.बी.एन. / आई.एस.एस.एन. संख्या युक्त प्रकाशकों के विवरण के साथ पुस्तकें	–
	♦ प्रशस्ति पत्र सूचकांक	–
	♦ एस.एन.आई.पी.	–
	♦ एस.जे.आर.	–
	♦ प्रभावकारक	–
	♦ एच. सूचकांक	–
20	परामर्श के क्षेत्र और आय उत्पन्न	नहीं
21	सदस्य के रूप मेंसंकाय ए) राष्ट्रीय समितियाँ बी) अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ सी) संपादकीय बोर्ड	– नहीं नहीं नहीं
22	छात्र परियोजनाएँ	
	ए) अंतर विभागीय / कार्यक्रम सहित छात्रों का प्रतिशत जिन्होंने आंतरिक परियोजनायें की है	नहीं
	बी) अनुसंधान प्रयोशालाओं / उद्योग / अन्य अभिकरणों में संस्थानों के बाहर संगठनों में स्थापित परियोजनाओं के लिए छात्रों का प्रतिशत	नहीं
23	संकाय और छात्रों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / मान्यताएँ	नहीं
24	विभाग के प्रख्यात शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों / विजिटरों की सूची	1. श्री भरत झुनझुनवाला, अर्थशास्त्री, नई दिल्ली 2. डॉ. विवेक निगम, अध्यक्ष, अर्थशास्त्र, यूविंग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद
25	आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला और धन के स्रोत	
	ए) राष्ट्रीय	नहीं
	बी) अंतर्राष्ट्रीय	नहीं

26	कार्यक्रम / कोर्सवार छात्र रूपरेखा						
	पाठ्यक्रम / कार्यक्रम कानाम	सत्र	आवेदन पत्र प्राप्त	चयनित	नामांकित		उत्तीर्ण प्रतिशत (विषय)
					पुरुष	स्त्री	
	बी.ए. भाग–एक	सत्र 2010–11	–	16	12	04	72.26
		सत्र 2011–12	–	24	18	06	62.40
		सत्र 2012–13	–	28	22	06	32.14
		सत्र 2013–14	–	34	26	08	56.87
	बी.ए. सी. भाग–दो	सत्र 2010–11	–	11	07	04	54.54
		सत्र 2011–12	–	18	12	06	88.80
		सत्र 2012–13	–	13	11	02	100.00
		सत्र 2013–14	–	17	15	02	77.60
	बी.ए. सी. भाग–तीन	सत्र 2010–11	–	02	02	–	100.00
		सत्र 2011–12	–	06	04	02	80.33
		सत्र 2012–13	–	11	09	02	72.72
		सत्र 2013–14	–	04	03	01	100.00

27	छात्रों की विविधता			
	पाठ्यक्रम का नाम	एक ही राज्य से छात्रों का प्रतिशत	अन्य राज्य से छात्रों का प्रतिशत	विदेशों से छात्रों का प्रतिशत
	बी.ए. प्रथम वर्ष	100%	0%	0%
	बी.ए. द्वितीय वर्ष	100%	0%	0%
	बी.ए .तृतीय वर्ष	100%	0%	0%

28	कितने छात्रों ने राष्ट्रीय और राज्य प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नैट, एस.एल.ई.टी., जी.ए.टी.ई., नागरिक सेवाओं आदि को उत्तीर्ण कियाहै?	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
29	**छात्र प्रगति**	
	छात्र प्रगति	नामांकित प्रतिशत के प्रतिकूल
	यूजी से पीजी	20%
	पीजी से एम.फिल.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीजी से पीएच.डी.	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	पीएच.डी. से पोस्ट डॉक्टरेट	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	नियोजित –परिसर चयन –परिसरभ ार्ती के अलावा	 नहीं आंकड़ा उपलब्ध नहीं
	उद्यमिता / स्वरोजगार	आंकड़ा उपलब्ध नहीं
30	मूलभूत सुविधाओं का विवरण :	
	ए) पुस्तकालय	केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय
	बी) कर्मचारी और छात्रों के लिए इंटरनेट की सुविधा	उपलब्ध
	सी) आईसीटी सुविधा के साथ अध्ययन कक्ष	01 अध्यापन कक्ष उपलब्ध
	डी) प्रयोगशालाएँ	आवश्यकता नहीं
31	कालेज, विश्वविद्यालय, सरकार या अन्य अभिकरणों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या	13 छात्रों को छात्रवृत्ति उ.प्र. सरकार द्वारा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग को प्राप्त।

32	छात्र संवर्धनकार्यक्रम (विशेष व्याख्यान / कार्यशालाएँ / संगोष्ठियाँ) विवरण बाहरी विशेषज्ञों के साथ	• प्रतिवर्ष व्याख्यान बाह्य विशेषज्ञ द्वारा। • प्रतिवर्ष कार्यशाला बाह्य विशेषज्ञ।
33	छात्र शिक्षा में सुधार करने के लिए अपनाई गई शिक्षण विधियाँ	1. पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम योजना। 2. सारांश और व्याख्यान देना। 3. पी.पी.टी., चार्ट पर आधारित कक्षा। 4. उपचारात्मक कक्षाएं। 5. गृहकार्य। 6. विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन। 7. समूह चर्चा 8. मासिक मूल्यांकन
34	संस्थागत सामाजिक दायित्व (आई.एस.आर.) एवं विस्तार गतिविधियों में भागीदारी	महाविद्यालय द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अन्तर्गत महुआचाफी ग्राम सभा में शिक्षा का प्रसार।
35	विभागऔरभविष्य की योजनाओं के एस.डब्लू.ओ.सी. विश्लेषण S- **सामर्थ्य** W- **कमजोरी** O- **अवसर** C- **चुनौती**	**सामर्थ्य**–गुणवत्तापूर्वक शिक्षण **कमजोरी**– छात्र–छात्राओं का अर्थशास्त्र विषय के प्रति रुचि का अभाव एवं आर्थिक वातावरण का अभाव **अवसर**–ग्रामीण कृषि अर्थशास्त्र की जानकारी देना **चुनौती**–छात्रों में अर्थशास्त्र अध्ययन के प्रति रुचि पैदा करना। **भावी योजनाएं**– 1. स्नातकोत्तरपाठ्य प्रारम्भकरना। 2. स्थानीय आर्थिक विकास की समस्याओं पर शोध कार्य का विकास।

Certificate of Compliance

(Affiliated Institution)

This is to certify that **Maharana Pratap P.G. College, Jungle Dhusan, Gorakhpur-273014** fulfils all norms.

1. Stipulated by the affiliating University **D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur**
2. Regulatory Council NCTE and
3. The affiliation and recognition is valid as on date.

The affiliation/recognition is of permanent nature.

It is noted that NAAC's accreditation, if granted, shall stand cancelled automatically, once the institution loses its University affiliation or Recognition by the Regulatory Council, as the case may be.

It case the undertaking submitted by the institution is found to be false then the accreditation given by NAAC is liable to be withdrawn. It is also agreeable that the undertaking given to NAAC will be displayed on the college website.

Date : 06-4-2015
Palce : Jungle Dhusan

(Pradeep Kumar Rao)
Principal

घोषणा–पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि स्व. अध्ययन रिपोर्ट (एस.एस.आर.) में सम्मिलित उल्लेख मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

यह एस.एस.आर आंतरिक विचार विमर्श के बाद संस्था द्वारा तैयार किया गया है, और इसका कोई भी अंश अन्य स्रोत से नहीं लिया गया है।

मैं जानता हूँ कि निरीक्षण मण्डल (पीअर टीम) इस एस.एस.आर. में उपलब्ध कराई गई जानकारी की मान्यता निरीक्षण के समय तक मानेगा।

प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य

स्थान : जंगल धूसड़, गोरखपुर
दिनांक : चैत्र कृष्ण चतुर्थी, वि.सं. 2071
(10 मार्च, 2015)

23236351, 23232701, 23237721, 23234116
23235733, 23232317, 23236735, 23239437

www.ugc.ac.in

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली 110 002
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
BAHADURSHAH ZAFAR MARG
NEW DELHI-110 002

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

F.8-20/2007 (CPP-I)

June, 2007

22 JUN 2007

The Registrar,
Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University,
Gorakhpur-273 009 (U.P).

Sub:- List of Colleges prepared under Section 2 (f) of the UGC Act, 1956- Inclusion of New Colleges-

Sir,

I am directed to refer to the letter No. महा0प्र0महा0/0170/2006-07 dated 21.05.2007 received from the College on the subject cited above and to say that the name of the following College has been included in the list of Colleges prepared under Section 2 (f) of the UGC Act, 1956 under the head Non-Government Colleges teaching upto Bachelor's Degree:-

Name of the College	Year of Establishment	Remarks
Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhusan, **Gorakhpur-273 014 (U.P).** (On permanent affiliation)	2004	The College is **not** eligible to receive Central assistance under Section 12 (B) of the UGC Act, 1956 as the UGC has not yet finalised the details to provide financial assistance to **"Self Financed Colleges".**

The Indemnity Bond and other documents in respect of the above College have been accepted by the Commission.

Yours faithfully,

(Mrs. Urmil Gulati)
Under Secretary

Copy forwarded to:-

1. The Principal, Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhusan, Gorakhpur-273 014 (U.P).
2. The Secretary, Government of India, Ministry of Human Resource Development, Department of Secondary Education & Higher Education, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001.
3. The Secretary to the Government of Uttar Pradesh, Department of Higher Education, Lucknow (U.P).
4. The Joint Secretary, UGC, Northern Regional College Bureau, 35, Ferozshah Road, New Delhi.
5. Publication Officer, (UGC-Website), New Delhi.
6. Section Officer (F.D.-III Section) U.G.C., New Delhi.
7. All Sections, U.G.C, New Delhi.
8. Guard file.

(Mrs. Urmil Gulati)
Under Secretary

Ph. 23236351, 23232701, 23237721
23234116, 23235733, 23232317
23236735, 23239437, 23239627

Extension No. 413 (CPP-I Colleges)
UGC Website: www.ugc.ac.in

SPEED POST

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-110 002
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
BAHADURSHAH ZAFAR MARG
NEW DELHI-110 002

F. No. 8-20/2007 (CPP-I/C)

August, 2010

30 AUG 2010

The Registrar,
D.D.U. Gorakhpur University,
Gorakhpur – 273 009,
Uttar Pradesh.

Sub: - Declaring a College fit to receive Central Assistance under Section 12 (B) of the UGC Act, 1956.

Sir,

I am directed to refer to the letter dated 19.07.2010 received from the Member of Parliament, Lok Sabha, 123-125, North Avenue, New Delhi – 110 001 on the above subject and to say that it is noted that the following college is un-aided/self financed and permanently affiliated to D.D.U. Gorakhpur University. I am further to say that the name of the following college has been included in the list of colleges prepared under Section 12 (B) of the UGC Act, 1956 under the head 'Non Government Colleges teaching upto Bachelor's Degree':-

Name of the College	Year of Establishment	Remarks
Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhusan, Gorakhpur - 273 014, (Uttar Pradesh).	2004	The college is already included under Section 2 (f) of the UGC Act, 1956 vide this office letter No. F. 8-20/2007 (CPP-I) dated 22.06.2007. The college is now declared fit to receive Central Government grants from other sources, even if it does not receive grants from UGC due to paucity of funds as decided by the Commission at its meeting held on 4th May, 2010.

The documents submitted in respect of the above College have been accepted by the University Grants Commission.

Yours faithfully,

(S.C. Chadha)
Deputy Secretary

Copy to:-

1. The Principal, Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhusan, Gorakhpur - 273 014, (Uttar Pradesh).
2. The Secretary, Government of India, Ministry of Human Resource Development, Department of Secondary Education & Higher Education, Shastri Bhavan, New Delhi – 110 001.
3. The Secretary (Higher Education), Government of Uttar Pradesh, 8B, Navin Bhawan, UP Sachivalaya, Lucknow – 226 001, (Uttar Pradesh).
4. The Joint Secretary, UGC, Northen Regional College Bureau (NRCB), 35, Ferozeshah Road, New Delhi – 110 001.
5. Publication Officer (Website-UGC), New Delhi.
6. Section Officer (F.D.-III Section), U.G.C., New Delhi
7. All Sections, U.G.C, New Delhi.
8. Guard file.

(Sunita Gulati)
Section Officer

उत्तर क्षेत्रीय समिति
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
(भारत सरकार का एक विधिक संस्थान)

गुरुर्गुरुतमो धाम
NCTE

Northern Regional Committee
National Council for Teacher Education
(A Statutory Body of the Government of India)

TO BE PUBLISHED IN GAZETTE OF INDIA PART –III, SECTION 4

F. No. NRC/NCTE/UP-2751/220th Meeting/165715-721 Dated:- 12 DEC 2013

RECOGNITION ORDER

WHEREAS in terms of section 14(1) of the NCTE Act, 1993, **Mahara Pratap Shiksha Parishad, Gorakhpur, Uttar Pradesh, Village/Town- Gorakhpur, Post Office- Head Post Office, Gorakhpur, Plot Number- 0, Street Number- Canal Road, Tehsil/Taluka- Sadar, Town/City- Gorakhpur, District- Gorakhpur, Pin Code- 273001, State- Uttar Pradesh** has submitted on application **(Code No. UP-2781)** to the Northern Regional Committee of NCTE for grant of recognition for conducting **B.Ed. Course** with an annual intake of **100 (One Hundred Only)** on dated **26.11.2007** in the name of **Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhushan, Gorakhpur, Plot Number- 69, Khasara No.- 444, 863, 950, 952, 975, 977, Village/Town- Jungle Dushan, Post Office- Jungle Dhushan, Street Number- 0, Tehsil/Taluka- Sadar, Town/City- Gorakhpur, District- Gorakhpur, Pin Code- 273014, State- Uttar Pradesh.**

2. AND WHEREAS on scrutiny/perusal of veracity of the facts & figures as per the application submitted by the institution, the documents attached therewith, the affidavit and the input received from the visiting team in the form of visiting team report including videography and also the reply submitted by the institution against letter of 7(9), the Northern Regional Committee in **its 220th Meeting of the NRC held from 25th October, 2013 and 29th October, 2013** is satisfied that the institution/society fulfils the requirements under the provisions of NCTE Act, Rules and relevant Regulations including the Norms and Standards for the **B.Ed.** Programme such as instructional facilities, infrastructural facilities, library, accommodation, financial resources, laboratory, etc. for running the programme and has selected/appointed duly qualified teaching staff as per NCTE norms.

3. NOW, THEREFORE, in exercise of the powers vested under Section 14(3)(a) of the NCTE Act, 1993, the Northern Regional Committee hereby grants recognition to **Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhushan, Gorakhpur, Plot Number- 69, Khasara No.- 444, 863, 950, 952, 975, 977, Village/Town- Jungle Dushan, Post Office- Jungle Dhushan, Street Number- 0, Tehsil/Taluka- Sadar, Town/City- Gorakhpur, District- Gorakhpur, Pin Code- 273014, State- Uttar Pradesh** for conduction **B.ED.** Course of **Secondary** (Level) of **One Year** duration with an annual intake of **100 (One Hundred Only)** from the academic **session 2014-2015** under clause 7(11) of NCTE (Recognition Norms & Procedure) Regulations, 2009 subject to fulfilment of the following conditions:-

(i) The institution shall comply with the various other norms and standards prescribed in the NCTE regulations, as amended from time to time.

(ii) The institution shall make admission only after it obtains affiliation from the examining body in terms of clause 8(12) of the NCTE (Recognition Norms & Procedure) Regulations, 2009.

(iii) The institution shall ensure that the required number of academic staff for conducting the course is always in position.

4. Further, the recognition is subject to fulfilment of all such other requirements as may be prescribed by other regulatory bodies like UGC, affiliating University/ Body, the State Government etc. as applicable.

5. The institution shall submit to the Regional Committee a Self-Appraisal Report at the end of each academic year along the statement of annual accounts duly audited by a Chartered Accountant.

6. The institution shall maintain & update its Web-site as per provisions of NCTE Regulations and always display following as mandatory disclosure:-

Contd.....2

4th Floor, Jeevan Nidhi-II, LIC Building, Ambedkar Circle, Bhawani Singh Marg, Jaipur -302 005 (Rajasthan), Phone:(0141)- 2744288, 2744635, Fax : 0141-2744173
E-mail. : nrc@ncte-india.org, Website : www.ncte-india.org

(i) Copy of the Application Form
(ii) Land and Building Particulars
(iii) Staff Profile
(iv) Recognition letter
(v) Information for having fulfilled the norms & standard and other required conditions.

7. In case if the land is in the name of the Society/trust, you must transfer the land within six month in the name of the institution failing to which action shall be initiated to withdraw the recognition. It shall be essential on the part of the institution concerned to get the needful done in this regard and intimate about the same to the respective Regional Committee along with the new land documents within the stipulated time.

8. If the institution contravenes any of the above conditions or the provisions of the NCTE Act, Rules, Regulations and Orders made or issued there under, the Regional Committee shall withdraw the recognitions as under the provisions of Section 17(1) of the NCTE Act.

9. Further, if the institution is not satisfied with order, it may prefer an appeal under sections 18 of NCTE Act, 1993 in the "online mode" available on NCTE's website www.ncte.india.org within 60 days from the date of this order.

12/7/13

(Dr. Ram Kishor)
Regional Director

Encl:- As above
The Manager to Govt. of India.
Department of Publications, (Gazette Section)
Civil Lines, Delhi – 110 054
C.C.

1. The Secretary/Correspondent, **Mahara Pratap Shiksha Parishad, Gorakhpur, Uttar Pradesh, Village/Town- Gorakhpur, Post Office- Head Post Office, Gorakhpur, Plot Number- 0, Street Number- Canal Road, Tehsil/Taluka- Sadar, Town/City- Gorakhpur, District- Gorakhpur, Pin Code- 273001, State- Uttar Pradesh.**
2. The Principal, **Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhushan, Gorakhpur, Plot Number- 69, Khasara No.- 444, 863, 950, 952, 975, 977, Village/Town- Jungle Dushan, Post Office- Jungle Dhushan, Street Number- 0, Tehsil/Taluka- Sadar, Town/City- Gorakhpur, District- Gorakhpur, Pin Code- 273014, State- Uttar Pradesh.**
3. The Education Secretary, Higher Education, Government of Uttar Pradesh, Ground Floor, Room No.- 2, Sachiv Bhawan, Secretariat,Lucknow-226001, Uttar Pradesh
4. The Registrar, Deen Dayal Upadhaya University, Gorakhpur, Civil Lines, Gorakhpur, Uttar Pradesh.
5. The Secretary, Dept. Of School Education and Literacy, Ministry of Human Resource Development, Govt. of India, Shastri Bhawan, New Delhi- 110001.
6. The US (Computer), National Council for Teacher Education, Hans Bhawan Wing-II, I, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi- 110 002.
7. Office order file/ Institution file.

12/7/13

Regional Director

DR. Y.K. MANSOORI
Regional Director
Northern Regional Committee,
National Council for Teacher Education,

Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University
Gorakhpur-273009 (U.P.) India

No. DDUGU/Affiliation/2015/5204 Date: 26/03/2015

To Whom So Ever It May Concern

This is to certify that **Maharana Pratap P.G. College, Jungle Dhusan, Gorakhpur (U.P.)** (Self finance college) is affiliated for imparting instruction in various subjects as detailed to this university:

Sl No	Name of the Course(s) and Duration	Affiliation Permanent / emporary	Period of Validity for the year(s)
(I)	Three year B.A. Courses in English, Hindi, Ancient History, Economics, Political Science, Sociology, Geography, History, Defence Studies, Psychology	**Permanent**	----
(II)	Three year B.Sc. Courses in Physics, Chemistry, Mathematics, Zoology, Botany	**Permanent**	----
(III)	Three year B.Sc. Courses in Computer Science, Electronics, Statistics	**Permanent**	----
(IV)	Three year B.Com General Course	**Permanent**	----
(V)	Two year M.A. Courses in Ancient History	**Permanent**	----
(VI)	Two year M.Sc. Courses in Chemistry	**Permanent**	----

It is further certified that the College is recognized by University Grants Commission, New Delhi under section 2(f) and 12(b) of UGC Act.

Registrar

Minutes 261

Track ID-UPCOGN22817 | College Name-Maharana Pratap P.G. College, jungle dhusan, gorakhpur |

IEQA SUBMISSION DATE-18/10/2014

INSTITUTIONAL ELIGIBILITY FOR QUALITY ASSESSMENT(IEQA) QUESTIONNAIRE

1 COLLEGE DETAILS			
Name of the college	Maharana Pratap P.G. College, jungle dhusan, gorakhpur	Year of establishment	2005
Location of the college	RURAL		
2 ADDRESS			
Address	Maharana Pratap P.G. College, jungle dhusan, gorakhpur	City	Gorakhpur
State	Uttar Pradesh	Pin Code	273014
Website	www.mpm.edu.in	E-Mail	mpmpg.gkp@gmail.com
Phone STD Code	0551	Phone No	2105416
Fax STD Code	0551	Fax	22555455
3 HEAD OF THE INSTITUTION			
Name	Dr. pradeep kumar rao	Designation	principal
Status of appointment	PERMANENT		
4 CONTACT DETAILS OF HEAD OF THE INSTITUTION			
Phone std code	0551	Phone number	2105416
Fax std code	0551	Fax	2255455
Mobile	+919794299451	E-Mail	mpmpg.gkp@gmail.com

5 DOES THE COLLEGE FUNCTION FROM

a. MAIN CAMPUS

	AREA OF THE CAMPUS IN ACRES	TOTAL BUILT UP AREA IN sq.m.
OWN BUILDINGS	6.89	5288.49
RENTED BUILDINGS	0.0	0.0

b. SATELLITE CAMPUS

	AREA OF THE CAMPUS IN ACRES	TOTAL BUILT UP AREA IN sq.m.
OWN BUILDINGS	0.0	0.0
RENTED BUILDINGS	0.0	0.0

6 NAME OF THE UNIVERSITIES TO WHICH THE COLLEGE IS AFFILIATED OR CONSTITUENT			
University1	Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur	Other	
Nature of relationship with the university	AFFILIATED	If affiliated, status of affiliation	
University2		Other	
Nature of relationship with the university		If affiliated, status of affiliation	
University3		Other	
Nature of relationship with the university		If affiliated, status of affiliation	
7 STATUTORY PROFESSIONAL REGULATORY COUNCIL(S)			
Does the college offer any programme recognized by any Statutory Professional Regulatory Council(s)?			no
Programmes offered		Name of the Regulatory Council(s)	
8 COLLEGE FUNCTIONING			
Type of college	CO-EDUCATION	Time of functioning	DAY COLLEGE
Nature of funding	SELF-FINANCING	Management	PRIVATE
9 MANAGEMENT/TRUST DETAILS			
Name of the Management	MAHARANA PRATAP MAHAVIDYALAYA	Recognition under Ugc Act.1956	2f & 12b

10 MANAGEMENT/TRUST OF THE COLLEGE IS REGISTERED UNDER			
Society's registration Act of 1960	yes	Relevant Act of the respective state Govt.	yes
Any other(please specify)			

11 NUMBER OF DEGREES OFFERED BY THE COLLEGE			
UG	3	PG	2
Research	0	Others	0
Total	5		

12 DETAILS OF DEGREES OFFERED(B.A., M.A., B.Com., M.Com., B.Sc., M.Sc., M.Phil., Ph.D., etc.,)			
Arts	B.A., M.A.	Commerce	B.COM.
Science	B.SC., M.SC.	Education	NO
Health Science	NO	Engineering & Technology	NO
Management	NO	Others	NO
Is the college opting for Assesment & Accreditation of Teacher Education department separately?			no
Is the college opting for Assesment & Accreditation of Physical Education department separately?			no
Number of departments			18

13 TOTAL NUMBER OF STUDENTS(EXCLUDING THOSE IN SELF-FINANCING PROGRAMMES)

	UG		PG		M.Phil/Ph.D		Value Added Courses(Certificate/Diploma)	
	Male	Female	Male	Female	Male	Female	Male	Female
General	0	0	0	0	0	0	0	0
SC/ST	0	0	0	0	0	0	0	0
OBC	0	0	0	0	0	0	0	0
Total	0	0	0	0	0	0	0	0
Grand Total	0							

14 TOTAL NUMBER OF STUDENTS IN SELF-FINANCING PROGRAMMES

	UG		PG		M.Phil/Ph.D		Value Added Courses(Certificate/Diploma)	
	Male	Female	Male	Female	Male	Female	Male	Female
General	465	182	19	11	0	0	0	0
SC/ST	156	77	4	2	0	0	0	0
OBC	758	344	18	20	0	0	0	0
Total	1379	603	41	33	0	0	0	0
Grand Total	2056							
Total number of students in the college			2056					

15 NUMBER OF TEACHING,TECHNICAL AND ADMINISTRATIVE STAFF

	Permanent		Temporary		Total	
	Male	Female	Male	Female	Male	Female
Teachers with PG	32	5	0	0	32	5
Teachers with M.Phil.	3	1	0	0	3	1
Teachers with Ph.D	16	3	0	0	16	3
Teachers with NET/SLET	5	1	0	0	5	1
Technical staff	14	0	0	0	14	0
Administrative staff	0	0	0	0	0	0
Support staff	5	4	0	0	5	4
Total no. of teachers	51	9	0	0	51	9

16 SUPPORT SERVICES	
Number of titles of books	2538
Number of journals	22
Number of e-resources	102
Does the college have a registered Alumni Association?	yes
Does the college have a functional Placement Cell?	no

17 UNIT COST OF EDUCATION	
Unit Cost=Total annual expenditure divided by no. of students enrolled	6407.0

Unit cost calculated excluding salary component	2613.0
18 MENTION FIVE ACADEMIC MILESTONES OF THE COLLEGE	
First	MORNING PRAYER, SARSWATI VANDANA, NATIONAL SONG, NATIONAL ANTHEM, SLOKAS OF GEETA, DAILY ROUTINE TO DEVELOP CHARACTER A ETHICS IN STUDENTS AND STAFF
Second	EACH SATURDAY 12.10 PM TO 1.10 PM VOLUNTEER PHYSICAL WORK TO CLEAN COLLEGE CAMPUS AND EXTERIOR OF THE CAMPUS TOO ALONG WITH PRINCIPAL, STAFF AND STUDENTS TO DEVELOP ENVIRONMENTAL AWARENESS AND ESTABLISHING DIGNITY OF LABOUR
Third	TEACHING ACCORDING TO PRE DECLARED TEACHING PLAN AND TO PROVIDE ABSTRACT BEFORE DELIVERING LECTURE TO EACH STUDENT
Fourth	EACH STUDENTS GIVEN OPPORTUNITY TO TEACH CLASS AND MEMBER IN COLLEGE COMMITTEES AT PRE FIXED PROGRAMME TO MAKE THEM WELL VERSED IN THE SUBJECT MEANINGFUL CITIZEN
Fifth	MONTHLY TESTS TO SHORT OUT SLOW, MEDIOCRE AND FAST LEARNERS SO THAT SLOW LEARNER CAN BE WELL TREATED SEPARATELY. PRE UNIVERSITY EXAMS TO MAKE THE STUDENTS AWARE AND CAUTIOUS ABOUT UNIVERSITY EXAMINATION AND EVALUATION SYSTEM.

Section 2: Institutional Data Questionnaire	
1. The college has in place a structured internal quality assurance system for ensuring continuous quality monitoring or improvement	YES
2. Library has reading room facilities for students and faculty separately	YES
3. The college uses the students feedback for analysis and improvement purposes	YES
4. Basic computer literacy is ensured for all students in a structured way such as add on courses	YES
5. The college provides financial aid to at least 10% of the general category students	YES
6. The college has a mechanism for counselling students	YES
7. An annual in-house academic calendar is prepared and implemented by the college	YES
8. The college has a mechanism for addressing grievances of students and staff	YES
9. The college promotes scholarly activities of the faculty beyond the syllabus	YES
10. Internet facility is available in the college for faculty and students	YES
11. The college campus is differently-abled friendly	YES
12. The college has a formal mechanism to promote research activities of its students and faculty.	YES
13. The college has adequate sports facility	YES
14. The college has developed a short term and a long term plan for its development and growth	YES
15. Percentage of classrooms equipped with LCD projector	>50%
16. Percentage of teachers using audio-visual aids including computer-aided teaching	>40%
17. The average number of extension activities organised by the college during the last four years	>6
18. Average percentage utilization of annual allocated funds for the last four years	>75%
19. Maintenance expenditure on infrastructure as percentage of the total annual budget	2-4%
20. Average pass percentage of graduating students	>70%
21. Computer students ratio	<1:30
22. Percentage of faculty benefitted from UGC and other staff development programmes (average of last four years)	>10%
23. Percentage of permanent teachers with Ph.D. qualification	>40%
24. Percentage of classes taught by guest faculty or temporary teachers	<20%
25. Students teacher ratio	>50:1
26. Percentage of faculty positions filled against sanctioned posts	>80%
27. Number of add-on courses conducted by the college	<3
28. Awards received by the students in sports and cultural activities in the last four years	State or University Level
29. Percentage of teachers having on-going or completed research projects in the last four years	<10%
30. Number of academic seminars or conferences or workshops that the college has organized (average of last four years)	2-4
31. Number of Journals subscribed in the library National or International	>20
32. Percentage of students admitted against the reservation category as per Government of India norms	>75%

Certificate

This is to certify that the information given in the IEQA application is true to the best of my knowledge and ability and if the same is found to be false or misleading, I authorize NAAC to initiate any action which it deems fit including withholding the outcome of the Peer Team Visit.

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा सर्वेक्षण अपलोडिंग प्रमाण–पत्र

2013-14

Kanpur Institute of Tech. - www.facebook.com/KIT165 - (KIT) BTech BPharma MBA MCA MTech. AICTE Approved UPTU Affiliated Why this ad?

77 of 665

Your DCF has been uploaded on AISHE portal Inbox x

helpdesk-aishe@nic.in Jul 21

to me

Dear User,

DCF for **Maharana Pratap Mahavidyalay, Jungle Dhushan, Gorakhpur** has been uploaded successfully on AISHE portal. To refer to this form please use DCF reference number **C-14178-2013**.

We appreciate your sincere efforts in compiling and providing the information.

Thanks,
AISHE Team

(This is an auto generated email, kindly do not reply back.)

Ads

Reliance Online Term
1Cr cover @ Rs 450 OR 50 Lac@ Rs253 Per month. Policy term upto 35 yrs
www.reliancelife.com

Tata Motors August Offer
Avail Benefits of Rs. 60,000* & 3yrs. Insurance. Book a Test Drive!
tatamotors.com/August_Offer

Education Exhibition-2014
Update Global Overview Of Education Training Trends and Products.
worlddidacindia.com/Attend+Now

2014-15

+Pradeep

7 of 1,063

More

mail

COMPOSE

box (84)

tarred

nportant

ent Mail

rafts (12)

Circles

Personal

Travel

More

Expressindia - Dominant India march to 4-0

Your DCF has been uploaded on AISHE portal   Inbox x

4:14 PM (18 hours ago)

helpdesk-aishe@nic.in

to me

Dear User,

DCF for **Maharana Pratap Mahavidyalay, Jungle Dhushan, Gorakhpur** has been uploaded successfully on AISHE portal. To refer to this form please use DCF reference number **C-14178-2014**.

We appreciate your sincere efforts in compiling and providing the information.

(This is an auto generated email, kindly do not reply back)

Thanks,
AISHE Team

Click here to Reply or Forward

Search people...

Dk Prajapati

shankar sharan

Anand Shanker Si...

ASHEESH TRIG...

balmukund pandey

Pankaj Bhargava

akshya kumar

4.25 GB (28%) of 15 GB used
Manage

©2014 Google - Terms - Privacy

Last account activity: 18 hours ago
Details

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

- प्राध्यापक
- कर्मचारी

महाविद्यालय परिवार

अध्यक्ष
प्रो.यू.पी. सिंह
पूर्व कुलपति,वी.ब.पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर,उ.प्र.

प्रबन्धक
गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त आदित्यनाथ जी महाराज
लोक सभा सदस्य, गोरखपुर

प्राचार्य
डॉ. प्रदीप कुमार राव

: प्राध्यापक :

1. डॉ. विजय कुमार चौधरी, भूगोल विभाग
2. डॉ. रघुबीर नारायण सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग
3. डॉ. शिवकुमार वर्नवाल, रसायन विज्ञान विभाग
4. डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, राजनीतिशास्त्र विभाग
5. डॉ. शालिनी सिंह, रसायन विज्ञान विभाग
6. श्री लोकेश कुमार प्रजापति, प्राचीन इतिहास विभाग
7. श्री अखिलेश दूबे, अर्थशास्त्र विभाग
8. श्रीमती कविता मन्ध्यान, अंग्रेजी विभाग
9. डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव, वनस्पति विज्ञान विभाग
10. डॉ. प्रविन्द्र कुमार, भूगोल विभाग
11. श्री प्रकाश प्रियदर्शी, समाजशास्त्र विभाग
12. डॉ. राजेश शुक्ल, वाणिज्य विभाग
13. डॉ. आरती सिंह, हिन्दी विभाग
14. श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी, गणित विभाग
15. श्री नन्दन शर्मा, वाणिज्य विभाग
16. श्री सुभाष गुप्त, वाणिज्य विभाग
17. डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
18. सुश्री मनीता सिंह, भौतिक विभाग
19. श्री सुबोध कुमार मिश्र, प्राचीन इतिहास विभाग
20. डॉ. भारती सिंह, प्राचीन इतिहास विभाग
21. डॉ. मुरली मनोहर तिवारी, प्राचीन इतिहास विभाग
22. डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह, इतिहास विभाग
23. डॉ. सुनील कुमार मिश्र, मनोविज्ञान विभाग
24. डॉ. राम सहाय, रसायन विज्ञान विभाग
25. डॉ. विरेन्द्र तिवारी, कम्प्यूटर साइंस विभाग
26. श्री प्रखर वैभव, इलेक्ट्रानिक्स विभाग
27. सुश्री आम्रपाली वर्मा, वनस्पति विज्ञान विभाग
28. श्री प्रतीक दास, गणित विभाग
29. श्री विनय कुमार सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग
30. डॉ. शालिनी चौधरी, प्राचीन इतिहास विभाग
31. डॉ. शशिकान्त सिंह, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
32. डॉ. अजय बहादुर सिंह, मनोविज्ञान विभाग
33. डॉ. संजय कुमार तिवारी, कम्प्यूटर साइंस विभाग
34. श्री प्रदीप कुमार वर्मा, रसायन विज्ञान विभाग
35. डॉ. अमित कुमार मिश्र, भौतिकी विभाग
36. सुश्री प्रियंका मिश्रा, रसायन विज्ञान विभाग
37. डॉ. राजेन्द्र तिवारी, सांख्यिकी विभाग
38. सुश्री पूनम, समाजशास्त्र विभाग
39. कु. प्रिया वर्मा, राजनीतिशास्त्र विभाग
40. श्री अमित कुमार, प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम कम्प्यूटर प्रशिक्षण

4.1 श्री अरूण कु. त्रिपाठी, प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम हमारे महापुरूष

42. डॉ. रेखा त्रिपाठी, प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम जीवन–मूल्य
43. श्रीमती कमलावती प्रजापति, प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम सिलाई–कढ़ाई
44. श्री शिव प्रसाद शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्ष

: कालेज स्टाफ :

1. श्री सुभाष कुमार, कार्यालय अधीक्षक
2. श्री लक्ष्मीकान्त दूबे, सहायक कार्यालय अधीक्षक
3. श्री संजय कुमार शर्मा, कम्प्यूटर आपरेटर
4. श्री शारदानन्द पाण्डेय, कम्प्यूटर आपरेटर
5. श्री प्रदीप यादव, प्रयोगशाला सहायक, वनस्पति वि.विभाग
6. श्री झब्बर शर्मा, प्रयोगशाला सहायक, मनोविज्ञान विभाग
7. श्री ओम प्रकाश, प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग

.8. श्री संतोष श्रीवास्तव, प्रयोगशाला सहायक, भौतिकी विभाग

9. श्री राम उमेश साहनी, प्रयोगशाला सहायक, प्राणि विज्ञान विभाग
10. श्री अमित कुमार, प्रयोगशाला सहायक, कम्प्यूटर साइंस विभाग
11. श्री महेश कुमार, प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग
12. श्री राम रातन, प्रयोगशाला सहायक, भूगोल विभाग
13. श्री विकास शुक्ला, प्रयोगशाला सहायक, सांख्यिकी विभाग
14. श्री संतोष कुमार, प्रयोगशाला सहायक, इलेक्ट्रानिक्स विभाग
15. श्री विनय मिश्र, प्रयोगशाला सहायक, रक्षा अध्ययन विभाग

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

- छात्रसंघ साधारण सभा
- छात्रसंघ कार्यकारिणी की बैठक
- प्रार्थना सभा

◀ प्रार्थना सभा

प्रार्थना सभा ▶

◀ छात्रसंघ साधारण सभा

छात्रसंघ कार्यकारिणी की बैठक ▶

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

- नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
- गुरु श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र

अध्यक्ष	परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज	
निदेशक	डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य
शोध सहायक	डॉ. शशि कान्त सिंह	प्रवक्ता, रक्षा-अध्ययन
परामर्श समिति	डॉ. कृष्ण कुमार गौतम	काठमाण्डू (नेपाल)
	डॉ. काशीनाथ	बुद्ध टूरिज्म विश्वविद्यालय काठमाण्डू (नेपाल)
	श्री राकेश मिश्र	तराई पत्रकार काठमाण्डू (नेपाल)
	श्री सुरेश मल्ल	नेपाल
	श्रीमती नलिनी गयवाली	सामाजिक कार्यकर्ता (नेपाल)
	श्री दीपक अधिकारी	सामाजिक कार्यकर्ता काठमाण्डू (नेपाल)
	डॉ. हर्ष सिन्हा	दी.द.उ.गो.विश्वविद्यालय गोरखपुर (भारत)
	डॉ. रेनू सक्सेना	जामिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (भारत)
	श्री अजीत कुमार	सामाजिक कार्यकर्ता (भारत)
	श्री हरेन्द्र प्रताप सिंह	सदस्य विधान परिषद, पटना, बिहार (भारत)
	श्री अरुण जी	सामाजिक कार्यकर्ता, नयी दिल्ली (भारत)

गुरु श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

अध्यक्ष	पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज
निदेशक	डॉ. प्रदीप कुमार राव
शोध समन्वयक	श्री लोकेश कुमार प्रजापति
शोध अध्येता	सुश्री शालिनी चौधरी
शोध सहायक	श्री सुबोध मिश्र
परामर्श समिति	प्रो. यू. पी. सिंह, प्रो. शिवाजी सिंह, प्रो. कपिल कपूर, डॉ. सन्तोष शुक्ला, प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा प्रो. मुरली मनोहर पाठक, डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

समावर्तन संस्कार समारोह में विद्यार्थी

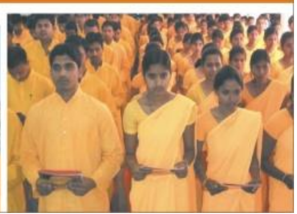

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम
(महाविद्यालय छात्रावास)